प्राकृतमार्गोपदेशिका

अध्यापक बेचरदास जीवराज दोशी



: प्रकाशक :

गूर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय

गांधी रस्तो : अमदावाद.

संतानो तरफनी जेमनी निर्व्याज कर्तव्यनिष्ठानो
वदलो कोई पण रीते वाळी न ज शकाय
एवां पूज्य

तीर्थरूप स्व. मातुश्रीने

—सेवक बेचरदास

प्रस्तावना

प्राकृतमार्गोपदेशिकानी आम तो आ पांचमी आवृत्ति गणाय परंतु बीजी अने त्रीजी आवृत्तिमां पुनर्मुद्रण सिवाय बीजी कोइ विशेषता न हती तेथी आ संस्करणने चोथी आवृत्तिरूप गणवुं समुचित लेखाय. अत्यार सुधीनां संस्करणो करतां आ संस्करणमां एक आ विशेषता छे: आमां प्राकृतभाषाने लगता जे जे नियमो बतावेला छे ते नियमो आचार्य हेमचंद्रना प्राकृतव्याकरणना आठमा अध्यायना कया पादना कया सूत्र साथे संबंध राखे छे ए हकीकत सर्वत्र यथास्थान टिप्पणमां सूत्रांको आपीने जणावेली छे. आ ग्रंथनो अभ्यासी आ अंगे जे कांइ विशेष जाणवा इच्छे तेने माटे ए सूचन उपयोगी थशे. ए दृष्टिए ए अंको आपेला छे. आ संस्करणना बे विभाग पाड्या छे: व्याकरणविभाग अने पाठमालाविभाग. व्याकरणविभागमां वर्णविज्ञान, शब्दविभाग, शब्दरचना ए त्रण मुख्य विभाग छे. शब्दरचनामां १ स्वरना सामान्य फेरफार, २ स्वरना विशेष फेरफार, ३ अंत्यव्यंजन असंयुक्त व्यंजन अथवा बे स्वरोनी वच्चे आवेला व्यंजनना सामान्य फेरफार, ४ संयुक्तव्यंजनना सामान्य फेरफार, ५ संयुक्तव्यंजनना विशेष फेरफार बतावेला छे. आम क्रम राखीने शब्दरचनाने सरळताथी समजाववानी योजना करेली छे, आ पछी शब्दोमां विशेष फेरफार, खास खास शब्दोना संयुक्तव्यंजनोमां वच्चे–अंतः–स्वरनी वृद्धि, शब्दोनी जातिसंबंधी फेरफार संबंधे पण समज आपेली छे, आ अने आवुं बीजुं पण शब्दरचनाना पेटामां ज जणावेलुं छे.

आ पछी संधि अंगे समजुती आपेल छे अने आ विभागने अंते समास अंगे सविस्तर समजण आपतां समासनुं प्रयोजन तथा दरेक समासनां उदाहरणो आप्यां छे.

आखा पुस्तकमां तुलनानी दृष्टिए संस्कृत रूपो सर्वत्र आप्यां छे. जे सामान्य कोश आपेल छे ते पण लिंगप्रमाणे आपेलो छे एटले पहेलां नरजातिना शब्दो, पछी नारीजातिना शब्दो अने छेल्ले नान्यतर-जातिना शब्दो. आम योजवाथी शब्दोनी जाति अंगे जाणवानी विद्यार्थी-ओने सुगमता रहे.

आ उपरांत विशेषण कोश, संख्यावाची शब्दोनो कोश, अव्यय कोश, धातुकोश तथा जाति प्रमाणे देश्य शब्दोनो कोश पण आपेल छे.

अहीं आंकडाओ अंगे एक सूचन ध्यानमां राखवानुं छे के जे अंग्रेजी आंकडा छे ते अपवादरूप नियमोना सूचक छे. पृ. ६६ थी ७९ सुधीमां जे जे नियमो जणावेला छे ते बधा अपवादरूप छे छतां त्यां अंग्रेजी आंकडाने बदले बाळबोध आंकडा भूलथी छपाया छे तथा पृ० ९ थी १४ सुधीमां जे नियमो आपेला छे ते सामान्य नियमो छे तेम छतां तेमां गुजराती आंकडा आपेला छे, खरी रीते त्यां पण बाळ-बोध आंकडा होवा जोईए. विद्यार्थी भाईओ ते ते नियमो उपरना मुख्य मुख्य मथाळा वांचीने आ भूलने सुधारी लेवा महेरबानी करशे. पृ० ९ मां अंकोनी समजण अंगे जे सूचना आपेली छे ते प्रमाणे सर्वत्र काम थई शक्युं नथी एथी माटे पण संपादक तथा प्रकाशक विद्यार्थी भाईओनी क्षमा मागी ले छे.

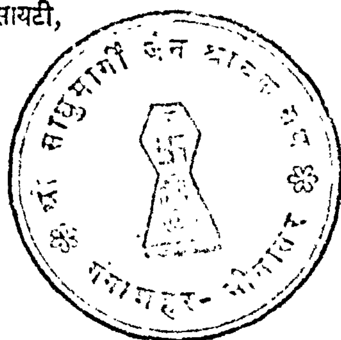
कयो नियम सामान्य छे अने कयो नियम विशेष छे तेनो निर्णय ते ते नियमो उपरना मथाळाओथी ज थई शे, तेथी आंकडाओनी गूंचवणमां पडवानी जरूर नथी.

प्राकृतभाषाना सामान्य के विशेष नियमो ज्यां ज्यां आपेला छे त्यां त्यां साथे ज पाली, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशभाषाना तेवा ज प्रकारना नियमो उदाहरणो साथे आपेला छे ते अंगे विद्यार्थीओनुं ध्यान दोरीए छीए.

आशा छे के प्राकृतभाषाना अभ्यासी भाईबहेनोने आ पुस्तक मददगार नीवडे अने अभ्यासी भाईबहेनोना अभ्यास अंगेना उत्साहमां वधारो थाय.

१२/ब, भारती निवास सोसायटी,
अमदावाद-६
१३-६-५९

बेचरदास



ता. क. :-मुद्रणदोष जे होय तेने सुधारीने वांचवा विनंति छे. प्रेसवाळा भाईओ भारे काळजीवाळा होवा छतां तेओ बराबर काळजी राखी शक्या नथी एथी मुद्रणदोष थवानो पूरेपूरो संभव छे

बेचरदास

पाठमाला विभाग

अनुक्रम

व्याकरण विभाग

प्रारंभनुं पृ०	विषय

शब्दकोश पृ० १ थी ४९



। पितरौ वन्दे ।

प्राकृतमार्गोपदेशिका

(अक्षरपरिवर्तन–व्याकरणविभाग)

वर्णविज्ञान

१ प्राकृत भाषामां वपराता स्वरोनी अने व्यंजनोनी माहिती आ प्रमाणे छेः–

स्वर		उच्चारण स्थान
ह्रस्व	दीर्घ	
अ	आ	कंठ–गळुं
इ	ई	तालु–ताळवु
उ	ऊ	ओष्ठ–होठ
ए२	ए	कंठ तथा तालु
ओ	ओ	कंठ तथा ओष्ठ

१ प्राकृत भाषामां स्वरोनुं प्लुत उच्चारण वपरातुं नथी.

२ ऋ३ तथा लृ स्वरनो प्रयोग नथी.

---

१ प्रस्तुत पुस्तकमां प्राकृत, पालि, शौरसेनी, मागधी, पैशाची तथा चूलिका–पैशाची अने अपभ्रंश भाषाना व्याकरणनो समावेश करेलो छे तेथी प्राकृत भाषा एटले 'उक्त बधी भाषाओ' एम समजवानुं छे.

२ एक्क, तेल्ल वगेरे शब्दोनो 'ए' ह्रस्व छे अने सोत्त, तोत्त वगेरे शब्दोनो 'ओ' ह्रस्व छे.

३ अपभ्रंश प्राकृतमां 'ऋ' स्वरनो उपयोग थाय छे. तृण, सुकृत वगेरे.

३ [१]ऐ तथा औ स्वरनो पण प्रयोग नथी.

व्यंजनो		उच्चारण स्थान
क् ख् ग् घ् ङ्	(क वर्ग)	कंठ
च् छ् ज् झ् ञ्	(च वर्ग)	तालु
ट् ठ् ड् ढ् ण्	(ट वर्ग)	मूर्धा–माथुं
त् थ् द् ध् न्	(त वर्ग)	दंत–दांत
प् फ् ब् भ् म्	(प वर्ग)	ओष्ठ
अंतस्थ–अर्धस्वर	य्	तालु
	र्	मूर्धा
	ल्	दंत
	व्	दंत–ओष्ठ
	स्	दंत
	ह्	कंठ
य़् ल़् व़् ङ् ञ् ण् न् म्		नासिका–नाक

४ प्राकृत भाषामां कोई पण व्यंजन स्वर वगरनो–क् च् त् प् ए रीते एकलो वपरातो नथी. जे व्यंजनो एक सरखा वर्गना छे अथवा एक सरखा आकारना छे तेओ स्वर वगरना पण संयुक्त रीते वपराय छे. सरखा वर्गनाः चक्क. वच्छ. वट्टइ. तत्त. पुप्फ. अङ्क. कञ्जा[२]. मच्च कण्ठ. तन्तु. चम्पग वगेरे
सरखा आकारनाः अय्य[३]. कल्लाण. सव्व. सिस्स वगेरे.

---

१ फक्त 'अयि' अव्ययने स्थाने ज 'ऐ' वपराय छे. 'ऐ' एटले संभावना अथवा कोमळ संबोधन. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६९।

२ शब्दनी अंदर 'ञ्ञ'नो प्रयोग पालि, मागधी अने पैशाची भाषामां प्रचलित छे.

३ अय्य (आर्य) शब्द केवल शौरसेनीमां अने मागधीमां वपराय छे.

५. कोई पण प्रयोगमां एकलो मस्वर ए अथवा बेवडो ए्ए वपरातो ज नथी.

६ सामान्य रीते क्य त्र प्ल क्व स्त्र आ जातना विजातीय संयुक्त व्यंजनो प्राकृत भाषामां वपराता नथी, अपवाद तरीके केटलाक विजातीय संयुक्त व्यंजनो प्राकृत अपभ्रंश पालि अने मागधी भाषामां वपराय छे, ते अंगे उदाहरण साथेनो निर्देश व्यंजनविकारना प्रकरणमां आवशे.

७ श तथा ष नो अने विसर्गनो प्रयोग प्राकृत भाषामां मुद्दल नथी.

८ 'ळ' व्यंजननो प्रयोग पालि भाषामां तथा पैशाची भाषामां प्रचलित छे.

९ संस्कृतना क्या संयुक्त अक्षरने बदले प्राकृतमां क्या अक्षर साधारण रीते वपराय छे तेनी उदाहरणो साथेनी यादी आ प्रमाणे छे:

(१) त्क, क्त, क्य, क्र, र्क, ल्क, क्ल, अने क्व ने बदले शब्दनी अंदर 'क्क' वपराय छे अने [1]शब्दनी आदिमां 'क' वपराय छे: उत्कण्ठा-उक्कण्ठा. मुक्त-मुक्क. वाक्य-वक्क. चक्र-चक्क. तर्क-तक्क. उल्का-उक्का. विक्लव-विक्कव. पक्व-पक्क. क्वचित्-कचि. क्वणति-कणति.

(२) त्ख, ख्य, क्ष, त्क्ष, क्ष्य, ष्क, स्क, स्ख, :ख-बराबर ख तथा क्ख: उत्खण्डित-उक्खण्डित. व्याख्यान-वक्खाण. क्षय-खय क्षण-खण, अक्षि-अक्खि. उत्क्षिप्त-उक्खित्त. लक्ष्य-लक्ख. शुष्क-सुक्ख. आस्कन्दति-अक्खंदइ. स्कन्द-खंद. स्खलित-खलिअ. स्खलन-

१. अहीं आपवामां आवती आ बधी यादीमां क्क, क्ख, ग्ग, ग्घ वगेरे जे बेवडो अक्षर वापरवानो कहेलो छे तेनो उपयोग शब्दनी अंदर करवानो छे अने जे एकवडो अक्षर वापरवानो कहेल छे तेनो उपयोग शब्दनी आदिमां करवानो छे.

खलण. स्खलति-खलइ. दुःख-दुक्ख.

(३) ग्न, ग्ण, द्ग, ग्र, ग्म, ग्य, ग्र, र्ग, ल्ग, बराबर ग्ग तथा गः खड्ग-खग्ग. रुग्ण-रुग्ग. अथवा लुग्ग. मुद्ग-मुग्ग. नग्न-नग्ग. युग्म-जुग्ग. योग्य-जुग्ग. अग्र-अग्ग. ग्रास-गास. ग्रसते-गसते. वर्ग-वग्ग. वल्गा-वग्गा.

(४) द्घ, घ्न, घ्र, र्घ-बराबर ग्घ तथा घः उद्घाटित-उग्घाडिअ. विघ्न-विग्घ. शीघ्रम्-सिग्घं. घ्राण-घाण. अर्घ-अग्घ.

(५) च्य, र्च, श्च, त्य, बराबर च्च तथा चः अच्युत-अच्चुअ. च्युत-चुअ. अर्चा-अच्चा. निश्चल-निच्चल. सत्य-सच्च. त्याग-चाय. त्यजति-चयइ.

(६) र्छ, छ्र, क्ष, त्क्ष, क्ष्म, त्स, थ्य, त्स्य, प्स, श्च बराबर च्छ तथा छः मूर्छा-मुच्छा. कृच्छ्र-किच्छ, क्षेत्र-छेत्त. अक्षि-अच्छि. उत्क्षिप्त-उच्छित्त. लक्ष्मी-लच्छी. क्षमा-छमा. वत्स-वच्छ. मिथ्या-मिच्छा. मत्स्य-मच्छ. लिप्सा-लिच्छा. आश्चर्य-अच्छेर.

(७) ब्ज, ज्ञ, ज्र, र्ज, ज्व, द्य, र्य य्य बराबर ज्ज तथा जः कुब्ज-खुज्ज. सर्वज्ञ-सव्वज्ज. वज्र-वज्ज. वर्ज्य-वज्ज. गर्जति-गज्जइ. प्रज्वलित-पज्जलित. ज्वलित-जलिअ. विद्या-विज्जा. कार्य-कज्ज शय्या-सेज्जा.

(८) ध्य, ध्व, ह्य बराबर ज्झ तथा झः मध्य-मज्झ. साध्य-सज्झ. ध्यान-झाण. ध्यायति-झायइ. साध्वस-सज्झस. बाह्य-बज्झ. गुह्य-गुज्झ.

(९) र्त बराबर ट्टः नर्तकी-नट्टई.

(१०) ष्ट, ष्ठ, स्थ, स्त, बराबर ट्ठ तथा ठः दृष्टि-दिट्ठि. गोष्ठी-गोट्ठी. अस्थि-अट्ठि. स्थित-ठिअ. स्तम्भ-ठंभ.

(११) र्त तथा र्द बराबर ड्डः गर्त-गड्ड. गर्दभ-गड्डह.

(१२) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध तथा ढ्य बराबर ड्ढः अर्ध-अड्ढ. वृद्ध-वुड्ढ. दग्ध-दड्ढ. स्तब्ध-ठड्ढ. आढ्य-अड्ढ.

(१३) ज्ञ, म्न, न्न, ण्य, न्य, र्ण, ण्व, न्व बराबर ण, ण्ण अथवा न, न्नः सर्वज्ञ-सव्वण्णु, सव्वन्नु. यज्ञ-जण्ण, जन्न. ज्ञान--णाण, नाण. विज्ञान-विण्णाण, विन्नाण. प्रद्युम्न-पज्जुण्ण, पज्जुन्न. प्रसन्न-पसण्ण, पसन्न. पुण्य-पुण्ण, पुन्न. न्याय-णाय, नाय. अन्योन्य-अण्णोण्ण, अन्नोन्न. मन्यते-मण्णए, मन्नए. वर्ण-वण्ण, वन्न. कण्व-कण्ण. अन्वेषणा-अण्णेसणा, अन्नेसणा. अन्वेषयति-अण्णेसेइ, अन्नेसेइ.

(१४) क्ष्ण, क्ष्म, श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण बराबर ण्ह अथवा न्हः तीक्ष्ण-तिण्ह, तिन्ह. प्रश्न-पण्ह, पन्ह. सूक्ष्म-सण्ह. विष्णु-विण्हु, विन्हु. स्नान-ण्हाण, न्हाण. प्रस्नुत-पण्हुअ, पन्हुअ. प्रस्नव-पण्हव, पन्हव. पूर्वाह्ण-पुव्वण्ह, पुव्वन्ह. वह्नि-वण्हि, वन्हि.

(१५) क्त, प्त, त्न, त्म, त्र, त्व, र्त बराबर त अथवा त्तः भुक्त-भुत्त. सुप्त-सुत्त. पत्नी-पत्ती. आत्मा-अत्ता. त्राण-ताण शत्रु-सत्तु त्वम्-तं. सत्त्व-सत्त. मुहूर्त-मुहुत्त.

(१६) क्थ, त्र, थ्य, र्थ, स्त, स्थ बराबर थ अथवा त्थः सिक्थक-सित्थअ. तत्र-तत्थ. पथ्य-पत्थ. पार्थ-पत्थ. स्तम्भ-थंभ. स्तुति-थुइ स्थिति-थिति.

(१७) ब्द, द्र, र्द, द्व बराबर द अथवा द्दः अब्द-अद्द. भद्र-भद्द. आर्द्र-अद्द. द्वि-दि. द्वैत-दइअ. अद्वैत-अद्दइअ. द्वौ-दो.

(१८) ग्ध, ब्ध, र्ध, ध्व बराबर ध अथवा द्धः स्निग्ध-निद्ध. लब्ध-लद्ध. अर्ध-अद्ध. ध्वनति-धणइ.

(१९) न्त बराबर न्द (शौरसेनी भाषामां) निश्चिन्त-निच्चिन्द. अन्तःपुर-अन्देउर. महत्-महन्त-महन्द, पचत्-पचन्त-पचन्द, पभावत्-पभावन्त-पहावन्द, किन्तु-किन्दु.

(२०) त्प, त्म, प्य, प्र, र्प, ल्प, प्ल, क्म, ड्म बराबर प अथवा प्पः उत्पल-उप्पल. आत्मा-अप्पा. प्यायते-पायए. विज्ञप्य-विण्णप्प. प्रिय-पिय. अप्रिय-अप्पिय. अर्पयति-अप्पेइ. अल्प-अप्प. प्लव-पव. विप्लव-विप्पव. प्लवते-पवए. रुक्म-रुप्प. रुक्मिणी-रुप्पिणी. कुड्मल-कुंपल.

(२१) त्फ, ष्प, ष्फ, स्प, स्फ बराबर फ अथवा प्फः उत्फुल्ल-उप्फुल्ल. पुष्प-पुप्फ. निष्फल-निप्फल. स्पर्श-फंस. स्पृशति-फरिसइ. स्फुट-फुड. स्फुरति-फुरइ. स्फुरण-फुरण.

(२२) द्व, द्ब, र्व, व्र, र्ब, ब्र बराबर व अथवा व्व तथा ब अथवा ब्बः उद्बन्ध्य-उव्वंधिय. द्वे-वे अथवा बे. द्वीनि-विनि, बेन्नि अथवा विन्नि, बेन्नि. बर्बर-बब्बर. ब्राह्मण-बम्हण. अब्रह्मण्य-अब्बम्हण्ण. सर्व-सव्व, सव्व. व्रजति-वयइ. व्रज-वज.

(२३) ग्भ, द्भ, भ्य, र्भ, भ्र, ह्व बराबर भ अथवा ब्भः प्राग्भार-पब्भार. सद्भाव-सब्भाव. सभ्य-सब्भ. गर्भ-गब्भ. भ्रम-भम. विभ्रम-विब्भम विह्वल-विब्भल.

(२४) ग्म, ङ्म, ण्म, न्म, म्य, र्म, म्र, त्म, बराबर म अथवा म्मः युग्म-जुम्म. दिङ्मुख-दिम्मुह. वाङ्मय-वम्मय. षण्मुख-छम्मुह जन्म-जंम्म. मन्मन-मम्मण. गम्य-गम्म. सौम्य-सोम्म. धर्म-धम्म. कम्र-कम्म. म्रेडित-मेडिअ. जाल्म-जम्म. गुल्म-गुम्म.

(२५) क्ष्म ष्म, स्म अने ह्म बराबर म्हः पक्ष्म-पम्ह. ग्रीष्म-गिम्ह. विस्मय-विम्हय. ब्राह्मण-बम्हण.

शब्दविभाग

तमाम प्रकारनी प्राकृत भाषाओना शब्दोनी बे जात छेः संस्कृतसम अने देश्य. जे जे शब्दो पंडिताउ संस्कृत भाषा साथे तद्दन मळता आवे छे ते संस्कृतसम कहेवाय, अने बीजा जे शब्दो घणा ज प्राचीन होई

व्युत्पत्तिनी दृष्टिए पंडिताउ भाषा साथे के प्राकृत भाषा साथे सरखावी शकाय एवा न होय ते देश्य शब्दो गणाय. आ देश्य शब्दो घणा जूना छे अने वेदो वगेरे प्राचीन शास्त्रोमां तथा संस्कृत भाषाना कोशोमां अने साहित्यमां भारोभार वपरायेला छे. देश्य शब्दोमां केटलाक अनार्य शब्दो छे तेम द्रविडभाषाना पण शब्दो छे. आचार्य हेमचन्द्रे आवा शब्दोनो एक संग्रह करेलो छे अने तेने देशीशब्दसंग्रह (देसीसद्दसंगह) एवुं नाम आपीने एनो एक स्वतंत्र कोश करेलो छे. आ कोशनो टीका पण हेमचन्द्रे पोते ज लखी छे.

संस्कृतसम प्राकृत शब्दोनी बे जात छे : केटलाक तद्दन सरखा अने केटलाक थोडा सरखा :

तद्दन सरखा नामरूप शब्दोः

प्राकृत	संस्कृत
संसार	संसार
दाह	दाह
दावानल	दावानल
नीर	नीर
संमोह	संमोह
धूलि	धूलि
समीर	समीर वगेरे.

तद्दन सरखा क्रियापदोः

भेदति	भेदति
हनति	हनति
धाति	धाति
मरते	मरते वगेरे.

थोडा सरखा नामरूप शब्दोः

प्राकृत	संस्कृत
कणग	कनक
सुवण्ण } सुवन्न }	सुवर्ण
विलया	वनिता
घर	गृह
इत्थी	स्त्री
रुक्ख	वृक्ष
वाणारसी	वाराणसी

थोडा सरखा क्रियापदोः

कुणति	कृणोति (तृतीय पुरुष एकवचन)
नच्चति	नृत्यति
पुच्छति	पृच्छति
जीहति	जिहेति
चवति	वच्ति
जुज्झति } जुज्झते }	युध्यते
वंदित्ता	वन्दित्वा (संबन्धक भूतकृदन्त)
कत्तवे } कातवे } करित्तए }	कर्तवे (हेत्वर्थ कृदन्त)

देस्य	संस्कृत	गुजराती
खडक्की		खडकी
गड्डा	गर्त	खाडो
ओज्झरी		होजरी
अआलि	अकाले (?)	एली-हेली-वरसादनी हेली

गडयडी		गडगडाट
गागरी	गग्गरी	गागर
छासी		छाश
जोवारी		जुवार

देश्य शब्दोमां तामिल-तेलगु अने अरबी-फारसी वगेरे अनेक भाषाओना शब्दो पण उपलब्ध छे.

शब्दरचना

प्राकृत शब्दोने समजाववा सारु घणा प्राचीन जमानाथी संस्कृत शब्दोने माध्यम तरीके वापरवानी परंपरा चाली आवे छे, तदनुसार प्रस्तुतमां ते ज परंपराने अनुसरवामां आवेल छे.

स्वरना सामान्य फेरफार

(सामान्य नियमो गुजराती अंको साथे आपेला छे अने विशेष नियमो अंग्रेजी अंको साथे. ए विभाग ध्यानमां रहे. तथा फेरफारना जे नियमो खास खास भाषाओनां नामो लईने जणावेला छे ते नियमो ते ते सूचवेली खास खास भाषाओ साथे संबंध धरावे छे. अने जे एवा नियमो कोई भाषानुं नाम लीधा विना अथवा प्राकृत भाषानुं नाम लईने जणावेला छे ते साधारण रीते अहीं जणावेली तमाम भाषाओमां लागु थाय छे. परंतु आ नियमो लागु करतां पहेलां अपवादना नियमो तरफ पूरतुं ध्यान आपवु घटे.)

१ ह्रस्व नो दीर्घभाव[१]

संस्कृत	प्राकृत
कश्यप	कासव

१ हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण ८।१।४३।

परिवर्तनना विधानने समजवा सारु बधे सूत्रना अंको आपेला छे एटले सूत्रनां जे बधां उदाहरणो अहीं नथी आप्यां ते बधां ते ते सूत्रो जोईने समजी लेवानां.

पश्य	पास
आवश्यक	आवासय
मिश्र	मीस
विश्राम	वीसाम
संस्पर्श	संफास
अश्व	आस
विश्वास	वीसास
दुश्शासन	दूसासण
पुष्य	पूस
मनुष्य	मणूस
वर्ष	वास
वर्षा	वासा
कर्षक	कासअ
विष्वक्	वीसुं
विष्वाण	वीसाण
निष्षिक्त	नीसित्त
कस्य	कास
सस्य	सास
विस्रम्भ	वीसंभ
उस्र	ऊस
निस्व	नीस
विकस्वर	विकासर
निस्सह	नीसह

(पालि भाषामां पण आवा फेरफार थाय छे : परामर्श–परामास– जुओ पालि प्रकाश पृ. ११ टिप्पण)

२ दीर्घनो ह्रस्वभाव[1]

आम्र	अम्ब
ताम्र	तम्ब
तीर्थ	तित्थ
मुनीन्द्र	मुणिन्द
चूर्ण	चुन्न
नरेन्द्र	नरिंद
म्लेच्छ	मिलिच्छ मिलिक्ख
नीलोत्पल	नीलुप्पल

(पालि भाषामां दीर्घनो ह्रस्वभाव, ए नो इ, ओ नो उ तथा औ नो उ थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ८ नियम ११, पृ० ५५ अने पृ० ५.)

३ आ नो अ[2]

प्रकार	पयर, पयार.
प्रचार	पयर, पयार.
प्रहार	पहर, पहार.
प्रवाह	पवह, पवाह.
प्रस्ताव	पत्थव, पत्थाव.

आ बधां नामो भाववाचक छे अने नरजातिनां छे, ए ध्यानमां रहे.

४ इ नो ए[3]

पिष्ट	पेट्ट, पिट्ट.
सिन्दूर	सेंदूर, सिंदूर.

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।८४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।६८।
३. हे० प्रा० व्या० ८।१।८५।

पिण्ड	पेंड, पिंड.
विष्णु	वेण्हु, विण्हु.
विल्व	वेल्ल, विल्ल.

आ बधां उदाहरणोमां 'इ'कार संयुक्त अक्षरनी पूर्वे आवेल छे. (पालि भाषामां आ ज रीते थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ३–इ=ए)

५

उ नो ऊ[1]

उत्सरति	ऊसरइ
उत्सव	ऊसव
उच्छ्वसति	ऊससइ
उच्छ्वास	ऊसास

आ उदाहरणोमां उ पछी त्स अथवा च्छ आवेला छे.

६

उ नो ओ[2]

कुट्टिम–कोट्टिम
तुण्ड–तोंड
पुद्गल–पोग्गल
मुस्ता–मोत्था
पुस्तक–पोत्थअ

आ उदाहरणोमां उकार संयुक्त अक्षरनी पूर्वे आवेल छे.
(पालि भाषामां आ प्रमाणे उ नो ओ थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ५४–उ=ओ)

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।११४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।११६।

७ **ऋ नो अ**[1]

घृत-घय

तृण-तण

कृत-कय

(पालि भाषामां ऋ नो अ थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० १-ऋ=अ)

८ **ऋ नो उ**[2]

पितृगृहम्-पिउघरं

मातृगृहम्-माउघरं

मातृष्वसा-माउसिआ

९ **ऋ नो रि**[3]

ऋद्धि-रिद्धि

ऋक्ष-रिच्छ

सदृश-सरिस

सदृक्ष-सरिक्ख

सदृक्-सरि

ऋण-रिण, अण.

ऋषभ रिसह, उसह.

(पालि भाषामां ऋ नो रि थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ३-ऋ=रि टिप्पण)

सदृश वगेरे शब्दोमां द नो लोप कर्या पछी जे ऋ शेष रहे छे तेनो रि करवानो छे.

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२६। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४०, १४१, १४२।

पैशाची भाषामां सरिस (सदृश)ने बदले सतिस रूप थाय छे. ए प्रमाणे जारिस (यादृश)ने बदले यातिस, अन्नारिस (अन्यादृश) ने बदले अन्नातिस वगेरे रूपो बने छे: हे० प्रा० व्या० ८।४।३१७।

१०

लृ नो इलि[1]

क्लृन्न	किलिन्न
क्लृप्त	किलित्त

११

ऐ नो ए[2]

शैल	सेल
कैलास	केलास
वैधव्य	वेहव्व

(पालि भाषामां ऐ नो ए थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ३–ऐ=ए)

१२

औ नो ओ[3]

कौशाम्बी	कोसंबी
यौवन	जोव्वण
कौस्तुभ	कोत्थुह

(पालि भाषामां औ ना ओ थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ५–औ=ओ)

एक अपभ्रंश[4] प्राकृतमां स्वरोनो फेरफार अनियत रीते थाय छे. एटले क्यांय आ नो अ थाय छे, क्यांय ई नो ए थाय छे, उ नो अ तथा आ थाय छे, ऋ नो अ, इ तथा उ थाय छे अने ऋ पण रहे छे, लृ नो इ पण थाय छे, ए नो इ तथा ई थाय छे अने औ नो ओ थाय छे.

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४५। २ हे० प्रा० व्या० ८।१।१४८। ३ हे० प्रा० व्या० ८।१।१५९। ४ हे० प्रा० व्या० ८।४।३२९,३३०।

आ नो अ–काच कच्चु, काच्चु अथवा काच्च.
ई नो ए–वीणा वेण, वीण, वीणा
उ नो अ तथा आ–बाहु बाह, वाहा, बाहु.
ऋ नो अ, इ, उ–पृष्ठी पट्टि, पिट्टि, पुट्टि.
तृण तणु तिणु, तृण.
सुकृत सुकिदु, सुकिद, सुकृदु.
ऌ नो इ, इलि–क्लृन्न किन्नउ, किलिन्नउ
ए नो इ, ई–लेखा }
रेखा } लिह, लीह, लेह
औ नो ओ–गौरी गोरि, गउरि.

तथा नामने कोई पण विभक्ति लाग्या पछी तेनो अंत्य स्वर ह्रस्व होय तो दीर्घ थाय छे अने दीर्घ होय तो ह्रस्व थाय छे :

धवल–ढोल्ला	(अ नो आ)	प्रथमा विभक्ति
श्यामल–सामला	,,	,,
दीर्घ दीहा	(अ नो आ)	बीजी विभक्ति
रेखा रेह	(आ नो अ)	प्रथमा विभक्ति
भणिता भणिअ	(आ नो अ)	,, ,,



स्वरना विशेष—आपवादिक–फेरफारो

अ ना फेरफार

अ नो आ[1]

अभियाति आहियाइ, अहियाइ.
दक्षिण दाहिण, दक्खिण.
प्ररोह पारोह, परोह.
प्रवचन पावयण, पवयण.

---
१. हे० प्रा० व्या० ८।१।४४, ८०, तथा ६५।

पुनः पुणा, पुण.

समृद्धि सामिद्धि, समिद्धि वगेरे.

(पालि भाषामां अ नो आ थाय छे. जुओ पा० प्र० पृ० ५२-अ=३

अ नो इ[1]

उत्तम उत्तिम

कतम कइम

मरिच मिरिअ

मध्यम मज्झिम

दत्त दिण्ण

अङ्गार इंगार, अंगार.

पक्व पिक्क, पक्क.

ललाट णिडाल, णडाल.

(पालि भाषामां अ नो इ थाय छे जुओ पा० प्र० पृ० ५२-अ=८)

अ नो ई[2]

हर हीर, हर.

अ नो उ[3]

ध्वनि झुणि

कृतज्ञ कयण्णु

(पालि भाषामां अ नो उ थाय छे जुओ पा० प्र० पृ० ५२-अ=३)

अ नो ए[4]

अत्र एत्थ

शय्या सेज्जा पालि-सेय्या.

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।४६, ४७, ४८, ४९। २. हे० प्रा० व्या० ५१। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।५२,५३,५४,५५,५६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।५७,५८,५९,६०।

वल्ली	वेल्ली
कन्दुक	गेंदुअ

(पालि भाषामां अ नो ए थाय छे. जुओ पा० प्र० पृ० ५२—अ=ए)

अ नो ओ[1]

नमस्कार	नमोक्कार
परस्पर	परोप्पर
पद्म	पोम्म
अर्पयति	ओप्पेइ, अप्पेइ
स्वपिति	सोवइ, सुवइ
अर्पित	ओप्पिअ, अप्पिअ

अ नो अइ[2]

विषमय	विसमइअ
सुखमय	सुहमइअ

अ नो आइ[3]

पुनः पुणाइ, पुणो.
न पुनः न उणाइ, न पुणो.

अ नो लोप[4]

अरण्य	रण्ण, अरण्ण.
अलाबू	लाऊ, अलाऊ.

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।६१,६२,६३,६४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।५०। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।६५। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।६६।

आ ना फेरफार

आ नो अ[1]

श्यामाक	सामअ
महाराष्ट्र	मरहट्ठ
कालक	कलअ, कालअ
कुमार	कुमर, कुमार
हालिक	हलिअ, हालिअ
प्राकृत	पयय, पायय
चामर	चमर, चामर
वा	व, वा
यथा	जह, जहा
तथा	तह, तहा
अथवा	अहव, अहवा

(पालि भाषामां आ नो अ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५२–आ→अ)

आ नो इ[2]

आचार्य	आइरिअ, आयरिअ
निशाकर	निसिअर, निसाअर

आ नो ई[3]

खल्वाट	खल्लीड
स्त्यान	ठीण थीण

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।६७।६९,७०,७१। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।७२,७३। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।७४।

आ नो उ[1]

आर्द्र	उल्ल
स्तावक	थुवअ
सास्ना	सुण्हा

आ नो ऊ[2]

आर्या	अज्जू
आसार	ऊसार, आसार

आ नो ए[3]

ग्राह्य	गेज्झ
पारापत	पारेवअ, पारावअ
द्वार	देर, दार
असहाय्य	असहेज्ज, असहज्ज
पुराकर्म	पुरेकम्म, पुराकम्म
मात्र	मेत्त

(पालि भाषामां आ नो ए थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५३—आ=ए)

आ नो ओ [4]

आर्द्र	ओल्ल, अल्ल

३ इ ना फेरफार

इ नो अ [5]

इति	इअ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।७५, ८२। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।७६, ७७। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।७८,७९,८०,८१। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।८२, ८३। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१। ९१, ८८, ८९, ९०।

तित्तिरि	तित्तिर	
पथिन्	पह	
हरिद्रा	हलद्दा	
इङ्गुद	अंगुअ,	इंगुअ
शिथिल	सढिल,	सिढिल

(पालि भाषामां इ नो अ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५ इ=अ)

इ नो ई[1]

जिह्वा	जीहा	(अवेस्ता भाषामां हिज्वा)
सिंह	सीह	
निस्सरति	नीसरइ,	निस्सरइ

इ नो उ[2]

द्वि	दु	
इक्षु	उच्छु,	इक्खु
नि	नु, णु	
युधिष्ठिर	जहुट्ठिल,	जहिट्ठिल
द्वितीय	दुइअ,	बिइअ
द्विगुण	दुउण	बिउण

(पालि भाषामां इ नो उ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५१ —इ=उ) तथा पृ० ३२ टिप्पण.

इ नो ए[3]

मिरा मेरा

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।९२, ९३। २. हे० प्रा० व्या० ८।१। ९४, ९५, ९६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१। ८७, ८६।

किंशुक   केसुअ,   किंसुअ

(पालि भाषामां इ नो ए थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५३—इ=ए)

इ नो ओ[1]

द्विवचन   दोवयण

द्विधा   दोहा,   दुहा

निर्झर   *ओज्झर,   निज्झर

(पालि भाषामां इ नो ओ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५३—इ=ओ)

4

ई ना फेरफार

ई नो अ[2]

हरीतकी   हरडई   (पालि—हरीटकी)

(पालि भाषामां ई नो अ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५३ ई=अ)

ई नो आ[3]

कश्मीर   कम्हार

ई ना इ[4]

द्वितीय   दुइय

गभीर   गहिर

व्रीडित   विलिअ

पानीय   पाणिअ,   पाणीअ

जीवति   जिवइ,   जीवइ

उपनीत   उवणिअ,   उवणीअ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१। ९७, ९४, ९८।* 'र्' नो 'ओ' थतां 'न्'-नो लोप समजवो. २. हे० प्रा० व्या० ८।१।९९। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१००। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०१।

ई नो उ[1]

जीर्ण   जुण्ण,   जिण्ण

ई नो ऊ[2]

तीर्थ   तूह,   तित्थ

हीन   हूण,   हीण

विहीन   विहूण,   विहीण

ई नो ए[3]

बिभीतक   बहेडअ

नीड   नेड,   नीड

उ ना फेरफार

उ नो अ[4]

गुडूची   गलोई

युधिष्ठिर   जहुट्ठिल

मुकुट   मउड

उपरि   अवरि,   उवरि

गुरुक   गरुअ,   गुरुअ

(पालि भाषामां उ नो अ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५।-उ=अ-मुकुल-मकुल)

उ नो इ[5]

पुरुष   पुरिस

भ्रुकुटि   भिउडि

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०२। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०३, १०४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०५, १०६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०७, १०८, १०९। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।११०, १११।

(पालि भाषामां उ नो इ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५४–उ=इ)

उ नो ई[1]

क्षुत छीअ

उ नो ऊ[2]

मुसल मूसल

सुभग सूहव, सुहअ

उ नो ओ[3]

कुतूहल कोउहल, कुऊहल

(पालि भाषामां उ नो ओ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५४–उ=ओ)

6

ऊ ना फेरफार

ऊ नो अ[4]

दुकूल — दुअल्ल, दुऊल

(पालि भाषामां ऊ नो अ थाय छे: पालि प्र० पृ० ५५–ऊ=अ)

ऊ नो इ[5]

नूपुर निउर, नूउर

ऊ नो ई[6]

उद्व्यूढ उव्वीढ, उव्वूढ

ऊ नो उ[7]

भ्रू भु

हनूमान् हणुमंत

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।११२। २. हे० प्रा० व्या० ८।१। ११३, ११५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।११७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१। ११८।११९। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२३। ६. हे० प्रा० व्या० ८।१। १२०। ७. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२१, १२२।

+कण्डूया	कंडुया
कुतूहल	कोउहल, कोऊहल
मधूक	महुअ, महूअ

ऊ नो ए[1]

नूपुर	नेउर,	नूउर

ऊ नो ओ[2]

कूर्पर	कोप्पर (पालि–कप्पर)	
गुडूची	गलोई (पालि–गोलोची)	
तूण	तोण,	तूण
स्थूणा	थोणा,	थूणा

(पालि भाषामां ऊ नो ओ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५५–ऊ=ओ)

7

ऋ ना फेरफार

ऋ नो अ[3]

कृशा	कासा, किसा
मृदुक	माउक्क, मउत्तण

ऋ नो इ[4]

उत्कृष्ट	उक्किट्ठ
ऋषि	इसि
ऋद्धि	इद्धि

(पालि भाषामां ऋ नो इ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ९–ऋ=इ)

+ 'कण्डूय' धातु पण समजवानो छे. १. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२३। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२४।१२५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२८।१२९।१३०।

शृगाल	सिआल
हृदय	हिअय
धृष्ट	धिट्ठ, धट्ठ
पृष्ठि	पिट्ठि, पट्ठि
बृहस्पति	बिहप्फइ, बहप्फइ
मातृष्वसृ	माइसिआ, माउसिआ
मृगाङ्क	मियंक, मयंक

पैशाची[1] भाषामां हृदय ने बदले हितप रूप बने छे: हृदय-हितप. हृदयक-हितपक.

ऋ नो उ [2]

भ्रातृ	भाउ	
वृद्ध	वुड्ढ	
वृद्धि	वुड्ढि	
पितृ	पिउ	
पृथिवी	पुहई	
मृषा	मुसा,	मोसा
वृषभ	उसह,	वसह
बृहस्पति	बुहप्फइ,	बहप्फइ

(पालि भाषामां ऋ नो उ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० २-ऋ=उ)

ऋ नो ऊ [3]

मृषा	मूसा,	मुसा

ऋ नो ए [4]

वृन्त	वेंट,	विंट

(पालि भाषामां ऋ नो ए थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ३-ऋ=ए)

---

१ हे० प्रा० व्या० ८।४।३१०। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३१, २,१३३,१३५,१३६,१३७,१३८। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३६। . हे० प्रा० व्या० ८।१।१३९।

ऋ नो ओ[1]

मृषा मोसा, मुसा

वृन्त वोंट विंट

ऋ नो अरि[2]

दृप्त दरिअ

दृ नो ढि[3]

आदृत *आडिअ

8 ए ना फेरफार

ए नो इ[4]

वेदना विअणा

देवर दिअर

ए नो ऊ[5]

स्तेन थूण, थेण

(पालि भाषामां कोई शब्दमां ए नो ओ थाय छे. द्वेष-दोष. जुओ पालि प्र० पृ० ५५-ए=ओ)

9 ऐ ना फेरफार

ऐ नो अअ[6]

उच्चैस् उच्चअ

नीचैस् नीचअ

ऐ नो इ[7]

शनैश्चर सणिच्छर

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३६,१३१। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४३। * आरिअ-आडिअ-आढिअ (आदृत) आम रूपनो विकास होवो जोईए (?) ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४६। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४७। ६. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५४। ७. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४९।१५०।

सैन्धव सिंधव
सैन्य सिन्न, सेन्न

(पालि भाषामां ऐ नो इ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ४—ऐ=इ)

ऐ नो ई[1]

धैर्य धीर
चैत्यवन्दन चीवंदण, चेइयवंदण

(पालि भाषामां ऐ नो ई थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ४—ऐ=ई)

ऐ नो अइ[2]

चैत्र चइत्त, चेत्त
वैशम्पायन वइसंपायण वेसंपायण
कैलास कइलास, केलास
वैर वइर, वेर
दैव दइव्व देव्व

10

ओ ना फेरफार

ओ नो अ[3]

अन्योन्य अन्नन्न, अन्नुन्न
आतोद्य आवज्ज आउज्ज
मनोहर मणहर, मणोहर

ओ नो ऊ[4]

सोच्छ्वास सूसास

ओ नो अउ, आअ[5]

गोक गउअ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५५। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५१।१५२।१५३। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१। १५७। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५८।

गो	गउ	
गो	गाअ, गाई	(नारी जाति)

11

औ ना फेरफार

औ नो अउ[1]

पौर	पउर
मौन	मउण
गौरव	गउरव
गौड	गउड
कौरव	कउरव

औ नो आ[2]

गौरव	गारव, गउरव

(पालि भाषामां औ नो आ थाय छे. जुओ पालि प्र० ५.-औ=आ)

(पालि भाषामां कोई कोई शब्दमां औ नो अ पण थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५ टिप्पण.)

औ नो उ[3]

शौद्धोदनि	सुद्धोअणि	
सौवर्णिक	सुवण्णिअ	
दौवारिक	दुवारिअ	
सौन्दर्य	सुन्देर	
कौक्षेयक	कुच्छेअय,	कोच्छेअय

(पालि भाषामां औ नो उ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५ —औ=उ)

औ नो आव[4]

नौ	नावा
गौ	गावी

---

1. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६२। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६३। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६०,१६१। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६४।

व्यंजनना फेरफार

अंत्य व्यंजन, असंयुक्त व्यंजन अथवा बे स्वरोनी वच्चे रहेला व्यंजनना सामान्य फेरफार :

१ लोप

(क) शब्दना अन्त्य व्यंजननो लोप थई जाय[1] छेः

तमस्	तम
तावत्	ताव
अन्तर्गत	अंतरगय
पुनर्	पुण
अन्तर् उपरि	अन्तोवरि

(पालि भाषामां पण शब्दना अन्त्य व्यंजननो लोप थाय छेः विद्युत् विज्जु. जुओ पालि प्र० पृ० ६ नियम ७)

(ख) बे स्वरोनी वच्चे आवेलो क, ग, च, ज, त, द, प, य, य अने व लोप पामे छेः[2]

लोक	लोअ	मदन	मयण
नगर	नयर	रिपु	रिउ
शची	सई	विबुध	विउह
गज	गअ	वियोग	विओग
रसातल	रसायल	वडवानल	वलयाणल

ज्यां लोप थतां अर्थनो भ्रम थवानो संभव लागे त्यां लोप न करवोः सुकुसुम, प्रयाग, सुगत, सचाप, व्यजन, सुतार, विदुर, सपाप, समवाय, देव, दानव वगेरे.

पालि, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची अने अपभ्रंश भाषाओमां आ नियमना अपवादो छे. ते हवे पछी यथास्थान सूचवाशे.

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।११। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१७७।

(ख) ना अपवादो

—आ लोपनो नियम तथा आ प्रकरणमां आवनारा अने ज्यां क्यांई सूचन न कर्युं होय एवा बीजा सामान्य अने विशेष नियमो पैशाची भाषामां लागता नथी.[१]

पैशाची	प्राकृत
मकरकेतु	मयरकेउ
सगरपुत्तवचन	सयरपुत्तवयण
विजयसेन	विजयसेण
लपित	लविअ
पाप	पाव
आयुध	आउह वगेरे

—शौरसेनीमां बे स्वरोनी वच्चे रहेला त नो द थाय [२]छे:

सं०	शौ०	प्रा०
कथित	कधिद	कहिअ
ततः	तदो	तओ
प्रतिज्ञा	पदिण्णा	पइण्णा
मन्त्रित	मंतिद	मंतिअ

—शौरसेनीमां ज जे जे फेरफारो बतावेल छे ते बधा ज्यां अपवाद न होय त्यां मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची अने अपभ्रंशमां पण समजवा.[३]

(पालि भाषामां त नो द थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५९-त=द)

—मागधी भाषामां ज नो य थाय छे.[४]

सं०	मा०	प्रा०
जनपद	यणवद	जणवअ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२४। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६०। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०२, ३२३, ४४६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९२।

जानाति	याणदि	जाणइ
गर्जित	गय्यिद	गज्जिअ

(पालि भाषामां ज नो य थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५७-ज=य)

-पैशाची भाषामां अने चूलिका-पैशाची भाषामां त कायम रहे छे अने द नो पण त थाय[1] छे:

सं०	चू०पै०	प्रा०
भगवती	भगवती	भगवई
मदन	मतन	मयण
कन्दर्प	कंतप्प	कंदप्प
दामोदर	तामोतर	दामोअर

(पालि भाषामां द नो त थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ६०-द=त)

-चूलिका-पैशाची भाषामां ग नो क थाय छे, ज नो च थाय छे अने ब नो प थाय[2] छे:

सं०	पै०	चू०पै०	प्रा०
गिरितट	गिरितट	किरितट	गिरितट
नगर	नगर	नकर	नगर, नयर
नाग	नाग	नाक	नाग, नाय
जीमूत	जीमूत	चीमूत	जीमूअ
जर्जर	जज्जर	चच्चर	जज्जर
राजा	राजा	राचा	राया
बालक	बालक	पालक	बालअ
बर्बर	बब्बर	पप्पर	बब्बर
बान्धव	बंधव	पंधव	बंधव

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०७,३२५। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२५।

-केटलाक वैयाकरणो एम माने छे के चूलिका-पैशाची भाषामां आदिमां आवेला ग नो क थतो नथी, ज नो च थतो नथी तेमज आदिमां आवेला ब नो प थतो नथी तथा 'युज' धातुना ज नो पण च थतो नथी.[1]

सं०	पै०	चू०पै०	प्रा०	हेमचन्द्र चू०पै०
गति	गति	गति	गइ	कति
गिरि	गिरि	गिरि	गिरि	किरि
जीमूत	जीमूत	जीमूत	जीमूअ	चीमूत
बालक	बालक	बालक	बालअ	पालअ
नियोजित	नियोजित	नियोजित	नियोजिअ	नियोचित

(पालि भाषामां ग नो क तथा ज नो च थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५६ ग=क तथा ज=च)

-अपभ्रंश भाषामां कोक कोक प्रयोगमां क नो ग थाय[2] छे:

सं०	अप०	प्रा०
विक्षोभकर	विच्छोहगर	विच्छोहयर.

(पालि भाषामां क नो ग थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५५-क=ग)

अंत्यव्यंजननो अ

२ केटलाक शब्दोमां अन्त्य व्यंजननो अ थाय[3] छे:

शरत् सरअ. भिषज् भिसअ (पालि—भिसक्क)

अंदरना व्यंजननो य

३ जेनी पूर्वमां अ के आ आवेला छे अने अंतमां पण अ के आ आवेला छे एवा क ग वगेरेनो [4]लोप कर्या पछी बाकी रहेला अ नो य करवो अने बाकी रहेला आ नो या[5] करवो:

1. हे० प्रा० व्या० ८।४। ३२७। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८। ४. जुओ लोप (प) ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८०।

तीर्थंकर	तित्थयर		पाताल	पायाल
नगर	नयर		गदा	गया
कचग्रह	कयग्गह		नयन	नयण
प्रजा	पया		लावण्य	लायण्ण

(पालि भाषामां क नो अने ज नो पण य थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५६, ५७ क=य तथा ज=य)

४ बे स्वरोनी वच्चे आवेला ख, घ, थ, ध अने भ नो ह थाय छे:१ मुख मुह । मेघ मेह । कथा कहा । साधु साहु । सभा सहा ।

अपवाद

–शौरसेनी भाषामां थ नो ह थाय छे अने ध पण थाय२ छे;

सं०	शौ०		प्रा०
नाथ	नाध,	नाह.	नाह
राजपथ	राजपध,	राजपह.	राजपह

(पालि भाषामां घ, ध अने भ नो ह थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५६ घ=ह पृ० ६० ध=ह पृ० ६२ भ=ह)

–चूलिका–पैशाची भाषामां घ नो ख, झ नो छ, ट नो ट, ढ नो ठ, ध नो थ अने भ नो फ थाय३ छे:

सं०	चू०पै०	पै०	प्रा०
४धर्म	खम्म	घम्म	घम्म
मेघ	मेख	मेघ	मेह
व्याघ्र	वक्ख	वग्घ	वग्घ
झर्झर	छच्छर	झज्झर	झज्झर

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८७। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६७। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२५। ४. ज्यां ज्यां उदाहरणो आपेलां छे त्यां आदिम शब्द संस्कृत छे अने छेल्लो शब्द प्राकृत छे.

निर्झर	निच्छर	निज्झर	निज्झर
प्रतिमा	पटिमा	पतिमा	पडिमा
तडाग	तटाक	तडाग	तडाय
मण्डल	मंटल	मंडल	मंडल
डमरुक	टमरुक	डमरुक	डमरुअ
गाढ	काठ	गाढ	गाढ
षण्ड	संठ	संढ	संढ
ढक्का	ठक्का	ढक्का	ढक्का
मधुर	मथुर	मधुर	महुर
धूलि	थूलि	धूलि	धूलि
बान्धव	पंथव	बंधव	बंधव
रभस	रफस	रभस	रहस
रम्भा	रम्फा	रंभा	रंभा
भगवती	फकवती	भगवती	भगवई

(पालि भाषामां ब नो प थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ६२ ब=प)

५ बे स्वरोनी वच्चे आवेला ट नो ड थाय[1] छे:

घट घड। घटते घडइ। नट नड। भट भड।

(पालि भाषामां ट नो ड थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५८ ट=ड)

पैशाची भाषामां डु नो तु पण थाय[2] छे.

सं.	पै.		प्रा.
कुटुम्ब	कुतुंब,	कुटुंब	कुडुंब
कटुक	कतुक,	कटुक	कडुअ
पटु	पतु,	पटु	पडु

[1] हे० प्रा० व्या० ८।१।१९५। [2] हे० प्रा० व्या० ८।४।३११।

६ बे स्वरोनी वच्चे आवेला ठ नो ढ थाय छे[1]:

मठ मढ। कुठार कुढार। पठति पढइ।

७ बे स्वरोनी वच्चे आवेला ड नो ल थाय[2] छे:

तडाग तलाय। गरुड गरुल। क्रीडति कीलइ।

(पालि भाषामां ड नो ळ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ४३ ड=ळ)

(पालि भाषामां ण नो न थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५८ ण=न)

८ बे स्वरोनी वच्चे आवेला न नो ण थाय छे अने शब्दनी आदिमां रहेला न नो ण विकल्पे थाय[3] छे:

कनक कणय। वचन वयण। वदन वयण।
नदी णई, नई। नर णर, नर। नयति णेइ, नेइ।

(पालि भाषामां न नो ण थाय छे जुओ पालि प्र० पृ० ६१ न=ण)

पैशाची भाषामां ण नो न थाय[4] छे:

गुण गुन गुण
गण गन गण

९ अ थी अथवा आ थी पछी आवेला प नो[5] व ज थाय[6] छे:

कपिल कविल। कपाल कवाल। तपति तवइ।
ताप ताव। पाप पाव। शाप साव।

१० बे स्वरोनी वच्चे आवेला प नो व थाय[7] छे:

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९९। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२०२। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२२८, २२९। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०६। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१ १७९। ६. लोप (ख) नो अपवाद छे. ७. हे०प्रा० व्या० ८।१।२३१।

उपसर्ग उवसग्ग । उपमा उवमा । गोपति गोवइ ।
प्रदीप पईव । महिपाल महिवाल ।

(पालि भाषामां प नो व थाय छेः जुओ पालि प्र० पृ० ६१ प=व)

अपभ्रंश भाषामां प नो व पण थाय[1] छेः

शपथ सवधु सवधु. सवह ।

११ प्राकृत अने अपभ्रंश भाषामां बे स्वरोनी वच्चे आवेला फ नो भ अथवा ह थाय[2] छेः

रेफ रेभ, रेह। शिफा सिभा, सिहा । मुक्ताफल मुत्ताहल ।
शफरी सभरी, सहरी । सफल सभल, सहल ।

१२ बे स्वरोनी वच्चे आवेला ब नो व थाय[3] छेः

शबल सवल । अलाबू अलावू (पालि अलापू)

(पालि भाषामां ब नो व थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ६२ ब=व)

अपभ्रंश भाषामां व ने बदले वँ पण बोलाय[4] छे :

कमल	कवँल,	कमल	कमल
भ्रमर	भवँर	भमर	भमर
यथा	जिवँ	जिम	जह, जहा
कुमार	कुवँर	कुमर	कुमर, कुमार
तथा	तिवँ	तिम	तह, तहा,

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९६। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३६। तथा ८।४।३९६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९७।

१३ शब्दनी आदिना य ने बदले ज बोलाय१ छे:

यज्ञ जन्न । यशस् जसो । याति जाइ । यम जम । यथा जहा ।

(पालि भाषामां य नो ज थाय छे: गवय गवज, जुओ पालिप्र० पृ० ६२)

मागधी भाषामां य नो य ज रहे२ छे:

याति	यादि	जाइ
यथा	यधा	यथा
यान	याण	जाण

मागधी भाषामां र ने बदले ल थाय३ छे:

कर	कल	कर
विचार	विआल	विआर
नर	नल	नर

चूलिका पैशाचीमां र ने बदले विकल्पे ल बोलाय४ छे:

हर हल, हर. हर

पैशाची भाषामां ल ने बदले ळ बोलाय५ छे:

कमल	कमळ	कमल
कुल	कुळ	कुल
शील	सीळ	सील

वैदिक भाषामां ड ने बदले ळ बोलाय छे:

" अग्निमीळे पुरोहितम् " ऋग्वेदनो प्रारंभ.

(पालि भाषामां ड नो ळ थाय छे. जुओ पालि प्रा० पृ० ४३ ड=ळ)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४५। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९२। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२८८। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२६। ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०८।

१४ मागधी सिवायनी प्राकृत भाषामां श ने अने ष ने बदले स बोलाय[1] छेः

कुश कुस । दश दस । विंशति-विसइ । शब्द सद्द । शोभा सोहा । कषाय कसाय । घोष घोस । निकष निकस । षण्ड संड । पौष पोस । विशेष विसेस । शेष सेस । निःशेष नीसेस ।

मागधी भाषामां श ने अने ष ने तथा स ने बदले एकलो श बोलाय[2] छेः

शोभन शोभण सोहण । श्रुत शुद सुअ । सारस शालश सारस । हंस हंश हंस । पुरुष पुलिश पुरिस ।

१५ जो हकार अनुस्वारथी पछी आवेलो होय तो तेने बदले घ पण बोलाय[3] छेः

सिंह सिंघ, सीह । संहार संघार, संहार ।

(जे नियमो सामान्य प्राकृतमां जणावेला छे ते बधा ज नियमो शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका पैशाची अने अपभ्रंश भाषामां पण लागु पडे छे सिवाय के कोई अपवाद न होय त्यां. जेमके, १४मो नियम शौरसेनीमां, पैशाचीमां, चूलिका पैशाचीमां अने अपभ्रंशमां पण प्रवर्ते छे.

———

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६०। तथा ८।४।३०८ २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२८८, ३०९। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६४ ।

शब्दनी अंदर रहेला असंयुक्त एवा व्यंजनना +विशेष फेरफारो

1 ## १क ना फेरफार

क नो ख — कर्पर खप्पर । कील खील । कीलक खीलअ । कुब्ज खुज्ज । (खुज्ज एटले कूबडो)

क नो ग — अमुक अमुग । असुक असुग । आकर्ष आगरिस । आकार आगार । उपासक उवासग । एक एग । एकत्व एगत्त । कन्दुक गेन्दुअ । तीर्थंकर तित्थगर । दुकूल दुगुल्ल । मदकल मयगल । मरकत मरगय । श्रावक सावग । लोक लोग ।

क नो च — किरात चिलाअ (चिलाअ एटले भिल्ल)

क नो भ — शीकर सीभर, सीअर ।

क नो म — चन्द्रिका चंदिमा ।

क नो य — प्रकोष्ठ पवट्ठ, पउट्ठ ।

क नो ह — चिकुर चिहुर । निकष निहस । स्फटिक फलिह । शीकर सीहर, सीअर ।

(पालि भाषामां क नो ख तथा क नो ग थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५५ क=ख तथा क=ग)

+ज्यां विशेष फेरफार थाय छे त्यां सामान्य फेरफार न ज थाय एम नथी. जेमके; तीर्थंकर–तित्थअर–तित्थयर । लोक लोअ वगेरे । जुओ सामान्य नियम २ (ख) तथा ३ । १. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८१,१८२, १८३,१८४,१८५,१८६।

2 ## [१]ख ना फेरफार

ख नो क — शृङ्खला संकला । शृङ्खल संकल ।

3 ## [२]ग ना फेरफार

ग नो म — भागिनी भामिणी । पुंनाग पुंनाम ।

ग नो ल — छाग छाल । छागी छाली ।

ग नो व — सुभग सूहव, सुहअ । दुर्भग दूहव, दुहअ ।

4 ## [३]च ना फेरफार

च नो ज — पिशाची पिसाजी, पिसाई

च नो ट — आकुञ्चन आउंटण

च नो ल्ल — पिशाच पिसल्ल, पिसाअ

च नो स — खचित खसिअ, खइअ

5 ## [४]ज ना फेरफार

ज नो झ — जटिल झडिल, जडिल

6 ## [५]ट ना फेरफार

ट नो ढ — कैटभ केढव । शकट सयढ । सटा सढा ।

ट नो ल — स्फटिक फलिह×

चपेटा चविला, चविडा

+पाटयति फालेइ फाडेइ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८९। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९०, १९१,१९२। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९३। हे० प्रा० व्या० ८।१।१७७ वृत्ति। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९४। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९६,१९७,१९८। × जुओ क ना फेरफार। + अहीं पट् धातु समजवानो छे एटले ए धातुनां तमाम रूपोमां आ नियम लगाडवो.

(पालि भाषामां ट नो ल तथा ळ पण थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५८ ट=ल ट=ळ)

7 [1]ठ ना फेरफार

ठ नो ल्ल	अङ्कोठ	अंकोल्ल	
ठ नो ढ	पिठर	पिहड,	पिढ°र

8 [2]ण ना फेरफार

ण नो ल वेणु वेलु, वेणु । वेलुग्गाम, वेणुग्गाम

(पालि भाषामां ण नो ळ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५८ ण=ळ)

9 [3]त ना फेरफार

त नो च	तुच्छ	चुच्छ,	तुच्छ
त नो छ	तुच्छ	छुच्छ,	तुच्छ
त नो ट	तगर	टगर	
	तूवर	टूवर	
	त्रसर	टसर	

(पालि भाषामां त नो ट थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ५८त=ट)

त नो ड	पताका	पडाया
	प्रति	पडि (पालि–पटि)
	÷प्रतिमा	पडिमा
	प्रतिपत्	पडिवया
	प्रतिहार	पडिहार

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२००,२०१। °जुओ नि० ६ टनो सामान्य फेरफार. २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२०३। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१। २०४,२०५,२०६,२०७,२०८,२१०, २११, २१२, २१३, २१४, १५६ ।

÷ जे शब्दने प्रति लागेलो होय ते तमाम शब्दोमां आ नियम लगाडवो: प्रतिपत्ति पडिवत्ति वगेरे ।

प्रभृति पहुडि । प्राभृत पाहुड । बिभीतक बहेडअ । मृतक मडअ । व्यापृत वावड । सूत्रकृत सुत्तगड, सूअगड । हरीतकी हरडई । अपहृत ओहड, ओहय । अवहृत अवहड, अवहय । आहृत आहड आहय । कृत कड, कय । दुष्कृत दुक्कड, दुक्कय । मृत मड, मय । वेतस वेडिस, वेअस । सुकृत सुकड, सुकय । हृत हड, हय ।

त नो ण — अतिमुक्तक अणिउँतय । गर्भित गब्भिण ।

त नो र — सप्तति सत्तर

त नो ल — अतसी अलसी । सातवाहन सालाहण । सातवाहनी सालाहणी । पलित पलिल, पलिअ ।

त नो व — आतोद्य आवज्ज, आउज्ज
पीतल पीवल, पीअल

त नो ह — वितस्ति विहत्थि (पालि विदत्थि जुओ पालि प्र० पृ० ५१ तनार)

कातर काहल, कायर
भरत भरह भरय
मातुलिङ्ग माहुलिंग, माउलिंग
वसति वसहि, वसइ

10 — १थ ना फेरफार

थ नो ढ — प्रथम पढम । मेथि मेढि । शिथिल सिढिल । निशीथ निसीढ निसीह । पृथिवी पुढवी पुहवी (पालि पठवी जुओ पालि प्र० पृ० ५१ थनार)

थ नो ध — पृथक् पिध, पिह ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१५।२१६।१८८।

11 [1]द ना फेरफार

द नो ड ÷दंश् डंस्। दह् डह्। कदन कडण कयण। दग्ध डड्ढ दड्ढ। दण्ड डंड दंड। दम्भ डंभ दंभ। दर्भ डब्भ दब्भ। दष्ट डट्ठ दट्ठ वगेरे।

(पालि भाषामां द नो ड थाय छे जुओ पालि प्र० पृ० ५९ द=ड)

दित नो ण्ण रुदित रुण्ण

द नो ध ÷दीप् धीप् दीप्

द नो र एकादश एआरह। द्वादश बारह। *त्रयोदश तेरह।

कदली करली। कदलीनो अहीं 'केळ'ना वृक्षनो अर्थ नथी। गद्गद् गग्गर।

द नो ल प्रदीप पलीव। दोहद दोहल कदम्ब कलंब, कयंब

(पालि भाषामां द नो ल थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ६० द=ळ)

द नो व कदर्थित कवट्टिअ

द नो ह ककुद कउह

12 [2]ध ना फेरफार

ध नो ढ निषध निसढ। औषध ओसढ ओसह।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१८।२१७।२०९।२२३।२१९।२२०। २२१।२२२।२२४।२२५। ÷आ निशानवाळा शब्दोने धातुओ समजवा. ए धातुओनां तमाम रूपोमां आ नियम लगाडवो. *अहीं दकारवाळा संख्यावाचक तमाम शब्दो समजवा. २. हे० प्रा० व्या० ८।१। २२६,२२७।

प्रभृति पहुडि। प्राभृत पाहुड। बिभीतक बहेडअ। मृतक मडय। व्यापृत वावड। सूत्रकृत सुत्तगड, सूअगड। हरीतकी हरडई। अपहृत ओहड, ओहय। अवहृत अवहड, अवहय। आहृत आहड आहय। कृत कड, कय। दुष्कृत दुक्कड, दुक्कय। मृत मड, मय। वेतस वेडिस, वेअस। सुकृत सुकड, सुकय। हृत हड, हय।

त नो ण	अतिमुक्तक अणिउँतय। गर्भित गब्भिण।		
त नो र	सप्तति सत्तर		
त नो ल	अतसी अलसी। सातवाहन सालाहण। सातवाहनी सालाहणी। पलित पलिल, पलिअ।		
त नो व	आतोद्य	आवज्ज,	आउज्ज
	पीतल	पीवल,	पीअल
त नो ह	वितस्ति विहत्थि (पालि विदत्थि जुओ पालि प्र० पृ० ५९ त=द)		
	कातर	काहल,	कायर
	भरत	भरह	भरय
	मातुलिङ्ग	माहुलिंग,	माउलिंग
	वसति	वसहि,	वसइ

10

[1]थ ना फेरफार

थ नो ढ — प्रथम पढम। मेथि मेढि। शिथिल सिढिल। निशीथ निसीढ निसीह। पृथिवी पुढवी पुहवी (पालि पठवी जुओ पालि प्र० पृ० ५९ थ=ठ)

थ नो ध — पृथक् पिध, पिह।

1. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१५।२१६।१८८।

11 [1]द ना फेरफार

द नो ड ÷दंश् डंस् । दह् डह् । कदन कडण कयण । दग्ध डड्ढ दड्ढ । दण्ड डंड दंड । दम्भ डंभ दंभ । दर्भ डब्भ दब्भ । दष्ट डट्ठ दट्ठ वगेरे ।

(पालि भाषामां द नो ड थाय छे जुओ पालि प्र० पृ० ५९ द=ड)

दित नो ण्ण रुदित रुण्ण

द नो ध ÷दीप् धीप् दीप्

द नो र एकादश एआरह । द्वादश बारह । *त्रयोदश तेरह ।

कदली करली । कदलीनो अहीं 'केळ'ना वृक्षनो अर्थ नथी । गद्गद् गग्गर ।

द नो ल प्रदीप पलीव । दोहद दोहल कदम्ब कलंब, कयंब

(पालि भाषामां द नो ल थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ६० द=ळ)

द नो व कदर्थित कवट्टिअ

द नो ह ककुद कउह

12 [2]ध ना फेरफार

ध नो ढ निषध निसढ । औषध ओसढ ओसह ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१८।२१७।२०९।२२३।२१९।२२०। २२१।२२२।२२४।२२५। ÷आ निशानवाळा शब्दोने धातुओ समजवा. ए धातुओनां तमाम रूपोमां आ नियम लगाडवो. *अहीं दकारवाळा संख्यावाचक तमाम शब्दो समजवा. २. हे० प्रा० व्या० ८।१। २२६,२२७।

13

[1]न ना फेरफार

न नो ण्ह नापित ण्हाविअ, नाविअ

न नो ल निम्ब लिंब, निंब

पालि भाषामां न नो ल थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ६१ न=ल

14

[2]प ना फेरफार

प नो फ पनस फणस

√पाट् (धातु) फाड्

पाटयति फाडेइ

पाटयित्वा फाडेऊण

परुष फरूस

परिखा फलिहा

(पालि भाषामां प नो फ थाय छे जुओ पालि प्र० पृ० ४० प=फ

प नो म आपीड आमेल, आवेड

नीप नीम, नीव

प नो व प्रभूत बहुत्त

प नो र पापर्द्धि पारद्धि

15

[3]ब ना फेरफार

ब नो भ बिसिनी भिसिणी

(पालि भाषामां ब नो भ थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ६२ ब=भ

ब नो म कबन्ध कमंध, कयंध

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३०। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३२, २३४,२३३,२३५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३८,२३९।

16 ## [1]भ ना फेरफार

भ नो व	कैटभ	केढव

17 ## [2]म ना फेरफार

म नो ढ	विषम	विसढ,	विसम
म नो व	मन्मथ	वम्मह	
	अभिमन्यु	अहिवन्नु,	अभिमन्नु
म नो स	भ्रमर	भसल	भमर
म नो अनुनासिक	अतिमुक्तक	अणिउँतय	
	कामुक	काउँअ	
	चामुण्डा	चाउँडा	
	यमुना	जउँणा	

18 ## [3]य ना फेरफार

य नो आह	कतिपय	कइवाह

(पालि भाषामां कतिपयाह शब्दनुं कतिपाह रूप थाय छेः जुओ पा० प्र० पृ० ६२ नि० ९४)

य नो ज्ज	उत्तरीय	उत्तरिज्ज,	उत्तरीअ
	तृतीय	तइज्ज,	तइअ
	द्वितीय	बिइज्ज,	बीअ
	करणीय	करणिज्ज,	करणीअ
	पेया	पेज्जा	पेज्ञा

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१। २४०। २. हे० प्रा० व्या० ८।१। २४१, २४२, २४३, २४४, १७८। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१। २५०,२४८, २४६, २४७, २५०, २४९।

य नो त	युष्मद्	तुम्ह
	युष्मदीय	तुम्हकेर
	युष्मादृश	तुम्हारिस

य नो र	स्नायु	ण्हारु

(पालि भाषामां य नो र थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ४७ स्नायु=सिनेरु)

य नो ल	यष्टि	लट्ठि

(पालि भाषामां य नो ल थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ६३ य=ल).

य नो व	कतिपय	कइअव

(पालि भाषामां य नो व थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ६३ य=व)

य नो ह	छाया, छाया. छाही एटले वृक्षनी छाया-छांयो अने छाया एटले वृक्षनो छांयो तथा शरीरनी कांति,

19

१र ना फेरफार

र नो ड	किरि	किडि
	पिठर	पिहड	पिढर
	मेर	मेड

र नो डा	पर्याण	पडायाण,	पल्लाण

र नो ण	करवीर	कणवीर

र नो ल	अङ्गार	इंगाल
	करुण	कलुण
	चरण	चलण
	दरिद्र	दलिद्द
	परिघ	फलिह

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५१, २५२, २५३, २५४, २५५।

भ्रमर	भसल	भमर
मुखर	मुहल	
युधिष्ठिर	जहुट्ठिल	
रुग्ण	लुक्क	
वरुण	वलुण	
स्थूर	थूल	थोर
हरिद्रा	हलिद्दा	इत्यादि
जठर	जढल	जढर
बठर	बढल	बढर
निष्ठुर	निट्ठुल	निट्ठुर

20

[1]ल ना फेरफार

ल नो ण   ललाट   णलाड, णिलाड (पालि नलाट)
लाङ्गल   णंगल, लंगल (पालि नांगल)
लाङ्गूल   णंगूल, लंगूल
लाहल   णाहल   लाहल
(पालिमां ल नो न थाय छे जुओ पालि प्र० पृ० ६३ लन्न)
ल नो र   स्थूल   थोर

1

[2]व ना फेरफार

व नो भ   विह्वल   भिब्भल, बिब्भल, विहल
व नो म   शबर   समर
नीवी   नीमी, नीवी
स्वप्न   सिमिण   सुमिण, सिविण

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५७, २५६. २५५। २. हे० प्रा०
० ८।२।५८। हे० प्रा० व्या० ८।१।२५८, २५९।

संयुक्त व्यंजनोना सामान्य फेरफारो

१ (पूर्ववर्ती व्यंजननो लोप)

क् ग् ट् ड् त् द् प् श् ष् अने स् आ व्यंजनो कोई पण संयुक्त व्यंजनमां पूर्ववर्ती होय तो तेमनो लोप थाय छे[1] अने लोप थया पछी जे व्यंजन बाकी रहे ते जो आदिमां न होय तो ज डबल[2] थई जाय छे अने डबल थयेलो अक्षर ख्ख, छ्छ, ठ्ठ, थ्थ, अने फ्फ होय तो तेने बदले अनुक्रमे क्ख, च्छ, ट्ठ, त्थ, अने प्फ बोलाय छे तथा डबल थयेलो अक्षर घ्घ, झ्झ, ढ्ढ, ध्ध तथा भ्भ होय तो तेने बदले अनुक्रमे ग्घ, ज्झ, ड्ढ, द्ध, तथा ब्भ बोलाय छे:[3]

क भुक्त–भुत–भुत्त । मुक्त–मुत–मुत्त । शक्त–सत–सत्त । सिक्थ–सिथ सिथ्थ–सित्थ ।

ग दुग्ध–दुध–दुध्ध–दुद्ध । मुग्ध–मुध–मुध्ध–मुद्ध ।

ट षट्पद–छपअ–छप्पअ । कट्फल–कफल–कप्फल ।

ड खड्ग–खग–खग्ग । षड्ज–सज–सज्ज ।

त उत्पल–उपल–उप्पल । उत्पाद–उपाअ–उप्पाअ । धात्री–धारी[4] ।

द मुद्गर–मुगर–मुग्गर । मुद्ग–मुग–मुग्ग ।

प गुप्त–गुत–गुत्त । सुप्त–सुत–सुत्त ।

श निश्चल–निचल–निच्चल (पालि–निच्चल)। श्मशान–मसाण। श्च्योतति–चुअइ । श्मश्रु–मस्सु ।

ष निष्ठुर–निठुर–निठ्ठुर–निट्ठुर । शुष्क–सुक–सुक्क । षष्ठ–छठ–छठ्ठ–छट्ठ ।

स निस्पृह–निपह–निप्पह । स्तव—तव । स्नेह—नेह । स्कन्द–कंद ।

(पालि भाषामां क्त नो त्त, क्थ नो त्थ, ट्प नो प्प, द्ग नो ग्ग, प्त नो प्प, श्छ नो च्छ, ष्ट नो ट्ट, ष्ठ नो ट्ठ, ष्क नो क्क, ष्प नो

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।७७। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।८९।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।९०। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।८१।

प्प, स्ख नो क्ख, स्क नो क्क, स्प नो प्प, स्थ नो थ, स्व नो त्थ तथा स्म नो स्स थाय छे. जुओ पालि प्र० पृ० ४१, २४ (नि० ३०) २५, (नि० ३१) ४१, ३८, ५१ श्मश्रु-मस्सु, २६ (नि० ३२), ३७ (नि० ४५) ३९, (नि० ४८), ३७, शुष्क्-सुक्ख, ३९, ३७, ३९ (नि० ४८) २८, ३६, स्कन्द-खंद, खंध)

परवर्ती व्यंजननो लोप

म न अने य आ व्यंजनो कोई पण संयुक्त व्यंजनमां परवर्ती होय तो तेनो लोप[1] थाय छे अने लोप थया पछी जे व्यंजन बाकी रहे ते जो आदिमां न होय तो ज डबल थई जाय छे:

म युग्म-जुग-जुग्ग । स्मर-सर । रश्मि-रसि-रस्सि । स्मेर-सेर ।

न नग्न-नग-नग्ग । लग्न-लग-लग्ग । धृष्टद्युम्न-धट्ठज्जुण (अहीं ण डबल थतो नथी.)

य कुड्य-कुड-कुड्ड । व्याध-वाह । श्यामा-सामा । चैत्य-चइत्तं, चेइअं ।

(पालि भाषामां न ना तथा य ना लोप माटे जूओ पालि प्र० पृ० ५० तथा पृ० ४८ (नि० ६६) पृ० २१ (नि० २५)

पूर्ववर्ती तथा परवर्ती व्यंजननो लोप

ब, व, र, ल, तथा विसर्ग आ व्यंजनो कोई पण संयुक्त व्यंजनमां पूर्ववर्ती होय के परवर्ती होय तेनो लोप[2] थाय छे अने लोप थया पछी जे व्यंजन बाकी रहे ते जो आदिमां न होय तो ज डबल थई जाय छे:

पूर्ववर्ती ब अब्द-अद-अद्द । शब्द-सद-सद्द । स्तम्प-थप-थप्प-पद्द ।
लुब्धक-लुधअ-लुध्धअ-लोद्धअ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।७८। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।७९।

परवर्ती व ध्वस्त–धत्थ । पक्व–पिक्क । ध्वज–धअ । क्ष्वेटक–खेडअ । क्ष्वोटक–खोडअ ।

पूर्ववर्ती र अर्क–अक–अक्क । वर्ग–वग–वग्ग । दीर्घ–दिघ–दिग्घ–दिग्ग । वर्ता–वता–वत्ता, । सामर्थ्य–सामथ–सामथ्थ–सामत्थ ।

परवर्ती र क्रिया–किया । ग्रह–गह । चक्र–चक–चक्क । रात्रि–रति–रत्ति । धात्री–धती–धत्ती । धात्री–धाती–धाई[1] ।

पूर्ववर्ती ल उल्का–उका–उक्का । वल्कल–वकल–वक्कल ।

परवर्ती ल विक्लव–विकव–विक्कव । श्लक्ष्ण–सण्ह ।

विसर्ग दुःखित–दुखिअ–दुख्खिअ–दुक्खिअ । दुःसह–दुसह–दुस्सह । निःसह–निसह–निस्सह । निःसरइ–निसरइ–निस्सरइ ।

सूचना–ज्यां पूर्ववर्ती अने परवर्ती एम बन्ने जातना व्यंजननो लोप थवानो प्रसंग आवतो होय त्यां प्रयोगोने ध्यानमां राखीने लोपनुं विधान करवुं उचित छेः

उद्विग्न, द्विगुण, द्वितीय वगेरे शब्दोमां द्व मां द् पूर्ववर्ती छे अने व् परवर्ती छे, तेथी द् नो लोप थवानो प्रसंग आवे छे अने व् नो लोप थवानो पण प्रसंग आवे छे. उद्विग्न नो उव्विग्ग, द्विगुण नो विउण तथा द्वितीय नो विईय प्रयोग बने छे तेथी ते शब्दोमां मात्र पूर्ववर्ती द् नो ज लोप करवो पण परवर्ती व् नो लोप न करवो. (व् नो लोप करवाथी उद्दिग्ग प्रयोग थाय अने विशेषे करीने आवो प्रयोग उपलब्ध नथी माटे व् नो लोप न करतां पूर्ववर्ती द् नो ज लोप करवो उचित छे.) आ रीते ज आ नीचे आपेला बधा शब्दोमां समजवुंः

पूर्ववर्ती ल कल्मष–कमस–कम्मस । शुल्व–सुव–सुव्व ।

पूर्ववर्ती र सर्व–सव–सव्व ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।८१।

परवर्ती य काव्य–कव्व–कव्व । माल्य–मल–मल्ल ।
परवर्ती व द्विप–दिअ । द्विज–दिअ । द्विजाति–दुआइ ।

पूर्ववर्ती नो तथा परवर्ती नो वाराफरती लोप

पूर्ववर्ती ग नो लोप उद्विग्न–उव्विण–उव्विण्ण ।
,, **द नो लोप** द्वार–वार अथवा वार ।
परवर्ती न नो लोप उद्विग्न–उव्विग–उव्विग्ग ।
,, **व नो लोप** द्वार–दार ।

मात्र ज्ञ ना ञ् नो तथा द्र ना र नो लोप[1] विकल्पे थाय छेः

ज्ञ	ज[2]	ण[3]
ज्ञात	जात अथवा	णात, णाय
ज्ञातव्य	जातव्व ,,	णातव्व णायव्व
ज्ञाति	जाति ,,	णाति, णाइ
ज्ञान	जाण ,,	णाण
ज्ञानीय	जाणीअ,	णाणीअ
	जाणिज्ज,	णाणिज्ज
ज्ञापना	जावणा,	णावणा
ज्ञेय	जेय,	णेय
अभिज्ञ	अहिज्ज,	अहिण्णु
अल्पज्ञ	अप्पज्ज,	अप्पण्णु
आत्मज्ञ	अप्पज्ज,	अप्पण्णु
इङ्गितज्ञ	इंगिअज्ज,	इंगिअण्णु
आज्ञा	अज्जा,	आणा
दैवज्ञ	देवज्ज,	देवण्णु
	दइवज्ज,	दइवण्णु

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।८३ तथा ८०। २. ज् अने ञ मळीने ज्ञ बनेलो छे. तेथी 'ज्ञ'नी अंदरना 'ञ्' नो लोप थतां 'ज' बाकी रहे ए स्वाभाविक छे. ३. जूओ आ प्रकरणनुं ९ मुं विधान पृ० ५९.

प्रज्ञा	पज्जा	पण्णा
मनोज्ञ	मणोज्ज	मणोण्ण
संज्ञा	संजा	संणा
सर्वज्ञ	सव्वज्ज	सव्वण्णु

(पालि भाषामां ज्ञ नो ज थाय छे जूओ पा० प्र० पृ० २४ टिप्पण प्रज्ञान–पजान)

द्र चन्द्र—चंद, चन्द्र। रुद्र रुद्द, रुद्र। समुद्र समुद्द, समुद्र। भद्र भद्द, भद्र। द्रव दव, द्रव। द्रह दह, द्रह। द्रुम दुम, द्रुम।

अपभ्रंश भाषामां संयुक्त अक्षरमां परवर्ती रहेला 'र' नो लोप[1] विकल्पे थाय छेः प्रिय–पिउ अथवा प्रिउ। प्राकृत पिय।

(पालि भाषामां थतां आवां रूपांतरो माटे जूओ पालि प्र० पृ० ३०, ३१ (नि० ३६, ३७) पृ० ३२, ३३ (नि० ३८, ३९) पृ० ३५ (नि० ४२) पृ० १० (नि० १२) पृ० १२ (नि० १५, १६) पृ० १२ (नि० १५)

२

ख विधान

(अहीं जे जे विधान करवानां छे ते तमाममां एकवडिया अक्षरनां विधान आदिमां एटले शब्दनी शरूआतमां करवानां अने बेवडिया अक्षरनां विधान आदिमां नहीं एटले शब्दनी अंदरमां करवानां, ए बराबर ध्यानमां राखवुं)

क्ष[2] नो ख क्षण–खण एटले समयनो नानो भाग। क्षमा–खमा (क्षमा एटले खमवुं–सहन करवुं)। क्षय–खअ। क्षीण–खीण। क्षीर–खीर। क्ष्वेटक–खेडअ। क्षोटक–खोडअ।

क्ष नो क्ख इक्षु–इक्खु। ऋक्ष–रिक्ख। मक्षिका–मक्खिआ। लक्षण लक्खण।

---

1. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९८। 2. हे० प्रा० व्या० ८।२।३।

मागधी भाषामां क्ष ने बदले ᳵक आम जिह्वामूलीय[1] 'क' बोलाय छेः यक्ष य ᳵक प्रा० जक्ख

राक्षस ल ᳵकश ,, रक्खस

[2]ष्क नो ख निष्क–निक्ख । पुष्कर–पोक्खर । पुष्करिणी–पोक्खरिणी । शुष्क–सुक्ख ।

स्क नो ख स्कन्द–खंद । स्कन्ध–खंध । स्कन्धावार–खंधावार ।

स्क नो क्ख अवस्कन्द–अवक्खंद । प्रस्कन्देत्–पक्खंदे ।
उपस्कर उवक्खर । उपस्कृत उवक्खड । अवस्कर–अवक्खर एटले ओखर

(पालि भाषामां ष्क नो क्ख, स्क नो ख तथा क्ख थाय छे. जूओ पालि प्र० पृ० ३६, ३७)

ज्यां ज्यां संयुक्त ष अथवा स आवे त्यां तमाम शब्दोमां मागधी भाषामां [3]स बोलाय छेः

संयुक्त ष उष्मा–उस्मा प्रा० उम्हा । धनुष्खण्ड–धनुस्खंड प्रा० धणुक्खंड ।
कष्ट–कस्ट ,, कट्ठ । निष्फल–निस्फल ,, निप्फल ।
विष्णु–विस्नु प्रा० विण्हु । शष्प–सस्प प्रा० सप्फ ।
शुष्क–शुस्क प्रा० सुक्क ।

संयुक्त स प्रस्खलति–पस्खलदि प्रा० पक्खलइ । बृहस्पति- बुहस्पदि प्रा० बुहप्फइ । मस्करी–मस्कली प्रा० मक्खरी । विस्मय–विस्मय प्रा० विम्हय । हस्ती–हस्ती प्रा० हत्थी ।

(पालि भाषामां आ विधान माटे जूओ पा० प्र० पृ० ५१ नि० ६८)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९६। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२८९।

३

च विधान

त्य[1] नो च त्याग–चाय । त्यागो–चाई । त्यजति–चयइ ।
त्य नो च्च प्रत्यय–पच्चय । प्रत्यूष–पच्चूह । सत्य–सच्च ।
त्व नो च कृत्वा–किच्चा । ज्ञात्वा–णच्चा । दत्वा–दच्चा ।
भुक्त्वा–भोच्चा । श्रुत्वा–सोच्चा । चत्वर–चच्चर ।

(पालि भाषामां त्य नो च, च्च तथा त्व नो च, च्च थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० २० तथा ३४ टिप्पण)

४

छ विधान

क्ष[2] नो छ क्षण–छण एटले उत्सव । क्षत–छय । क्षमा–छमा (पृथिवी) क्षार–छार । क्षुत–छीअ ।
क्ष नो च्छ अक्षि–अच्छि । इक्षु–उच्छु । उक्षा–उच्छा । ऋक्ष–रिच्छ । कुक्षि–कुच्छि ।

(पालि भाषामां क्ष नो क, ख, क्ख तथा क्ष नो च तथा छ, च्छ पण थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० १७ क्ष–ख, क्ष–च, क्ष–छ तथा क्ष–झ टिप्पण पृ० १६ जेमके; ऋक्ष अच्छ, इक्क । भ्राक्ष धंक । लाक्षा लाखा पा० प्र० पृ० १८)

[3]थ्व नो च्छ—पृथ्वी–पिच्छी ।
[4]थ्य नो च्छ—पथ्य–पच्छ । पथ्या–पच्छा । मिथ्या–मिच्छा । सामर्थ्य–सामथ्य–सामच्छ ।
श्च नो च्छ—आश्चर्य–अच्छेर । पश्चात्–पच्छा । पश्चिम–पच्छिम । वृश्चिक–विंछिअ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१३ तथा १५। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।३। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।२१।

त्स नो च्छ—उत्सव उच्छव। उत्साह उच्छाह। उत्सुक उच्छुअ।
चिकित्सति चिइच्छइ। मत्सर मच्छर। संवत्सर संवच्छर।

प्स नो च्छ—अप्सरा अच्छरा। जुगुप्सति जुगुच्छइ। लिप्सति लिच्छइ।
जुगुप्सा जुगुच्छा। लिप्सा लिच्छा। ईप्सति इच्छइ।

मागधी भाषामां च्छ ने बदले 'श्च' बोलाय[1] छे:

गच्छ गश्च प्रा० गच्छ। पिच्छिल पिश्चिल प्रा० पिच्छिल।
पृच्छति पुश्चदि प्रा० पुच्छइ। वत्सल-वच्छल-वश्चल प्रा० वच्छल।
उच्छलति उश्चलदि प्रा० उच्छलइ। तिर्यक् तिरिच्छि तिरिश्चि प्रा० तिरिच्छि।

(पालि भाषामां थ्य नो च्छ, श्च नो च्छ, त्स नो च्छ तथा प्स नो च्छ थाय छे: जुओ पा० प्र० पृ० २१, ३८, २९, ३८)

५ ज विधान

द्य[2] नो ज—द्युति जुइ। द्योत जोअ।

द्य नो ज्ज—मद्य मज्ज। अद्य अज्ज। अवद्य अवज्ज। वैद्य वेज्ज।

य्य नो ज्ज—शय्या सेज्जा। जय्य जज्ज।

र्य नो ज्ज—आर्य अज्ज। कार्य कज्ज। पर्याप्त पज्जत्त। भार्या भज्जा।
मर्यादा मज्जाया आर्यपुत्र अज्जउत्त।

शौरसेनी भाषामां र्य ने बदले य्य[3] पण बोलाय छे:
आर्यपुत्र अय्यउत्त, अज्जउत्त प्रा० अज्जउत्त। आर्य अय्य, अज्ज प्रा० अज्ज।

कार्य कय्य, कज्ज प्रा० कज्ज। सूर्य सुय्य सुज्ज, प्रा० सुज्ज।
मागधी भाषामां द्य ने बदले विकल्पे य्य[4] बोलाय छे:

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९५। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।२४।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९२।

अद्य अध्य प्रा० अज्ज । मद्य मध्य प्रा० मज्ज । विद्याधर विध्याहल प्रा० विज्जाहर ।

(पालि भाषामां द्य नो ज, ज्ज तथा य्य पण थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० १८ अने १९ नुं टिप्पण)

(पालि भाषामां र्य नो यिर, य्य के रिय थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० १५, १६)

६ झ विधान

[1]ध्य नो झ ध्यान झाण । ध्यायति झायइ ।

ध्य नो ज्झ उपाध्याय उवज्झाय। बध्यते बज्झइ। विन्ध्य विंझ। साध्य सज्झ । स्वाध्याय सज्झाय ।

ह्य नो झ नह्यति नज्झति । गुह्य गुज्झ। मह्यम् मज्झं। सह्य सज्झ।

[2]ह्य नो य्ह गुह्य गुय्ह, गुज्झ। सह्य सय्ह, सज्झ।

[3]क्ष नो झ क्षीण झीण । क्षीयते झिज्जइ ।

क्ष नो ज्झ प्रक्षीण पज्झीण ।

(पालि भाषामां ध्य नो झ थाय छेः जूओ पा० प्र० पृ० १९ ध्य=झ, ध्य=ज्झ)

(पालि भाषामां ह्य नो य्ह थाय छेः जूओ पा० प्र० पृ० २२ ह्य=य्ह)

७ ट विधान

[4]र्त नो ट्ट—कैवर्त केवट्ट। नर्तकी नट्टई। वर्ता वट्टी। वर्तुल वट्टुल। वार्ता वट्टा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।२६। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१२४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।३०।

(केटलाक शब्दोमां र्त नो र् लोप पामी जाय छेः आवर्तक आवत्तअ । मुहूर्त मुहुत्त । मूर्ति मुत्ति । धूर्त धुत्त । कीर्ति कित्ति । कार्तिक कत्तिअ । कर्तरी कत्तरी । इत्यादि)

(पालि भाषामां त नो ट थाय छेः जूओ पा० प्र० पृ० ५८)

शौरसेनी भाषामां कोई कोई प्रयोगमां न्त नो न्द[1] बोलाय छेः

अन्तःपुर अन्देउर प्रा० अन्तेउर ।

निश्चिन्त निश्चिन्द प्रा० निच्चिन्त ।

महान्—महन्त महन्द प्रा० महन्त ।

८ ठ विधान

ष्ट[2] नो ट्ठ—इष्ट–इट्ठ । अनिष्ट–अणिट्ठ । कष्ट–कट्ठ । दष्ट–दट्ठ । दृष्टि–दिट्ठी । पुष्ट–पुट्ठ । मुष्टि–मुट्ठि । यष्टि–लट्ठि । सुराष्ट्र–सुरट्ठ । सृष्टि–सिट्ठि ।

(अपवादः इष्टा इट्टा । उष्ट्र उट्ट । संदष्ट संदट्ट)

मागधी भाषामां ट्ट तथा ष्ठ ने बदले स्ट[3] बोलाय छेः

ट्ट नो स्ट—पट्ट पस्ट प्रा० पट्ट । भट्टारिका भस्टालिया प्रा० भट्टारिया । भट्टिनी भस्टिणी प्रा० भट्टिणी ।

ष्ठ नो स्ट—कोष्ठागार कोस्टागाल प्रा० कोट्ठागार । सुष्ठु–शुस्टु प्रा० सुट्ठु ।

पैशाची भाषामां ष्ट ने बदले सट[4] बोलाय छेः

कष्ट–कसट प्रा० कट्ठ । दृष्ट–दिसट–प्रा० दिट्ठ ।

(पालि भाषामां ष्ट नो ट्ठ थाय छेः जूओ पा० प्र० पृ० २६ तथा ते पृष्ठनुं टिप्पण)

९ ण विधान

[5]**ज्ञ नो ण**—आज्ञा आणा । ज्ञान णाण ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६१। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।३४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९०। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१४। ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।४२।

ज्ञ नो ण्ण—विज्ञान विण्णाण । प्रज्ञा पण्णा । संज्ञा संणा ।

म्न नो ण्ण—निम्न निण्ण । प्रद्युम्न पज्जुण्ण ।

मागधी भाषामां न्य ण्य ज्ञ अने ञ्ज ए चार अक्षरने बदले ञ्ञ[1] बोलाय छे. तथा पैशाची भाषामां पण न्य ण्य अने ज्ञ ए त्रण अक्षरने बदले ञ्ञ[2] बोलाय छे.

मागधी पैशाची	**न्य नो ञ्ञ**	अभिमन्यु	अभिमञ्ञु	प्रा०	अहिमन्नु
		कन्यका	कञ्ञका	,,	कन्नका
,,	**ण्य नो ञ्ञ**	पुण्य	पुञ्ञ	,,	पुण्ण
		पुण्याह	पुञ्ञाह	,,	पुण्णाह
		पुण्यकर्म	पुञ्ञकम्म	,,	पुण्णकम्म
,,	**ज्ञ नो ञ्ञ**	प्रज्ञा	पञ्ञा	,,	पण्णा
		सर्वज्ञ	सव्वञ्ञ पै०	,,	सव्वण्णु
			शव्वञ्ञ मा०		

मागधी ञ्ज-ञ्ञ—अञ्जलि अञ्ञलि प्रा० अंजलि। धनञ्जय धनञ्ञय प्रा० धणंजय। प्राञ्जल पञ्ञल प्रा० पंजल ।

(पालि भाषामां ज्ञ नो ण तथा म्न नो म्न थाय छे: जूओ पा० प्र० पृ० २४ टिप्पण तथा ४८)

(पालि भाषामां ज्ञ नो ञ्ञ, ण्य नो ञ्ञ तथा न्य नो ञ्ञ थाय छे: जूओ पा० प्र० पृ० २३, २४)

[3]श्न नो ण्ह प्रश्न पण्ह । शिश्न सिण्ह ।

ष्ण नो ण्ह कृष्ण कण्ह। विष्णु विण्हु । जिष्णु जिण्हु । उष्णीष उण्हीस।

---

1. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९३ । 2. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०३ अने ३०५। 3. हे० प्रा० व्या० ८।२।७५।

स्न नो ण्ह स्नात ण्हाअ । ज्योत्स्ना जोण्हा । प्रस्नुत पण्हुअ ।

ह्न नो ण्ह जह्नु जण्हु । वह्नि वण्हि ।

ह्ण नो ण्ह अपराह्ण अवरण्ह । पूर्वाह्ण पुव्वण्ह ।

क्ष्ण नो ण्ह तीक्ष्ण तिण्ह । श्लक्ष्ण सण्ह ।

क्ष्म नो ण्ह सूक्ष्म सण्ह ।

पैशाची भाषामां स्न ने बदले सिन[1] बोलाय छे:

स्नात	सिनात	प्राकृत	ण्हाअ
स्नुषा	सिनुसा	,,	ण्हुसा
	सुनुसा		सुण्हा

(पालि भाषामां आ रूपांतर माटे जूओ अनुक्रमे पा० प्र० पृ० ४६ (नियम ६३) तथा पृ० ४७ श्न=ण्ह, न्ह तथा ष्ण=ण्ह तथा पृ० ४८ टिप्पण तीक्ष्ण तिण्ह तिक्ख, तिक्खिण तथा पृ० ४९, टिप्पण पूर्वाह्ण पुव्वण्ह)

(पालि भाषामां स्नान सिनान । स्नुषा सुणिसा, सुण्हा, हुसा आवां रूपो थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ४६ टिप्पण ६३)

१० थ विधान

[2]स्त नो थ स्तव थव, तव । स्तम्भ थंभ । स्तब्ध थद्ध, ठद्ध । स्तुति थुइ । स्तोक थोअ । स्तोत्र थोत्त । स्त्यान थीण ।

स्त नो त्थ अस्ति अत्थि । पर्यस्त पल्हत्थ पल्हट्ट । प्रशस्त पसत्थ । प्रस्तर पत्थर । स्वस्ति सत्थि । हस्त हत्थ ।

(अपवादः समस्त समत्त, स्तम्ब तंब)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१४ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।४५ ।

मागधी भाषामां र्थ ने बदले तथा स्थ ने बदले स्त[1] बोलाय छे:

र्थ नो स्त अर्थपति अस्तवदी । प्रा० अत्थवई। सार्थवाह शस्तवाह । प्रा० सत्थवाह।

स्थ नो स्त उपस्थित उवस्तिद प्रा० उवट्ठिअ। सुस्थित सुस्तिद प्रा० सुट्ठिअ।

(पालि भाषामां स्त नो थ तथा त्थ थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० २७)

११ प विधान

[2]**ड्म नो प** कुड्मल कुंपल ।

क्म नो प्प रुक्म रुप्प । रुक्मिणी रुप्पिणी । रुक्मी रुप्पी, रुच्मी ।

[3]**ष्प नो प्प** निष्पाप निप्पाव ।

निष्पुंसन निप्पुंसण ।

निष्प्रभ निप्पह

निस्पृह निप्पिह

स्प नो प्प परस्पर परोप्पर

बृहस्पति बुहप्पइ

(पालि भाषामां ड्म नो डुम अने क्म नो कुम थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ४९ कुड्मल कुडुमल पा० प्र० पृ० ४३ टिप्पण)

१२ फ विधान

[4]**ष्प नो प्फ** निष्पाव निप्फाव । निष्पेष निप्फेस । पुष्प पुप्फ । शष्प सप्फ ।

स्प नो फ स्पन्दन फंदण । स्पन्द फंद । स्पन्दते फंदए ।

स्प नो प्फ प्रतिस्पर्धी पडिप्फद्धी । प्रतिस्पर्धा पडिप्फद्धा।

प्रतिस्पर्धते पडिप्फद्धए । बृहस्पति बुहप्फइ, बिहप्फइ ।

बुहप्पइ बिहप्पइ ।

वनस्पति वणप्फइ । स्पर्धा फद्धा । स्पर्धते फद्धए ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९१। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।५२।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।५३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।५३।

(पालि भाषामां ष्प नो प्फ तथा स्प नो फ अने प्फ थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ३९)

१३ भ विधान

[1]ह्व नो भ ह्वान भाण । ह्वयते भयए ।

ह्व नो ब्भ आह्वान अब्भाण । आह्वयते अब्भयते ।

जिह्वा जिब्भा, जीहा । विह्वल विब्भल, भिब्भल, विहल ।

(पालि भाषामां ह्व नो भ थाय छे. जूओ पा० प्र० पृ० ६४ तथा गह्वर=गब्भर पृ० ३५, टिप्पण)

१४ म विधान

[2]ग्म नो म्म युग्म जुम्म, जुग्ग । तिग्म तिम्म, तिग्ग ।

न्म नो म्म जन्म जम्म । मन्मथ वम्मह । मन्मन मम्मण ।

(पालि भाषामां ग्म नो गुम थाय छे: जूओ पा० प्र० पृ० ४९ तथा न्म नो म्म थाय छे: जूओ पा० प्र० पृ० ४६ न्म=म्म)

क्ष्म नो म्ह पक्ष्म पम्ह । पक्ष्मल पम्हल ।

श्म नो ,, कश्मीर कम्हार । कुश्मान कुम्हाण ।

ष्म नो ,, उष्मा उम्हा । ग्रीष्म गिम्ह ।

स्म नो ,, अस्मादृश अम्हारिस । विस्मय विम्हय ।

ह्म नो ,, ब्रह्म बम्ह । ब्राह्मण बम्हण ।

ब्रह्मचर्य बम्हचेर, बभचेर । सुह्म सुम्ह ।

अपभ्रंश भाषामां पूर्वदर्शित म्ह ने बदले म्भ[3] पण बोलाय छे:

ग्रीष्म गिम्ह, गिम्भ प्रा० गिम्ह

श्लेष्म सिम्ह, सिम्भ प्रा० सिम्ह

पक्ष्म पम्ह पम्भ प्रा० पम्ह

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।५७,५८। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।६१, ७४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।४१२।

पक्ष्मल पम्हल पम्भल प्रा० पम्हल
ब्राह्मण वम्हण वंभण प्रा० वम्हण

(पालि भाषामां श्म=म्ह, ष्म=म्ह, स्म=म्ह थाय छे तथा क्यांय श्म नो तथा स्म नो स्स के स थाय छेः जूओ पा० प्र० पृ० ५०)

१५ ल्ह विधान

[1]ह्ल नो ल्ह—कह्लार कल्हार । प्रह्लाद पल्हाअ ।

(पालि भाषामां ह्ल ने बदले हिल बोलाय छेः ह्लाद–हिलाद जूओ पा० प्र० पृ० ३२)

१६ केटलाक संयुक्त व्यंजनोनी वच्चे स्वरनो वधारो

[2]क्ल ने स्थाने किल—क्लाम्यति किलम्मइ । क्लाम्यत् किलमंत ।
क्लिष्ट किलिट्ठ । क्लिन्न किलिन्न । क्लेश किलेस ।
शुक्ल सुकिल, सुइल ।

ग्ल ने स्थाने गिल—ग्लायति गिलाइ । ग्लान गिलाण ।
प्ल ने स्थाने पिल—प्लुष्ट पिलुट्ठ । प्लोप पिलोस ।
म्ल ने स्थाने मिल—अम्ल अंबिल । म्लान मिलाण । म्लायति मिलाइ ।
श्ल ने स्थाने सिल—श्लेष सिलेस । श्लेष्मा सिलिम्हा ।
श्लोक सिलोग । श्लिष्ट सिलिट्ठ ।

[3]र्य ने स्थाने रिअ अथवा रिय—आचार्य आयरिअ । गाम्भीर्य गंभीरिअ ।
गाभीर्य गहीरिअ । चौर्य चोरिअ । धैर्य धीरिअ ।
ब्रह्मचर्य बम्हचरिअ । भार्या भारिआ । वर्य वरिअ ।
वीर्य वीरिअ । स्थैर्य थेरिअ । सूर्य सूरिअ ।
सौन्दर्य सुन्दरिअ । शौर्य सोरिअ ।

---

1. हे० प्रा० व्या० ८।२।७६। 2. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०६।
3. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०७।

आ बधां उदाहरणोमां 'रिय' पण समजी लेवानो. तथा आ विधान व्यापक नथी पण प्रयोगानुसारी छे. जूओ ५ ज विधान पृ० ५७.

पैशाची भाषामां र्य ने बदले रिय[1] पण बोलाय छेः

भार्या भारिया, भज्जा प्रा० भज्जा ।

र्श[2] ने स्थाने रिस-आदर्श आयरिस, आयंस । दर्शन दरिसण दंसण ।
सुदर्शन सुदरिसण, सुदंसण ।

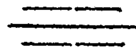
र्ष ने स्थाने रिस-वर्ष वरिस, वास । वर्षशत वरिससय, वाससय ।
वर्षा वरिसा, वासा ।

र्ह ने स्थाने रिह-अर्हति अरिहइ । अर्ह अरिह । गर्हा गरिहा ।
बर्ह बरिह ।

स्त्रीलिङ्गी[3] पदना संयुक्त व्यंजनोनी वच्चे स्वरनो वधारो :

घ्वी ने स्थाने घुवी	लघ्वी	लघुवी	लहुवी ।
थ्वी ने स्थाने थुवी	पृथ्वी	पुथुवी	पुहुवी ।
द्वी ने स्थाने दुवी	मृद्वी	मिदुवी	मिउवी ।
न्वी ने स्थाने णुवी	तन्वी	तनुवी	तणुवी ।
र्वी ने स्थाने रुवी	गुर्वी	गुरुवी	
ह्वी ने स्थाने हुवी	बह्वी	बहुवी	

(पालि भाषामां पण केटलाक संयुक्त व्यंजनोनी वच्चे स्वर नो वधारो थाय छेः जूओ पा० प्र० पृ० ४६ (नि० ६२) पृ० ३९, पृ० ११, पृ० २६२ स्त्री प्रत्यय)



---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१४। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०५, १०४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।११३।

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

१

[1]क्क

क्त नो क्क—मुक्त मुक्क, मुत्त । शक्त सक्क, सत्त ।

ग्ण नो क्क—रुग्ण लुक्क, लुग्ग ।

त्व नो क्क—मृदुत्व माउक्क, माउत्तण ।

ष्ट नो क्क—दष्ट डक्क, दट्ठ ।

सूचनः—ज्यां ज्यां बे रूपो आपेलां छे त्यां त्यां विकल्पे विधान समजवुं.

(जूओ पा० प्र० पृ० ४१ शक्त सक्क । प्रतिमुक्त पतिमुक्क । (टिप्पण) रुग्ण लुग्ग पृ० ४९ टिप्पण)

२

[2]क्ख

क्ष्ण नो क्ख—तीक्ष्ण तिक्ख, तिण्ह । जूओ ण विधान नियम ८ क्ष्ण नो ण्ह।

(तीक्ष्ण तिक्ख, तिण्ह तिक्खिग-जूओ पा० प्र० पृ० ४८ टिप्पण)

३

[3]ख

स्त नो ख—स्तम्भ खंभ, थंभ ।

स्थ नो ख—स्थाणु खाणु एटले ठूंठुं झाड, थाणु एटले महादेव।

स्फ नो ख—स्फेटक खेडअ । स्फोटक खोडअ ।

स्फेटिक खेडिअ ।

४

[4]ग्ग

क्त नो ग्ग—रक्त रग्ग, रत्त ।

---

1. हे० प्रा० व्या० ८।२।२। 2. हे० प्रा० व्या० ८।२।३। 3. हे० प्रा० व्या० ८।२।८,७,६। 4. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०।

५ [1]ङ्ग

ल्क नो ङ्ग—शुल्क सुंग, सुक्क। हिंदी भाषामां 'जकात'ना अर्थ माटे 'चुंगी' शब्द वपराय छे. ते प्रस्तुत 'सुंग' साथे सरखावी शकाय.

(शुल्क सुंक जूओ पा० प्र० पृ० १० टिप्पण)

६ [2]च्च

त्त नो च्च कृत्ति किच्ची।

थ्य नो च्च तथ्य तच्च, तच्छ।

७ [3]छ तथा च्छ

स्थ नो छ स्थगित छइअ, थइअ।

स्प नो छ स्पृहा छिहा। स्पृहावत् छिहावंत।

स्प नो च्छ निस्पृह निच्छिह, निप्पिह।

८ [4]ञ्ज तथा ञ्ञ

न्य नो ञ्ज, ञ्ञ अभिमन्यु अहिमज्जु, अहिमञ्जु, अहिमंजु, अहिमन्नु।

[5]मागधी—अभिमन्यु अहिमञ्ञु।

(अभिमन्यु अभिमञ्यु जूओ पा० प्र० पृ० २३.)

९ [6]ज्झा

न्ध नो ज्झा इन्ध इज्झाइ (तृतीय पुरुष एकवचन वर्तमान काल)

सम्+इन्ध समिज्झाइ ,,

वि+इन्ध विज्झाइ ,,

१० [7]ञ्चु

श्चि नो ञ्चु वृश्चिक विञ्चुअ, विंचुअ, विंछिअ।

(वृश्चिक विच्छिक जूओ पा० प्र० पृ० ३८)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।११। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१२,२१। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७,२३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।२५। ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९३। ६. हे० प्रा० व्या० ८।२।२८। ७. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६।

११

१ट्ट

त्त नो ट्ट—पत्तन पट्टण । मृत्तिका मट्टिआ । वृत्त-वट्ट ।

र्थ नो ट्ट—कदर्थित कवट्टिअ ।

स्त नो ट्ट—पर्यस्त पल्लट्ट ।

(जूओ पा० प्र० पृ० ५८ त-ट वर्ति वट्टि)

१२

२ठ, ट्ठ

स्त नो ठ—स्तम्भ्यते ठभिज्जइ गतिहीन । स्तब्ध ठड्ढ एटले निस्पंद-गतिहीन । 'ऊभो रहेलो' अर्थमां हिन्दी भाषामां 'ठाढो' शब्द प्रसिद्ध छे: "सूरदास द्वारे ठाढो आंधरो भिखारी"-सूरदासनुं भजन.

स्तम्भ् ठंभ् ठंभइ क्रियापद ।

स्तम्भ ठंभ, खंभ । स्त्यान ठीण, थीण ।

स्थ नो ठ—विसंस्थुल विसंठुल ।

र्थ नो ट्ठ—अर्थ अट्ठ, अत्थ । अट्ठ एटले प्रयोजन अने अत्थ एटले धन । चतुर्थ चउट्ठ, चउत्थ ।

स्थ नो ट्ठ—अस्थि अट्ठि ।

(जूओ पा० प्र० पृ० २७ टिप्पण परिवस्तव्य परिवट्ठव्व । अर्थ अट, अट्ठ जूओ पा० प्र० पृ० १० टिप्पण. वनःस्थ वयट्ठ, अस्थि अट्ठि जूओ पा० प्र० पृ० २८ स्थ=ठ तथा पृ० २९ स्थ=ट्ठ)

१३

३ड्ड

र्त नो ड्ड—गर्त गड्ड । गर्ता गड्डा ।

1. हे० प्रा० व्या० ८।२।२९,४७ २. हे० प्रा० व्या० ८।२।९, ८,३२,३३,३९। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।३५,३६,३७।

र्द नो ड्ड—कपर्द कवड्ड । छर्द् छड्ड क्रियापद । छर्दि छड्डि । मर्दित मड्डिअ । वितर्दि विअड्डि । गर्दभ गड्डह, गद्दह ।

१४ १ढ, ड्ढ

र्ध नो ढ—मूर्ध मुढ, मुद्ध ।

र्ध नो ड्ढ—अर्ध अड्ढ, अद्ध ।

ग्ध नो ड्ढ—दग्ध दड्ढ । विदग्ध विअड्ढ ।

द्ध नो ड्ढ—ऋद्धि इड्ढि, इद्धि । वृद्ध वुड्ढ, विद्ध । वृद्धि वुड्ढि । श्रद्धा सड्ढा, सद्धा ।

ब्ध नो ड्ढ—स्तब्ध ठड्ढ ।

(जूओ पा० प्र० पृ० ४२ वृद्धि वुड्ढि । वर्धमान वड्ढमान । अर्ध अड्ढ । दग्ध दड्ढ, वगेरे द्ध=ड्ढ, र्ध=ड्ढ, ग्ध=ड्ढ)

१५ २ण्ट, ण्ड, ण्ण

न्त नो ण्ट—वृन्त वेण्ट अथवा वेंट । तालवृन्त तालवेण्ट ।

न्द नो ण्ड—चन्दरिका चण्डलिआ । भिन्दिपाल भिण्डिवाल ।

ञ्च नो ण्ण—पञ्चदश पण्णरह । पञ्चाशत् पण्णासा ।

त्त नो ण्ण—दत्त दिण्ण । (ज्यां 'ण्ण' न थाय त्यां 'दत्त' पर समजवुं)

ह्न नो ण्ण—मध्याह्न मज्झण्ण, मज्झण्ह ।

(जूओ पा० प्र० पृ० ५८ वृन्त वण्ट नियम ८५)

१६ ३त्थ

त्स नो त्थ—उत्सार उत्थार ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।८१,४०,३९। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।३१।३८, ४३, ८४ तथा ८।१।४९। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।४८।

त्म नो त्थ—अध्यात्म अज्झत्थ अज्झप्प ।
(जूओ पा० प्र० पृ० ३० टिप्पण उत्साह उस्साह)

१७

[1]न्त

न्य नो न्त—मन्यु मन्तु अथवा मंतु, मन्नु ।

१८

[2]ड्ढ

ष्ट नो ड्ढ—आश्लिष्ट आलिद्ध ।

१९

[3]न्ध

ह्न नो न्ध—चिह्न चिन्ध, चिंध. चिण्ह । चिह्नित चिंधिअ, चिण्हिअ।

२०

[4]प्प, प्फ, फ

त्म नो प्प—आत्मा अप्पा, अत्ता । आत्मानः अप्पाणो, अत्ताणो
स्म नो प्प—भस्म भप्प, भस्स ।
ष्म नो प्फ—भीष्म भिप्फ ।
ष्म नो फ—श्लेष्मन सेफ, सिलिम्ह। (सरखावो श्लेष्म-श्लेश्म)
(आत्मा, अत्ता, आतुमा जूओ पा० प्र० पृ० ५० नियम ५७. श्लेष्मा सिलेसुमा, सेम्ह जूओ पा० प्र० पृ० ४१)

२१

[5]म्भ, म्ब, म्भ

र्ध्व नो म्भ—ऊर्ध्व उब्भ, उद्ध ।
म्र नो म्ब—आम्र अम्ब । ताम्र तंब ।
श्म नो म्भ—कश्मीर कंभार, कम्हार ।
ह्म नो म्भ—ब्राह्मण बंभण,बम्हण । ब्रह्मचर्य-बंभचेर बम्हचेर ।
(आम्र अम्ब। ताम्र तंब । जूओ पा० प्र० पृ० १५ नियम १८)

1. हे० प्रा० व्या० ८.२।४४। 2. हे० प्रा० व्या० ८।२।४९। 3. हे० प्रा० व्या० ८।२।५० 4. हे० प्रा० व्या० ८।२।५१,५४,५५ 5. हे० प्रा० व्या० ८।२।५६, ५६, ६०, ७४।

२२ १र

त्र नो र—धात्री धारी

र्य नो र—आश्चर्य अच्छेर । तूर्य तूर । धैर्य धीर, धिज्ज ।
पर्यन्त पेरंत, पज्जंत । ब्रह्मचर्य बंभचेर । शौण्डीर्य सोंडीर । सौन्दर्य सुंदेर ।

र्ह नो र—दशार्ह दसार ।

(जूओ पा० प्र० पृ० १४ धात्री धाती टिप्पण. पा० प्र० पृ० ४ टिप्पण अच्छेर)

२३ २ल, ल्ह

ण्ड नो ल—कूष्माण्ड कोहल, कोहंड । कूष्माण्डी कोहली, कोहंडी ।

र्य नो ल्ह—पर्यस्त पल्लट्ट, पल्लत्थ । पर्याण पल्लाण । सौकुमार्य सोगमल्ल, सोअमल्ल ।

(जूओ पा० प्र० पृ० १६ टिप्पण पर्यस्तिका पल्लत्थिका इत्यादि)

२४ ३स्स

स्प नो स्स—बृहस्पति बहस्सइ, बहप्फइ । वनस्पति वणस्सइ, वणप्फइ ।
(जूओ पा० प्र० पृ० १९ वनस्पति वनप्पति नियम ४८)

२५ ४ह

क्ष नो ह—दक्षिण दाहिण, दक्खिण ।

ख नो ह—दुःख दुह, दुक्ख । दुःखित दुहिअ, दुक्खिअ ।

ष्प नो ह—बाष्प बाह एटले आंसु अने बाष्प बप्फ एटले बाफ बफारो-गरमी ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।८१, ६६, ६४, ६३, ६५, ८५ ।
२. हे० प्रा० व्या० ८।२। ७३, ६८। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।६९।
४. हे० प्रा० व्या० ८।२। ७२, ७०, ७३, ६१, ७१।

ष्म नो ह—कुष्माण्ड कोहण्ड । कुष्माण्डी कोहंडी ।
र्घ नो ह—दीर्घ दीह, दिग्घ ।
र्थ नो ह—तीर्थ तूह, तित्थ ।
र्प नो ह—कार्षापण काहावण ।
(जूओ पा० प्र० पृ० ८ दुःख दुक्ख)

२६

[1]द्विर्भाव

केटलाक शब्दोमां रहेलो र अने ह सिवायनो एकवडो व्यंजन बेवडो थई जाय छे. बेवडो थवानुं नाम द्विर्भाव छे. आवो द्विर्भाव केटलाक शब्दोमां नित्य-कायमी थाय छे अने केटलाक शब्दोमां वैकल्पिक एटले थाय पण खरो अने न पण थाय.

कायमी द्विर्भाव-ऋजु उज्जु । तैल तेल्ल । प्रभूत बहुत्त । प्रेम पेम्म । मण्डूक मंडुक्क । यौवन जुव्वण । विचकिल वेइल्ल । व्रीडा विड्डा वगेरे.

वैकल्पिक द्विर्भाव-

एक एक्क, एक्क, एअ, एग । कर्णिकार कण्णिआर, कणिआर ।
कुतूहल कोउहल्ल, कोउहल । चित्र चित्त, चित्र ।
चैत्र चेत्त, चेअ । तूष्णीक तुण्हिक्क, तुण्हिक्क ।
दैव दइव्व दइव । नख नक्ख, नह ।
निहित निहित्त, निहिअ । नीड नेड्ड, नीड ।
मूक मुक्क मूअ । सेवा सेव्वा, सेवा ।
स्थूल थुल्ल, थूल । स्थाणु खण्णु, खाणु ।
हूत हुत्त, हूअ वगेरे

सामासिक शब्दोमां वैक० द्विर्भाव—

आलानस्तम्भ आणालक्खंभ, आणालखंभ । कुसुमाकर कुसुमप्पयर, कुसुमायर । देवस्तुति देवत्थुइ, देवथुइ । नदीग्राम नइग्गाम, नइगाम । हरस्कन्द हरक्खंद, हरखंद इत्यादि.

---

1. हे० प्रा० व्या० ८।२।८९,९५,९८,९९,१२। ८।१।२६।

जे एकवडा व्यंजननी पूर्वमां दीर्घस्वर होय अथवा अनुस्वार होय ते व्यंजन बेवडो थतो नथी अर्थात् तेनो द्विर्भाव थतो नथी :

क्षिप्त छूढ नुं छुड्ढ न थाय
स्पर्श फास नुं फस्स ,,
त्र्यस्र तंस नुं तस्स ,,
संध्या संझा नुं संज्झा ,, वगेरे

(पालि भाषामां द्विर्भावनी प्रक्रिया छे. जुओ पा० प्र० पृ० १० नियम १२)

२७ [1]शब्दोमां विशेष फेरफार

अयस्कार एक्कार । आश्चर्य अच्छअर, अच्छरिअ, अच्छरिज्ज, अच्छरीअ ।

(पालि-अच्छरिय, अच्छयिर जूओ पा० प्र० पृ० ४४ टिप्पण) उदूखल ओहल, उऊहल । उलूखल ओक्खल, उलूहल । कदल केल, कयल । कदली केली, कयली । कर्णिकार कण्णेर, कणिआर, कण्णिआर । चतुर्गुण चोग्गुण, चउग्गुण । चतुर्थ चोत्थ, चउत्थ । चतुर्दश चोद्दस, चउद्दस । चतुर्वार चोव्वार, चउव्वार । त्रयस्त्रिंशत् तेत्तीसा । त्रयोदश तेरह । त्रयोविंशति तेवीसा । त्रिंशत् तीसा । नवनीत लोणीअ, लोणीअ । नवफलिका नोहलिआ । नवमालिका नोमालिआ । निषण्ण णुमण्ण । पूगफल पोप्फल । पूतर पोर । प्रावरण पंगुरण, पाउरण, पावरण । बदर बोर । मयूख मोह । रुदित रुण्ण । लवण लोण । विचकिल वेइल्ल । विंशति वीसा । सुकुमार सोमाल । स्थविर थेर ।

(जूओ पा० प्र० पृ० ४४ नियम ५७ लवण लोण तथा पृ० ६२ लवन लेन । जूओ पा० प्र० पृ० २८ नि० ३४ स्थविर थेर)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६६, १६५, १६७, १६८, १७०, १७०, १७१, १७४, १७५, तथा ८।२।६६,६७।

[2]શબ્દોમાં સર્વથા ફેરફાર

अधस् हेट्ठ। अप ओ। अप्सरस् अच्छरसा, अच्छरा। अपि ऐ, अइ। अव ओ, अवधि ओहि। आयुष् आउस। आरब्ध आढत्त, आरद्ध। इदानीम् एण्हिं एत्ताहे दाणिं, इआणिं (शौरसेनी दाणिं) ईषत् कूर, ईसि, ईसि। उत ओ। उप ऊ, ओ, उपाध्याय ऊज्झाय, ओज्झाय, उवज्झाय। उभय अवह, उवह, उभयो। ककुभ् कउहा। क्षिप्त छूढ, खित्त। क्षुध् छुहा। गृह घर, गृहस्वामी घरसामी, राजगृह रायघर, गृहपति गहवइ। छुप्त छिक्क, छुत्त। तिर्यक् तिरिआ, तिरिच्छ। त्रस्त हित्थ, तट्ठ, तत्थ। दिश् दिसा। दुहिता धूआ, दुहिआ। दंष्ट्रा दाढा। धनुष् धणुह, धणु। धृति दिहि। पदाति पाइक्क, पयाइ। प्रावृष् पाउस। पितृष्वसा पिउच्छा, पिउसिआ। पूर्व पुरिम, पुव्व। (शौरसेनी पुरव) बहिस् बाहिं, बाहिरं। बृहस्पति भयस्सइ, बहस्सइ। भगिनी बहिणी, भइणी। मलिन मइल, मलिण। मातृष्वसा माउच्छा, माउसिआ। मार्जार मंजर, वंजर, मज्जार। वनिता विलया, वणिआ। विद्रुत विद्दाअ। वृक्ष रुक्ख, वच्छ। वैडूर्य वेरुलिय, वेडुज्ज। शुक्ति सिप्पि सुत्ति। स्तोक थेव, थोव, थोक्क, थोअ। स्त्री इत्थी, थी। श्मशान सीआण, सुसाण, मसाण।

---

૨. है॰ प्रा॰ व्या॰ ૮।૨।૧૪૧। ૮।૧।૧૭૨। ૮।૧।૨૦। ૮।૧।૧૬૬। ૮।૧।૧૭૨। ૮।૧।૨૦। ૮।૨।૧૩૮। ૮।૨।૧૩૪। ૮।૪।૨૭૭। ૮।૨।૧૨૯। ૮।૧।૧૭૨,૧૭૩। ૮।૨।૧૩૮। ૮।૧।૨૧। ૮।૨।૧૨૭। ૮।૧।૧૭। ૮।૨।૧૪૪। ૮।૨।૧૩૮। ૮।૨।૧૪૩। ૮।૨।૧૩૬। ૮।૧।૧૯। ૮।૨।૧૨૬। ૮।૨।૧૩૬। ૮।૧।૨૨। ૮।૨।૧૩૨। ૮।૨।૧૩૮। ૮।૧।૧૬। ૮।૨।૧૪૨। ૮।૨।૧૩૫। ૮।૪।૨૭૦। ૮।૨।૧૪૦। ૮।૨।૧૩૭। ૮।૨।૧૨૬। ૮।૨।૧૩૮। ૮।૨।૧૪૨। ૮।૨।૧૩૨। ૮।૨।૧૨૮। ૮।૧।૧૦૭। ૮।૨।૧૪૭। ૮।૨।૧૩૩। ૮।૨।૧૩૮। ૮।૨।૧૨૫। ૮।૨।૧૩૦। ૮।૧।૮૬।

[1]अपभ्रंश भाषामां अमुक अमुक शब्दोनो खास फेरफार आ प्रमाणे छे:

सं०	प्रा०	अपभ्रंश
अन्यादृश	अन्नारिस	अन्नाइस
अपरादृश	अवरारिस	अवराइस
ईदृश	एरिस	अइस, एह
कीदृश	केरिस	कइस, केह
तादृश	तारिस	तइस, तेह
यादृश	जारिस	जइस, जेह
वर्त्म	वट्ट	विच्च
विषण्ण	विसण्ण	वुन्न

(जूओ पालि प्र० पृ० ५६ नि० ५८ गृह घर। गृहिणी घरणी। प्र० १६ तिर्यक् तिरिय। पृ० ३४ टिप्पण पितृष्वसा पितुच्छा। पृ० २७ स्तोक थोक। पृ० ५१ श्मशान मसान, सुसान)

२८ अमुक खास खास शब्दोना संयुक्त व्यंजनोमां स्वरनो वधारो—अंतःस्वरवृद्धि अथवा स्वरभक्ति

[2]अ नो वधारो—अग्नि अगणि, अग्गि। अर्हन् अरहंत। कृष्ण कसण, कण्ह एटले काळो रंग। क्षमा छमा। प्लक्ष पलक्ख। रत्न रतन, रयण। शार्ङ्ग सारंग। श्लाघा सलाहा। स्निग्ध सणिद्ध। सूक्ष्म सुहम। स्नेह सणेह, नेह।

[3]इ नो वधारो—अर्हन् अरिहंत। कृत्स्न कसिण, कण्ह। क्रिया किरिया,

---

1. है० प्रा० व्या० ८।४।४१३।८।४।४०३।८।४।४०२। 2. है० प्रा० व्या० ८।२।१०२। ८।२।१११। ८।२।११०। ८।२।१०१। ८।२।१०३। ८।२।१०१। ८।२।१००। ८।२।१०१। ८।२।१०९। ८।२।१०१। ८।२।१०२। 3. है० प्रा० व्या० ८।२।१११। ८।२।११०। ८।२।१०४। ८।२।१०७। ८।२।१०५। ८।२।१०४। ८।२।१०७। ८।२।१०५। ८।२।१०४। ८।२।१०९। ८।२।१०७। ८।२।१०८। ८।२।१०४।

क्रिया । चैत्य चेइअ । तप्त तविअ । दिष्टया दिट्ठिआ । भव्य भविअ, भव्व । वज्र वइर, वज्ज । श्री सिरी । स्निग्ध सिणिद्ध निद्ध । स्याद् सिआ, स्याद्वाद सिआवाअ । स्वप्न सिविण, सिमिण, सुमिण । ह्रः हिओ । ह्री हिरी ।

१ई नो वधारो—ज्या जीआ ।

२उ नो वधारो—अर्हन् अरुहंत । छद्म छउम । द्वार दुवार दुआर दार देर वार । पद्म पउम, पोम्म । मूर्ख मुरुक्ख, मुक्ख । श्वः सुवे । स्नुषा सुनुसा, सुण्हा, ण्हुसा, सुसा । सूक्ष्म सुहुम, सुहम, सण्ह, सुण्ह । सुघ्न सुरुग्घ । स्व सुव ।

२९ ३खास शब्दोमां अनुस्वारनो वधारो

अतिमुक्तक अइमुंतय, अइमुत्तय । अश्रु अंसु । उपरि अवरि, उवरि । कर्कोट कंकोड । कुड्मल कुंपल । गुच्छ गुंछ । गृष्टि गिंठि, गिट्ठि । त्र्यस्र तंस । दर्शन दंसण दरिसण । देवनाग देवंनाग । पर्शु पंसु, परंसु । पुच्छ पुंछ, पुच्छ । प्रतिश्रुत् पडंसुआ । बुध्न बुंध । मनस्विन् मणंसि । मनस्विनी मणंसिणी । मनःशिला मणंसिला, मणसिला, मणासिला, मणोसिला । मूर्धन् मुंढ, मुद्ध । मार्जार मंजार, मज्जार । वक्र वंक, वक्क । वयस्य वयंस, वयस्स । वृश्चिक विंछिअ, विंचुअ । श्मश्रु मंसु, मस्सु ।

३० ४अक्षरो नो व्यत्यय-उलटुं सुलटुं

अचलपुर अलचपुर । आलान आणाल । करेणु कणेरु ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।११५। २. हे० प्रा० व्या० ८।२। ११११ ८।२।११२। ८।२।११४। ८।२।११३। ८।२।११४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।११८। ८।२।११७। ८।२। ११६। ८।२।११९। ८।१।१२२। ८।२।१२३। ८।२।१२१। ८।२।१२१। ८।२।१२०।

महाराष्ट्र मरहट्ठ । लघुक हलुअ लहुअ । ललाट णडाल, णलाड ।
वाराणसी वाणारसी । हरिताल हलिआर हरिआल । ह्रद द्रह हर ।

[1]शौरसेनी भाषामां ण कारनो विकल्पे वधारो

सं.	प्रा०	शौ०
युक्तम् इदम्	जुत्तं इणं	जुत्तं णिमं जुत्तं इणं ।
सदृशम् इदम्	सरिसं इणं	सरिसं णिमं, सरिसं इणं ।
किम् एतद्	किं एअं	किं णेदं, किं एदं ।
एवम् एतत्	एवं एअं	एवं णेदं एवं एदं ।

[2]अपभ्रंशमां खास शब्दोमां कोई कोई प्रयोगमां स्वरनो अथवा व्यंजननो वधारो

सं०	प्रा०	अप०
उक्त	उत्त	वुत्त
परस्पर	परोप्पर	अपरोप्पर
व्यास	वा०	वास

२१ [3]अमुक शब्दोनी जातिमां जे फेरफार थाय छे ते आ प्रमाणे छे:

जे शब्दने छेडे स् होय अथवा न् होय एवा तमाम शब्दो नर जातिमां वपराय छे :

यशस् जसो । जन्मन् जम्मो ।
पयस् पओ । नर्मन् नम्मो ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२७९। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।४२१। ८।४।४०९। ८।४।३९९। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।३२। ८।१।३१। ८।१।३३। ८।१।३४। ८।१।३५।

तमस्	तमो ।	मर्मन्	मम्मो ।
तेजस्	तेओ ।	वर्मन्	वम्मो ।
उरस्	उरो ।	धामन्	धामो ।

तमो वगेरे रूपोमां छेडे जे ओकार छे ते तेमनुं नरजातिपणुं सूचवे छे.

अपवाद : दामन् दामं । शर्मन् सम्मं । चर्मन् चम्मं । शिरस् सिरं । सुमनस् सुमणं ।

प्रावृष्, शरद् अने तरणि शब्द नरजातिमां वपराय छे :

प्रावृष् पाउसो । शरद् सरओ । तरणि तरणी ।

'आंख' अर्थवाळा तमाम शब्दो नरजातिमां विकल्पे वपराय छे :

	नर०	नान्यतर०
अक्षि	अक्खी	अक्खिं ।
अक्षि	अच्छी	अच्छिं ।
चक्षु	चक्खू	चक्खुं ।
नयन	नयणो	नयणं ।
लोचन	लोयणो	लोयणं ।

नीचेना शब्दो नरजातिमां विकल्पे वपराय छे :

वचन	वयणो	वयणं ।
विद्युत्	विज्जुणा	विज्जुए (तृतीया विभक्ति) ।
कुल	कुलो	कुलं ।
छन्द	छंदो	छंदं ।
माहात्म्य	माहप्पो	माहप्पं ।
दुःख	दुक्खो	दुक्खं ।
भाजन	भायणो	भायणं ।

नीचेना शब्दो नान्यतरजातिमां विकल्पे वपराय छे:

गुण	गुणं	गुणो।
देव	देवं	देवो।
बिन्दु	बिंदु	बिन्दू।
खड्ग	खग्गं	खग्गो।
मण्डलाग्र	मण्डलग्गं	मण्डलग्गो।
कररुह	कररुहं	कररुहो।
वृक्ष	रुक्खं	रुक्खो।

जे शब्दोने छेडे भाववाची 'इमा' प्रत्यय होय ते शब्दो नारी-जातिमां विकल्पे वपराय छे:

	नर०	ना०
गरिमन्	गरिमा	गरिमा।
महिमन्	महिमा	महिमा।
निर्लज्जिमन्	निल्लज्जिमा	निल्लज्जिमा।
धूर्तिमन्	धुत्तिमा	धुत्तिमा।

अञ्जलि वगेरे शब्दो नारीजातिमां विकल्पे वपराय छे:

		नारी०
अञ्जलि	अंजली	अंजली।
पृष्ठ	पिट्ठं	पिट्ठी।
अक्षि	अच्छि	अच्छी।
प्रश्न	पण्हो	पण्हा।
चौर्य	चोरिअं	चोरिआ।
कुक्षि	कुच्छी	कुच्छी।
बलि	बली	बली।
निधि	विही	विही।
रश्मि	निही	निही।
विधि	रस्सी	रस्सी।
ग्रन्थि	गंठी	गंठी।

संधि

संधि एटले परस्पर संधाई जवुं-एक बीजामां मळी जवुं के एक बीजामां छुपाई जवुं.

प्रथम पदनो छेल्लानो स्वर अने पाछला पदनो पहेलो स्वर ए बन्ने एक बीजामां मळी जई जे फेरफार पामे तेनुं नाम स्वरसंधि.

पदनी अंदरनो व्यंजन तेनी पछीना व्यंजनने लीधे जे फेरफार पामे तेनु नाम व्यंजनसंधि.
जेम के:

कंठ, कण्ठ. चंद, चन्द. कंकण, कङ्कण.

संख, सङ्ख. गंगा, गङ्गा. वगेरे

अर्धमागधीमां संस्कृतनी पेठे जुदा जुदा व्यंजनोनी संधि थती नथी.

१ एक पदमां संधि थती ज नथी.

नई (नदी) पइ (पति) कइ (कवि) गअ (गज)
गउआ (गो-गाय) काअ (काक) लोअ (लोक)
कइ (कवि) रइ (रति) वगेरे.

अपवाद : केटलाक शब्दोमां एक पदमां पण स्वरसंधि थई जाय छे :

बि + ईअ = बीअ } —बीजुं-द्वितीय
बि + इअ = बिइअ }

काहि + इ = काही } —करशे-करिष्यति
काहिइ }

*थ + इर = थेर (वृद्ध-स्थविर)

च + उ + द्दस = चोद्दस (चौद-चतुर्दश)

* जूओ-आगळनां उदाहरणो पृ० ७३ नि० २०।

कुंभ + आर = कुंभार (कुंभार-कुम्भकार)

चक्क + आअ = चक्काअ (चक्रवाक)

साल + आहण = सालाहण (शालिवाहन राजा)

२ क्रियापदना छेडाना स्वरनी कोई बीजा पदना स्वर साथे संधि थती[1] नथी: जेमके;

होइ + इह = होइ इह

३ इ ई के उ ऊ पछी कोई विजातीय स्वर आवे तो संधि थती[2] नथी: जेमके;

इ—जाइ + अंध = जाइअंध (जातिअंध-जात्यन्ध-जन्मांध)

ई—पुढवी + आउ = पुढवीआउ (पृथ्वी आप-पृथ्वी पाणी)

उ—बहु + अट्ठिय = बहुअट्ठिय (बहुअस्थिक-घणां हाडकां-वाळुं)

ऊ—वहू + अवगूढ = वहूअवगूढ (वधूअवगूढ)

४ ए के ओ पछी कोई पण स्वर आवे तो संधि थती नथी:[3]

ए—महावीरे + आगच्छइ । एगे + आया । एगे + एवं ।

ओ—अहो + अच्छरियं । गोयमो + आघवेइ । आलक्खिमो + इण्हिं ।

५ बे पदमां पण व्यंजन लोपाया पछी ज्यां जे स्वर बाकी रहेलो होय त्यां ते स्वरनी संधि थती नथी:[4]

निशाकर—निसा+अर=निसाअर । निसि+अर=निसिअर ।

रजनीकर—रयणी + अर = रयणीअर ।

रजनीचर—रयणी + अर = रयणीअर

निशाचर—निसा+अर=निसाअर । निसि+अर=निसिअर ।

गन्धपुटी—गंध + उडी = गंधउडी ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।९। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।८।

६ अ के आ पछी अ के आ आवे तो आ थई जाय छेः१

अ—जीव + अजीव = जीवाजीव।

विसम + आयव = विसमायव (विषम आतप)

आ—गंगा + अहिवइ = गंगाहिवइ।

जउणा + आणयण = जउणाणयण (यमुना आनयन)

७ इ के ई पछी इ के ई आवे तो ई थई जाय छेः२

मुणि + इयर = मुणीयर	पुहवी + ईस = पुहवीस।
दहि + ईसर = दहीसर	पुहवी + इसि = पुहवीसि।

८ उ के ऊ पछी उ के ऊ आवे तो ऊ थई जाय छेः३

वहू + उदग = वहूदग	वहू + उवमा = वहूवमा।
साउ + उदग = साऊदग	वहू + ऊसास = वहूसास।
वहु + ऊसास = वहूसास	

९ स्वर पछी स्वर आवे तो आगला स्वरनो लोप पण थई जाय छेः४

नर + ईसर —नर् + ईसर = नरीसर, नरेसर।

तिदस + ईस—तिदस् + ईस = तिदसीस, तिदसेस।

नीसास + ऊसास = नीसास् + ऊसास = नीसासूसास।

रमामि + अहं = रमामहं। तम्मि + अंसहर = तम्मंसहर।

उवलभामि + अहं = उवलभामहं।

देविंद + अभिवंदिअ = देविंदभिवंदिअ।

ददामि + अहं = ददामहं। ण + एत्र = णेत्र।

१० ज्यां बे स्वर पासे पासे आवेला होय त्यां केटलेक स्थळे पहेला पदनो पहेलो स्वर लोप पामी जाय छेः५

---

१. २. ३. हे० प्रा० व्या० १।२।३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०। ५. हे० सं० व्या० १।२।२७। मां सूत्रने मळतो आवो ज आ नियम छे.

फासे + अहियासए = फासे हियासए
वालो + अवरज्झइ = वालो वरज्झइ
पस्संति + अणंतसो = पस्संति णंतसो

११ सर्व नामनो स्वर के अव्ययनो स्वर पासे पासे आवेला होय तो ते बेमांथी गमे ते एकनो स्वर लोप पामे छे:१

तुब्भे + इत्थ = तुब्भित्थ	जे + एत्थ = जेत्थ,
अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ	जइ + अहं = जइहं ।
जे + इमे = जेमे	जइ + इमा = जइमा ।

१२ कोई पण पदनी पछी अपि के अवि अव्यय आवेल होय तो तेनो अ विकल्पे लोप पामे छे:२

किं + अपि = किं पि, किमवि
केण + अवि = केण वि, केणावि
कहं + अपि = कहं पि, कहमवि

१३ कोई पण पद पछी इति अव्यय आवेल होय तो तेनो आदिनो इ लोप पामे छे.३

जं + इति = जं ति	जुत्तं + इति = जुत्तं ति ।
दिट्ठं + इति = दिट्ठं ति	

१४ कोई पण पदना छेडाना स्वर पछी इति अव्यय आवेल होय तो तेना आदिना इ नो लोप करवो अने ति ने बदले त्ति करवो:४

तहा + इति = तहत्ति५	पुरिसो + इति = पुरिसो त्ति
पिओ + इति = पिओ त्ति	

१५ जुदा जुदा पदोमां अ के आ पछी इ के ई आवे तो ए थाय छे: ६

न + इच्छति = नेच्छति	जाया + ईस = जायेस ।
वास + इसि = वासेसि	खट्टा + इह = खट्टेह
दिण + ईस = दिणेस	(खट्वा + इह)

१६ जुदा जुदा पदोमां अ के आ पछी उ के ऊ आवे तो ओ थाय छे:७

१. हे० प्रा व्या० ८।१।४०। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।४१।
३. ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।४२। ५. जुओ पानुं ११ नियम २.
६. ७. हे० सं० व्या० १।२।६।

सिहर+उवरि=सिहरोवरि	गंगा + उवरि = गंगोवरि।
पग + ऊण = पगोण	वीसा + ऊण = वीसोण।
पाअ+ऊण=पाओण (पोणुं)	

१७ पदना छेडाना म्नो अनुस्वार थाय छेः१

जलम्—जलं	अपवाद :—
फलम्—फलं	वणम्मि—वणंमि
गिरिम्—गिरिं	वणम्मि

१८ पदने छेडे आवेला म् पछी स्वर आवे तो तेनो विकल्पे अनुस्वार थाय छेः२

उसभम् + अजिअं = उसभं अजिअं, उसभमजिअं।

नगरम् + आगच्छइ = नगरं आगच्छइ, नगरमागच्छइ।

१९ केटलाक शब्दोमां छेडाना व्यंजननो अनुस्वार थई जाय छेः३

साक्षात्—सक्खं	पृथक्—पिहं
यत्—जं	सम्यक्—सम्मं
तत्—तं	इहक्—इहं
विष्वक्—वीसुं	इहयक्—इहयं

२० ङ् ञ् ण् अने न् पछी कोई पण व्यंजन आवे तो तेनो अनुस्वार थई जाय छेः४

शङ्ख—सङ्ख—संख	षण्मुख—छण्मुह-छंमुह।
कञ्चुक—कञ्चुअ-कंचुअ	सन्ध्या—संझा।

२१ केटलाक शब्दोमां अनुस्वारनो लोप थई जाय छेः५

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।२८।२९।

विंशति—वीसा
त्रिंशत्—तीसा
संस्कृत—सक्कय
संस्कार—सक्कार
मांस—मांस, मंस
मांसल—मासल, मंसल
कांस्य—कास, कंस
पांशु—पासु, पंसु
कथम्—कथं-कह, कहं
एवम्—एवं-एव, एवं
नूनम्—नूनं-नूण, नूणं
इदानीम्—इआणि—
इआणि, इआणिं,
दाणि, दाणिं,
किम्—किं—कि, किं
संमुख—समुह, संमुह
किंशुक—केसुअ, किंसुअ
सिंह—सीह, सिंघ

२२ अनुस्वार पछी वर्गनो कोई पण अक्षर आवतां अनुस्वारने बदले वर्गनो पांचमो अक्षर विकल्पे मुकाय छे:१

पंक—पङ्क, पंक
संख—सङ्ख, संख
अंगण—अङ्गण, अंगण
लंघण—लङ्घण, लंघण
कंचुअ—कञ्चुअ, कंचुअ
लंछण—लञ्छण-लंछण
अंजन—अञ्जण, अंजण
संझा—सञ्झा, संझा
कंटअ—कण्टअ, कंटअ
कंठ—कण्ठ, कंठ
कंड—कण्ड, कंड
संढ—सण्ढ, संढ
अंतर—अन्तर, अंतर
पंथ—पन्थ, पंथ
चंद—चन्द, चंद
बंधु—बन्धु, बंधु
कंप—कम्प, कंप
गुंफ—गुम्फ गुंफ
कलंब—कलम्ब, कलंब
आरंभ—आरम्भ, आरंभ

२३ केटलाक पदोमां बे पदनी वच्चे म् उमेराय छे:२

अन्न + अन्न = अन्नमन्न—अन्नमन्न।
एग + एग = एगमेग—एगमेग।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।३०। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१।

चित्त + आणंदिय = चित्तम् आणंदिय–चित्तमाणंदिय ।
जहा + इसि = जहाम् इसि–जहामिसि ।
इह + आगअ = इहम् आगअ–इहमागअ ।
हट्ठतुट्ठ + अलंकिय = हट्ठतुट्ठम् अलंकिय–हट्ठतुट्ठमलंकिय ।
अणेगछंदा + इह = अणेगछंदाम् इह-अणेगछंदामिह ।
जुव्वण + अप्फुण्ण = जुव्वणम् अप्फुण्ण–जुव्वणमप्फुण्ण ।

२४ केटलाक शब्दोनो छेडानो व्यंजन लोपातो नथी परंतु ते पासेना स्वरमां भळी जाय छे:१

किम् + इहं = किमिहं
यद् + अस्ति = जदत्थि
पुनर् + अपि = पुणरवि

निर् + अंतर = निरंतर
दुर् + अतिक्रम = दुर् अइक्कम = दुरइक्कम

२५ अहीं संधिना जे जे नियमो जणावेला छे ते बधानो उपयोग बे पदो वच्चे ज करवानो छे अने ज्यां एक करतां वधारे नियमो लागवानो संभव जणाय त्यां प्रयोगोने अनुसारे अने अर्थभ्रम न थाय ए रीते ज संधि करवी.२

समास३

समास एटले संक्षेप. वधारे अर्थने सूचववा सारु थोडा शब्दो वापरवानी शैलीनुं नाम समास छे.

लखवुं ओछुं पडे अने बोलवानुं पण ओछुं रहे छतां अर्थने विशदपणे कई रीते सूचवी शकाय ए दृष्टिमांथी आ समासनी शैलीनी शोध थयेली छे अने ए शोध पंडिताउ शैलीमां सविशेषपणे विकास पण पामी छे.

---

१. स्वरहीनं परेण संयोज्यम् । तथा हे० प्रा० व्या० ८।१।१३, १४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।५। ३. हे० सं० व्या० ३।१।१ थी १६३।

बोलचालनी लोकभाषामां आ शैलीनो प्रचार ओछो जणाय छे. परंतु लोकभाषा ज ज्यारे केवळ साहित्यनी भाषा बनी जाय छे त्यारे तेमां आ समासनी शैलीनो उपयोग सारी रीते थयेलो मळे छे.

'न्यायनो अधीश' कहेवुं होय तो समास वगरनी शैलीमां 'नायस्स अधीसो' कहेवाय अने समासवाळी शैलीमां 'नायाधीसो' कहेवाय. अर्थात् जे अर्थने बताववा सारु समास वगरनी शैलीमां छ अक्षरोनो खप पडे छे ते ज अर्थने बताववा समासवाळी शैलीमां केवळ चार अक्षरोथी ज चाले छे.

ए ज रीते 'जे देशमां घणा वीरो छे ते देश' कहेवुं होय तो समास वगरनी शैलीमां 'जम्मि देसे बहवो वीरा संति सो देसो' एटलुं लांबुं कहेवुं पडे त्यारे ते ज अर्थने बताववा सारु समासवाळी शैलीमां 'बहुवीरो देसो' एटलुं ओछुं कहेवाथी ज पूरुं काम सरी जाय अर्थात् जे अर्थने बताववा माटे समास वगरनी शैलीमां चौद अक्षरोनी जरूर रहे छे ते ज अर्थने समासवाळी शैली केवळ छ अक्षरोथी संपूर्णपणे बतावी शके छे. आ रीते समासवाळी अने समास वगरनी शैलीनी आ एक मोटी विशेषता छे.

आ उपरांत समासवाळी शैलीनी बीजी पण अनेक विशेषताओ छे. जेमके, 'अहिणउलं' (अहिनकुलम्) एवो एकवचनी द्वन्द्व, ते बे वच्चेना एटले साप अने नोळीया वच्चेना स्वाभाविक वैरने बतावे छे त्यारे 'देवासुरं' एवो एकवचनी द्वन्द्व, ते बे (एटले देव अने असुर) वच्चेना मात्र विरोधने सूचवे छे.

उपरांत जे समासमां केटलीक वार पूर्वपदनी विभक्ति लोपाती नथी ते पण विशेष अर्थने बतावे छे. 'गेहेसूरो' समास माणसनी कायरताने सूचित करे छे. 'तित्थे कागो अत्थि' एवो समास वगरनी शैलीवाळुं वाक्य खास कोई विशेषता बतावतुं नथी त्यारे 'तित्थकाग'

(तीर्थकाक) एवी समासवाळी शैलीनुं वाक्य तीर्थवासी मनुष्यनी अध- मता वतावे छे.

केटलीक वार समासमांनुं मध्यम पद ज लोपाई जाय छे छतां समास द्वारा ते लोपायेला मध्यम पदनो अर्थ बराबर सूचित थतो रहे छे. जेमके; 'झसोदर' शब्द समासयुक्त छे. तेनो अर्थ 'माछलाना पेटनी जेवुं जेनुं पेट छे ते' एवो थाय छे. खरी रीते आवो अर्थ बतावबा झसोदरोदर (झस–माछलुं, उदर–पेट, उदर–पेट) आवो शब्द वपरावो जोइए; त्यारे एने बदले केवळ 'झसोदर' शब्द ज उक्त अर्थने पूर्णपणे वतावे छे. ए आ समासनो ज एक चमत्कार छे. आवा समासनुं नाम 'मध्यमपदलोपी' समास कहेवाय छे. आ सिवाय पण समासवाळी शैलीनी विशेषता वतावबा दंडादंडी (दण्डादण्डि) केसा- केसि (केशाकेशि) अनुरूव (अनुरूप) जहासत्ति (यथाशक्ति) वगेरे अनेक उदाहरणो आपी शकाय, परंतु एवां वधां अनेक उदाहरणो आप- वानुं आ स्थान नथी माटे ए विशे वधारे न जणावतां प्राकृतमां वपराता केटलाक समासो संबंधे चर्चा करवी उचित छे.

अहीं ए खास याद राखवुं जोईए के समासोनी जे खूबी पंडिताउ भाषामां छे तेवी खूबी एक समयनी लोकभाषारूप आ प्राकृत भाषामां नथी. परंतु ज्यारथी आ भाषा पण साहित्यनी ज बनी गई त्यारथी आना ऊपर पण ए पंडिताउ भाषाना समासोनी असर सारी पेठे थयेली छे अने एम छे माटे ज अहीं समासोनी थोडी विगतवार चर्चा करावर समुचित छे

समासना प्रसिद्ध चार प्रकार नीचे प्रमाणे छे:

१. दंद (द्वन्द्व). २ तप्पुरिस (तत्पुरुष). ३ बहुव्वीहि (बहुव्रीहि) ४ अव्वईभाव (अव्ययीभाव)

(जे शब्दोनो समास करयो होय तेमने छूटा छूटा बतावी बता- ववा तेनुं नाम 'विग्गह' छे. विग्रह एटलो छूटुं करवुं)

१ द्वंद्व समास

दंद एटले जोडकुं. दंद समासना जोडकामां वपराता वन्ने शब्दोमां या वेथी पण वधारे शब्दोमां कोई, मुख्य के गौण नथी होतां. अर्थात् दंद समासमां वपराता तमाम शब्दोनी समान मर्यादा छे. जेमके 'मावाप' 'सगांवहालां' ए वन्ने उदाहरणो दंद समासनां छे तेम पुण्णपावाइं, जीवाजीवा, सुहदुक्खाइं, सुरासुरा–वगेरे उदाहरणो पण दंद समासनां छे, ए दंद समासनो विग्रह आ प्रमाणे छेः

पुण्णं च पावं च पुण्णपावाइं.
जीवा य अजीवा य जीवाजीवा.
सुहं च दुक्खं च सुहदुक्खाइं.
सुरा य असुरा य सुरासुरा.

दंद समास द्वारा तैयार थयेलुं पद घणुं करीने बहुवचनमां वपराय छे. ए ज रीते हत्थपाया (हस्तपादाः) लाहालाहा (लाभालाभाः) सारासारं (सारासारम्) देवदाणवगंधव्वा (देवदानवगान्धर्वाः) वगेरे.

दंद समासना विग्रहमां 'य' 'अ' के 'च' वपराय छे.

२ तप्पुरिस समास

जे समासनुं पूर्वपद पोतानी विभक्तिना संबंधथी उत्तरपद साथे एटले पाछला पद साथे जोडायेलुं होय ते तप्पुरिस समास. आ समासनुं पूर्वपद बीजी विभक्तिथी मांडीने सातमी विभक्ति सुधीनी विभक्तिवाळुं होय छे. जे जे विभक्तिवाळुं ए पूर्वपद होय ते ते विभक्तिना नामवाळो तप्पुरिस समास कहेवाय. जेमके;

बिइयातप्पुरिस (द्वितीयातत्पुरुष) तइयातप्पुरिस (तृतीयातत्पुरुष) चउत्थीतप्पुरिस (चतुर्थीतत्पुरुष) पञ्चमीतप्पुरिस (पञ्चमी तप्पुरिस (षष्ठीतत्पुरुष) अने सत्तमीतप्पुरिस (सप्तमी॰

ते दरेकनां क्रमवार उदाहरणो आ प्रमाणे छेः

बिईया तप्पुरिस—

इंदियं अतीतो—इंदियातीतो
सुहं पत्तो—सुहपत्तो
दिवं गतो—दिवंगतो
वीरं अस्सिओ-वीरस्सिओ
(वीराश्रितः)
खणं सुहा—खणसुहा

तईया तप्पुरिस—

ईसरेण कडे—ईसरकडे
(ईश्वरकृतः)
दयाए जुत्तो—दयाजुत्तो
गुणेहिं संपन्नो—गुणसंपन्नो
रसेण पुण्णं-रसपुण्णं
मायाए सरिसी-माउसरिसी
कुलेण गुणेण सरिसी-कुल-
गुणसरिसी

चउत्थी तप्पुरिस—

लोगाय हितो—लोगहितो
लोगस्स सुहो—लोगसुहो
बहुजणस्स हितो—बहुजण-
हितो
थंभाय कट्ठं—थंभकट्ठं

पंचमी तप्पुरिस—

दंसणाओ भट्ठो—दंसणभट्ठो
अन्नाणाओ भयं-अन्नाणभयं
संसाराओ भीओ-संसार-
भीओ
वग्घाओ भयं—वग्घभयं
रिणाओ मुत्तो—रिणमुत्तो
(—मुक्तः)

छट्ठी तप्पुरिस—

देवस्स मंदिरं—देवमंदिरं
कन्नाए मुहं—कन्नामुहं
नरस्स इंदो—नरिंदो
देवस्स इंदो—देविंदो
लेहस्स साला—लेहसाला
विज्जाए ठाणं—विज्जाठाणं
समाहिणो ठाणं—समाहि-
ठाणं

सत्तमी तप्पुरिस—

कलासु कुसलो—कला-कुसलो	जिणेसु उत्तमो—जिणोत्तमो
बंभणेसु उत्तमो-बंभणोत्तमो	दिणेसु उत्तिमे—दिणोत्तिमे
	नरेसु सेट्ठो—नरसेट्ठो

तप्पुरिस समासना पेटामां **उववय समास** (उपपद समास) आवी जाय छे. उववय समासमां पाछलुं पद कृदंतसाधित होय छे ए ध्यानमां राखवानुं छे.

उववय समासनां केटलांक उदाहरणोः

कुंभगार—(कुम्भकार)	भासगार—(भाष्यकार)
सव्वण्णु—(सर्वज्ञ)	निण्णया—(निम्नगा)
पायव—(पादप)	नीयगा—नीचगा)
कच्छव—(कच्छप)	नम्मया—(नर्मदा)
अहिव—(अधिप)	सगडब्भि—(स्वकृतभिद्)
गिहत्थ—(गृहस्थ)	पावणासग—(पापनाशक)
सुत्तगार—(सूत्रगार)	वगेरे
वुत्तिगार—(वृत्तिकार)	

विशेषण अने विशेष्यनो समास पण तप्पुरिसना पेटामां आवी जाय छे. तेनुं बीजुं नाम '**कम्मधारय**' समास छेः तेनां उदाहरणोः

पीअं च तं वत्थं च—पीअवत्थं
रत्तो च सो घडो च—रत्तघडो
गोरो च सो वसभो च—गोरवसभो
महंतो च सो वीरो च—महावीरो
वीरो च सो जिणो च—वीरजिणो
महंतो च सो रायो च—महारायो
कण्हो च सो पक्खो च—कण्हपक्खो

सुद्धो च सो पक्खो च—सुद्धपक्खो

वळी, आ समासमां घणी वार बन्ने विशेषणो पण होय छेः

रत्तपीअं वत्थं—(रक्तपीतं वस्त्रम्)

सीउण्हं जलं—(शातोष्णं जलम्)

घणी वार पूर्वपद उपमासूचक होय छेः

चंदो इव मुहं—चंदमुहं

घणो इव सामो—घणसामो

वज्ज इव देहो—वज्जदेहो (वज्रदेहः)

घणी वार पाछलुं पद उपमासूचक होय छेः

मुहं चंदो इव—मुहचंदो | जिणो इंदो इव—जिणेंदो

घणी वार पूर्वपद केवळ निश्चयदर्शक होय छेः

संजमो एव धणं—संजमधणं

तवो च्चिअ धणं—तवोधणं

पुण्णं चेअ पाहेज्जं—पुण्णपाहेज्जं

कम्मधारय समासनो प्रथम शब्द संख्यासूचक होय तो तेनुं नाम दिगु (द्विगु) समास कहेवाय छेः

नवण्हं तत्ताणं समाहारो—नवतत्तं

चउण्हं कसायाणं समूहो—चउक्कसायं

तिण्हं लोआणं समूहो—तिलोई

तिण्हं लोगाणं समूहो—तिलोगं

निषेधदर्शक 'अ' के 'अण'नो नाम साथे जे समास थाय तेनुं नाम नतप्पुरिस समास. जेमके;

न लोगो—अलोगो	न इट्ठं—अणिट्ठं
न देवो—अदेवो	न दिट्ठं—अदिट्ठं
न आयारो—अणायारो	न इत्थी—अणित्थी

(ज्यां नामनी आदिमां स्वर होय त्यां ज 'अण' वपराय छे.)

प अइ अव परि अने **नि** वगेरे उपसर्गोनी साथे पण तप्पुरिस समास थाय छे. आनुं नाम **पादि तप्पुरिस** कहेवाय छेः

पगतो आयरियो पायरियो	**उग्गओ वेलं उव्वेलो**
संगतो अत्थो समत्थो	**निग्गओ कासीए निक्कासि**
अइक्कतो पल्लंकं अइपल्लंको	

ए ज रीते पुणोपवुड्ढो, अंतब्भूओ वगेरे पण समजवा.

२ बहुव्वीहि समास—

आ समासमां बे के तेथी वधारे पदोनो उपयोग थाय छे. 'बहुव्वीहि' एटले बहु छे व्रीहि (डांगर) जेनी पासे एवो जे कोई होय ते 'बहुव्वीहि' कहेवाय. जेवो 'बहुव्वीहि' नो अर्थ छे तेवो ज आ समास द्वारा तैयार थयेला तमाम शब्दोनो अर्थ छे. तात्पर्य ए के आ समासमां प्रथम पद घणुं करीने विशेषणरूप होय छे अथवा उपमासूचक होय छे अने प्रथम पछीनुं पद विशेष्यरूप होय छे अने समास थया पछी जे एक आखुं विशिष्ट नाम तैयार थाय छे ते पण बीजा कोईनुं विशेषण होय छे. आ समासमां वपरातां नामो प्रधान नथी परंतु तेमनाथी जुदुं अन्य तत्त्व प्रधान होय छे माटे ज आ समासने अन्यपदार्थ प्रधान कहेलो छे. उपर जणावेलो 'बहुव्वीहि' पदनो अर्थ ज आ हकीकतने स्पष्ट करे छे.

ज्यारे आ समासमां वपरातां नामो समान विभक्तिवाळां होय छे त्यारे आ समासने **समानाधिकरण बहुव्वीहि** कहेवामां आवे छे अने ज्यारे ए नामो जुदी जुदी विभक्तिवाळां होय छे त्यारे **वहिकरण (व्यधिकरण) बहुव्वीहि** कहेवामां आवे छे.

समानाधिकरण बहुव्वीहिनां उदाहरणोः

*२ आरूढो वाणरो जं रुक्खं सो आरूढवाणरो रुक्खो (वृक्षः)

३ जिआणि इंदियाणि जेण सो जिइंदियो मुणी
जिओ कामो जेण सो जिअकामो महादेवो
जिआ परीसहा जेण सो जिअपरीसहो गोयमो

५ भट्ठो आयारो जाओ सो भट्ठायारो जणो
नट्ठो मोहो जाओ सो नट्ठमोहो साहू

६ घोरं बंभचेरं जस्स सो घोरबंभचेरो जंबू
समं चउरंसं संठाणं जस्स सो समचउरंससंठाणो रामो
कओ अत्थो जस्स सो कयत्थो कण्हो
आसा अंबरं जेसिं ते आसंबरा
सेयं अंबरं जेसिं ते सेयंबरा
महंता बाहुणो जस्स सो महाबाहू
पंच वत्ताणि जस्स सो पंचवत्तो—सीहो
चत्तारि मुहाणि जस्स सो चउम्मुहो—बम्हा
एगो दंतो जस्स सो एगदंतो—गणेसो

७ वीरा नरा जम्मि गामे सो गामो वीरणरो
सुत्तो सिंघो जाए सा सुत्तसिंहा गुहा

व्यधिकरण बहुव्रीहि

चक्कं पाणिम्मि जस्स सो चक्कपाणी
गंडीवं करे जस्स सो गंडीवकरो अज्जुणो

उपमान जेमां प्रथम पद छे एवा बहुव्रीहिनां उदाहरण:

मिगनयणाइं इव नयणाणि जाए सा मिगनयणा

ए ज प्रमाणे कमलनयणा, गआणणो, हंसगमणा, चंदमुही वगेरे.

---

* २, ३ वगेरे संख्या, समासमां न परायेलां नामोने लागेली छे ते विभक्तिनी सूचक छे.

'न' बहुव्रीहि—

न कारसूचक 'अ' के 'अण' साथे पण बहुव्रीहि समास थाय छे, ते आ प्रमाणे :

न अत्थि भयं जस्स सो अभयो
न अत्थि पुत्तो जस्स सो अपुत्तो.
न अत्थि नाहो जस्स सो अणाहो.
न अत्थि पच्छिमो जस्स सो अपच्छिमो.
न अत्थि उयरं जीए सा अणुयरा

'स' बहुव्रीहि

ए ज प्रमाणे 'सह'सूचक 'स' अव्यय साथे पण बहुव्रीहि समास थाय छे :

पुत्तेण सह सपुत्तो राया.
सीसेण सह ससीसो आयरिओ
पुण्णेण सह सपुण्णो लोगो.
पावेण सह सपावो रक्खसो.
कम्मणा सह सकम्मो नरो

फलेण सह सफलं.
मूलेण सह समूलं
चेलेण सह सचेलं ण्हाणं
कलत्तेण सह सकलत्तो नरो.

ए ज रीते प नि वि अव अइ परि वगेरे उपसर्गो साथे बहुव्रीहि समास थाय छे अने तेनुं नाम प्रादि बहुव्रीहि छे :

प (पगिट्ठं) पुण्णं जस्स सो पपुण्णो जणो
नि (निग्गया) लज्जा जस्स सो निल्लज्जो.
वि (विगतो) धवो जीए सा विधवा.
अव (अपगतं) रूवं जस्स सो अवरूवो.
अइ (अइक्कंतो) मग्गो जेण सो अइमग्गो रहो.
परि (परिगतं) जलं जाए सा परिजला परिहा

४ अव्वईभाव समास—

ज्यारे युद्ध एटले लडाई वा झगडो बताववा सामसामी क्रिया वारंवार बताववी होय त्यारे आ समासनो उपयोग छे. भाषामां वपराता मारामारी, मुक्कामुक्की वगेरे शब्दो आ समासना गणाय. प्रस्तुतमां केसा-केसि, दंडादंडि वगेरे शब्दो छे. आ समासमां जे बे नामनो समास थाय ते बन्ने नामो तद्दन एक सरखां होवां जोईए ए ध्यानमां राख-वानुं छे एटले 'हत्थ' अने 'पाय' जेवा जुदा जुदा शब्दोनो आ समास न थाय.

आ समास अव्यय समान गणाय छे.

आ सिवाय बीजां केटलांक अव्ययो साथे पण आ समास थाय छे:

उव—गुरुणो समीवं उवगुरु.

अणु—भोयणस्स पच्छा अणुभोयणं.

अहि—अप्पंसि अंतो अज्झप्पं.

जहा—सत्तिं अणइक्कमिऊण जहासत्ति.

जहा—विहिं अणइक्कमिऊण जहाविहि.

जहा—रुग्गयं अणइक्कमिऊण जहारिहं.

पइ—पुरं पुरं पइ पइपुरं

जे शब्दो समासमां आवेला होय छे तेमांना प्रथम शब्दनो अंतिम स्वर ह्रस्व होय तो समासमां घणुं करीने दीर्घ करवो अने ए ज रीते दीर्घ स्वर होय तो ह्रस्व करवो.[1]

ह्रस्वनो दीर्घ—

अन्तर्वेदि—अंतावेइ	भुजयन्त्र-भुआयंत, भुअयंत
सप्तविंशति—सत्तावीसा	पतिगृह—पईहर, पइहर
वारिमती—वारीमई, वारिमई	वेणुवन—वेलूवण, वेलुवण

1. हे० प्रा० व्या० ८।१।४।

दीर्घनो ह्रस्व—

यमुनातट—जँउणयड, जंउणायड
नदीस्रोतस्—नइसोत्त, नईसोत्त
गौरीगृह—गोरिहर, गोरीहर
वधूमुख—वहुमुह, वहूमुह

आ सिवाय आ समासना बीजा घणा प्रयोगो पंडिताउ भाषा संस्कृतमां मळे छे, पण ते बधानो अहीं विशेष उपयोग नथी माटे तेमने नोंध्या नथी.

आ रीते समासो विशे उपयोगितानी दृष्टिए उदाहरणो साथे अहीं जोईए तेटली स्पष्टता थई गई छे एटले आथी अधिक लखवानी अपेक्षा नथी.

———

(पाठमाळा विभाग—वाक्यरचना विभाग)

अक्षरपरिवर्तन—व्याकरण—ना विभागमां वर्णविज्ञान, शब्दना विभाग अने शब्दना फेरफारने लगती तमाम हकीकतो समजावेली छे. 'शब्दना फेरफार'वाळा भागमां व्याकरणनो घणोखरो भाग 'स्वरना फेरफार' अने 'व्यंजनना फेरफार' ना मथाळा नीचे बतावेलो छे. आ बधुं समजवुं सरळ जणाय माटे ए फेरफारवाळी हकीकत आगला प्रकरणमां अकारादि क्रमे अने ककारादि क्रमे गोठवेली छे तथा उदाहरणोमां जे शब्दो आपेला छे तेमना अर्थो क्यांय क्यांय नोंधेला छे. वळी, तेमांना केटलाक शब्दो तद्दन सुगम छे एथी पण ए बधाना अर्थो नथी आप्या; तेमना बधाना अर्थो छेवटना शब्दकोशमां तो आपवाना ज छे. फेरफारवाळा प्रकरणमां संधि अने समासनी हकीकत वीगतथी उमेरेली छे अने विद्यार्थीने समजवी ते सुगम पडे माटे उदाहरणो विशेषे करीने समजावेलां छे.

हवे आ भागमां जुदा जुदा पाठोमां क्रियापदोनां रूपो, नामोनां रूपो तथा कृदंतोनां अने तद्धितनां रूपो आपवानां छे तथा प्राकृतना विशेष अभ्यास माटे गुजराती वाक्योनां भाषांतरो अने प्राकृत वाक्योनां भाषांतरो पण विद्यार्थी करे ते माटे उपयोगी पण थोडां थोडां वाक्यो मूकवानी योजना करवानी छे. विद्यार्थी माटे प्रश्नोत्तरना पाठो आपी शक्या नथी, एने स्थाने एकाद पाठ मूकेल छे एटले ए माटे तो शिक्षके पोते ज योजना करी लेवानी छे अथवा समजदार विद्यार्थीए पोतानी जाते ज प्रश्नो उपजावी पोतानो अभ्यास पाको करवानो छे.

———

पाठ १ लो

वर्तमान काळ

एक वचनना पुरुषबोधक प्रत्ययो

१ पुरुष एटले (हुं)   २ पुरुष एटले (तु)   ३ पुरुष एटले (ते)

पुरुष	प्रत्यय	संस्कृत प्रत्यय
१	[1]मि	(मि)
२	सि[2]	(सि)
३	ति[2] इ	(ति)

धातुओ

[3]हरिस् (हृष्[4]) हरखवुं
वरिस् (वृष्) वरसवुं
करिस् (कृष्) करषवुं-काढवुं-खेंचवुं, खेडवुं
मरिस् (मृष्) खिमासवुं-विचारवुं
धरिस् (धृष्) घसवुं-सामा थवुं
गरिह् (गर्ह्) गरहवुं-निंदवुं

१. है० प्रा० व्या० ८।३।१४१।१४०।१३९। २. संस्कृतना 'से' प्रत्ययनी पेठे अहीं 'से' प्रत्यय पण वपराय छे. तथा 'ते' प्रत्ययनी पेठे अहीं 'ते' अने 'ए' एम बे प्रत्यय पण वपराय छे. अने धातुने छेडे ज्यारे 'अ' आवेलो होय त्यारे ज 'ते' 'ए' अने 'से' प्रत्ययनो उपयोग करवानो छे. है० प्रा० व्या० ८।३।१४५। ३. जुओ पृ० ६५ नियम १६. ४. ( ) आ निशानमां मूकेला तमाम धातुओ के नामो वगेरे संस्कृत छे अने केवळ सरखामणी करवा माटे तेमने अहीं जणावेला छे.

मरिस् (मर्ष्) सहवुं-क्षमा राखवी	जेम् (जेम्) जमवुं
घरिस् (घर्ष्) घसवुं	देक्ख् (दृश्) देखवुं
तुरिय् (तूर्य्) त्वरा करवी-उतावळ करवी	पुच्छ् (पृच्छ्) पूछवुं
अरिह् (अर्ह्) पूजवुं	पूर् (पूर्) पूरवुं
पुरिय् (पूर्य्) पूरवुं-वूरवुं-भरवुं	कर् (कर्) करवुं
	वंद् (वन्द्) वांदवुं
	पड् (पत्) पडवुं

१ मि ति न्ति वगेरे पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडतां पहेलां मूळ धातुओने छेडे विकरण 'अ' उमेरवामां आवे छे.१ जेमके;

वंद् + ति—वंद् + अ + ति = वंदति

पुच्छ् + ति—पुच्छ् + अ + ति = पुच्छति

२ प्रथम पुरुषना 'म'थी शरु थता प्रत्ययोनी पूर्वे आवेला 'अ'नो विकल्पे 'आ' थाय छे.२ जेमके;

वंद् + अ + मि = वंदामि, वंदमि

पड् + अ + मि = पडामि, पडमि

३ पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाड्या पछी धातुना अंगना 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे.३ जेमके;

वंद् + अ + इ = वंदेइ, वंदइ

जाण् + अ + सि = जाणेसि, जाणसि

पुच्छ् + अ + मि = पुच्छेमि, पुच्छामि, पुच्छमि

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२३९। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५४।१५५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५८।

रूपाख्यान

१ पु०	देक्खमि, देक्खामि, देक्खेमि
२ पु०	देक्खसि, देक्खेसि[1]
३ पु०	देक्खइ, देक्खेइ[1]

भाषांतर—वाक्यो

वांदुं छुं	धरुं छुं	(ते) जमे छे
घसुं छुं	पडुं छुं	,, विचारे छे
फरकुं छुं	पूछुं छुं	पूरे छे
(तुं) वांदे छे	(ते) घसे छे	(तुं) उतावळ करे छे
,, जमे छे	,, जाणे छे	,, निंदे छे
,, हरखे छे	,, पडे छे	,, पूजे छे
(ते) देखे छे	(तुं) खेंचे छे	(हुं) सहुं छुं
,, फरे छे	,, वरसे छे	,, फरकुं छुं
,, सहे छे	,, सहे छे	,, पडुं छुं

---

[2]वंदामि	अरिहेइ	हरिससि
फरिससे	पुच्छामि	मरिसामि
हरिसमि	धरिसंति	गरिहसि
वरिसंति	फरते	जेमइ
देक्खसि	जाणेसि	धरिसेमि
गरिहामि	फरिसंति	मरिसामि
तुरियइ	पूरइ	तुरियेसि

---

१. जुओ पृ० ९९, टिप्पण २. २. प्रथम पुरुषना एकवचनमां 'वंदे' रूप पण वपराय छे: वन्द्–अ+ए=वंदे (सं० वन्दे–हुं वांदुं छुं) "उसभं अजिअं च वन्दे"

पाठ २ जो

लोकव्यापक कोई पण भाषामां द्विवचनने बताववा माटे खास जुदा प्रत्ययो जणाता नथी. ए प्रमाणे लोकव्यापक प्राकृतभाषामां पण द्विवचनना दर्शक जुदा प्रत्ययो नथी तेथी एकवचन पछी लागता ज बहुवचनना प्रत्ययो आपवामां आव्या छे. परंतु ज्यारे द्विवचननो अर्थ सूचववो होय त्यारे क्रियापद के नाम साथे द्विवचनदर्शक 'द्वि' शब्दनां बहुवचननां प्राकृतरूपोनो उपयोग करवो पडे छे. ते रूपो आ प्रमाणे छे:

प्रथमा तथा द्वितीया	[1]दोण्णि, दुण्णि (द्वीनि ?)
	वेण्णि, विण्णि
	दो (द्वौ)
	दुवे (द्वे)
	वे, वे (द्वे)

प्रयोगः वे सिव्वामो— अमे वे सीवीए छीए

वर्तमानकाळ (चालु)

बहुवचनना पुरुषबोधक प्रत्ययो

पु०	प्रत्यय	संस्कृत प्रत्यय
१	मो[2]	(मः)
२	ह[3]	(थ)
३	न्ति[4]	(न्ति)

---

१. 'दु' शब्दनां जे रूपो ऊपर जणाव्यां छे तेमनी साथे बराबर मळतां आवे एवां रूपो आज पण जुदी जुदी लोकभाषामां प्रचलित छे. जेमकेः—

वे, वे	गूजराती—वे	दुण्णि, दोण्णि	मराठी—दोन
विण्णि, वेण्णि	" बन्ने	दुवे	बंगाली—दुई
दो	हिंदी— दो		

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४४। 'मु' अने 'म' प्रत्ययो तथा शस्त्रना 'महे'नी पेठे 'म्ह' प्रत्यय पण वपराय छे: देवत्थामु, देवत्थाम, देवत्थम्ह. ३. ...त्था' प्रत्यय पण वपराय छे: बोहित्था. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४३। ४. 'न्ते' ...े 'इरे' प्रत्ययो पण वपराय छे: करन्ते, करिरे. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४२।

धातुओ

खुब्भ् (क्षुभ्य[1]) खोभवुं-क्षोभवुं-क्षोभ थवो, गभरावुं
कुप्प् (कुप्य) कोपवुं
सिव्व् (सिव्य) सीववुं
लव् (लप्[2]) लववुं-लवारो करवो
तव् (तप्) तपवुं-संताप थवो, तप करवो
वेव् (वेप्) वेपवुं-कंपवुं
सव् (शप्) शाप -शाप देवो

दीव् (दीप्) दीपवुं
जव् (जप्) जपवुं-जाप करवो
खिव् (क्षिप्) खेववुं-खेपवुं-फेंकवुं
खिप्प् (क्षिप्य) खेपवुं-खेववुं-फेंकवुं
लुट्ट् (लुट्य) लोटवुं-आळोटवुं
दिप्प् (दीप्य) दीपवुं
गच्छ् (गच्छ) जवुं
वोल्ल् (ब्रू) बोलवुं

४ प्रथम पुरुषना 'म'थी शरू थता बहुवचनना प्रत्ययोनी पूर्वे आवेला 'अ'नो विकल्पे 'इ' थाय[3] छे. जेमके;

वोल्ल्+अ+मो=वोल्लमो, वोल्लामो,[4] वोल्लिमो, वोल्लेमो

रूपाख्यान

१ पु० वोल्लमो, वोल्लामो, वोल्लिमो, वोल्लेमो.
२ पु० वोल्लह वोल्लेह[5]
३ पु० वोल्लंति,[6] वोल्लेंति

---

१. जुओ पृ० ५१ नियम १ २. जुओ पृ० ३५ नियम १. ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५५। ४. 'मो'नी पेठे मु, म, अने म्ह प्रत्ययोनां रूपो पण आ रीते करवां. जेमके; वोल्लमु, वोल्लामु, वोल्लिमु, वोल्लेमु. वोल्लम, वोल्लाम, वोल्लिम, वोल्लेम.
वोल्लम्ह, वोल्लाम्ह, वोल्लम्ह | वोल्लिम्ह, वोल्लेम्ह.
म्ह प्रत्यय लगाडतां जुओ पृ० ११ नियम २ ५. वोल्ल्+अ+इत्था= वोल्लित्था अथवा वोल्लत्था. जुओ पृ० ८२ नियम १. ६. वोल्ल्+अ+न्ते= वोल्लन्ते. वोल्ल्+अ+इरे=वोल्लिरे रूपो पण समजी लेवां.

वाक्य

अमे सीविये छिये
,, वांदिये छिये
,, आळोटिये छिये
(तमे बे) बोलो छो
,, सीवो छो
(अमे बे) फेंकिये छिये
,, कंपिये छिये
(तेओ बे) शाप दे छे
,, वांदे छे
,, जपे छे
(हुं) जाउं छुं
(ते) दीपे छे

(तमे बे) वांदो छो
(तमे) जपो छो
,, कोपो छो
,, गभराओ छो
(अमे बे) दीपिये छिये
(ते) सीवे छे
(हुं) कंपुं छुं
(हुं) फेंकुं छुं
(तुं) आळोटे छे
,, सीवे छे
,, जपे छे

चंदामो
सविरे
वंदह
बोल्लमो
लवेम
लुट्टह लुणिण
खिप्पित्था बे

खुब्भित्था दो
कुप्पेह
गच्छम्ह
वंदेते
गच्छंति
जविमो
वंदेम

वन्दंते
बोल्लामु
लुट्टामि
कुप्पेह
खिवासि
बोल्लसि
वंदति

पाठ ३ जो

वर्तमानकाळ (चालु)

सर्व पुरुष } ज्ज[1]
सर्व वचन } ज्जा

ज्ज अने ज्जा प्रत्ययो लागतां तेमनी पूर्वे आवेला अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' थाय[2] छे.

वंद् + अ + ज्ज = वंदेज्ज
वंद् + अ + ज्जा = वंदेज्जा

स्वरांत—छेडे स्वरवाळा—धातुओ

दा (दा) देवुं
धा (धा) धावुं
पा (पा) पीवुं
गा (गा) गावुं
जा (जा) जावुं-जवुं

ठा (स्था) स्थिर रहेवुं-ऊभा रहेवुं के बेसवुं
झा (ध्या) ध्यावुं-ध्यान करवुं

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५९।
पुरुषबोधक प्रत्ययो अने स्वरांत धातुओनी वच्चे ज्ज अने ज्जा ए बेमांथी गमे ते एक प्रत्यय उमेरीने पण रूपो थई शके छे:

हो + इ = हो + ज्ज + इ = होज्जइ अथवा होइ

हो + इ = हो + ज्जा + इ = होज्जाइ अथवा होइ। हे० प्रा० व्या० ८।३।१७८।

विकरण लगाड्या पछी—

हो + अ + इ = हो + अ + ज्ज + इ = होएज्जइ, होअइ

हो + अ + इ = हो + अ + ज्जा + इ = होएज्जाइ, होअइ

होज्जइ अथवा होएज्जइ साथे सरखावो होजे, थजे, करजे, चालजे, देजे, लेजे वगेरे गुजराती भाषानां रूपो.

धा (धाव्) धावुं-दोडवुं	बू (ब्रू) बोलवुं
खा (खाद्) खावुं	हो (भू) होवुं-थवुं
हा (हा) हीणा थवुं-तजवुं	णी } (नी) लई जवुं- णे } दोरवुं

अकारांत सिवायना स्वरांत धातुओने छेडे पुरुषबोधक प्रत्यय लगाडतां पहेलां विकरण 'अ' विकल्पे लागे छेः (हे० प्रा० व्या० ८।४।२४०)

हो + इ = होइ. हो + अ + इ = होअइ.
खा + इ = खाइ. खा + अ + इ = खाअइ.
धा + इ = धाइ. धा + अ + इ = धाअइ.

(अकारांत धातुने छेडे 'अ' छे ज माटे विकरण 'अ' फरीवार लगाडवानी जरूर नथी.)

अकारांत धातु—

चिइच्छ (चिकित्स) चिकित्सा करवी—शंका करवी अथवा उपाय करवो.
जुउच्छ (जुगुप्स) घृणा करवी अथवा दया करवी.
अमराय (अमराय) देवनी जेम रहेवुं.
चिइच्छइ. जुउच्छइ. अमरायइ.

रूपाख्यान

विकरण विनानां

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	होमि	होमो
२ पु०	होसि	होह
३ पु०	होइ	होंति, हुंति

विकरणवाळां

१ पु०	होअमि	होअमो, होआमो, होइमो
	होआमि	होएमो
	होएमि	
२ पु०	होअसि	होअह
	होएसि	होएह
३ पु०	होअइ	होअंति
	होएइ	होएंति
		होइंति

सर्व पुरुष } होज्ज, होज्जा
सर्व वचन } होएज्ज, होएज्जा (विकरणवाळुं)

वाक्यो

गाइये छिये	अमे घे तजीए छीए
दोडो छो	तेओ दे छे
(तेओ) बोले छे	वाय छे
ते घे खाय छे	अमे दोरीए छीए
ऊभो रहुं छुं	तेओ दोरे छे
तुं दोरी जाय छे	तमो उपाय करो छो
अमे जईए छीए	हुं गुणा करुं छुं
तमे पीओ छो	अमे देवनी जेम रहिये छिये
तेओ गाय छे	

हुंति	धाह	गाह
होंति	गाइ	ठाह
जंति	जासि	ठाइत्था
वूमो	ठामि	हामि
विंति¹	वूम	णेंति
वे जामो	णेमि	पामो
झामो	देंति	वेमि²
गाएसि	खाएमो	

पाठ ४ थो

अस् विद्यमान होवुं

अस् धातुनां रूप अनियमित छे अने ते आ प्रमाणे छे: (हे० प्रा० व्या० ८।३।१४६।१४७।१४८।)

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	म्हि, म्हि, (अस्मि) मि, अंसि अत्थि⁴	मो,³ मु (स्मः) अत्थि
२ पु०	सि, असि (असि) अत्थि⁴	थ (स्थ) अत्थि
३ पु०	अत्थि	अत्थि, संति (सन्ति)

१. वू + अ + न्ति = वू + ए + न्ति = वेंति तथा विंति २. वू + अ + मि = वू + ए + मि = वेमि ३. म्ह, म्हो अने म्हु रूपो पण वपराय छे. ४. अत्थि—'अत्थि' रूप सर्व पुरुष अने सर्व वचनमां वपराय छे.

धातुओ

मज्ज् (मद्य१) माचवुं-मद करवो, खुश थवुं

खिज्ज (खिद्य) खीजवुं-खेद थवो

सं+पज्ज् (सं+पद्य) संपजवुं-सांपडवुं

नि+ष्पज्ज् (निष्पद्य) नीपजवुं

विज्ज (विद्य) विद्यमान होवुं

जोत्, जोअ (द्योत) जोत थवी-प्रकाशवुं-जोवुं

सिज्ज (स्विद्य) सीजवुं-चीकणुं थवुं

दिव्व (दीव्य) रमवुं-द्यूत रमवुं

वाक्यो

(तेओ) थाय छे

(तुं) दे छे

(ते) थाय छे

गाइए छीए

दोडो छो

(ते बे) खाय छे

ऊभो रहुं छुं

छो

जाय छे

खुश थाउं छुं

खेद करे छे

नीपजे छे

संपजे छे

प्रकाशित थइए छीए

(तेओ) जपे छे

(अमे बे) ध्यान करीए छीए

पीओ छो

(तेओ बे) रमे छे

सीजे छे

छीए

विद्यमान छे

(तमे बे) छो

(तुं) दीपे छे

तजीए छीए

जाउं छुं

छुं

पूरुं छुं

---

१. जुओ पृ० ५७ नियम ५

हुंति	गाएसि	जासि	मज्जंते
जंति	जोतसि	ठामि	म्ह
बूम	जोआमु	म्हि	सि
वाइ	खिज्जेह	निप्पज्जह	थ
बे जाम	बेण्णि संति	अंसि	असि
दो मो	धाइ	अत्थि	अम्हि
निप्पज्जसे	बूमि	दो मज्जह	बूमो
संति	संपज्जइ	दोण्णि	बे खाएमु
सिज्जंति	गाइ	दिव्वामु	मज्जेसि

पाठ ५ मो

पुज्ज् (पूर्य[1]) पूरवुं, पूरावुं

विज्झ् (विध्य[2]) वींधवुं

गिज्झ् (गृध्य) गृद्ध थवुं-ललचावुं

कुज्झ् (क्रुध्य) क्रोध करवो

सिज्झ् (सिध्य) सीझवुं—सिद्ध थवुं

नज्झ् (नह्य[2]) नाखवुं-बांधवुं

जुज्झ् (युध्य) जूझवुं-युद्ध करवुं

खाद् / खाय् } (खाद) खावुं

कह् (कथ[3]) कहेवुं

कुह् (कुथ) कोहवुं-सडवुं

बाह् (बाध[3]) बाधा करवी-अडचण करवी

लिह् (लिख[3]) लखवुं

लह् (लभ[3]) लेवुं-मेळववुं

सिलाह् (श्लाघ[3]) वखाणवुं-वखाणवुं

---

1. जुओ पृ० ५७ नि० ५ २. पृ० ५८ नियम ६ ३ पृ० ३३ नियम ४

बोध् (बोध) बोध थवो— जाणवुं	सोह् (शोध) शोधवुं-शुद्ध करवुं
वध् (वध) वध करवो— हणवुं	सुज्झ् (शुध्य) सोझवुं— साफ करवुं
सोह् (शोभ) सोहवुं— शोभवुं	धाव् } (धाव) धोडवुं- धाय् } धावुं-दोडवुं

वाक्यो

बे ध्यान धरीए छीए	छो
(ते) पीये छे	तेओ छे
ललचाइये छिये	छुं
बे गुंथाओ छो	(तुं) छे
` सडो छो	छीए
पीधीए छीए `	(ते) छे
शोभो छो	थो छो
शोधो छो	जाणे छे
सोझो छो	मानुं छुं
बे लखीए छीए	बे जाय छे
रक्षो छो	कंपो छो
लांपडे छे	बे वखाणे छे
बे निद्रा करे छे	धाय छे
(तमे बे) दोडो छो	थईए छीए
गाउं छुं	बेठ् करीए छीए
शाप दे छे	(ते) ऊभो रहे छे
अपकारे छे	सिद्ध थाउं छुं

कुहंति
सिलाहंति
गिज्झम
मि
कहेमि
नज्झसि
ठाइ
वे सोहामो
मुज्झिमु
वेम्मि विज्जंति
ठाएह
वे वाहह

झाम
होंति
दुन्नि थोहेंति
जुज्झेम
सि
विंति
लिहेज्ज
सिज्झंति
दो लहेज्जा।
कुज्झेसि
अंसि

धातुओ

[1]वीह् (भी) बीवुं
छज्ज् (सज्ज्) छाजवुं-शोभवुं
वेढ् (वेष्ट्) वींट
कर् (कर) करवुं
तर् (तर) तरवुं
चिण् (चिनु) चणवुं-एकठुं करवुं
डह् (दह) } दहवुं-दाझवुं-
डज्झ् (दह्य) } बळवुं-बाळवुं

नम् } (नम) नमवुं
नव् }
चय् (त्यज्) तजवुं-छोडवुं
जिण् (जिना) जितवुं
छिद् (छिनद्) छेदवुं
चल् (चल) चालवुं
निंद् } (निन्द) निंदवुं
निन्द् } निंदा करवी
सूस् } [2](शुष्य) शोषवुं-
सुस्स् } सुकावुं
सुण् } (शृणु) सुणवुं-
हण् } सांभळवुं

---

१. सरखावो बीह् अने भीः - व् + ह् + ई. 'व्' अने 'ह्' भेगा मळी जतां 'भ्' अने तेमां 'ई' मळतां भी. २. जुओ पृ० ९ नियम १.

सुमर (स्मर) स्मरण करवुं-याद करवुं	नच्च् (नृत्य) नाचवुं
गच्छ (गच्छ) गति करवी-जवुं	कुण् (कृणु) करवुं
नस्स् } (नश्य) नाश नास् } थवो	रूस् } (रुष्य) रूठवुं-रोष रुस्स् } करवो
गेण्ह (गृह्णा) ग्रहण करवुं	हण् (हन्) हणवुं-मारवुं

सार अने प्रश्नो

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	वंदमि, वंदामि, वंदेमि	वंदमो, वंदामो, वंदिमो, वंदेमो वंदमु, वंदामु, वंदिमु, वंदेमु वंदम, वंदाम वंदिम, वंदेम.
२ पु०	वंदसि, वंदेसि वंदसे, वंदेसे	वंदह, वंदेह, वंदइत्था. वंदेइत्था वंदित्था
३ पु०	वंदइ, वंदेइ. वंदए, वंदेए. वंदति, वंदेति, वंदते, वंदेते.	वंदंति, वंदेंति, वंदिंति, वंदंते, वंदेंते वंदिंते वंदइरे, वंदेइरे, वंदिरे

सर्व पुरुष } वंदेज्ज, वंदेज्जा।
सर्व वचन }

स्वरांत धातुनां विकरण विनानां रूपो

१ पु०	होमि	होमो, होमु, होम
२ पु०	होसि	होह, होइत्था
३ पु०	होइ, होति	होंति, हुंति होन्ति, हुन्ति होन्ते, हुन्ते होइरे

सर्व पुरुष, सर्व वचन—होज्ज, होज्जा

स्वरांत धातुनां विकरणवाळां रूपो

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	होअमि, होआमि होएमि	होअमो, होआमो होइमो, होएमो होअमु, होआमु, होइमु, होएमु होअम, होआम. होइम, होएम,
२ पु०	होअसि, होएसि. होअसे, होएसे	होअह, होएह, होअइत्था, होएइत्था
३ पु०	होअइ, होएइ होअए, होएए होअति, होएति	होअंति, होएंति होइंति, होअंते, होएंते होअइरे, होएइरे
सर्व पुरुष सर्व वचन	होएज्ज, होएज्जा	

१ प्राकृत भाषामां कया कया स्वरो नथी वपराता ? जे नथी वपराता तेमना बदलामां कया कया स्वरो वपराय छे ? ते उदाहरण साथे समजावो.

२ नीचेना शब्दोनां प्राकृत रूपो करी बतावो:

मृत्तिका. ताम्बूल. कीदृश. दैत्य. पौर.
कौमुदी. नमस्. तीर्थंकर. गोष्ठी. नग्न. चन्द्र.

३ नीचेना शब्दोनां संस्कृत रूपो बतावो:

समुद्द. घंफ. साहा. पढद. साहु. हल्द्दा.
अंगाल. सद्द. चोद्दह. छट्ट. भायण.

४ नीचेना संयुक्त व्यंजनोनो जे फेरफार थतो होय ते उदाहरण साथे जणावोः

क्ष. त्य. द्य. प्स. ष्ट.

५ नीचेना संयुक्त व्यंजनवाळा शब्दोनां प्राकृत रूपांतर करी बतावोः

ग्रीष्म. स्तम्भ. पुष्प. प्रश्न. मुष्टि. ध्यान.
शौण्डीर्य. ऊर्ध्व. तीर्थ. निम्न. कर्तरी.

६ नीचेना शब्दोनी संधि छूटी करी बतावोः

वासेसि दहासहं. बहुदगं. पुढवीसो. काही.

७ नीचेना शब्दोना समास समजावोः

देवदाणवगंधव्वा. वीतरागो, तित्थयरो.
नरिंदो. महावीरो.

८ दीर्घनो ह्रस्व अने ह्रस्वनो दीर्घ क्यारे क्यारे थाय छे ते उदाहरण साथे समजावो.

९ स्वरांत धातु अने व्यंजनांत धातुनी रूपाख्यानमां जे भेद छे ते समजावो.

१० प्राकृतमां द्विवचन छे? द्विवचननो अर्थ कई रीते बतावाय छे?

११ प्राकृत भाषानां रूपो साथे आपणी गुजराती भाषानां रूपोनो केवो संबंध जणाय छे?

उवसग्ग (उपसर्ग)

उपसर्ग धातुनी पूर्वे आवी घणुं करीने धातुना मूळ अर्थमां न्यूनाधिकता करी विशेष अर्थ—न्यून अर्थ, अधिक अर्थ के जुदो अर्थ—बतावे छे. एवा उपसर्ग नीचे मुजब छे:

प (प्र) आगळ. प+जाइ=पजाइ=आगळ जाय छे.
प+जोतते=पजोतते=विशेष प्रकाशे छे.
प+हरति=पहरति=प्रहार करे छे.

परा—सामुं. ऊलटुं. परा+जिणइ=पराजिणइ=पराजय करे छे.
परा+होइ=पराहोइ=पराभव करे छे—हरावे छे.

ओ, अव, अप — (अप) हलकुं, रहित. नीचे. दूर. ओ+सरइ=ओसरइ, अव+सरइ=अवसरइ, अप+सरइ=अपसरइ — सरके छे—खसे छे

अप+अर्थकम्=अवत्थयं=अपार्थक—अमथुं.
ओ+माल्यम्=ओमल्लं=निर्माल्य.

सं (सम्) एकठुं, साथे — सं + गच्छति = संगच्छति—साथे जाय छे.
सं+चिणइ=संचिणइ—संचय करे छे—एकठुं करे छे.

अणु, अनु — (अनु) पाछळ, सरखुं. अणु+जाइ=अणुजाइ—पाछळ जाय छे
अणु+करइ=अणुकरइ—अनुकरण करे छे

ओ, अव — (अव) नीचे ओ+तरइ=ओतरइ, अव+तरइ=अवतरइ — अवतरे छे, ऊतरे छे. नीचे जाय छे.

निर् } (निर्) निरंतर, सतत, रहित.
नि }
नी }

निर्+इक्खइ=निरिक्खइ-नीरखे छे-निरीक्षण करे छे.

नि+झरइ=निज्झरइ-झर्या करे छे.

नि+सरइ=नीसरइ-नीसरे छे-निरंतर सरे छे.

निर्+अंतरं-निरंतरं-निरंतर-सतत.

निर्+धनः=निद्धणो-निर्धनियो-धन वगरनो.

दु } (दुर्) दुष्टता दु+गच्छइ=दुग्गच्छइ-दुर्गतिए जाय छे.
[1]दू } दो+गच्चं=दोगच्चं-दौर्गत्य-दुर्गति.

दू+हवो=दूहवो-दुर्भग-कमनसीब.

अभि } (अभि) सामे. अभि+भासइ=अभिभासइ-सामे बोले छे.
अहि } अहि+मुहं=अहिमुहं=अभिमुख-सामुं.

वि—विशेष, नहि, विपरीत. वि + जाणइ = विजाणइ-विशेष जाणे छे.

वि + जुंजइ = विजुंजइ-वियोग करे छे.

वि + कुव्वइ = विकुव्वइ-विकृत करे छे.

अधि } (अधि) अधिक. अधि+गच्छति=अधिगच्छति-मेळवे छे, जाणे छे, उपर जाय छे.
अहि }

अधि+गमो=अहिगमो-अधिगम-ज्ञान.

[1]सु } (सु) सारुं. सु+भासए=सुभासए-सारुं बोले छे.
सू } सू + हवो = सूहवो-सुभग-भाग्यवान.

---

१. 'दू' अने 'सू'नो उपयोग फक्त 'हव'-(भग) शब्दनी पूर्वे थाय छे जुओ पृ० २१ नियम ५.

उ (उत्) ऊंचे उ+गच्छते=उग्गच्छते-ऊंचे जाय छे-ऊगे छे.

अइ | अतिशय, हद बहार. अइ+सेइ=अइसेइ—अतिशय करे छे-हद बहार वखाणे छे.
अति | अति+गच्छति=अतिगच्छति-हद बहार जाय छे.

णि | (नि) निरंतर, नीचे. णि+पडइ=णिपडइ | निरंतर पडे छे,
नि | नि+पडइ=निपडइ | नीचे पडे छे.

पडि | प्रति-सामुं, सरखुं. विपरीत.
पति | पडि+भासए=पडिभासए-सामुं बोले छे.
[1]परि | पति+ट्ठाइ=पतिट्ठाइ-प्रतिष्ठित थाय छे.
परि+ट्ठा=परिट्ठा-प्रतिष्ठा
पडि+मा=पडिमा-सरखी आकृति.
पडि+कूलं=पडिकूलं-प्रतिकूल.

परि | (परि) चारे बाजु. परि+वुडो=परि+वुडो-परिवृत-चारे बाजुथी वींटाएलो.
पलि | पलि+घो=पलिघो-परिघ-घण.

अपि | (अपि) ऊलटुं, पण अवि+हेइ=अविहेइ | ढांके
अवि | अपि+हेइ=अपिहेइ | छे
[2]पि | पि+हेइ=पिहेइ |
वि | को+वि=कोवि | कोई पण
[3]इ | को+इ=कोइ |
किम्+अवि=किमवि-कांई पण
जं+पि=जंपि-जे पण

---

१. 'परि' ए 'पडि'नुं ज भिन्न उच्चारण छे, 'र' अने ड'नुं उच्चारणस्थान पण सरखुं छे: जुओ पृ० ८१ नि० ९. २. जुओ पृ० ८३ नियम १२. ३. जुओ पृ० २९ नि० १ (क)

उ
ओ
उव | (उप) पासे. उव=गच्छइ-उवगच्छइ-पासे जाय छे.

ऊ+ज्झायो=ऊज्झायो
ओ+ज्झायो=ओज्झायो } उपाध्याय
उव+ज्झायो=ऊवज्झायो

आ—मर्यादा, ऊलटुं. आ+वसइ=आवसइ-अमुक मर्यादामां रहे छे.

आ+गच्छइ=आगच्छइ-आवे छे.

उपसर्गोना अर्थो नियत नथी. कोई उपसर्ग धातुना मूळ अर्थ करतां विपरीत अर्थ बतावे छे. कोई ए मूळ अर्थने अनुसरे छे, कोई एमां थोडो वधारो देखाडे छे अने कोई, मात्र शोभा माटे ज वपराय छे—धातुना अर्थमां कशो फेरफार बतावतो नथी. 'अवि' उपसर्ग छे अने 'पण' अर्थमां अव्यय पण छे एथी 'अवि' सार्थना उदाहरणोमां तेनो बन्ने जातनो उपयोग बताव्यो छे.

धातु

पुण् (पुना) पवित्र करवुं
थुण् (स्तुनु) स्तुति करवी
वच्च् (व्रज) फरता रहेवुं
कुद् (कुर्द) कूदवुं
अच्च् (अर्च) अर्चवुं-पूजवुं
वड्ढ् (वर्ध) वधवुं
भम् (भ्रम) भमवुं
भम्म (भ्राम्य) भमवुं
भिद् (भिनद्) भेदवुं-कटका करवा
छिद् (छिनद्) छेदवुं
सिंच् (सिञ्च) सींचवुं
मुंच् (मुञ्च) मूकवुं
लुण् (लुना) लणवुं-कापवुं
गंठ् (ग्रन्थ) गांठवुं-गुंथवुं
गज्ज् (गर्ज) गाजवुं
मिला (म्ला) म्लान थवुं-करमावुं
गिला (ग्ला) ग्लान थवुं-गळवुं-क्षीण थवुं.

चिइच्छ (चिकित्स) चिकित्सा करवी-रोगनो उपचार करवो.

जग्ग् (जागृ) जागवुं

वीसर् (वि+स्मर) वीसरवुं

जम्म् (जन्मन्) जन्मवुं

रुव् (रुद्) रोवुं

तोल् (तोल) तोळवुं

पाठ ५ मो

अकारांत नामनां रूपाख्यानो (नरजाति)

वीर

	एकवचन	बहुवचन
१	वीर+ओ=वीरो[1] (वीरः) वीर+ए=वीरे	वीर+आ=वीरा[1] (वीराः)
२	वीर+म्=वीरं[2] (वीरम्)	वीर+आ=वीरा (वीरान्) वीर+ए=वीरे[3]
३	वीर+एण=वीरेण[4] (वीरेण) वीरेणं	[5]वीर+एहि, वीरेहि (वीरेभिः) वीरेहिं, वीरेहिँ (वीरैः)
४	वीर+आय=वीराय[6] (वीराय) वीर+आए=वीराए वीर+स्स=वीरस्स (वीरस्य)	वीर+ण=वीराण[7] (वीराणाम्) वीराणं

1. हे० प्रा० व्या० ८।३।२। तथा ८।४।२८७। ८।३।४। 2. हे० प्रा० व्या० ८।३।५। 3. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४। 4. हे० प्रा० व्या० ८।३।६।८।३।१४। ८।१।२७। 5. हे० प्रा० व्या० ८।३।७। ८।३।१५। 6. हे० प्रा० व्या० ८।४।४४८। हे० प्रा० व्या० ८।३।१३१। १३२। 7. हे० प्रा० व्या० ८।३।६।८।१।२७।

*वीर+आ=वीरा[1] (वीरात्)	वीर+ओ=वीराओ[2]
वीर+ओ=वीराओ	वीर+उ=वीराउ
वीर+उ=वीराउ	वीर+हिंतो=वीराहिंतो, वीरेहिंतो (वीरेभ्यः) वीर+सुंतो=वीरासुंतो वीरेसुंतो
६ वीर+स्स=वीरस्स[3] (वीरस्य)	वीर+ण=वीराण[4] (वीराणाम्) वीराणं
७ वीर+ए=वीरे[5] (वीरे)	वीर+सु=वीरेसु[6] (वीरेषु) वीरेसुं
वीर+अंसि=वीरंसि (वीरस्मिन् ?) वीर+म्मि=वीरम्मि[5]	
सं० वीर ! (वीर !)	वीर+आ=वीरा[7] (वीराः !)
वीरा[7] ! वीरो ! वीरे !	

संस्कृत अने प्राकृत रूपोनां उच्चारणोमां नहि जेवो भेद छे. ए भेद, ए रूपो बोलतां ज समजाय छे. मात्र पांचमी विभक्तिमां वधारे अनियमित रूपो छे.

* पांचमी विभक्तिमां नीचेनां वधारे रूपो पण थाय छेः

एकवचन	बहुवचन
वीर+तो=वीरातो	वीरातो
वीर+दु=वीरादु	वीरादु
वीर+हि=वीराहि	वीराहि
वीर+हिंतो=वीराहिंतो	वीरेहि
वीर+त्तो=वीरत्तो	वीरत्तो

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।८।८।३।१२। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।९। तथा १२।१५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१०। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।६।१२। ८।१।२७। ५. हे० प्रा० व्या० ८।३।११। ६. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५। ८।१।२७। ७. हे० प्रा० व्या० ८।३।३८। तथा ३।१२।

रूपो बतावतां नामनुं मूळ अंग अने प्रत्ययनो अंश-ए बंने छूटा पाडीने जणावेलां छे. अने साथे ए उपरथी साधित थतां दरेक रूपो पण जुदां जुदां दर्शावेलां छे. एथी आ साधनपद्धति द्वारा ज, विद्यार्थी अका-रांत नामनां रूपोने समजी लेशे.

साधनपद्धतिनी समजण

१ प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी अने सप्तमी विभक्तिना स्वरादि प्रत्ययो तथा पंचमीनो एक मात्र 'आ' प्रत्यय लगाडी अंगना अन्त्य 'अ'नो लोप करवानो छे. (जूओ पृ० ८२ नियम ९)

जेमके—

वीर + ओ = वीरो. वीर + ए = वीरे.

२ वीर + म् = वीरं. (जूओ पृ० ८४ नियम १७-१८)
वीरम् + अवि = वीरं अवि, वीरमवि,

३ तृतीया अने षष्ठी विभक्तिना 'ण' उपर तथा सप्तमी विभक्तिना 'सु' उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छेः

वीर + एण = वीरेण, वीरेणं.
वीर + ण = वीराण, वीराणं.
वीर + सु = वीरेसु, वीरेसुं.

४ तृतीया अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययोनी पूर्वे अकारांत अंगना अन्त्य 'अ'नो 'ए' थाय छे अने इकारांत अंगनो तथा उकारांत अंगनो अन्त्य 'इ' अने 'उ' दीर्घ थाय छेः

वीर+हिं=वीरेहिं	रिसि+हिं=रिसीहिं	भाणु+हिं=भाणूहिं
वीर+सु=वीरेसु	रिसि+सु=रिसीसु	भाणु+सु=भाणूसु

५ पंचमीना 'ओ' 'उ' 'हिंतो' प्रत्ययोनी पूर्वना स्वरांत अंगनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे तथा पंचमीना बहुवचनना 'हि' 'हिंतो' अने 'सुंतो' प्रत्ययोनी पूर्वना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' पण थाय छे:

एकवचन	बहुवचन
वीर+ओ=वीराओ	वीर+हि=वीराहि, वीरेहि
वीर+उ=वीराउ	वीर+हिंतो=वीराहिंतो, वीरेहिंतो
	वीर+सुंतो=वीरासुंतो, वीरेसुंतो
	रिसि+हि=रिसीहि
रिसि+ओ=रिसीओ	भाणु+हि=भाणूहि
भाणु+ओ=भाणूओ	रिसि+हिंतो=रिसीहिंतो

६ षष्ठीना बहुवचननो 'ण' लागतां पूर्वना अंगनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे: वीर + ण = वीराण, वीराण.
रिसि + ण = रिसीण

७ संबोधनमां रूपोनी साधना प्रथमा प्रमाणे छे. वधारामां मूळ अंग पण एमनुं एम वपराय छे: वीर ! वीरो ! वीरा ! वीरे !

८ तृतीया विभक्तिनो 'हि' प्रत्यय सांथे अनुस्वार पण ले छे अने तेनो सानुनासिक उच्चार पण थाय छे. आ रीते ते एक 'हि' नां पण त्रण रूपो थाय छे: वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहिँ

९ वीराए१ (च० ए०) वीरसि (स० ए०) रूपोनो व्यवहार विशेष करीने आर्षप्राकृतमां देखाय छे. वैदिक रूपो चतुर्थीना एकवचनमां

रूपो बतावतां नामनुं मूळ अंग अने प्रत्ययनो अंश-ए बन्ने छूटा पाडीने जणावेलां छे. अने साथे ए उपरथी साधित थतां दरेक रूपो पण जुदां जुदां दर्शावेलां छे. एथी आ साधनपद्धति द्वारा ज, विद्यार्थी अकारांत नामनां रूपोने समजी लेशे.

साधनपद्धतिनी समजण

१ प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी अने सप्तमी विभक्तिना स्वरादि प्रत्ययो तथा पंचमीनो एक मात्र 'आ' प्रत्यय लगाडी अंगना अन्त्य 'अ'नो लोप करवानो छे. (जूओ पृ० ८२ नियम ९)

जेमके—

वीर + ओ = वीरो. वीर + ए = वीरे.

२ वीर + म् = वीरं. (जूओ पृ० ८४ नियम १७-१८)
वीरम् + अवि = वीरं अवि, वीरमवि,

३ तृतीया अने षष्ठी विभक्तिना 'ण' उपर तथा सप्तमी विभक्तिना 'सु' उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छेः

वीर + एण = वीरेण, वीरेणं.
वीर + ण = वीराण, वीराणं.
वीर + सु = वीरेसु, वीरेसुं.

४ तृतीया अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययोनी पूर्वना अकारांत अंगना अंत्य 'अ'नो 'ए' थाय छे अने इकारांत अंगनो तथा उकारांत अंगनो अंत्य 'इ' अने 'उ' दीर्घ थाय छेः

वीर+हि=वीरेहि	रिसि+हि=रिसीहि	भाणु+हि=भाणूहि
वीर+सु=वीरेसु	रिसि+सु=रिसीसु	भाणु+सु=भाणूसु

५. पंचमीना 'ओ' 'उ' 'हिंतो' प्रत्ययोनी पूर्वना स्वरांत अंगनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे तथा पंचमीना बहुवचनना 'हि' 'हिंतो' अने 'सुंतो' प्रत्ययोनी पूर्वना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' पण थाय छे:

एकवचन	बहुवचन
वीर+ओ=वीराओ	वीर+हि=वीराहि, वीरेहि
वीर+उ=वीराउ	वीर+हिंतो=वीराहिंतो, वीरेहिंतो
	वीर+सुंतो=वीरासुंतो, वीरेसुंतो
	रिसि+हि=रिसीहि
रिसि+ओ=रिसीओ	भाणु+हि=भाणूहि
भाणु+ओ=भाणूओ	रिसि+हिंतो=रिसीहिंतो

६. षष्ठीना बहुवचननो 'ण' लागतां पूर्वना अंगनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे: वीर + ण = वीराण, वीराणं.
रिसि + ण = रिसीण

७. संबोधनना रूपोनी साधना प्रथमा प्रमाणे छे. वधारामां मूळ अंग पण जेवुं तेम वपराय छे: वीर ! वीरो ! वीरा ! वीरे !

तृतीया विभक्तिनो 'हि' प्रत्यय साथे अनुस्वार पण ले छे अने तेनो सानुनासिक उच्चार पण थाय छे. आ रीते ते एक 'हि' ना पण त्रण रूपो थाय छे: वीरेहि, वीरेहिं वीरेहिँ

वीराए१ (च० ए०) वीरंमि (स० ए०) रूपोनो व्यवहार विशेष करीने आर्षप्राकृतमां देखाय छे. [illegible] [illegible] चतुर्थीना एकवचनमां

'आइ' प्रत्ययवाळुं रूप पण मळे छे: (हे० प्रा० व्या० ८।३।१३३।) वहाइ (वधाय). 'आय' 'आए' अने 'आइ' ए त्रणेमां खास कशी विषमता नथी. 'आइ' प्रत्ययवाळुं रूप बहु प्रचलित नथी तेथी ज ते उपरनां रूपोमां जणाव्युं नथी, केटलेक स्थळे 'आए'ने बदले 'आते' प्रत्यय पण वपराएलो छे एथी 'वीराए'नी पेठे 'वीराते' रूप पण आर्ष प्राकृतमां वपराएलुं छे प्राकृत भाषामां चतुर्थी विभक्ति खास जुदी नथी पण ते षष्ठी विभक्तिमां समाइ गएली छे तेथी ते बन्ने विभक्तिनां रूपो एक सरखां थाय छे.

नाम [नरजाति]

अरिहंत (अर्हत्) वीतराग देव
हर (हर) महादेव.
बुद्ध (बुद्ध) बुद्धदेव.
मग्ग (मार्ग) मार्ग–मारग
कलह (कलह) कलह–कळो
हत्थ (हस्त) हाथ.
पाय (पाद) पाद–पग, पायो
भार (भार) भार.

बाल (बाल) बाळ–बालक
उवज्झाय (उपाध्याय) उपाध्याय–अध्यापक–गुरु–ओझा
आयरिय (आचार्य) सदाचारवंत गुरु.
सिद्ध (सिद्ध) अदेही वीतराग.
निव (नृप) नृप–राजा
बुह (बुध) बुद्धिमान–डाह्यो पुरुष

१. अज्जिणाए (अजिनाय) मंसाए (मांसाय) पुच्छाए (पुच्छाय) वगेरे 'आए' प्रत्ययवाळां अने लोगंसि (लोके) कंसि (कस्मिन्) अगारंसि (अगारे) सुसाणंसि (श्मशाने) वगेरे 'अंसि' प्रत्ययवाळां रूपो आर्ष एवां आचारांगादिसूत्रोमां मळे छे.

पुरिस (पुरुष) पुरुष
आइच्च (आदित्य) आदित्य-सूर्य
इंद (इन्द्र) इन्द्र
चंद (चन्द्र) चंद्र
मेह (मेघ) मेघ-वरसाद
भारवह (भारवह) भार वहनार-मजूर

समुद्द
समुद्र (समुद्र) समुद्र
नयण (नयन) नेत्र-आंख
कण्ण (कर्ण) कान
महावीर (महावीर) महावीर देव
जिण (जिन) जय पामनार—वीतराग

मेघ मार्गने सिंचे छे
इन्द्र गुरुदेवने नमे छे
घणो पुरुष बाळकने पूछे छे
आंखवडे चन्द्रने जोउं छुं
समुद्रने कानवडे सांभळुं छुं
बाळकना हाथमां चंद्र छे
बाळकने छेदो छो
सूर्य तपे छे
राजा मार्गने जाणे छे

सिद्धोने नमो
मजूरो मार्गमां दोडे छे
समुद्रमां चंद्रोने देखीए छीए
बाळको उपाध्यायने पूछे छे
राजाना पगोमां पडुं छुं
वीतराग देव! नमुं छुं
बे बाळक बोले छे
समुद्रो गाजे छे
राजा शोभे छे

१नमो अरिहंताणं
भारवहो हरं वंदइ
महावीरो जिणो छाअइ
कण्णेहि सुणेमि
नयणेहि पेक्खामु
भारवहा भारं निणंति
नमो उवज्झायाणं
समुद्दो खुब्भइ

मेहो समुद्दम्मि पडइ
बाला हत्थे धरिसंति
समुद्दं तरइ
हत्थेण हरं वन्देमि
नमो आयरियाय
आयरियाण पाए नमामि
बाला कुर्दंति
चन्दो वड्ढइ

---

१. णमो के नमो साथे वपरातुं नाम छट्ठी विभक्तिमां आवे छे.

पाठ ६ ठ्ठो

अकारांत नामनां रूपाख्यानो [नान्यतर जाति]

	एकवचन	बहुवचन	
१	कमल+म्–कमलं (कमलम्)	कमल+णि=कमलाणि कमल+इं=कमलाइं कमल+इँ=कमलाइँ	(कमलानि)
		हे० प्रा० व्या० ८।३।२६।	
२	,, ,, ,, (,,)	,, ,, ,, ,,	(,,)
सं०	कमल ! (कमल !)	,, ,, ,, ,,	(,,)
	हे० प्रा० व्या० ८।३।३७।		

तृतीयाथी सप्तमी सुधीनां रूपो 'वीर'नी जेवां जाणवां.

१० 'णि' 'इं' 'इँ' प्रत्ययोनी पूर्वना अंगना अंत्य ह्रस्व स्वरनो दीर्घ थाय छे: कमल + णि = कमलाणि.

वारि + इं = वारीइं.

महु + इँ = महूइँ

११ संबोधनना एकवचनमां मूळ अंग ज वपराय छे: कमल !

नाम [नान्यतर जाति]

नयण (नयन) नेत्र

मत्थय (मस्तक) माथुं

नाण (ज्ञान) ज्ञान

चंदण (चन्दन) चंदननु झाड के लाकडुं.

वेर (वैर) वेर–वैर

वयण (वचन) वचन–वेण

वयण (वदन) वदन–मुख

णगर
नगर
णयर
नयर } (नगर) नगर-शहेर

मुह (मुख) मुख

पित्त (पित्त) पित्त

सिंग (शृङ्ग) शिंगडुं

फल (फल) फळ

घण (घन) घन

भायण
भाण } (भाजन) भाजन-भाणुं-पात्र

मंगल (मङ्गल) मंगल

पास (पार्श्व) पासुं-पडखुं

हियय (हृदय) हृदय-हैयुं

गल (गल) गळुं

पुच्छ (पुच्छ) पूंछडुं-पूंछ

पिच्छ (पिच्छ) पींछुं

मंस (मांस) मांस

अजिण (अजिन) अजिन-चामडुं

भय (भय) भय-भो

चम्म (चर्म) चामडुं

नाम (नरजाति)

सीह
सिंघ } (सिंह) सिंह

वग्घ (व्याघ्र) वाघ

सियाल
सिआल } (शृगाल) शियाळ

सीआल (शीतकाल) शीआळो

गय (गज) गज-हाथी

वसह (वृषभ) वृषभ-बळद

ओट्ठ (ओष्ठ) होठ

दंत (दन्त) दांत

कुंभार (कुम्भकार) कुंभार

चम्मार (चर्मकार) चमार

हव्ववाह (हव्यवाह) हव्यवाह-अग्नि

कोह (क्रोध) क्रोध

लोह (लोभ) लोभ

दोस (द्वेष) द्वेष

दोस (दोष) दोष

राग (राग) राग-आसक्ति

धातुओ

पढ् (पठ्) पढवुं-भणवुं

जप (जप्) जपवुं—ध्यान करवो.

जागर् (जागृ) जागवुं

भक्ख (भक्ष्) भक्षवुं-खावुं-भरखवुं

झाय (ध्या) ध्यान धरवो-चिन्तन करवुं

परि+कम् (परि=क्रम्) परिक्रमण करवु–परकमवुं –प्रदक्षिणा करवी

इच्छ् (इच्छ) इच्छवुं

रक्ख् (रक्ष) राखवुं पाळवुं

वह् (वह्) वहेवुं–वावु

विशेषण

लंब (लम्ब) लांबुं

लण्ह (श्लक्ष्ण) नानु

बज्झ (बाह्य) बहारनु–बहार देखातुं

अव्यय

न (न) न

[1]व (वा) वा–अथवा–के

[2]विणा / विना (विना) विना

सया / सइ (सदा) सदा–हमेशा

सह[3] (सह) / सद्धिं (सार्धम्) सह–साथे

निच्चं / णिच्चं (नित्यम्) नित्य

वेरथी वेर वधे छे

नगरनी पडखे चंदननुं वन छे

सिंह के वाघथी शियाळ बीए छे

मांसने माटे सिंहने हणो छो

दांतो माटे हाथीओने मारे छे

बुद्धनी साथे महावीर बोले छे

---

1. व नो उपयोग—बुद्धो व वीरो व कविलो (कपिल:) व सव्वण्णू.
२. 'विना' के 'विणा'नी साथे आवता नामने बीजी, त्रीजी के पांचमी विभक्ति लागे छे: नेहं विना, नेहेण विणा, नेहाउ विणा. ३. 'सह' के 'सद्धिं'नी साथे आवता नामने त्रीजी विभक्ति लागे छे: बुद्धेन सह. महावीरेण सद्धिं.

कुंभार शीआळामां घाणो घडे छे
वाघने पींछां नथी होतां
अग्नि वनने बाळे छे
ध्यानमां मंगल छे
महावीरने माथावडे वंदन करुं छुं
राजाने कान नथी
जिनना हृदयमां भय नथी
हाथी सुंढ वडे वनमां फळो खाय छे

चामडा माटे वाघने हणे छे
हाथीओ बळदोथी बीता नथी
सिंहनुं पूंछडुं लांबुं होय छे
आंखमां क्रोधने जोउं छुं
सूर्य के चंद्र भमता नथी
बळदो शिंगडाथी शोभे छे
चमार चामडाने शुद्ध करे छे
मुखवडे वचनो बोलुं छुं
पुरुष नाना होठथी शोभे छे
वरसाद नित्य पडे छे
वरसाद विना वनो सुकाय छे

अजिणाए वसंति वग्घे
फलाइं भायणम्मि सोहंति
वुड्ढा पुरिसा हियये वेरं न रक्खंति
सिंघो वणेसु सिंघे वा वग्घे वा हणइ
सिंघो फलं न खायइ
चंदणस्स वणंसि जामि
कुंभारो नगराओ आगच्छइ
चम्मारो अजिणाए नगरं जाइ

नियस्स मत्थयंमि कल्लाणि हवंति
मत्थएण वंदामि महावीरं
वणे नए देवालए
पव्वयस्स वा सीहस्स वा सिंगं नत्थि
लोहाओ लोहो वड्ढइ
रागा लोभो जायइ
कोहेण पियं कुणइ

पाठ ७ मो

नर जाति

[1]घड (घट) घडो
नड (नट) नट
पडह (पटह) पडो-ढोल
भड (भट) भड-शूरो
मोह (मोह) मोह-मूढता
काय (काय) काय-काया-शरीर
सद्द (शब्द) शब्द-साद-अवाज
हरिस (हर्ष) हरख-हर्ष
[2]मढ (मठ) मढी-मठ-संन्यासी-ओनुं रहेठाण
सढ (शठ)-लुच्चो
कुढार (कुठार) कुहाडो
पाढ (पाठ) पाडो-आंकनो पाडो-पाठ
समण (श्रमण) शुद्धि माटे श्रम करनार-संत पुरुष
मोक्ख (मोक्ष) मोक्ष-छूटकारो
वेय (वेद) ऋग्वेद वगेरे चार वेद
फास (स्पर्श) स्पर्श
[3]तलाय (तडाग) तलाव
गरुल (गरुड) गरुड
खार, छार (क्षार) खारो
खंध (स्कन्ध) कांध-खांध, भाग, मोटी डाळ
पोक्खर (पुष्कर) तळाव
खय (क्षय) क्षय
कोस (कोश) पाणी काढवानो कोस, खजानो
पाण (प्राण) प्राण-जीव
गंध (गन्ध) गंध
काम (काम) काम-तृष्णा-इच्छा
अप्पाण (आत्मन्) आत्मा-पोते-आप

नान्यतर जाति

जल (जल) जल पाणी
रयय (रजत) रजत-रूपु
गीअ, गीत (गीत) गीत, गाणुं
मित्त (मित्र) मित्र
दुक्ख (दुःख) दुःख
सुक्ख (सौख्य) सुख
चारित्त (चारित्र) सच्चारित्र-सद्वर्तन

---

1. पृ० ३४ नियम ५. 2. पृ० ३५ नियम ६. 3. पृ० ३५ नियम ७.

सीस (शीर्ष) शीर्ष-माथुं

गुत्त (गोत्र) गोत्र-वंश

गहण (ग्रहण) ग्रहण करवानुं साधन

पंजर (पञ्जर) पांजरुं

सील (शील) सदाचार

लावण्ण | लायण्ण | (लावण्य) लावण्य-कांति

रसायल (रसातल) रसातल-पाताल

कुम्पल | कुंपल | (कुड्मल) कुंपळ-फणगो

रुप्प (रुक्म) रूपुं

जुम्म | जुग्ग | (युग्म) युग्म-जोडुं

धम्म (धर्म) धर्म-फर्ज-नारी नरनी प्रकृति

घाण (घ्राण) नाक-सूंघवानुं साधन

सयढ (शकट) शकट-गाडुं-छकडो

पद | पय | (पद) पद-पगलुं

जुग (युग) धोंसरुं

खीर | छीर | (क्षीर) क्षीर-खीर-दूध

लक्खण | लच्छण | (लक्षण) लक्षण-चिह्न

छीअ (क्षुत) छींक

खेत्त | छेत्त | (क्षेत्र) खेतर-छेतर

सोअ | सोत्त | (श्रोत्र) श्रोत्र-कान-सांभळवानुं साधन

वीरिय (वीर्य) वीर्य-बल-शक्ति

विशेषण

मूढ (मूढ) मूढ-मोहवाळो-अभण-अज्ञानी

पुट्ठ (पुष्ट) पुष्ट

संजय (संयत) संयमवाळो

पुट्ठ (पृष्ट) पूछाएलुं

पंडित | पंडिअ | (पण्डित) पंडित-भणेलो, पढेलो, पोपट पंडित

दुल्लह (दुर्लभ) दुर्लभ-दुल्लभ-मुश्केल

अव्यय

नो (नो) नहि

च | अ | य | (च) अने

बहिआ | बहिया | (बहिस्) बहार

जहासुत्तं (यथासूत्रम्) सूत्रमां-शास्त्रमां-लख्या प्रमाणे

पुण | पुणो | उण | (पुनः) पुनः पुनः-फरी वार

वज्झओ (बाह्यतः) बहारथी-बहार तरफ

तत्तो (ततः) तेथी

किं (किम्) शुं, शा माटे

धातु

गवेस् (गवेष) शोधवुं

वस् (वस) वसवुं-रहेवुं

वय् (वद्) वदवुं-बोलवुं

पिव् (पिब) पीवुं

आ+पिव् | आ+पिय् | आ+विय — (आ+पिब) थोडुं पीवुं-मर्यादाथी पीवुं-सामाने नुकशान न थाय ए रीते चूसवुं

जय् (जय) जितवुं

हव् | भव् — (भव) होवुं-थवुं

पढ् (पठ) पढवुं-भणवुं

सोअ | सोच् — (शोच) शोचवुं-विचारवुं, शोक करवो

भण् (भण) भणवुं

घडामां तळावनुं पाणी छे

नटो ढोल साथे मार्गमां नाचे छे

बाळको कांतिवडे शोभे छे

जिनो शीलने वखाणे छे

कुहाडावडे चन्दनने छेदुं छुं

गरुडनुं जोडुं तळावमां पडे छे

बाळको छींक करे छे

खेतरमां खार छे तेथी फणगा बळी जाय छे

चन्दोनो कोश करुं छुं

तृष्णाथी कलह थाय छे अने कलहथी द्वेष थाय छे

संयमी श्रमण सुखोथी हरखातो नथी अने दुःखोथी कोपतो नथी

नटो गीत गाय छे अने नाचे छे

सिंहो अने वाघो तळावनुं पाणी पीए छे

वाघ अने सिंह पांजरामां दोडे छे

कजियाथी वेर थाय छे
श्रमणो मठमां रहे छे
आंकना पाडाने भूली जईए छीए
खीर पीओ छो
बळदो पाणीनो कोस खेंचे छे
राजाना भंडारमां रूपुं छे
पंडित पुरुषो मोक्षने इच्छे छे

बळदना कांधमां धोसरुं शोभे छे
पंडितो शीलने शोधे छे
पण गोत्रने पूछता नथी
शीलनो मार्ग दुर्लभ छे
बाळको उपाध्याय पासेथी पाठ भणे छे
भद्र पुरुषो दुःखथी शोक करता नथी

घाणं गंधस्स गहणं वयंति
कोला मोहो जायइ
दुक्खमुंनो धेया वि न रक्खति
सोतं सद्दस्स गहणं वयंति
दुक्खेहितो पांति पंडिता ?
कायं फासस्स गहणं वयंति
सुपरेसु मित्तं सुमिरति
समणे महावीरे जयति
मूढो पुणो पुणो वन्नं देयखइ
पंडिता ! खीरं पिबित्था

मूढा कामेसु मुज्झंति
चन्दणस्स रसमापिबन्ति
अप्पाणो अप्पाणस्स मित्तं
किं बहिया मित्तमिच्छसि
पुरिसे धीरिये पुण दुलहे
पुरिसस्स काये पुण दुल्हे
अप्पाणं जिणाहु नंजणा !
मूढो पंडिओ अन्नाणं वदति
पंडिता मूढा न होंति
गोअस्स सद्दं सुणह

पाठ ८ मो

अकारांत सर्वादि (नरजाति अने नान्यतर जाति)

सव्व (सर्व)
ज (यद्)
त (तद्)
क (किम्)

अकारांत सर्वनामोनां रूपाख्यानो नरजातिमां 'वीर' जेवां अने नान्यतरजातिमां 'कमल' जेवां थाय छे. जे खास विशेषता छे ते, आ नीचे समजुती साथे आपी छे:

१ प्रथमाना बहुवचनमां मात्र एकलुं सव्वे (सर्वे), जे (ये), ते (ते), के (के) थाय छे. अर्थात् प्रथमाना बहुवचनमां अकारांत सर्वनामो, नरजातिमां केवळ 'ए' प्रत्यय ले छे: हे० प्रा० व्या० ८।३।५८।

६ षष्ठीना बहुवचनमां सव्वेसिं (सर्वेषाम्), जेसिं (येषाम्), तेसिं (तेषाम्), केसिं (केषाम्) पण थाय छे अर्थात् षष्ठीना बहुवचनमां अकारांत सर्वनामो, नरजातिमां उक्त 'ण' उपरांत 'एसिं' प्रत्यय पण ले छे– हे० प्रा० व्या० ८।३।६१–सव्व+एसिं=सव्वेसिं. सव्व + ण = सव्वाण.

७ सप्तमीना एकवचनमां सव्वंसि, सव्वहिं (सर्वस्मिन्) सव्वत्थ (सर्वत्र) जंसि, जहिं (यस्मिन्) जत्थ (यत्र) तंसि, तहिं (तस्मिन्) तत्थ (तत्र), कंसि, कहिं (कस्मिन्) कत्थ (कुत्र) एम त्रण त्रण रूपो पण थाय छे अर्थात् सप्तमीना एकवचनमां अकारांत सर्व-

नामोने नरजातिमां स्सि, हिं अने त्थ प्रत्ययो (हे० प्रा० व्या० ८।३।५९।) उपरांत पूर्वोक्त अंसि अने म्मि प्रत्ययो पण लागे छे. मात्र 'ए' प्रत्यय प्रायः नथी लागतो.

रूपाख्यान (सव्व—नरजाति)

	एकवचन	बहुवचन
१	सव्वो, सव्वे (सर्वः)	सव्वे (सर्वे)
२	सव्वं (सर्वम्)	सव्वे, सव्वा (सर्वान्)
३	सव्वेण, सव्वेणं (सर्वेण)	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ (सर्वेभिः सर्वैः)
४	सव्वस्स (सर्वस्य)	सव्वेसिं (सर्वेषाम्) सव्वाण सव्वाणं (सर्वाणाम् !)
५	सव्वओ सव्वाउ सव्वम्हा (सर्वस्मात्)	सव्वाओ, सव्वाउ (सर्वतः) सव्वाहि, सव्वेहि सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो (सर्वेभ्यः) सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो
६	सव्वस्स (सर्वस्य)	सव्वेसिं (सर्वेषाम्) सव्वाण, सव्वाणं (सर्वाणाम् !)
७	सव्वंसि (सर्वस्मिन्) सव्वस्सिं, सव्वम्मि सव्वहिं, सव्वत्थ (सर्वत्र)	सव्वेसु, सव्वेसुं (सर्वेषु)

सव्व (नान्यतर जाति)

	एकवचन	बहुवचन	
१	सव्वं (सर्वम्)	सव्वाणि, सव्वाइं सव्वाइँ	(सर्वाणि)
२	,, (,,)	,, ,,	,,

बाकीनां नरजाति-सव्व-प्रमाणे

ज (यद्) नरजाति

१ जो, जे (यः)	जे (ये)
२ जं (यम्)	जे, जा (यान्)
३ जेण, जेणं (येन)	जेहि, जेहिं, जेहिँ (येभिः, यैः)
४ जस्स, जास (यस्य)	जेसिं (येषाम्)
	जाण, जाणं (यानाम् !)
५ जम्हा (यस्मात्)	जाओ, जाउ (यतः)
जाओ, जाउ (यतः)	जाहि, जेहि
	जाहिंतो, जेहिंतो (येभ्यः)
	जासुंतो, जेसुंतो
६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	
७ जंसि, जस्सि (यस्मिन्)	जेसु जेसुं (येषु)
जहिं, जम्मि	
जत्थ (यत्र)	
जाहे, जाला, [1]जईआ	
(यदा)	

ज (नान्यतर)

१ जं (यत्)	जाणि, जाइ जाइँ (यानि)
,, ,,	,, ,, ,, ,,

बाकीनां नरजाति—ज—प्रमाणे

---

1. आ रूप हमेशां 'यदा—ज्यारे'—ना ज अर्थमां वपराय छे. हे० प्रा० व्या० ८।३।६५।

त[1], ण, (तद्) नरजाति

	एकवचन	बहुवचन
१	स, सो, से (सः)	ते, णे (ते)
२	तं, णं (तम्)	ते, ता (तान्) णे, णा
३	तेण, तेणं तिणा (तेन) णेण, णेणं	तेहि, तेहिं, तेहिँ (तेभिः, तैः) णेहि, णेहिं, णेहिँ
४	तस्स, तास (तस्य)	सिं, ताण, तेसिं (तेषाम्) ताण, ताणं, (तानाम् ?) णेसिं, णाण, णाणं
५	तो, ताओ, ताउ (ततः) तम्हा (तस्मात्)	ताओ, ताउ (ततः) ताहि, तेहि ताहिंतो, तेहिंतो (तेभ्यः) तासुंतो, तेसुंतो
	णाओ, णाउ	णाओ, णाउ णाहि, णेहि णाहिंतो, णेहिंतो णासुंतो, णेसुंतो

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

---

૧. પ્રાકૃત ભાષામાં 'ત' અને 'ણ' એ બંને 'તે'ના અર્થમાં વપરાય છે. હૈ૦ પ્રા૦ વ્યા૦ ૮।૩।૭૦ માં 'ત'ની માફક 'ણ'નાં રૂપો બતાવેલાં છે. 'ત' અને 'ન'-'ણ' [illegible] [illegible] 'ણ' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 'ણ'નો પ્રયોગ [illegible] [illegible] છે.

७ तंसि तस्सि, तहिं, तेसु, तेसुं (तेषु)
तम्मि (तस्मिन्)
तत्थ (तत्र)
ताहे, ताला, [1]तइआ (तदा) हे० प्रा० व्या० ८।३।६५।
णंसि, णस्सि, णहिं, णेसु, णेसुं
णम्मि, णत्थ

त (नान्यतर)

१ तं (तत्)	ताणि, ताइं, ताइँ (तानि)
णं	णाणि, णाइं, णाइँ
२ ,, ,, (,,)	,, ,, ,, (,,)

बाकीनां नरजाति—त—प्रमाणे

---

१ को (कः)	के (के)
२ कं (कम्)	के, का (कान्)
३ केण, केणं, किणा (केन) किणा	केहि, केहिं, केहिँ (केभिः, कैः)
४ कस्स, कास (यस्य)	कास, केसिं (केषाम्) काण, काणं, (कानाम् ?)
५ कम्हा (कस्मात्) किणो, कीस काओ, काउ	काओ, काउ काहि, केहि काहिंतो, केहिंतो कासुंतो केसुंतो

1. आ रूप कयां 'तदा-त्यारे'ना ज अर्थमां वपराय छे.

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

७ कंसि, कस्सि, कहिं. केसु, केसुं (केषु)

कम्मि (कस्मिन्)

कत्थ (कुत्र)

काहे, काला, १कइआ (कदा) हे० प्रा० व्या० ८।३।६५।

क (नान्यतर)

१-२ किं (किम्) काणि, काइं, काइँ (कानि)

सर्वनाम

अण्ण / अन्न } (अन्य) अन्य-बीजुं

अण्णयर / अन्नयर } (अन्यतर) अनेरु-बीजुं कांई

अंतर (अंतर) अंदरनुं

अवर (अपर) अपर-बीजुं

अयर (अपर) बीजुं, बीजुं

इम (इदम्) आ

इयर (इतर) इतर-बीजुं

उत्तर (उत्तर) उत्तरदिशा, उत्तरनुं

एग / इक्क / एक्क } (एक) एक, बीजुं

एअ / एय } (एतद्) ए

तुम्ह (युष्मद्) तु

अम्ह (अस्मद्) हु

क (किम्) कोण

कइम / कतम } (कतम) कयो, केटलामो

कयर (कतर) कयो

अमु (अदस्) ए

ज (यद्) जे

त, ण (तद्) ते

दाहिण / दक्खिण } (दक्षिण) दक्षिण, दक्षिणनुं

---

१ आ रूप हवे 'क्यां-क्यारे' ना अर्थमां वपराय छे.

पुरिम१ (पुरा+इम) पहेलानुं, पूर्व
पुव्व (पूर्व) पूर्व, पूर्वनुं
वीस (विश्व) विश्व बधुं
स, सुव (स्व) स्व-पोते, पोतानुं
सम (सम) बधुं
सव्व (सर्व) सर्व-सघ-बधुं
सिम (सिम) बधुं

सामान्य शब्दो [नरजाति]

भूअ (भूत) भूत-प्राण-जीव
सीस, सिस्स (शिष्य) शिष्य, विद्यार्थी
कसिवल (कृषिवल) खेडवाळो-खेडुत
अंक (अङ्क) अंक-खोळो
बंधव (बान्धव) बांधव-भाई
पासाय (प्रासाद) प्रासाद-महेल
जीव (जीव) जीव
ताव (ताप) ताव, ताप-तडको
बंभण, बम्हण, माहण (ब्राह्मण) ब्रह्म वियाने समजनार पुरुष
कोड (क्रोड) गोद-खोळो
पास (पाश) पाश-फांसो, पाशलो-फांसलो
दिणयर (दिनकर) दिनने करनार-सूरज, दीकरा
संसार (संसार) संसार-जगत्

नान्यतर

अंगण (अङ्गण) आंगणुं
सीअ (शीत) शीत-टाढ
खेम (क्षेम) क्षेम-कुशळ
महब्भय (महाभय) महाभय-मोटो भय
वत्थ (वस्त्र) वस्त्र-वस्तर-कपडुं
कट्ठ (काष्ठ) काष्ठ-काठ-काठी-लाकडुं
कम्मबीअ (कर्मबीज) कर्मबीज-सत्-असत्-संस्कारनुं बीज
भोयण (भोजन) भोजन-जमण
धण (धन) धन
ताण (त्राण) रक्षण शरण-आशरो
घर (गृह) घर
आउय (आयुष) आयुष्य-आवरदा

१. पुर-पुरिंद-पुरिम. पृ० ७८, २ शब्दोमां मात्रा फेरफार

विशेषण

पडुप्पन्न (प्रत्युत्पन्न) वर्तमान-कालनुं

पमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त-प्रमादी

सम (सम) समान वृत्तिवाळुं-सरखुं

वीयराग, वीयराय (वीतराग) जेमां राग नथी ते

सुजढ (सु+हान) सहेलाइथी तजी शकाय ते

जुन्न (जीर्ण) जीर्ण-जूनुं-जळी-जर्री-गयेलुं

पिय (प्रिय) प्रिय-वहालुं

आसत्त (आसक्त) आसक्त-मोही

हअ (हत) हणायेलुं-हणेलुं

आगअ, आगन, आअ (आगत) आवेलुं

पिआउय (प्रियायुष्क) आयुष्यने प्रिय समजनार

उत्तम, उत्तिम (उत्तम) उत्तम

वुड्ढ (वृद्ध) वय पामेल-ज्ञानी

बद्ध (बद्ध) बद्ध-बांधेल-बंधायेल

दीण (दीन) दीन-रंक

अधीर (अधीर) अधीर-धीरज विनानुं-नबळुं

उन्नय (उन्नत) [illegible]

अप्प (अल्प) अल्प-थोडुं

अणाइअ (अनादिक) आदि विनानुं

अव्यय

पुरत्तो, पुरतो, पुरओ, पुरो (पुरः) [illegible]

जहा, जह (यथा) जेम

एव, एवं (एवम्) एम-ए रीते

सव्वत्तो, सव्वतो, सव्वओ (सर्वतः) सर्व प्रकारे-चारे बाजुथी

तहा, तह (तथा) तेम

अंतो (अन्तर्) अंदर

बहुसो (बहुशः) [illegible]

धातुओ

जाण् (जाना) जाणवुं

प+मत्थ् (प्र+मथ्) मथवुं-नाश करवो

कील् | कीड् | (क्रीड्) क्रीडा करवी-खेलवुं

रम् (रम्) रमवुं

णम् | नम् | (नम्) नमवुं

दह् | डह् | (दह्) दहवुं-बळवुं-बाळवु

सह् (सह्) सहवुं-सहन करवुं

पास् (पश्य) जोवु

परि+यट्ट् (परि+वर्त्त) परिवर्तवु-फर्या करवुं-बदलावुं

आ+इक्ख् (आ+चक्ष) आचखवुं-कहेवुं

बधांने सदा सुख प्रिय छे.

जेओ शरीरमां आसक्त छे तेओ मूढ छे.

राग अने द्वेष संसारमां अनादिना छे

मेघ, बधा भागोमां चारे बाजुए वरसे छे.

अमे बे, जेनां कपडां सीवीए छीए ते राजा छे.

अग्नि जेम लाकडांने बाळे छे तेम बुद्ध पुरुष पोताना दोषोने बाळे छे.

प्रमत्त पुरुष भयथी कंपे छे.

उत्तर, पूर्वमां शीत छे अने दक्षिणमां ताप छे.

एक पण भूत हणवा योग्य नथी.

बधां बाळको गाय छे.

बधा खेडुतो टाढ अने ताप सहे छे.

जे. कोई जीवने हणतो नथी तेने अमे ब्राह्मण कहीए छीए.

कोण क्यांथी आवेलो छे?

माणसो शरीरना क्षेम माटे तपे छे.

पंडितो हर्षवडे दुःख सहे छे.

सर्व शिष्यो माथावडे आचार्यने नमे छे.

हुं बधाओने माटे चंदन घसुं छुं.

जे, तेनाथी गभराय छे ते भड नथी

बद्ध अने आसक्त पुरुषो

कर्मबीजथडे संसारमां
फर्या करे छे.
अमे बीजाओनुं मंगळ
इच्छीए छीए.
ते पोताना दोषोने जुए छे.
हाथीथी हणायेलो खेडूत
भयथी ध्रुजे छे
तेना आंगणामां घणां
बाळको रमे छे.

जे मूढ शिष्यो, आचार्यने
वांदता नथी तेओ दुःख
सहे छे.
वीतराग पुरुष सर्वमां उत्तम
ब्राह्मण छे.
वीतराग सर्व भूतोने सरखां
जुए छे.

महा जुयाइं कट्ठाइं हव्व-
वाहो पमत्थति तहा
जुवे दोसे समणो दहइ
जस्स मोहो हओ तस्स
न होइ दुक्ख
सव्वेसिं पाणाणं भूआणं
दुक्खं महब्भयं[1] ति बेमि
'सव्वे वि पाणा न हंत-
व्वा' एवं जे पहुप्पन्ना
जिणा ते सव्वे २वि
आइक्खंति.
जे एगं जाणइ से सव्वं
जाणइ.
पमत्तस्स सव्वतो भयं विज्जइ

१६७ महावीरो भासते
जस्स मोहो न होइ तस्स
दुक्खं हयं
एगेसिं माणवाणं आढयं
अप्पं खलु
अधीरेहिं पुरिसेहिं इमे कामा
न सुजहा.
पुरिमाओ. दाहिणाओ, उ-
त्तराओ वा कत्तो आगओ
त्ति न जाणइ जीवो
जे सव्वं जाणइ से एगं
जाणइ

१. जुओ पृ० ११ नि० ३ तथा पृ० ८३ नि० १३-१४।
२. जुओ पृ० ८३ नि० १२

समो य जो सव्वेसु भूएसु स वीअरागो जेहिं बद्धो जीवो संसारे परियट्टइ ते रागा य दोसा य कम्मबीअं	जेण मोहो हओ न सो संसारे परियट्टइ सव्वे पाणा पियाउअ सुहमिच्छंति.

पाठ ९ मो

'तुम्ह', 'अम्ह', 'इम' अने 'एअ'नां रूपाख्यानो

तुम्ह (युष्मद्) तुं (त्रणे जाति)

	एकवचन	बहुवचन
१	तुं, [1]तुमं, तं (त्वम्)	तुम्हे, तुज्झे (यूयम्)
२	„ „ „ तुमे, तुए (त्वाम्)	„ „ (युष्मान्) वो (वः)
३	ते, तइ, (त्वया)	तुम्हेहि, तुम्हेहिं, तुम्हेहिँ (युष्माभिः) तुब्भेहि, तुब्भेहिं तुब्भेहिँ (युष्मेभिः ?)
४	तुह, तुज्झ, तुब्भ, तुम, ते, तुव, (तव, ते) तुहं (तुभ्यम्)	तुमाण, तुमाणं (युष्माकम्) तुम्हाण, तुम्हाणं तुज्झाण, तुज्झाणं तुम्हाहँ वो (वः)

५ तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, (त्वत्) तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाउ, — तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहिंतो, तुम्हेहिंतो तुम्हासुंतो, तुम्हेसुंतो (युष्मत्)

---

1. जुओ हे० प्रा० व्या० ८।३।९० थी १०४।

तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ,
तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

७ तुवम्मि, तुवंसि, तुवस्सि,	तुवेसु, तुवेसुं (युष्मासु)
तुमम्मि, तुमंसि, तुमस्सि	तुवसु, तुवसुं
तुमे	तुमेसु, तुमेसुं
तुम्हम्मि, तुम्हंसि, तुम्हस्सि	तुमसु, तुमसुं
तुम्मि, तइ, तए, (त्वयि)	तुहेसु, तुहेसुं
	तुहसु, तुहसुं
	तुम्हेसु, तुम्हेसुं
	तुम्हसु, तुम्हसुं
	तुसु, तुसुं

अम्ह (अस्मद्) हुं [त्रणे जाति]

१ हं, अहं, अहयं (अहम्)	मो, अम्ह, अम्हे, अम्हो (वयम्)
२ मिम, अम्मि, अम्ह, मं,	,, ,, ,, ,, ,,
(माम्)	(अस्मान्)
	णे (नः)
३ मइ, मए (मया)	अम्हेहि, अम्हाहि (अस्माभिः)
	अम्ह, अम्हे,
	णे.
४ मम, मज्झ, मज्झं	मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे,
(मह्यम्, मम, मे)	अम्हो, अम्हाण, ममाणं,
	णो (नः) (अस्मभ्यम्)

१. जुओ हे० प्रा० व्या० ८।३।१०५-११७.

अम्ह, अम्हं, महं,

५ ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममा, (मत्)

अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ (अस्मत्)

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

७ मे, ममाइ, मि, मए, मइ अम्हेसु, अम्हेसुं (मयि) अम्हसु, अम्हसुं

---

[1]इम (इदम्) आ–[नरजाति]

१	अयं, इमो, इमे (अयम्)	इमे (इमे)
२	इमं, इणं, णं (इमम्)	इमे, इमा (इमान्) णे, णा
३	इमेण, इमेणं, इमिणा णेण णेणं (अनेन)	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ एहि, एहिं, एहिँ (एभिः) णेहि, णेहिं, णेहिँ
४	इमस्स, से, अस्स (अस्य)	सिं, इमेसिं, (एषाम्) इमाण, इमाण.
५	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिंतो, इमा (अस्मात्)	इमत्तो, इमाओ, इमाउ इमाहि, इमेहि, (एभ्यः) इमाहिंतो, इमेहिंतो, इमासुंतो, इमेसुंतो.
६	चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे,	
७	इमंसि, इमस्सि, इमम्मि इह, अस्सि (अस्मिन्)	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं (एषु)

---

१. जुओ हे० प्रा० व्या० ८।३।६१।७२।७३।७४।७५।७७।७८।८१। शेष 'सर्व'नी समान.

नान्यतरजाति

१ इणं,[1] इणमो, इदं (इदम्) इमाणि, इमाइं, इमाइँ (इमानि)

  "   "   "   "   "   "   "   "

पाछलनां नरजाति प्रमाणे.

---

[2]०अ (एतद्)–ए [नरजाति]

१ एस, एसो, एसे (एषः) एए (एते)
इणं, इणमो

२ एअं (एतम्) एए, एआ, (एतान्)

३ एएण, एएणं. (एतेन) एएहि, एएहिं, (एतैः-एतेभिः ?)
एइणा एएहिँ

४ से, एअस्स (एतस्य) सिं, एएसिं (एतेषाम्)
एआण, एआणं

५ एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो, एआओ, एआउ,
एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एएहि. (एतेभ्यः)
एआहि एआहिंतो, एआहिंतो, एएहिंतो,
(एतस्मात्) एआसुंतो, एएसुंतो.

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे.

७ एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि एएसु, एएसुं, (एतेषु)
एअंसि, एअस्सिं, (एतस्मिन्)
एअम्मि

---

१. जुओ हे० प्रा० व्या० ८।३।७९। २. जुओ हे० प्रा० व्या० ८।३।८१।८२।८३।८४।८५।८६।

नान्यतरजाति

१ एस, एअं, इणं, इणमो एआणि, एआइं, एआइँ
(एतत्) (हे० प्रा० व्या० ८।३।८५) (एतानि)

२ " " " " " " "

बाकीनां नरजाति प्रमाणे.

सामान्य शब्दो

नरजाति

दुम (द्रुम) द्रुम–झाड

भमर (भ्रमर) भमरो

रस (रस) रस

जणय (जनक) जनक–पिता

साव (शाप) शाप–श्राप

भारहर (भारहर) भार लई जनार –मजूर

लाह } लाभ } (लाभ) लाभ–लाचो

अलाह } अलाभ } (अलाभ) अलाभ–अप्राप्ति

कयविक्कय (क्रयविक्रय) खरीदवुं–वेचवुं–क्रय विक्रय करवो

जम्म (जन्मन्) जन्म

छत्त (छात्र)–विद्यार्थी

वद्धमाण (वर्धमान) वर्धमान–महावीरनुं नाम

एरावण (ऐरावण) ऐरावण–मोटो हाथी

लोअ } लोग } (लोक) लोक–जगत्–लोको

मुहुत्त (मुहूर्त) मुहुरत–वखत–थोडो समय

नह (नभस्) नभ–आकाश

महादोस (महादोष) महादोष–मोटो दोष

नास (नाश) नाश

नास (न्यास) न्यास–थापण

सूअर (शूकर)–भूंड

काल (काल) काल–समय

खत्तिअ (क्षत्रिय) क्षत्रिय

नमिराय (नमिराज) नमिराज–ते नामनो मिथिलानो एक राजर्षि

पमाद (प्रमाद) प्रमाद-असाव-धानता-आळस
संग (संग) संग-सोबत
असमण (अश्रमण) श्रमण नहि ते
तेअ (तेजस्) तेज
तस (त्रस) त्रास पामी गति करी शके तेवां प्राणी
थावर (स्थावर) स्थिर रहेनार-गति न करी शके ते प्राणी -वनस्पति वगेरे

पव्वय (पर्वत) पर्वत
तव (तपस्) तप-तपश्चर्या
नह (नख) नख
अय (अयस्) अयस्-लोढुं
जायतेय (जाततेजस्) जेमां तेज छे ते-अग्नि
पाय (पाद) पा-चोथो भाग
उट्ट (उष्ट्र) ऊंट

नान्यतरजाति

पाव (पाप) पाप
पावग (पापक) पाप
फंदण (स्पन्दन) फांदवुं-फरकवुं -थोडुं थोडुं हालवुं
जुज्झ } जुद्ध } (युद्ध) युद्ध-लडाई
कारण (कारण) कारण
पय (पद) पद-पगलुं
सत्थ (शस्त्र) हथियार-तरवार वगेरे
महब्भय | महाभय | (महाभय) मोटो भय
रय (रजस्) रज-धूळ, धूळ, मेल
अरविंद (अरविन्द) अरविंद-उत्तम कमळ
दाण (दान) दान

अभयप्पयाण (अभयप्रदान) अभयदान-प्राणीओ निर्भय रहे-एवी-तेवी प्रवृत्ति
असाय | असात | (असात) शाता नहि -सुख नहि ते
रज्ज (राज्य) राज्य-राज
सरण (शरण) शरण-आशरो
पीरज्ज (पीरज्य) पीरज्य-पीरवुं-पीवुं
पुप्फ (पुष्प) पुष्प-फूल
अत्थ (अस्त्र) अस्त्र-फेंकवानुं हथीआर-बाण वगेरे
सत्थ (शास्त्र) शास्त्र
चेइअ (चैत्य) चिता उपर चणेलुं स्मारक चिह्न-ओटलो, छत्री, पगलां, वृक्ष, स्तूप, मूर्ति वगेरे

छत्त (छत्र) छत्र-छत्री

बम्हचेर | बंभचेर | (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य-सदाचारवाळी वृत्ति, ब्रह्ममां परायण रहेवुं ते

सच्च (सत्य) सत्य-साचुं

साय | सात | (सात) शाता-सुख

गुरुकुल (गुरुकुल) सदाचारवाळा गुरुओ ज्यां रहे छे ते स्थान

सुत्त (सूत्र) सूत्र-सूतर, सूत्ररूप टुंकुं वाक्य

अव्यय

अलं [1](अलम्) बस-सर्युं-थयुं

तओ | तत्तो | (ततः) तेथी, त्यार पछी

अवरिं | उवरिं | (उपरि) ऊपर

मुसं | मुसा | मूसा | मोसा | (मृषा) मिथ्या-खोटुं

हु | खु | खो | (खलु) निश्चय

एगया (एकदा) एकवार-एक वखत

धुवं (ध्रुवम्) ध्रुव-चोक्कस

अज्झत्थं | अज्झप्पं | (अध्यात्म) आत्माने लगतुं-अंदरनुं

सततं | सययं | (सततम्) सतत-निरंतर

[2]इइ | इअ | त्ति | ति | इति | (इति) इति-ए प्रमाणे, समाप्तिसूचक

विशेषण

अवज्ज (अवद्य) अवद्य-न वदी-कही-शकाय तेवुं काम-पाप-दोष.

अणवज्ज | अनवज्ज | (अनवद्य) पापरहित-निर्दोष

दुरणुचर (दुरनुचर) जेनुं आचरण कठण लागे ते.

१. 'अलं'नी साथे आवता नामने त्रीजी विभक्ति लागे छे: अलं जुद्धेणं. अलं तवेणं. २. 'इति'ना उपयोग माटे जूओ पृ० ८३ नियम १३-१४।

सुत्त (सुप्त) सुतेलुं
सुत्त (सूक्त) सूक्त-सारी उक्ति-सुभाषित
वड्ढमाण (वर्धमान) वधतुं
गढिय (गृद्ध) अतिशय लालचु
अहम (अधम) अधम-हलकुं-नीच
जिइंदिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियो उपर जय मेळवनार
निरट्ठय (निरर्थक) निरर्थक-नकामुं
धीर (धीर) धीर-धीरजवाळुं
अणारिय (अनार्य) अनार्य-आर्य नहि ते-अनाडी
पिय (प्रिय) प्रिय-वहालुं

दुप्पूरिय (दुष्पूर) दुःखेथी पूराय-भराय तेवुं
सयल (सकल) सकल-सघळुं
कुसल (कुशल) कुशळ-चतुर
दुरतिक्कम (दुरतिक्रम) न मटे तेवुं
मड | मय (मृत) मृत-मरेलुं
सेट्ठ (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ-उत्तम
दंत (दान्त) जेणे तृष्णाने दमी छे ते, दमेलुं-शांत, पलोटायेल.
कड | कय (कृत) करेलुं
विविह (विविध) विविध-जात जातनुं

धातुओ

भास् (भाष्) भाखवुं-भाषण करवुं
प+मय् (प्र+माद) प्रमाद करवो
जूर् (जुर्) जूरवुं
तिप्प् (तिप्) टपकवुं-गळवुं
पिट्ट् (पिट्) पीटवुं-मारवुं-पीटवुं
परि+तप्प् (परि+तप्य) परिताप पामवो-दुःखी थवुं
सम्+आ+यर् (सम्+आ+चर्) आचरण करवुं

अणु+तप्प् (अनु+तप्य) अनुताप करवो-पश्चात्ताप करवो.
प+यय् (प्र+यत्) प्रयत्न करवो
अभि+नि+क्खम् (अभि+निष्+क्रम्) दीक्षाने माटे घरथी नीकळवुं-संन्यास लेवो
परि+हर् (परि+हर् परहरवुं-तजवुं
गरह् (गर्ह्) गरहवुं-नींदवुं-[illegible] [illegible]

कप्प् १(कल्प) खपवुं-उचित होवुं	अभि+प्प+त्थ् (अभि+प्र+अर्थ्) अभिपत्थ् प्रार्थना करवी
वज्ज् (वर्ज) वर्जवु-छोडवुं	अभि+जाण् (अभि+जाना) अहिनाणवुं-ओळखवुं
चय् (त्यज) तजवुं	खण् (खन्) खणवुं-खोदवुं
चर् (चर) चरवु, चालवुं	परि+च्चय् (परि+त्यज) परित्याग करवो
सं+जल् (सं+ज्वल) जळवुं-तपवुं-क्रोध करवो.	

આચાર્યો કુશળ માટે નિરંતર પ્રયાસ કરે છે.

સંસારમાં પાપનો ભાર વધે છે.

જેમ જેમ વાસના વધે છે તેમ તેમ લોભ વધે છે.

યુદ્ધને વખતે ધૈર્ય દુર્લભ હોય છે.

અમે નિરર્થક બોલતા નથી.

ભમરાઓ ફુલોમાં દોડે છે.

ઝાડો પાણી પીએ છે અને તાપ સહે છે.

નમિરાજ યુદ્ધને તજે છે.

ક્ષત્રિયો શસ્ત્રો અને અસ્ત્રો વડે નિર્દોષ મનુષ્યનાં માથાં કાપે છે.

છાત્રો હમેશાં ગુરુકુળમાં રહે છે.

તેના આંગણામાં સૂરજનું તેજ દીપે છે.

તેઓ તમને વારંવાર યાદ કરે છે.

અમે મહેલની ઉપર છીએ.

અમારામાં તે એક જિતેંદ્રિય પંડિત છે.

તમે એને વારંવાર વાંદો છો.

એઓ, તમે અને અમે દૂધ પીએ છીએ.

પાપી બ્રાહ્મણ સર્વેમાં હલકો છે.

સંસારમાં કોઈ, કોઈનું શરણ નથી.

તમે અંદરનું જાણો છો તેથી પ્રમાદ કરતા નથી.

---

૧. 'ખપવુ નહીં' એવા અર્થમાં આ ધાતુ છે અને તેનો ઉપયોગ— 'શ્રમણોને ક્રયવિક્રય ખપતો નથી.'

અમે, તમે અને તેઓ બધા, સંસારના પાશને કાપીએ છીએ.
શ્રમણો પાણી વડે વસ્ત્રોને શુદ્ધ કરે છે.
કુશળ પુરુષો નિર્દોષ વચનને ઉત્તમ કહે છે.
તપોમાં બ્રહ્મચર્ય શ્રેષ્ઠ છે.
ક્ષત્રિયોનું લક્ષણ ધૈર્ય અને વીર્ય છે.
જિતેંદ્રિય પુરુષો બુદ્ધની અને મહાવીરની સેવા કરે છે.
બધા જીવો લોભથી પાપને માર્ગે ચાલે છે.
ધીર ક્ષત્રિયો મનુષ્યોનું કુશળ ઇચ્છે છે.
તમે ધૈર્ય વડે લોભને જિતો છો.
ઝાડો વધે છે અને કરમાય છે તેથી તેમાં જીવ છે.
આચાર્યો જાગે છે અને ધ્યાન ધરે છે.
બ્રાહ્મણો અને શ્રમણો શાસ્ત્રો વડે લડે છે.
ચૈત્યમાં મહાવીરનાં અને બુદ્ધનાં પગલાં છે.

મારો ભાઈ ટાઢથી ધ્રૂજે છે.
આ બ્રાહ્મણ ૫ લોકોને શાપ આપે છે.
આ સાગર ખળભળે છે.
તે અને હું લાકડાં છોલીએ છીએ.
કેટલાક નિરર્થક કોપે છે.
તમે, તેને, મને અને અને જિતો છો.
સાચા બ્રાહ્મણ વિના બીજું કોણ ઉત્તમ છે !
કોઈ બ્રાહ્મણ જન્મ વડે બ્રાહ્મણ થતો નથી.
સંસારમાં બધાં પ્રાણીનાં શરણરૂપ છે.
સંસારમાં ચારે બાજુ ત્રસ અને સ્થાવર જીવો છે.
શ્રમણો પાપરૂપ કર્મોનો ત્યાગ કરે છે.
શ્રમણોમાં વર્ધમાન શ્રેષ્ઠ છે.
દાનોમાં અભયદાન શ્રેષ્ઠ છે.
પગથી અગ્નિને હણો છો.
પર્વતને તમે નખોથી ખણો છો.
પુષ્પોમાં અરવિંદ શ્રેષ્ઠ છે
થોડું પણ અસત્ય મહાભયરૂપ છે.

तप वडे वधता वर्धमान
मनुष्योना क्षेम माटे संन्यास
ले छे.
दांतथी लोढाने खाओ छो.

मजूरो रूपा माटे पहाडने
खोदे छे.
बापना खोळामां पुत्र
आळोटे छे.

एगो हं नत्थि मे को वि
नाहमन्नस्स कस्स वि
धीरो वा पंडितो मुहुत्तमवि
नो पमायए
इमे तसा पाणा, इमे थावरा
पाणा न हंतव्वा इति सव्वे
आयरिया भासंति
अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे
विविहेहिं दुक्खेहिं जूरइ
तओ से एगया पासेहिं
दिव्वइ
कोहेण, मोहेण, लोहेण वा
चित्तं खुब्भइ तत्तो अलं
तव एएहिं
अयं पुरिसे गढिए सोयइ,
जूरइ, तिप्पइ, पिट्टइ,
परितप्पइ.
जे अज्झत्थ जाणति ते
बहिया वि जाणति
अलं बालस्स संगेणं
वीराणं मग्गो दुरणुचरो

बुद्धो कामे जहाइ
पावगेण कम्मेण पुणो पुणो
कलहो जायति
अलं पमादेण कुसलस्स
पंडिओ न हरिसेइ, न कुप्पइ
पाणाणं असातं महब्भयं
दुक्खं
नत्थि जीवस्स नासो त्ति
मूढाणं अप्पाणे दुप्पूरिए
अत्थि
समणाणं कयविक्कयो महा-
दोसो न कप्पइ
तुमे सच्चं समणं तहा
सच्चं माहणं न गरिहइ
'पुत्ता मे' 'धणं मे'
'भोयणं मे' त्ति गढिए
पुरिसे मुज्झइ
ते पुत्ता तव ताणाए नालं
तुमं पि तेसिं सरणाए
नालं होसि

एस लोगे संसारंसि गिज्झइ
तं वयं बूम, माहणं जो
एगमवि पाण न हणेज्जा
पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं
किं बहिया मित्तमिच्छसि!
जहा अंतो तहा बाहिं एव
पासंति पंडिता
कामा खलु दुरतिक्कमा
असमणा सया सुत्ता, समणा
सया जागरंति
कडेहिंतो कम्मेहिंतो केसि-
मवि न मोक्खो अत्थि
मूढस्स पुरिसस्स संगेण अलं
लाभो त्ति न मज्जेज्जा,
अलाभो त्ति न सोएज्जा
सततं मूढे धम्मं [1]नाभि-
जाणति
जिणा अलोभेण लोभं जयंति
संसारे एगेसिं माणवाण
अप्पं च खलु आउयं
जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो
आवियइ रसं
खत्तिया धम्मेणं जुज्झं जुज्झंति
जहा लाहो तहा लोहो
लाहा लोहो पवड्ढइ
समणा सव्वेसिं पाणाणं
सुहमिच्छंति[2]

---

१. जुओ संधि पृ० ८२ नियम ६ न+अभिजाणति=नाभिजाणति
२. जुओ संधि पृ० ८४ नियम १८

पाठ १० मो

भूतकाळ-प्रत्ययो

स्वरांत धातुओने लगाडवाना-

	एकवचन—बहुवचन
१ पु०	सी, ही, हीअ, (सीत्[1])
२ पु०	,, ,, ,, ,,
३ पु०	,, ,, ,, ,,

'पा' धातुनां रूपो

सर्व पुरुष सर्व वचन:
पासी (पा + सी), पाअसी (पा + अ + सी)
पाही (पा + ही), पाअही (पा + अ + ही)
पाहीअ (पा+हीअ), पाअहीअ (पा+ अ + हीअ)

'हो' धातुनां रूपो

होसी (हो + सी) होअसी (हो + अ + सी)
होही (हो + ही) होअही (हो + अ + ही)
होहीअ (हो + हीअ) होअहीअ (हो + अ + हीअ)

---

१. प्राकृतमां वपरातो भूतकाळनो 'सी' प्रत्यय अने संस्कृतमां वपरातो भूतकाळनो 'सीत्' प्रत्यय बंने समान छे. 'अभाषीत्' 'अघ्रासीत्' वगेरे संस्कृत रूपोमां वपराएलो 'सीत्' (तृतीय पु० एक०) भूतकाळने दर्शावे छे, प्राकृतमां ते व्यापक थई सर्व पुरुष अने सर्व वचनने दर्शावे छे. 'ही' अने 'हीअ' ए बंने पण 'सी'नी साथे ज समानता धरावे छे.

एकवचन – बहुवचन

व्यंजनांत धातुओने लगाडवाना } ईअ (ईत्[1])
१ पु० ,,
२ पु० ,,
३ पु० ,,

वंद्-वंदीअ (वंद् + ईअ)

हस्-हसीअ (हस् + ईअ)

कर्-करीअ (कर् + ईअ)

खास करीने आर्ष प्राकृतमां वपराएला प्रत्ययो:

प्रायः तृतीय पुरुष एक वचन } त्था (इष्ट[2])
इत्था
इत्थ

प्रायः तृतीय पुरुष-बहुवचन } इत्थ (इष्ट)
इंसु (इषुः)[3]
अंसु

---

१. 'ईअ' अने संस्कृतनो भूतकाळ सूचक 'ईत्' बंने समान छे. 'अभाणीत्' 'अवादीत्' वगेरे संस्कृत क्रियापदोमां आवेलो 'ईत्' (तृ० पु० एक०) भूतकाळने दर्शावे छे, प्राकृतमां ते सर्व पुरुष अने सर्व वचनमां आवे छे. २. आ 'इत्थ' प्रत्यय अने संस्कृतनो 'इष्ट' प्रत्यय बंने समान छे. इष्ट–इट्ठ–इत्थ, तथा. अभविष्ट, अजनिष्ट, वगेरे संस्कृत रूपोमां आवेलो 'इष्ट' (तृतीय पु० एक०) भूतकाळनो सूचक छे. प्राकृतमां पण ते, प्रायः तृतीय पुरुषना एकवचनने सूचवे छे. ३. आ 'इंसु' अने 'अंसु' तथा संस्कृतनो भूतकाळदर्शक 'इषुः' ए बधा समान छे. 'अवादिषुः' 'अकार्षिषुः' वगेरे संस्कृत क्रियापदोमां रहेलो इषुः (तृतीय पु० बहुव०) भूतकाळनो सूचक छे अने ते प्राकृतमां पण प्रायः ते ज काळ, पुरुष अने वचनने सूचवे छे.

धातु–	रूपाख्यान	
हो	होत्था	(हो + त्था)
री	रीइत्था	(री + इत्था)
प+हार्	पहारित्थ पहारेत्थ	(पहार् + इत्थ)
भुंज्	भुंजित्था	(भुंज् + इत्था)
वि+हर्	विहरित्था	(विहर् + इत्था)
सेव्	सेवित्था	(सेव् + इत्था)
गच्छ्	गच्छिंसु	(गच्छ् + इंसु)
पुच्छ्	पुच्छिंसु	(पुच्छ् + इंसु)
कर्	करिंसु	(कर् + इंसु)
नच्च्	नच्चिंसु	(नच्च् + इंसु)
आह्	आहंसु	(आह + अंसु)

केटलांक अनियमित रूपो

अस्-होवुं

अत्थि, अहेसि, आसि (सर्व पुरुष सर्व वचन) आसिमो, आस्मिु (आस्म) रूप, प्रथम पुरुषना बहुवचनार्थे आर्ष प्राकृतमां क्वचित वपरायेलुं मळे छे.

' वद् ' धातुनुं ' वदीअ ' रूप थवुं योग्य छे छतां आर्ष प्राकृतमां ' वदीअ 'ने बदले ' वदासी ' अने ' वयासी '१ रूपनो उपयोग थएलो छे अर्थात् उक्त 'सी' प्रत्यय स्वरांत

धातुने लगाडवानो छे ते, आर्ष प्राकृतमां क्वचित् व्यंजनांत धातुने पण लागेलो छे, वद्+सी=वदासी. आर्ष प्राकृत होवाने कारणे 'वद'नुं 'वदा' थयुं छे.

कर

भूतकाळमां 'कर'ने बदले 'का' पण थाय छे.

कर + ईअ = करीअ

'कर'नो	का + सी = कासी
'का' थयो	का + ही = काही
त्यारे	का + हीअ = काहीअ

आर्ष प्राकृतमां वपरायेलां बीजां केटलांक अनियमित रूपो :

कृ-अकरिस्सं	(अकार्षम्)	१ पु० एक०
कृ=क-अकासी	(अकार्षीत्)	३ पु० ,,
ब्रू-अब्बवी	(अब्रवीत्)	,, ,,
वच्-अवोच	(अवोचत्)	,, ,,
अस्-आसी, आसि	(आसीत्)	,, ,,
आसिमु	(आस्म)	१ पु० बहु०
ब्रू-आह	(आह)	३ पु० एक०
,, आहु	(आहु)	,, ,,
दृश्-अद्दक्खु	(अद्राक्षुः)	,, ,,
भू } अभू हु } अहू	(अभूत् के अभूवन्)	एक० तथा बहु०

उक्त उदाहरणो संस्कृत अने प्राकृत ए बे भिन्न भिन्न भाषाना अभिन्नपणाने स्पष्ट रीते निर्देश करे छे. ए बधां रूपो मात्र उदाहरणरूपना नमूना छे.

नरजाति

आरिय (आर्य)-सज्जन, आर्य

णातसुत, णायसुय (ज्ञातसुत) ज्ञात-वंशनो पुत्र-महावीर

छगलय (छाग) छालुं-बकरुं

नातपुत्त, णातपुत्त, नायपुत्त (ज्ञातपुत्र) ज्ञात-वंशनो पुत्र-महावीर

देस (देश) देश

मिलिच्छ (म्लेच्छ) म्लेच्छ

ऊसव (उत्सव) उत्सव

मअ (मृग) पशु, मृग-हरण

मयंक (मृगाङ्क) मृगना निशान वाळो-चंद्र

पज्जुण्ण, पज्जुन्न (प्रद्युम्न१) प्रद्युम्न नामनो कृष्णनो-पुत्र

वच्छ (वत्स२) वत्स-बच्चुं-पुत्र

उच्छाह (उत्साह) उत्साह

रिच्छ (३ऋक्ष) रींछ

गोतम, गोयम (४गौतम) गौतम गोत्रनो मुनि

पवंच (प्रपञ्च) प्रपंच

संख (शङ्ख) शंख

कंटग (कण्टक) कांटो

पंथ (पन्थ) पंथ-मार्ग

कलंब (कदम्ब) कदंबनुं झाड

सप्प (सर्प) साप

मंजार (मार्जार) मणजार-बिलाडो

दुक्काल (दुष्काल) दुकाळ

वम्मह (५मन्मथ) मनने मथनार-कामदेव

पण्ह (प्रश्न६) प्रश्न

कण्ह (कृष्ण) कृष्ण-कान

पण्हुअ (प्रस्नुत) पानो

पुव्वण्ह (पूर्वाह्ण) दिवसनो पूर्व भाग

---

१. जुओ पृ० ५९ नियम १. २. जुओ पृ० ५६ नियम ४. ३. जुओ पृ० १३ नियम ९. ४. जुओ पृ० १४ नियम १२. ५. जुओ पृ० १५ नियम १७. ६. जुओ पृ० ५९ नियम ९ इत्यादि वगेरे नो पट.

हेमंत (हेमन्त[1]) हेमंत ऋतु-शियाळो

धर्म-समग्र देशनुं हित करनारी प्रवृत्ति

मूसअ
मूसय } (मूषक) मूषक-उंदर

गाम (ग्राम) गाम

देविंद (देवेन्द्र) देवोनो इंद्र-देवोनो स्वामी

पल्हाअ
पल्हाद } (प्रह्लाद) प्रह्लाद नामनो भक्त राजपुत्र

मोर
मयूर } (मयूर) मोर

मोहणदास (मोहनदास) ए नामनो वीरपुरुष-मोहनदास गांधी

हरिएसबल (हरिकेशबल) मूळ चंडाळ कुळमां जन्मेलो एक जैन मुनि

रट्ठधम्म (राष्ट्रधर्म) राष्ट्रनो

विंछिअ (वृश्चिक) वींछी

नान्यतर

गमण (गमन) गमन-जवुं

भारहवास (भारतवर्ष) भारत-देश-हिंदुस्थान

पाणीय
पाणीअ | (पानीय) पाणी, पीवानुं

महाविज्जालय (महाविद्यालय) मोटुं विद्यालय-कोलेज

दुद्ध (दुग्ध) दूध

पाडलिपुत्त (पाटलिपुत्र) पाट-लिपुत्र-पटणा शहेर

रायगिह (राजगृह) बिहारमां आवेलुं हालनुं राजगिर-मगध देशनी राजधानी

चंडालिय (चाण्डालिक) चंडा-ळनो स्वभाव-क्रोध

नाण (ज्ञान) ज्ञान

कुसग्गपुर (कुशाग्रपुर) राज-गृहनुं बीजुं नाम

पयाण (प्रदान) दान, देवुं

अच्छेर (आश्चर्य) आश्चर्य-अचरज

विनाण
विण्णाण | (विज्ञान) विज्ञान

1. जुओ संधि पृ० ८४ नियम २०-२१.

विशेषण

महड्ढिय / महिड्ढिय (महर्धिक) मोटी ऋद्धिवाळुं-धनाढ्य

वाघायकर (व्याघातकर) व्याघात करनार-विघ्न करनार

महग्घ (महार्घ) मोंघुं

सग्घ (स्वर्घ) सोंघुं

केरिस (कीदृश) केवुं

नवीण / णवीण (नवीन[1]) नवीन-नवुं

अज्जयण / अज्जतण (अद्यतन) आजनुं-ताजुं

सरस (सरस) सरस

पच्छ (पथ्य) पथ्य-रस्तामां हितकर

जुगुच्छ (जुगुप्स) जुगुप्सा करनार-घृणा करनार

सण्ह / सुहुम / सुखुम (सूक्ष्म) सूक्ष्म-सूखम नानुं सूनुं

सहल (सफल) सफळ

विहल (विफल) विफळ

विलिअ (व्यलीक) विशेष अलीक-खोटुं

वीलिअ (व्रीडित) वीलो-भोंठो

पुराण / पुराअण (पुराण) पुराणुं-जूनुं-पुरातन

णिण्ण / णेण्ण (निम्न) निम्न-नीचुं नानुं-नेनुं[2]

अव्यय

तेण (तेन) ते तरफ

जेण (येन) जे तरफ

अवस्सं (अवश्यम्) अवश्य

एव / एवं (एवम्) एम-ए प्रमाणे

सुट्ठु (सुष्ठु) सारी रीते

दुट्ठु (दुष्ठु) दुष्ट रीते

खिप्पं (क्षिप्रम्) सेर-जलदी[3]

पच्छा (पश्चात्) पछी

दहिव (दहिन) नहीं ज

---

१. जुओ पृ० ३५ नियम ८. २. 'नेनुं' ए प्राचीन उच्चारण छे. नेनुं = नानुं. ३. सरखावो—'सिग्घ' उपरथी सीघ्रो-सेर करनारो—त्वराथी आगळ पहोंचाडनारो.

अभिक्खं (अभीक्ष्णम्) वारंवार

गामाणुग्गामं / गामाणुगामं (ग्रामानुग्रामम्) गामे गाम-दरेक गाममां

नमो / णमो (नमः) नमस्कार

पगे (प्रगे) प्रातःकाळे-प्रभातकाळे

मा (मा) मा-नहि

धातु

अच्च् (अर्च्) अर्चवुं-पूजवुं

उव+दिस् (उप+दिश्) उपदेशवुं-उपदेश करवो.

नच्च् (नृत्य) नाचवुं

प+धार् (प्र+धार) धारवुं-संकल्प करवो.

ने / णे (नी) लई जवुं-दोरवुं

आ+णे (आ+नी) आणवुं-लाववुं

सेव् (सेव) सेववुं

रम् (रम्) रमवुं

पढ् (पठ्) पाठ करवो-भणवुं

पुच्छ् (पृच्छ्) पूछवुं

भण् (भण्) भणवुं

रीय् (रीय) नीकळवुं

वि+हर् (वि+हृ) विचरवुं-फरवुं

अणु+भव् (अनु+भव) अनुभववुं-भोगववुं

हुं गाममां गयो अने त्यांथी बकराने लई गयो.

आर्य पुरुषोए महावीरने अनेकवार वांद्या.

मेघ वरस्यो अने मोरो नाच्या.

'महावीरनुं शील दिव्य छे'-एम श्रावकोए पूछ्युं.

तेमणे घणां सारां कामो कर्यां अने जीवनने सफळ कर्युं.

महावीर एकंत स्थानमां नीकळ्या.

सवारे तेने पूछ्युं त्यारे गमे त्यांथी बोल्या.

अने स्वर्गनो लाभ कर्यो.

१. [illegible] — [illegible]

तेओए पाणी पीधुं अने
अमोए दूध पीधुं.
पाणी नीचुं जाय छे एम
कोण नथी जाणतुं ?
ज्ञान वडे हुं क्रोधने अवश्य
हणुं छुं.
तेणे दुष्ट रीते संकल्प कर्यो.
अमे तेनी सारी रीते सेवा
करी.
आजनुं दूध सरस हतुं
सवारे अने पछी पण बाळको
आंगणामां रम्या.
श्रमणो मोघां वस्त्रोने अड-
कता नथी.
लोकोए ज्ञान माटे पंडितोने
पूज्या.
अमे साचुं बोल्या.
राजा अने इंद्र विनयपूर्वक
बोल्या.
हुं अने तुं महाविद्यालयमां
गया अने राष्ट्रधर्मने
भण्या.

'बधा प्राणीओ हणवा लायक
छे' एम अनार्योए कह्युं.
'कोई पण प्राणी हणवा योग्य
नथी' एम आर्योए कह्युं.
मोहनदास महापुरुषे गामे
गाम विहार कर्यो अने
राष्ट्रधर्मने उपदेश्यो.
प्रद्युम्ननो शिष्य पाटलिपुत्र
गयो.
दुकाळमां देशमां माणसोए
दुःख भोगव्युं.
मोटा शिष्यो हसता नथी.
तमे शिष्योने शीघ्र पूछ्युं.
खोटुं वचन शा माटे बोल्यो ?
पुराणुं साचुं छे एम नथी
अने नवुं खोटुं छे एम
पण नथी.
आर्योने नमस्कार.
दिवसना आगला भागमां
सूर्यने पूज्यो.
हिंदुस्ताननां लोको मोंघुं
अन्न खाय छे.

ला थाविसु | तसि देसंसि दुक्काले होसी
ा य चांडालियं कासी[1] | मिच्छा ने एवमाहंसु

[1] सरखावो 'मा कार्षीत्' (अवतरण भूत नं० १) मा अने आ
ा कासी' मा ए बन्ने एक सरखां छे.

तयस्स पावायपढं वयणं
पयासी
इमं पण्हं उदाहरित्था
गोयमो समणं महावीरं
एवं वयासी
तीसे कहं नायसुतस्स
आसी ?
नमिराया देविंदमिणमब्बवी
अंगणमि बाला गोरा य
नच्चिसु
ते पुत्ता जणयं इणं वयणं
कहिंसु
वद्धमाणो जिणो अम्ह
सो तुम्हं पासी१
तुमं उगलय गामं नेही
माणवा हसीअ२
जिणा एवं कहिंसु
सासा अम्हे महिहिंडिया
तेणं कालेणं तेणं समयेणं
पाडलिपुत्ते नयरे होत्था
जेणेव समणे महावीरे तेणेव
गोयमो गच्छीअ
पुच्छिंसु णं समणा माहणा य

सो पुच्छिसो पाडलिपुत्तं
नयरं गमणाय पट्ठिस्स
रायगिहे नयरं होत्था
अट्ठ जिणा, अत्थि जिणा
सव्वे वि जिणा धम्मस्स
सव्वसुत्तमं साहंतु
ते पाणीयं पाहीअ१
बालो हसीअ
तुम्हे तत्थ ठाहीअ
आसिंसु पंथया दोवि
सो इमं वयणमब्बवी
अत्थि इहेव भारहवासे
कुण्डग्गपुरं नाम नयरं
तंसि विणयेणं आयरिये
सेवित्था
तंसि हेमंते नायपुत्ते महा-
वीरे गइत्था
जे धारिया ते एवं वयासी।
समणे महावीरे गामाणुगामं
विहरित्था
हत्थिपालो नाम निग्गंथो
समणो आसि।
किं अम्हे अलद्धं आसीअ३ ?

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६२। सूत्रो पानुं १५६ मुं. २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६२। सूत्रो पानुं १५७ मुं. ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६३। सूत्रो पानुं १५८ मुं. सार-होइ.

पाठ ११ मो

इकारांत अने उकारांत (नरजाति)

	एकवचन	बहुवचन
१	रिसि = रिसी (ऋषिः) हे० प्रा० व्या० ८।३।१९।	रिसि + अउ + रिसउ रिसि + अओ = रिसओ हे० प्रा० व्या० ८।३।२०। रिसि + अयो = रिसयो (ऋषयः) रिसि + णो = रिसिणो हे० प्रा० व्या० ८।३।२२। रिसि = रिसी
२	रिसि+म्=रिसिं (ऋषिम्) हे० प्रा० व्या० ८।३।५।	रिसि = रिसी (ऋषीन्) रिसि + णो = रिसिणो
३	रिसि+णा=रिसिणा(ऋषिणा) हे० प्रा० व्या० ८।३।२४।	रिसि + हि = रिसीहि रिसीहिं हे० प्रा० व्या० ८।३।१६। रिसीहिँ (ऋषिभिः)
४	रिसि+अये=रिसये (ऋषये) रिसि + स्स = रिसिस्स रिसि + णो = रिसिणो हे० प्रा० व्या० ८।३।२३।	रिसि + ण = रिसीण रिसीणं (ऋषीणाम्)
५	रिसि+ओ=रिसीओ(ऋषितः) रिसि+उ=रिसीउ ,, रिसि + णो = रिसिणो रिसि + हिंतो = रिसीहिंतो	रिसीओ रिसीउ रिसि+हिंतो=रिसीहिंतो (ऋषिभ्यः) रिसि+सुंतो=रिसीसुंतो

६ रिसि+स्स=रिसिस्स (ऋषेः)   रिसि+ण=रिसीण
रिसि+णो=रिसिणो   रिसीणं (ऋषीणाम्)
७ रिसि+म्मि=रिसिम्मि   रिसी+सु=रिसीसु, रिसीसुं
(ऋषिस्मिन् ? ऋषौ)   (ऋषिषु)
रिसि+सिं=रिसिसिं
सं० रिसि=रिसि ! (ऋषे !)   रिसि+अउ=रिसउ ! (ऋषयः)
रिसी=रिसी !   रिसि+अओ=रिसओ ! ,,
रिसि+अयो=रिसयो ! ,,
रिसि+णो+रिसिणो !
रिसि=रिसी !

भाणु (भानु)

१ भाणु = भाणू (भानुः)   भाणु+अवो=भाणवो (भानवः)
हे० प्रा० व्या० ८।३।२१।
भाणु+अवे=भाणवे (,,)
भाणु+अओ=भाणओ (,,)
भाणु+अउ=भाणउ (,,)
भाणु+णो=भाणुणो
भाणु=भाणू
२ भाणु+म्=भाणुं (भानुम्)   भाणु+णो=भाणुणो
भाणु=भाणू (भानून्)
३ भाणु+णा=भाणुणा(भानुना)   भाणु+हि=भाणूहि
भाणूहिं, भाणूहिँ
(भानुभिः)

४ भाणु+अवे=भाणवे(भानवे) भाणु+ण=भाणूण (भानूनाम्)
भाणु+णो=भाणुणो भाणूणं
भाणु+स्स=भाणुस्स

५ भाणु+त्तो=भाणुत्तो
भाणु+ओ=भाणूओ भाणूओ
भाणु+उ=भाणूउ भाणूउ
(भानुतः, भानोः)
भाणु+णो=भाणुणो भाणु+हिंतो=भाणूहिंतो
भाणु+हिंतो=भाणूहिंतो (भानुभ्यः)
भाणु+सुंतो=भाणूसुंतो

६ भाणु+स्स=भाणुस्स(भानोः) भाणु+ण=भाणूण
भाणु+णो=भाणुणो भाणूणं (भानूनाम्)

७ भाणु+°सि=भाणुंसि भाणु+सु=भाणूसु (भानुषु)
भाणु+म्मि=भाणुम्मि भाणूसुं
(भानुस्मिन् ?, भानौ)

सं० भाणु=भाणु (भानो !) भाणु+अवो=भाणवो (भानवः)
भाणु=भाणू भाणु+अओ=भाणओ (,,)
भाणु+अउ=भाणउ (,,)
भाणु+णो=भाणुणो
भाणु=भाणू

अकारांत नामनां रूपोनी साधनामां जे प्रत्ययो वपराएला छे ते ज प्रत्ययो उपर्युक्त रूपोनी साधनामां वधारे प्रमाणमां वपराएला छे अने सहज नवां रूपो बहु थोडां छे.

१ प्रथमाना अने संबोधनना एक तथा बहुवचनमां तथा द्वितीयाना बहुवचनमां इकारांत अने उकारांत मूळ अंग ह्रस्व दीर्घ करीने वपरायुं छे:— रिसि = रिसी भाणु=भाणू.

२ प्रथमाना, संबोधनना अने चतुर्थीना स्वरादि प्रत्ययो लगाडी पूर्व स्वरनो पछी अंगना अंत्य 'इ' के 'उ'नो लोप करवानो छेः—

सिग्गि + अओ = सिग्ग् + अओ = सिग्गओ

भाणु + अवो = भाण् + अवो = भाणवो

सिग्गि + अये = सिग्ग् + अये = सिग्गये

भाणु + अवे = भाण् + अवे = भाणवे

३ अहीं रूपोमां तृतीया एकवचन, 'णो' प्रत्ययवाळां रूपो अने चतुर्थीनुं एकवचन छे. परंतु ते रूपोनी साधना उपर आपेला नियम उपरथी समजाय तेवी ज छे.

संस्कृतमां 'इन्' छेडावाळा (दण्डिन्, मालिन्) नामोनां प्रथमा-द्वितीया बहुवचनमां अने पंचमी-षष्ठी एकवचनमां दण्डिनः, मालिनः रूपो प्रसिद्ध छे. ए रूपोनुं प्राकृत रूपांतर दंडिणो, मालिणो थाय छे. आ रीते अहीं आपेलां सिग्गिणो, भाणुओ रूपोनी घटना समजवी सहेली थाय तेम छे. वळी, 'इन्' छेडावाळां नामोनां घणां रूपो लगभग इकारांत नामनी जेवां थाय छे.

इकारांत उकारांत नान्यतर

वारि (वारि)

१-२ वारि+म्=वारिं (वारि)......वारि+णि=वारीणि
वारि+इं=वारीइं
वारि+इँ=वारीइँ } वारीणि

सं० वारि! (वारि !)

" " " (")

(सूत्रो माटे जुओ पाठ छट्ठानो प्रारंभ)

महु (मधु)

१-२ महु+म=महुं (मधु)...महु+णि=महूणि
महु+इं=महूइं
महु+इँ=महूइँ } (मधूनि)

सं० महु ! (मधु !)

" " " (")

(सूत्रो माटे जुओ पाठ छट्ठानो प्रारंभ)

चतुर्थीना एकवचनमां वारिणे, वारिस्स, महुणे, महुस्स रूपो समजवानां छे पण 'वारये' के 'महवे' रूपो समजवानां नथी.

इकारांत अने उकारांत नाम (नरजाति)

मुणि (मुनि) मुनि-मनन करनार-मौन राखनार संत

सउणि (शकुनि) शकुनि-पक्षी

पइ (पति) पति-स्वामी-धणी-मालिक

घरवइ / गहवइ (गृहपति) घरनो पति-गृहस्थ

…रिसि / …सि (ऋषि) ऋषि

भूवइ (भूपति) भू-पृथ्वी-नो पति-भूपति-भूपाल-राजा

गणवइ (गणपति) गणोनो पति-गणपति

अमुणि (अमुनि) मुनि नहि ते-[illegible]

कोहदंसि (क्रोधदर्शिन्) क्रोधने जोनार-क्रोधी

दुक्खदंसि (दुःखदर्शिन्) दुःखने जोनार-दुःख पामनार

भोगि | (भोगिन्) भोगी-
भोइ | भोगोने भोगवनार

उअहि (उदधि) उद-पाणी-ने धारण करनार-समुद्र

साहु (साधु) साधक-साधन करनार, साधु पुरुष, सज्जन, साधुजन

जंतु (जन्तु) जंतु-प्राणी

सिसु (शिशु) शिशु-बालक

मच्चु | (मृत्यु) मोत-मृत्यु-
मिच्चु | मोत-मरण

बिंदु (बिन्दु) बिंदु-टीपुं, टीपु

भाणु (भानु) भानु भाण-सूरज

वाउ | (वायु) वायु-वा
वायु |

विण्हु (विष्णु) विष्णु

हत्थि (हस्तिन्) हाथी

कुलवइ (कुलपति) कुलनो पति -आचार्य

नरवइ (नरपति) नरोनो पति नरपति-नरपाल-राजा

भूमिवइ (भूमिपति) भूमिनो पति-राजा

उवाहि (उपाधि) उपाधि

सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) श्रेष्ठी-शेठ-शेठी

गब्भदंसि (गर्भदर्शिन्) गर्भने जोनार-जन्म धारण करनार

अभोगि | (अभोगिन्) अभोगी-
अभोइ | भोगोने नहि भोगवनार

पक्खि (पक्षिन्) पंखी-पांख-वालु

सोमित्ति (सौमित्रि) सुमित्रानो पुत्र-लक्ष्मण

भिक्खु (भिक्षु) भिक्षु

चक्खु (चक्षुष्) चक्षु-आंख

सयंभु (स्वयंभू) स्वयं थनार-ब्रह्मा, ते नामनो समुद्र

संसारहेउ (संसारहेतु) संसारनो हेतु-संसार वधवानुं कारण

गुरु (गुरु) गुरु-कठिन, मोटा शिक्षा देनार

तरु (तरु) तरु-वृक्ष-झाड

बाहु (बाहु) बाहु-बांह-हाथ

इकारांत अने उकारांत (नान्यतर जाति)

अच्छि | (अक्षि) आंख
अक्खि |

अट्ठि (अस्थि) हड्डी हाडकुं-हाड

जउ (जतु) जतु-लाख

वत्थु (वस्तु) वस्तु

दहि (दधि) दहीं

घणु (धनुष्) धनुष
जाणु (जानु) जान–ढींचण–घुंटण
वारि (वारि) वारि–पाणी
महु (मधु) मध
खाणु (स्थाणु) स्थाणु–खीलो–ठूंठ

अकारांत (नरजाति)

वसह (वृषभ) वृषभ–बळद
कोसिअ (कौशिक, कौशिक गोत्रवाळो इंद्र अथवा चंड-कौशिक सर्प
आहार (आहार) आहार–खावानुं
ण्हाविअ | नाविअ | (स्नापयितृ) नवराव-नारो–नावी–हजाम
मअ (मृग) मृग–वनपशु–हरण
भार (भार) भार
कुमारवर (कुमारवर) उत्तम कुमार
आहार (आधार) आधार
गरुल (गरुड) गरुड
रण्णवास (अरण्यवास) अरण्यमां वसवुं–वनमां रहेवुं
सव्वसंग (सर्वसङ्ग) सर्व प्रकारनो संग–संबंध–आसक्ति
महासव (महास्रव) मोटो आस्रव–पापोनो मोटो मार्ग
महप्पसाय (महाप्रसाद) मोटा प्रसादवाळो–सुप्रसन्न–कृपालु
मास (मास) मास–महीनो
पक्ख (पक्ष) पक्ष–पखवाडियुं, पक्ष–पांख, पक्ष–तरफदारी
वेसाह (वैशाख) वैशाख मास
उवासग (उपासक) उपासक–उपासना करनार
कोप्पर (कोप्पर) कोणी नगर–कोणी–कोणी
सोवाग (श्वपाक) चांडाळ

अकारांत (नान्यतरजाति)

आभरण (आभरण) आभरण–घरेणुं
घर (गृह) घर
पंजर (पञ्जर) पांजरु
उदग | उदय | (उदक) उदक–पाणी
कुंभ (कुम्भ) डांम
रूय (रूप) रूप
कुल (कुल) कुल–कुळ
घय (घृत) घी
तण (तृण) तणखुं–घास
मिच्छत्त (मिथ्यात्व) मिथ्यात्व–मिथ्यात्व–खोटी दृष्टि

विशेषण

कुद्ध (क्रुद्ध) क्रोधवाळो–क्रोधी

हुत (हुत) होमेलुं–हवन करायलुं

सेट्ठ (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ–सारुं

संभूअ (संभूत) सम्भवेलो–थएलो

चउत्थ | चतुत्थ (चतुर्थ) चोथुं

जिण्ण (जीर्ण) जूनुं गळेलुं

सुत्त (सुप्त) सूतेलुं–आळसु

अप्पणिय (आत्मीय) आपणुं

पावग (दर्शक–पावक ?) प्रकाशकारी–दिवासळी

परिसोसिय | परिसोसिअ (परिशोषित) परिशोषित–सूकेल सुकाएलुं

बिइज्ज (द्वितीय) बीजुं

अव्यय

ताव | ता (तावत्) तो, त्यां सुधी

जाव | जा (यावत्) जो, ज्यां सुधी

एगया (एकदा) एक वखत–एक वार

अत्र (अत्र) अहीं

सया (सदा) सदा–हंमेशां

चिरं (चिरम्) चिर–लांबा काळ सुधी

धातुओ

अव+मन्न् (अव+मन्य्) अवमानवुं–अपमान करवुं

आ+घा (आ+ख्या) आख्यान करवुं–कहेवुं

जाण (ज्ञा) जाणवुं–जाणवा करवी–मापवुं

प+वद् (प्र+वद्) वदवुं–कहेवुं

पूज | पूअ (पूज्) पूजवुं

रुच् (रुच्) गमवुं–रुचवुं

भण् (भण्) भणवुं–बोलवुं, कहेवुं

नम् (नम्) नमवुं–नमन करवो

सक्क् (शक्) शकवुं–समर्थ थवुं

---

१. उपयोग—[illegible]

वि+राज | (वि+राज) विरा-
वि+राज् | जवुं-शोभवुं

उ+ड्डी (उत्+डी) ऊडवुं

नि+मंत् (नि+मन्त्र) निमंत्रण करवुं-नोतरवुं

जागृ (जागृ) जागवुं

ताल् | (ताड) ताडन करवुं
ताड् | -मारवुं

वि+चर् (वि+चर) विचरवुं - फरवुं

एक वार साधुओ ब्राह्मणने घरे गया.

भिक्षुओ उपाधिओने छोडे छे अने स्वयंभूनुं ध्यान करे छे.

तपथी सुकायेला मुनिने अनार्यो हसे छे

ब्राह्मणोए भिक्षुओनुं अपमान कर्युं.

हे मुने! तुं संसारने तरेलो छे.

कर्मो वडे उपाधि थाय छे.

मारे बधा भूतोमां मित्रपणुं छे. कोईनी पण साथे वेर नथी.

अमुनिओ हमेशा सुतेला छे अने मुनिओ हमेशा जागे छे.

श्रमण महावीरने वचन [illegible] सर्व [illegible].

कोई पण पुरुष कुलपतिना बळदने अने मृगने हणतो नथी.

बळदो अने मृगो तृण खाय छे अने मुनिओ घी पीए छे.

महावीरना उपासके वैशाख मासमां तप कर्यो.

बधां आभरणो भार छे

कुलपतिए श्रमण महावीरने कह्युं: कुमारवर! अहीं ऋषिओनो मठ छे.

सौमित्रि रामने नमे छे.

मुनिओ आहार माटे बधां कुळोमां फरे छे.

[illegible]ने बीजे मार्गे [illegible] जोयुं [illegible] महावीर बुद्ध थया

जे क्रोधदर्शी छे ते मान-
दर्शी छे अने जे मान-
दर्शी छे ते दुःखदर्शी छे.

हे पंडितो ! हुं कया प्रकारे
लोभने तजुं छुं.

चंडकौशिक सर्पमां अने
दृढप्रहारमां महावीरे मित्र-
पणुं राख्युं.

वायु वडे वृक्षो कंप्या अने
पाणीनां बिंदुओ उड्यां.

शुं विचारकने उपाधि
होय छे ?

कौशिक देवेन्द्रे श्रमण
महावीरने पूछ्युं.

समुद्रनां खारांय पाणी
पीधुं

लोभ संसारनो हेतु छे.

शुद्धमन मुनिओ क्रोधदर्शी
होता नथी.

ए भिक्षु शेठना कुळनो
हतो.

हे भिक्षो ! मारा घरमां
दूध नथी, घी नथी पण
पाणी छे.

ए गृहस्थने बे बाळक हतां.

सेवके हाथवडे पांजराने
फेंक्युं.

कोने आंखो नथी ?

पक्षी पांजरामां फस्युं अने
हाल्या कर्युं.

शेठ राजाने नम्यो अने
राजा गणपतिने नम्यो.

तमे पाणी लाव्या छो ?

मुनिओना पति महावीर
राजगृहमां विचर्या.

मुणिणो कया आगमंति
साहुणिणो कया सुत्ता संति
[1] [illegible] पियामि त्ति साहुस्स
णो [illegible]
धम्मीसु [illegible] नरा
[illegible]

एते भिक्खुणो उज्जाणं
सोयाइ पवज्जंति
[illegible] पंतरंति [illegible]
के उवासगा भिक्खुं निमंत-
यंति
साहू साहुणो भिक्खुं देंति

१. 'भण' एवो [illegible] छे.

मच्चू नरं णेइ हु अंतकाले
गहवई मुणिणो दुक्खं दिज्ज
भूवई, घरवई य दोवि
गुरुं वंदंति
महरिसी ! तं पूजयासु
न मुणी रण्णवासेण किंतु
नाणेण मुणी होइ
नमो भूमिवई कयावि न
चडालियं कासी
भिक्खू धम्मं आइक्खेज्जा
लोहेण जंतुणो दुक्खाणि
जायंति
सिसुणो किं किं न छिंदिरे ?
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे
इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे

अन्ने मुणिणो दुक्खमोक्खं
उदाहरंति
भिक्खू सव्वसंगे महासवे
परिजाणीअ
भोगिणो संसारे भमीअ
अभोगी चयइ रयं
हत्थीसु एरावणमाहु सेट्ठं
एगया पाडलिपुत्तस्स नर-
वई महाविज्जो होत्था
महप्पसाया इसिणो हवंति
न हु मुणी कोवपरा हवंति
महासवं संसारहेउं वयंति
बुद्धा
बुद्धो भयं मच्चुं च तरीअ
गणवई हत्थिस्स सिरं
रक्खीअ

पाठ १२ मो

भविष्यकाल

प्रत्ययो

	एकवचन	बहुवचन
पु० १	[1]स्सामि (ष्यामि)	[1]स्सामो (ष्यामः)
	[2]हामि	[2]हामो
	[3]हिमि	[3]हिमो
	[4]स्सं	

---

१. हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।१६७। २. हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।१६७।
३. हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।१६६। ४. हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।१६९।

पु० २	स्ससि (ष्यसि)		स्सह	(ष्यथ)
	स्ससे (ष्यसे)		स्सध	
	हिसि		हित्था	(ष्यध्वे)
	हिसे		हिह	
पु० ३	स्सइ	(ष्यति)		
	स्सदि		स्संति	(ष्यन्ति)
	स्सए		स्संते	
	स्सदे	(ष्यते)		(ष्यन्ते)
	हिइ		हिंति	
	हिदि		हिंते	
	हिए		हिरे	
	हिदे			

सर्व पुरुष
सर्व वचन } ज्ज, ज्जा[1]

१ भविष्यकाळना प्रत्ययो लगाडतां धातुना मूळ अंगना अन्त्य 'अ' नो 'इ' अने 'ए' वाराफरती थाय छे:
भण्+अ=भण+स्सामि=भणेस्सामि, भणिस्सामि वगेरे

रूपाख्यान

पु० १	भणिस्सामि,	भणेस्सामि	भणिस्सामो,	भणेस्सामो
	भणिहामि,	भणेहामि	भणिस्सामु,	भणेस्सामु
	भणिहिमि,	भणेहिमि	भणिस्साम,	भणेस्साम
	भणिस्सं,	भणेस्सं	भणिहामो,	भणेहामो
			भणिहामु,	भणेहामु
			भणिहाम,	भणेहाम
			भणिहिमो,	भणेहिमो
			भणिहिमु,	भणेहिमु
			भणिहिम,	भणेहिम

पु० २	भणिस्ससि. भणेस्ससि	भणिस्सह. भणेस्सह
	भणिस्ससे. भणेस्ससे	भणिस्सथ. भणेस्सथ
	भणिहिसि. भणेहिसि	भणिहित्था. भणेहित्था
	भणिहिसे. भणेहिसे	भणिहिह, भणेहिह
पु० ३	भणिस्सइ, भणेस्सइ	भणिस्संति, भणेस्संति
	भणिस्सति, भणेस्सति	भणिस्संते, भणेस्संते
	भणिस्सए, भणेस्सए	भणिहिंति, भणेहिंति
	भणिस्सते, भणेस्सते	भणिहिंते. भणेहिंते
	भणिहिइ. भणेहिइ	भणिहिइरे. भणेहिइरे
	भणिहिति. भणेहिति	
	भणिहिए. भणेहिए	
	भणिहिते, भणेहिते	

सर्व पुरुष } भणिज्ज, भणिज्जा
सर्व वचन } भणेज्ज, भणेज्जा

इकारांत अने उकारांत शब्दो

अग्गि (अग्नि) आग
गणि (गणिन्) गण-समूह-ने साचवनार-आचार्य
हत्थि (हस्तिन्) हाथी
मणि (मणि) मणि
सव्वण्णु (सर्वज्ञ) सर्व जाणनार
किसाणु (कृशानु) अग्नि
जण्हु (जह्नु) ए नामनो राजपुत्र
भिक्खु (भिक्षु) भिक्षु
उच्छु (इक्षु) शेर-शेरडी
महेसि (महा+ऋषि=महर्षि) व्यास वगेरे महर्षि

रायरिसि (राज+ऋषि=राजर्षि) राजर्षि
जीवाउ (जीवातु) जीवनु औषध
कवि (कवि) कवि
कलि (कलि) कलि-कलह
साइ (स्वामिन्) स्वामी
नमि (नमि) ए नामना एक राजर्षि-तीर्थंकर
पाणि (पाणि) पाणि-हाथ
पाणि (प्राणिन्) प्राणी
बंभयारि (ब्रह्मचारिन्) ब्रह्मचारी

मेहावि (मेधाविन्) मेधावाळो-बुद्धिमान

वणप्फइ | वणस्सइ | (वनस्पति) वनस्पति

करेणु (करेणु) हाथी-हाथणी

कुंथु (कुन्थु) कंथवा-एक नानो जीवडो

विज्जत्थि (विद्यार्थिन्) विद्यानो अर्थी-विद्यार्थी

विहु (विधु) चंद्र

कमंडलु (कमण्डलु) कमण्डल

मंतु (मन्तु) अपराध, गुनाह

तरु (तरु) तरु-वृक्ष-झाड

जंबु (जम्बु) जांबु, जांबुनुं झाड

विडवि (विटपिन्) वृक्ष-झाड

भाणु (भानु) किरण

बंधु (बन्धु) बंधु-भाई-भाई

पीलु (पीलु) पीलु पीलुनुं झाड

उडु (उडु) उडु, नक्षत्र

पवासि (प्रवासिन्) प्रवासी

विशेषण

कयण्णु (कृतज्ञ) कृतज्ञ-कदरदान

गुरु (गुरु) गुरु-भारे-मोटुं

लहु (लघु) लघु-हलकुं, नानुं

मिउ (मृदु) मृदु-कोमळ-नरम

दुहि (दुःखिन्) दुःखी

दुग्गंधि (दुर्गन्धिन्) दुर्गन्धी चीज

चारु (चारु) चारु-सुन्दर

सुहि (सुखिन्) सुखी

साउ (स्वादु) स्वादु-स्वादवाळुं

दिग्घाउ (दीर्घायुष्) दीर्घ आयुवाळुं

सुइ (शुचि) शुचि-पवित्र

सुगंधि (सुगन्धिन्) सुगन्धी वस्तु

बहु (बहु) बहु-घणुं

णाणि (ज्ञानी) ज्ञानी

सामान्य कृदन्तो (नरजाति)

वाणिज्जार (वाणिज्यकार) वण-जारो–वणज करनारो–वेपारी

कांबलिअ (काम्बलिक) कामळीओ–कामळीओने वेचनार वा ओढनार

मोत्तिअ (मौक्तिक) मोती–मोतीं वींधनार

कुडुंबि (कुटुम्बिन्) कणबी

कोडुंबिअ (कौटुम्बिक) कणबी, गामनुं कामकाज करनार

ण्हाअ (नाइ) वाळंदो–नाई

ण्हावअ (नापक) ,, ,,

सोगंधिअ (सौगन्धिक) गंधी–सुरभि–सुगंधी–तेल वगेरेने वेचनार

मल्ल (मल्ल) मालुक

सुत्तहार (सूत्रधार) सुतार

तेल्लिअ (तैलिक) तेली–तेल वेचनार

मालिअ (मालिक) माळी–माळा वेचनार

दोसिअ (दौष्यिक) दोसी–दूष –दस–वेचनार

उण्हाल (उष्णकाल) उनाळो

सीआल (शीतकाल) शियाळो

तंबोलिअ (ताम्बूलिक) तंबोळी

दंड (दण्ड) दंड–जोडी–लाकडी

जोइसिअ (ज्योतिषिक) जोशी

साउणि | साउणि | (शाकुनिक) शाकुनी –शुकन जाणनार

मणिआर (मणिकार) मणियार –काचनो सामान वेचनार

सामान्य शब्दो (नामपदाणि)

पेट्ट (पेट) पेट

[illegible] (गांजिक) गधअ–गीतार

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]) [illegible]–[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

कट्टयरकाल (कष्टकाल) [illegible] –दांतानो [illegible] [illegible]–[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

पादसाण ([illegible]) [illegible]

पत्तरक्ख (पत्ररक्ष) पतरखो -पत्रनुं रक्षण करनार

पत्त (पात्र) पात्र वासण

पट्टोल (पट्टकूल) पटोळुं

खेत्त } (क्षेत्र) क्षेत्र-खेतर
छित्त }

मिहिलानयर (मिथिलानगर) मिथिला

पच्चोल (मृच्चोल) पच्चोळुं

पम्हपड (पक्ष्मपट) पक्ष्म-पांपण-जेवुं झीणुं कापड-पांभरी

चित्त } (चैत्र) चैतर-चैतरनी
चेत्त } ओळी-चैत्र

सुवण्ण (सुवर्ण) सोनुं

रयय (रजत) रजत-रूपुं

रुप्प (रुक्म) रूपुं

रुप्प (रौप्य) ,,

खोमपट्ट } (क्षौमपट्ट) शणनुं कपडुं
} (सौमपट्ट) -रेशमी

पम्ह (पक्ष्मन्) पांपण

नेड्ड | (नीड) निवास-नीड-
णेड्ड | माळो

सामान्य शब्द (विशेषण)

घट्ठ (घृष्ट) घसेलुं-सुंवाळुं करेलुं घसेलुं

मट्ठ (मृष्ट) मांजेलुं-शुद्ध

अंतिअ (अन्तिक) पासे-नजीकमां

खंड (खण्ड) खंड-टोळी

रिजुअ | (ऋजुक) ऋजु-सरळुं
उज्जुअ | सरल साधु

नाय (ज्ञात) जाणेलुं-प्रसिद्ध

अक्कारिअ (अकारित) अका-रीतुं-अकारण केरुं

नवेल्लअ (नवेलक) नेत-पर-नवुं-नवलुं

अणेल्लय | (अवेलक) ...
अपल्लय | पछी ...

अव्यय

कत्थइ (कुत्र) क्यांय-को-क्यांक

मज्झे (मध्ये) माथे-वच्चे-मही-मां

जं (यत्) जे-जे

सम्पयं (साम्प्रतम्) साम्प्रत-हमणां

सययं (सततम्) सतत-निरंतर

अह (अथ) अथ-हवे-मंगलसूचक

सणा | (शनैः) शनैः-धीरे-
सणियं | धीमी गतिए

सया (सदा) सदा

अभिमुहं (अभिमुखम्) सामे-सन्मुख

अहुणा (अधुना) हमणां

धातुओ

जुंज् (युज) योजवुं-जोडवुं-मळावतुं-संबंध करवो
लोट् (लोथ) सोवुं-लोटवुं
सिक्ख् (शीक्ष) शीखवुं
हण् (हन्) हणवुं
मन्न् (मन्य) मानवुं
ओप्प् (अर्प) पाणी आपवुं-पाणी चडाववुं-ओप्पवुं
पवस् (प्र+वस्) प्रवास करवो
उवचिट्ठ (उप+तिष्ठ) उपस्थित रहेवुं-सेवामां हाजर रहेवुं
ताव् (ताप) तपाववुं-तावववुं.
विक्के (वि+क्री) वेचवुं-वेकवुं
अप्प् / ओप्प (अर्प) आपवुं
पील् / पीड् (पीड) पीडवुं-पीलवुं
फल् (फल) फळवुं-फळ आववां

चिंत् (चिन्त) चिंतववुं
वीसर् (वि+स्मर्) वीसरवुं-भूली जवुं
संभर् (सं+स्मर) सांभरवुं-याद करवुं
खण् (खन) खणवुं-खोदवुं
पाव् (प्र+आप्) पामवुं-प्राप्त करवुं
वक्खाण् (वि+आ+ख्यान) वखाणवुं-विस्तारथी कहेवुं-वखाण करवां
तच्छ् (तक्ष्) तासवुं-छोलवुं
अणुसास् (अनु+शास्) शिक्षण आपवुं-समजाववुं
संजुज्ज् (सं+युज्य) गमवुं
धण् (धन) धणवुं-भार पाडीने धणवुं
कुज् / कूज (कूज) कूजन करवुं-कूजन करवुं

कुंजावत्तु फूल पण उत्तम थजे
ग्रहणनो गामेगाम प्रवास रहो अने वस्तुओ देवजे

तूसार लोकाने नमजे नमि, विद्यार्थीओने अने ऋषिओने मन आपजे
साथी नदीओनां, सरोवर अने घरोनां ...

सुनार सोनाने ओगाळशे
  अने पछी घडशे
गृहस्थो, ब्राह्मणो अने
  साधुओने अन्न आपशे
श्रमण महावीर, कुंभारने
  अने लोकोने धर्म
  समजावशे
सरैयो सुगंधी वस्तुने
  वखाणशे
मोची मारा माटे पगरखां
  सीवशे
कुशळ तरवैयो तळावने
  पोताना बे हाथे तरशे
झाकळीयाना शरीर उपर
  चामडुं अने लोवडी
  ओढशे
उनाळाना दिवसोमां कोयल
  आंबा उपर कुहू कुहू
  करशे
गुरु विद्यार्थीओने वेदनो
  पाठ समजावशे
नदी मलने धोवशे अने
  मेल देवशे
सोनी सोनानां ओ घरेणां
  घडशे अने वेचवाने
  राखशे

मारा गुरुनी जीवननुं
  औषध धर्म थशे
हुं पाटणना शिखरे चंद्रने
  जोईश
वांदराओ आंबाना झाडमां
  कूदशे
उनाळामां सूर्यनो प्रचंड
  ताप तपशे
तंबोळी तंबोळ वेचशे अने
  अमे तंबोळ खाईशुं
विद्यार्थीओनी पासे आचार्यो
  बोलशे
आ आंबो शियाळामां फळशे
तमे बे तमाकु नहीं सुंघशो
  भलो
ऋषिओ कांडकणी होमशे
ऊंटो पोताना भारने
  खोंखे बैलोने लोको
  रखाणे करीश
तारे लोकोने पर्वतोने ओपशे
देहलीना दरबारमां ते उना-
  ळामां पडशो अने बेसने
  तु सांधीश
कळशी श्रेणीने घणीवार जोडशे
हवे हुं पान खाईश. ते
  सेनो साद सांभळी अने
  तमे पाणी पीशो

विज्जत्थी भिक्खू य सया
गुरुं उवचिट्ठिस्सइ
गुरूणमंतिए सीसो उरुणा
सह उरुं न कुंजिस्सइ
मिउं पि गुरुं सीसा चंडं
पकरंति
हत्थीसु एरावणं नायमाहु
मच्चू णरं णेइ हु अंतकाले
रिसी रायरिसिं इमं वय-
णमब्बवी
सव्वे साहुणो, गुरुणो
अणुसासणं कल्लाणं
मन्निस्संति
'अहं अचेलए सचेलए
वा' इइ भिक्खू न
चिंतिस्सइ
सव्वे जणा अंधस्स नरं
वक्खाणिस्संति
मज्झं मज्झं तुं बोल्लिस्ससि,
तुमे नच्चिस्सइ, सो य
गाइस्सति
वाणिज्जारा अम्हे गामे
गामे वाणिज्जं करेहामो
वत्थूइं च विक्केहिमु

अम्हे लोहारा लोहं
ताविस्सामु तस्स य
सत्थाणि घडेहिमो
माहणा पाणिणो पाणे न
हणिस्संति
जइ अम्हे समणं वा मा-
हणं वा निमंतिस्सामो
सो सक्खं मूढो किमवि
न संबुज्झिहिइ
तुमं वत्थं सिव्विस्ससि, अहं
च पट्टोलं वणिस्सं
अहं सोवण्णिओ सुवण्णं
सोहिहामि तस्स य
आभरणाइं घडिहिमि
आसी भिक्खू जिइंदिओ
दंडेहि विसेहि, कसेहि चेव
अणारिया तं रिसिं
तालइंति
ताहे सो कुलवती समणं
महावीरं अणुसासति,
भणति य कुमारवर !
सउणी नाव अण्णाणगं
पेह्रु रक्खति
रायगिहम्मि नयरम्मि
निक्खंते सिद्धत्थसुए
मज्झ गोसो आसी

पाठ १३ मों

भविष्यकाळ (चालु)

स्वरांत धातुनां भविष्यकाळनां रूपो [illegible] त्रीजा पाठमां [illegible] [illegible]ान धातु माटे के विशेष साधनिका करवी छे तेनो उपयोग [illegible]वी.

अंगोनी समज

विकरणविनानुं	विकरणवाळुं
हो	होअ
पा	पाअ
ने	नेअ

रूपाख्यान (उदाहरण)

१ पु० होस्सं, होइस्सं, होअस्सं
" " पास्सं, पाइस्सं, पाअस्सं
" " नेस्सं, नेइस्सं, नेअस्सं

केटलांक अनियमित रूपाख्यानो

कृ

भविष्यकाळमां 'कृ'ने बदले 'का' पण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] धातुनी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]मां [illegible] [illegible] [illegible]. जेमके;

१ पु० काहिमि. १ पु० काहिमि. [illegible] [illegible].
१ पु० काहिइ. २ पु० [illegible]

१. [illegible] पृ० १८८. २. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
प्रा० व्या० [illegible]

दा

'दा' धातुनां भविष्यकाळ संबंधी बधां रूपो स्वरांत धातुनी पेठे थाय छे, फक्त प्रथम पुरुषना एकवचनमां[1] 'दाहं' रूप वधारे थाय छे. जेमके;

३ पु० दाहिइ. २ पु० दाहिसि. १ पु० दाहिमि, दाहं वगेरे

[2]सोच्छ (श्रोष्य) सांभळवुं	वेच्छ (वेत्स्य) वेदवुं-अनुभववुं जाणवुं
रोच्छ (रोत्स्य) रोवुं	
मोच्छ (मोक्ष्य) मुकावुं-छुटुं थवुं	भेच्छ (भेत्स्य) भेदवुं-टुकडा करवा
भोच्छ (भोक्ष्य) भोजन करवुं भोगववुं	छेच्छ (छेत्स्य) छेदवुं
	दच्छ (द्रक्ष्य) जोवुं-देखवुं
वोच्छ (वक्ष्य) कहेवुं-बोलवुं	गच्छ (गंस्य) जवुं, पामवुं

मात्र आ उपर्युक्त दस धातुओने 'हि' आदिवाळा (हिमि, हिसि, हिमो, हिम, हिह वगेरे) प्रत्ययो लगाडतां तेमनी आदिना 'हि' विकल्पे लोपाय[3] छे. जेमके:—

सोच्छ + हिमि = सोच्छिमि, सोच्छंमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि—वगेरे.

वळी, मात्र प्रथम पुरुषना एकवचनमां ज ए दसे धातुओनुं अनुस्वारवाळुं पण एक रूप वधारे थाय छे. जेमके:—

[4]सोच्छं	वेच्छं	दच्छं
सोच्छिस्सं	वेच्छिस्सं	दच्छिस्सं वगेरे.

बाकीनी बधी साधनिका 'भण' धातुनी समान छे.

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७०। २-३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७१। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७१।

रूपाख्यान [उदाहरण]

भविष्यत्काल—

१ पु० मोच्छं मोच्छिमि, मोच्छिस्सामि
मोच्छिस्सं, मोच्छेमि, मोच्छेस्सामि
मोच्छेस्सं, मोच्छिहिमि, मोच्छिहामि
मोच्छेहिमि, मोच्छेहामि

२ पु० मोच्छिसि, मोच्छेसि, मोच्छिहिसि मोच्छेहिसि
मोच्छिसे, मोच्छेसे, मोच्छिहिसे, मोच्छेहिसे

३ पु० मोच्छिइ, मोच्छेइ, मोच्छिहिइ, मोच्छेहिइ
मोच्छिए, मोच्छेए, मोच्छिहिए, मोच्छेहिए इत्यादि.

आर्ष प्राकृतमां क्यांकक्यांक बीजां केटलांक अनियमित रूपो:

(भोक्ष्यामः) — भोक्खामो
(भविष्यति) — भविस्सइ
(करिष्यति) — करिस्सइ
(चरिष्यति) — चरिस्सइ
(भविष्यामि) — भविस्सामि
(भू-भविष्यामि) — होक्खामि

अमु (अदस्) सर्व [नरजाति]

१ अह / अमू / अमोरे	(असौ)	अमुणो / अमू	(अमी)
२ अमुं	(अमुम्)	अमुणो / अमू	(अमून्)

७ अयम्मि[1]
इमम्मि
अमुम्मि } (अमुष्मिन्) — अमूसु, अमूसुं } (अमीषु)

बाकी बधां 'भाणु'नी प्रमाणे

अमु (अदस्) आ [नान्यतरजाति]

१ अह (अदः) — अमूणि, अमूइं, अमूइँ } (अमूनि)
अमुं
२ ,, ,, — ,, ,, ,, ,,

बाकी बधां 'अमु'नी प्रमाणे

इकारांत अने उकारांत शब्दो (नरजाति)

सारहि (सारथि) सारथि-रथ हांकनारो
वरदंसि (वरदर्शिन्) उत्तम रीते जोनार
माराभिसंकि (माराभिशङ्किन्) मार-तृष्णा-थी शंकित रहेनार-दूर रहेनार-तृष्णाथी डरनारो
वाहि (व्याधि) व्याधि-रोग
महासद्धि (महाश्रद्धिन्) मोटी -अचल-श्रद्धावाळो
गव्विर (गर्विन्) गर्वी
उवाहि (उपाधि) उपाधि-प्रपंच

पभासि (प्रभाषिन्) प्रभाष करनार
पहु (प्रभु) प्रभु-प्रभाववाळो-समर्थ
तंतु (तन्तु) तांतणो
महातवस्सि (महातपस्विन्) मोटो तापस
सम्मत्तदंसि (सम्यक्त्वदर्शिन्) सत्यने जोनार-समजनार-जाणनार
पसु (पशु) पशु
विहु (विधु) विधु-चंद्र

---

१. हि० प्रा० व्या० ८।३।८९।

जंतु (जन्तु) जन्तु-प्राणी-जीवजंत

जोगि (योगिन्) जोगी-ध्यानी

दंसणि (दर्शनिन्) दर्शनवाळो -शास्त्रवाळो-[illegible]

मंति (मन्त्रिन्) मंत्री-कारभारी

चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) चक्र- [illegible] -चक्रवर्ति राजा

वग्गु (वल्गु) [illegible]

संभु (शम्भु) शंभु-[illegible] -महादेव

[illegible] ([illegible]) [illegible]

सामान्य शब्दो (नरजाति)

मग्ग (मार्ग)-मार्ग

मार (मार) मारनारो-[illegible]

दरसीअ | दुक्खिअरत | (दुःखित) दुःखी-भिखारी

ववहारिअ (व्यवहारिक) वहेवारी-वेपारी

थेर (स्थविर) स्थिर बुद्धिवाळो- [illegible] -वृद्ध [illegible]

गब्भ (गर्भ) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] | [illegible] | ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

खुंसिअ | निसिण | [illegible] | [illegible] | ([illegible]) [illegible]

गणहर | गणधर | (गणधर) गणने धारण करनार-[illegible] करनार-आचार्य

अणागअ | अनागत | (अन्+आगत) न आवेलुं-[illegible]

वण्ण (वर्ण) रंग, [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

सामान्य शब्दो [नान्यतरजाति]

रूव (रूप) रूप-वस्तु-पदार्थ
कम्म (कर्मन्) कर्म-पुण्य पापनी प्रवृत्ति
कुंपल (कुड्मल) कुंपळ-फणगो
जाण (यान) यान-वाहन
मच्चुमुह (मृत्युमुख) मृत्युनुं मुख-मोतनुं मोढुं
जुम्म | जुग्ग (युग्म) युग्म-जोड-जोडी
छणपय | छणपअ (क्षणपद) हिंसा-हिंसानुं स्थान

मरण (मरण) मरण-मोत
धम्मजाण (धर्मयान) धर्मरूप वाहन-धर्मनुं वाहन, धर्मस्थान उपर लई जनारुं वाहन
महब्भय (महाभय) मोटो भय-मोटी बीक
पुच्छ (पुच्छ) पूंछडी
वयण (वचन) वचन-वेण
वयण (वदन) वदन-मुख

विशेषण

तिम्म | तिग्ग (तिग्म) तीक्ष्ण-तेजदार-तेज
पुण्ण (पुण्य) पुण्य-पवित्र काम
पंत (प्रान्त) अंतनुं-छेवटनुं वापरतां वधेलुं
विब्भल | विहल (विह्वल) विह्वल-गाभरो-गभरायेल
जोइअ | जोइअ (योजित) जोडेलुं

डज्झमाण (दह्यमान) बळतुं-बळतुं
पुण्ण (पूर्ण) पूर्ण-भरेलो-[illegible]
तुच्छ (तुच्छ) तुच्छ-रांक-अधूरो
पसत्त (प्रसक्त) प्रसक्त-लागेलुं
लुक्ख | लूह (रूक्ष) लूखुं, आसक्ति विनानुं
सीलमूअ ([illegible]) [illegible]

अव्यय

इत्थं (इत्थम्) ए प्रकारे

तु (तु) तो

एट (एट) अहीं-आहीं

दाणि / दाणिं / इयाणि / इयाणिं (इदानीम्) हमणां-आजकाल

इंति / इंतिं (इति) [illegible]

पुअं (पूर्व) [illegible]

उप्पि / अवरिं / उवरिं / उवरि (उपरि) उपर

धातुओ

वि+हर् (वि+हृ) विहरवुं-फरवुं-

हस् (हस्) हसवुं-[illegible]

प+णम् (प्र+णम्) प्रणाम-[illegible] [illegible] करवी

अमराय / अमरा (अमराय) अमरनी पेठे रहेवुं-पोतानी जातने अमर मानवी

अइ+वाअ (अति+पात) अति-पात करवो-हणवुं

वि+सीअ (वि+सीद) विषाद पामवो-खेद करवो

[illegible] ([illegible]) [illegible]-[illegible], [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]-[illegible]-
[illegible] [illegible]

वि+[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

उव+कुण (उप+कुर्व) [illegible] [illegible]
-[illegible] [illegible]

भंज / भंज (भञ्ज्) भांगवुं-भांगवुं

अव+सीअ (अव+सीद) अवसाद पामवो-खेद करवो

लिप् (लिप्) [illegible]

सं+गम् (सं+गम्) [illegible]-
[illegible] [illegible]

पडि+कुल (प्रति+कूल) प्रतिकूल
[illegible]-[illegible] [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]

प+[illegible] ([illegible]) [illegible]
-[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]-[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]
-[illegible]

पंडितो हरखाशे नहि अने
कोप करशे नहि
अमे बे, ए प्रकारे आचा-
र्यने वारंवार कहीशुं
ए विद्यार्थी बडाई मारशे
नहि पण संयम राखशे
हुं ए साचुं कहीश
सारथिः बळदोने साचवशे
अने वाहनमां जोडशे
तपस्वी योगी, व्याधिओथी
बीशे नहि

गार्ग्य मुनि गणधर थशे
वनना केसरी वनना हाथीने
तेना माथामां छेदशे
आचार्य पूर्ण अने तुच्छ
बंनेने धर्म कहेशे
'बधाओने जीवित प्रिय
छे' एम कोण नहि
अनुभवशे ?
दुष्ट शिष्यो भणशे नहि
पण निरंतर बडाई
मारशे अने कूदशे

समणे महावीरे जहा
पुण्णस्स कत्थिहिइ तहा
तुच्छस्स कत्थिहिइ
धम्मं वेच्छं
सुहं भोच्छं
एगे उसइ पुच्छम्मि, एगे
विघइ अभिक्खणं
दुक्खं महब्भयं ति बोच्छं
जिणस्स वयणाइं कण्णेहिं
सोच्छं
दाणं दाहं, पुण्णं काहं तओ
य दुक्खं छेच्छं
कम्मेसु विरागं गच्छं
धम्मेण मरणाओ मोच्छं

वीरो भडो जुद्धं काहिइ
रायगिहं गच्छं, महावीरं
वंदिस्सं
गुरुणो सच्चमाहंसु
अकम्मस्स ववहारो न
विज्जइ
तुमं किं किं पावं, पुण्णं
च कासी
सद्दे उक्कुद्दिहिइ, पगब्भि-
स्सन्ति य
तस्स मुहं दच्छं तेण य सुहं
पाविस्सं
धीरे छउमत्थे ईसिमवि न
लिप्पिहिइ

छेदि अहं पियतिण्हामि जेदि	तं पेच्छं णं जोण्हिदमे
कथावि सुविणे वि ण पेच्छं	णाडलाणमो [illegible]
जोण्हजुओ मुणी जणे विर-	[illegible]
[illegible]	तदेवं पासा [illegible]
आस मो दाणाणं विभिदिदि	महामकदो [illegible]

पाठ १४ मो

ऋकारान्त शब्दो

ऋकारान्त नामोना बे भाग छे—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुरुष [illegible] छे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे.

[illegible] [illegible]–[illegible], पितृ, [illegible] वगेरे.

[illegible] [illegible] –[illegible], [illegible], [illegible] वगेरे.

ऋकारान्त—(संबंधवाचक विशेष्यरूप)

१ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 'उ' थाय छे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 'उ' [illegible] [illegible] [illegible]

([illegible]) [illegible]- पितृ = पिउ, पिअ. भ्रातृ = भाउ, भाइ. जामातृ = जामाउ, जामाइ.

२ संबंधसूचक विशेष्यरूप ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ' नो बधी विभक्तिओमां 'अर' थाय छे. (हे० प्रा० व्या० ८।३।४७) जेमके—पितृ = पितर, पियर. जामातृ = जामातर, जामायर. भ्रातृ = भातर, भायर.

३ मात्र प्रथमाना एकवचनमां उक्त नामना अंत्य 'ऋ' नो 'आ' विकल्पे थाय छे. (हे० प्रा० व्या० ८।३।४८) जेमके—

पितृ = पिता, पिया. जामातृ = जामाता, जामाया. भ्रातृ = भाता, भाया.

४ फक्त संबोधनना एकवचनमां ए नामोना अंत्य 'ऋ' नो 'अ' अने 'अरं' ए बन्ने विकल्पे थाय छे. (हे० प्रा० व्या० ८।३।३९ तथा ४०) जेमके—

पितृ = पित ! पितरं ! पितरो ! पितरा !
पिय ! पियरं ! पियरो ! पियरा !

जामातृ = जामात ! जामातरं ! जामातरो ! जामातरा !
जामाय ! जामायरं ! जामायरो ! जामायरा !

भ्रातृ = भात ! भातरं ! भातरो ! भातरा !
भाय ! भायरं ! भायरो ! भायरा !

ऋकारान्त (विशेषणसूचक)

१ उक्त नियम पेलो अने बीजो-संबंधसूचक विशेष्यरूप ऋकारांत नामने लगतो छे ते, आ विशेषणसूचक ऋकारांत नामोने पण लगाडवानो छे. जेमके—

दातृ=दातु, दाउ. कर्तृ=कत्तु. भर्तृ=भत्तु ... नियम पेला प्रमाणे.
दाता, दाया. कत्ता. भत्ता ... नियम बीजा प्रमाणे.

२. विशेषणरूप ऋकारांत नामना अंत्य 'ऋ' नो कोई विभक्तिओमां 'आर' थाय छे. (हे० प्रा० व्या० ४५) जेमके —

दातृ=दातार, दायार. कर्तृ=कत्तार. भर्तृ=भत्तार.

३ पण संबोधनना एकवचनमां आ विशेषणरूप ऋकारांत नामोना अंत्य 'ऋ' नो 'अ' विकल्पे थाय छे. (हे० प्रा० व्या० ८।३। ३९।) जेमके—

दातृ=दाय ! दायार ! दायारो ! दायारा !
कर्तृ=कत्त ! कत्तार ! कत्तारो ! कत्तारा !
भर्तृ=भत्त ! भत्तार ! भत्तारो ! भत्तारा !

उक्त बन्ने प्रकारनुं ऋकारांत नाम उपर जणावेली साधनिका प्रमाणे प्रथमाथी सप्तमी सुधीनी कोई विभक्तिओमां अकारांत अने उकारांत बने छे तेथी तेना अकारांत अंगनां रूपाख्यानोनी साधनिका 'वीर' नी पेठे समजी लेवी अने उकारांत अंगनां रूपाख्यानोनी साधनिका 'भाणु' नी पेठे समजी लेवी.

रूपाख्यानो

पिउ, पिअर (पितृ)

एकवचन	बहुवचन
१ पिअरो, पिआ (पिता)	पिअरा (पितरः)
	पिउणो, पिअवो, पिअओ
	पिअउ, पिऊ
२ पिअरं (पितरम्)	पिअरे, पिअरा, पिउणो,
	पिऊ (पितॄन्)

३	पिअरेण, पिअरेणं पिउणा (पित्रा, पितृणा?)	पिअरेहि, पिअरेहिँ, पिअरेहिं पिऊहि, पिऊहिँ, पिऊहिं (पितृभिः)
४	पिअरस्स पिउणो, पिउस्स (पितुः, पितृणः?)	पिअराण, पिअराणं पिऊण, पिऊणं (पितॄणाम्)
५	पिअराओ पिअराउ, पिअरा	पियराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअरेहि, पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो, पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो
	पिउणो, पिऊओ, पिऊउ (पितृतः, पितुः, पितृणः?)	पिऊओ, पिऊउ, (पितृतः) पिऊहिंतो (पितृभ्यः) पिऊसुंतो
६	पिअरस्स पिउणो, पिउस्स, (पितुः, पितृणः?)	पिअराण, पिअराणं पिऊण, पिऊणं (पितॄणाम्)
७	पिअरंसि, पिअरम्मि, पिअरे, (पितरि) पिउंसि, पिउम्मि	पिअरेसु, पिअरेसुं पिऊसु, पिऊसुं (पितृषु)
सं०	पिअरं! पिअ! (पितः) पिअरो, पिअरा! पिअर!	पिउणो! पिअओ, पिअओ, पिअउ, पिऊ

——

दाउ, दायार (दातृ)

१. दायारो, दाया (दाता)	दायारा (दातारः) दाउणो दायवो, दायओ, दायउ, दाऊ
२. दायारं (दातारम्)	दायारे, दायारा दाउणो, दाऊ (दातॄन्)
३. दायारेण, दायारेणं दाउणा, (दात्रा, दातृणा)	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिँ दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिँ (दातृभिः)
४ दायारस्स दाउणो, दाउस्स (दातुः, दातृणः)	दायाराण, दायाराणं दाऊण, दाऊणं (दातॄणाम्)
५. दायाराओ, दायाराउ दायारा	दायाराओ, दायाराउ दायाराहि, दायारेहि दायाराहिंतो, दायारेहिंतो दायारासुंतो, दायारेसुंतो
दाऊणो, दाऊओ, दाऊउ (दातृतः दातुः दातृणः)	दाऊओ, दाऊउ (दातृनः) दाऊहिंतो, दाऊसुंतो, (दातृभ्यः)
६ दायारस्स दाउणो, दाउस्स (दातुः दातृणः)	दायाराण, दायाराणं दाऊण, दाऊणं, (दातॄणाम्)
७ दायारंसि, दायारम्मि दायारे (दातरि) दाउंसि, दाउम्मि	दायारेसु, दायारेसुं दाऊसु, दाऊसुं (दातृषु)

सं० दायार ! दाय ! (दातः)

दायारो ! दायारा !

दायारा ! (दातारः)
दाउणो, दायवो, दायओ,
दायउ, दाऊ

[याद्वी–पिआ, पिअरं वगेरे रूपोमां 'आ' के 'अ' ने स्थाने 'या' के 'य' नुं पण चलण छे. पिआ, पिया. पिअरं, पियरं. पिअरे, पियरे वगेरे]

संबंधवाचक ऋकारांत (नरजाति) अंगो

भाउ | भायर | (भ्रातृ) भाई

पिउ | पियर | (पितृ) पिता

जामाउ | जामायर | (जामातृ) जमाइ

विशेषणवाचक ऋकारांत (नरजाति) अंगो

दाउ | दायार | (दातृ) दातार

भत्तु | भत्तार | (भर्तृ) भर्ता-भरतार-पोषण करनार

कत्तु | कत्तार | (कर्तृ) करनार

ऋकारांत (नान्यतरजाति)

ऋकारांतनां 'कत्तार' वगेरे अकारांत अंगनां रूपाख्यानो पेली बे विभक्तिमां 'कमल'नी जेवां समजवानां छे अने 'कत्तु' वगेरे उकारांत अंगनां रूपाख्यानो मात्र पेली बे विभक्तिना बहुवचनमां 'महु' नी जेवां समजवानां छे तथा बाकी बधां संबोधनसहित रूपाख्यानो नरजातिनां रूपाख्यानो प्रमाणे साधी लेवानां छे. जेमके—

अकारांत अंग–दायार

१ दायारं	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ
२ दायारं	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ
सं० दाय ! दायार !	दायाराणि, दायाराइं, दायाराइँ

बाकी बधां नरजाति प्रमाणे

उकारांत अंग–दाउ

[नोंधः उकारांत अंग एकवचनमां बदलातुं नथी. जुओ पाठ १४ नि० १]

१–२ }
सं० } दारूणि, दारूइं, दारूइँ (दारूणि)

अकारांत अंग–सुपिअर (सुपितृ)

१ सुपिअरं	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ
२ सुपिअरं	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ
सं० सुपिअरं, सुपिअर! सुपिअ !	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ

उकारांत अंग–सुपिउ (सुपितृ)

१–२ |
सं० | सुपिऊणि, सुपिऊइं, सुपिऊइँ (सुपिऊणि)

सामान्य शब्दो (नरजाति)

कणियार | कण्णिआर | ([illegible]) [illegible]

दाडिम ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

अगणि ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

आस (अश्व) अश्व-घोडो

पाट्ठिय (पृष्ठिक) पीठ ऊपर वहन करनार पोठिओ महादेवनो पोठियो

कवड्ड (कपर्द) कोडो-कोडी

गड्डह | गद्दह | (गर्दभ) गधेडो

उट्ट (उष्ट्र) ऊँट

वच्छ (वत्स) वच्चु-संतान, वाछडो

वच्छयर (वत्सतर) वछेरो

अंध | अंधल | (अन्ध, आंधळो

देयर (देवर) देवर-देर-दियर

जेट्ठ (ज्येष्ठ) मोटो, जेठ

रुक्ख (वृक्ष) रुंख-झाड

मरहट्ठ (महाराष्ट्र) मोटो देश, महाराष्ट्र देश

मरहट्ठीअ (महाराष्ट्रीय) महाराष्ट्रनो वतनी-मराठी लोक

मूअ (मूक) मूंगो

घोडअ (घोटक) घोडो

तुरंगम (तुरंगम) तरत जनार-तुरंग-घोडो

अक्क (अर्क) सूर्य, आकडानुं झाड

नग्ग (नग्न) नागो, लुच्चो

सुरट्ठ (सुराष्ट्र) सोरठ देश

सुरट्ठीअ | सोरट्ठीअ | (सुराष्ट्रीय) सौराष्ट्रीय-सोरठनो वतनी-सोरठी लोक

सामान्य शब्दो (नान्यतरजाति)

अंसु (अश्रु) आंसु

लोहिअ (लोहित) लोही

सत्थिल्ल | सत्थि | (सक्थि) साथळ

तालु (तालु) ताळवुं

दारु (दारु) दारु-लाकडुं

दार | दुवार | (द्वार) बार-बारणुं

णडाल (ललाट) निलाड ललाट

भाल (भाल) भाल-कपाळ-ललाट

वरिस (वर्ष) वरस

दिण (दिन) दिन-दन-दहाडुं-दिवस

जोव्वण (यौवन) जोबन-यौवन

दीवेल्ल | दीवतेल्ल | (दीपतैल) दीवेल-दीवो बाळवानुं तेल

कोहल (कूष्माण्ड) कोळुं

दहण (दहन) देण-दहन-आग बळवुं

धन्न (धान्य) धान्य

तेल्ल (तैल) तेल

तंब (ताम्र) तांबुं

कंजिय (कांजिक) कांजी

संख्यासूचक विशेषण

पढम (प्रथम) प्रथम-पहला

बिइय | बिइज्ज | दुइय | दुइज्ज | (द्वितीय) दूसरा-दूजा

तइय | तइज्ज | (तृतीय) तीसरा

चउत्थ (चतुर्थ) चौथा

पंचम (पञ्चम) पाँचवाँ

छट्ठ (षष्ठ) छठा

सत्तम (सप्तम) सातवाँ

अट्ठम (अष्टम) आठवाँ

नवम (नवम) नवाँ

दसम (दशम) दसवाँ

सवाय (सपाद) सवा-[illegible]

दिवड्ढ | दिवड्ढ | (द्वितीयार्ध) [illegible] आधा [illegible] है वे-डेढ़

अड्ढाइज्ज | अड्ढाइअ | अड्ढाइज्ज | (अर्धतृतीय) जिसमें तीसरा आधा हो वे-ढाई

अद्धुट्ठ (अर्धचतुर्थ) जिसमें चौथा आधा हो वे-साढ़े-तीन

पाय (पाद) पा-चौथा भाग

अद्ध | अड्ढ | (अर्ध) आधा

पाऊण (पादोन) पौन-चौथा भाग कम

अव्यय

[१]अहव | अहवा | (अथवा) अथवा

अप्पणं (आत्मनम्) अपने-आप

अलं (अलम्) [illegible]

एगया (एकदा) एक बार

कहि, कहिं (कुत्र) कहाँ-कहीं

अग्ग (अग्र) [illegible]

अंतो (अन्तर्) अंदर

इओ (इतः) यहाँ से, इधर, इस कारण, इस वजह से

केवलं (केवलम्) केवल-मात्र

नहि, नहिं (नहि) नहीं-नहीं

---

[१] उपयोग-[illegible] अव्यय का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible]

धातु

अच्चे (अति+इ) अतीत थवुं-पार पामवुं

पडि+वज्ज् (प्रति+पद्य) पामवुं-स्वीकारवुं

कोव् (कोप) कोप करवो, कुपित करवुं

आ+गम् (आ+गम्) आववुं

अहि+ट्ठ (अधि+स्था) अधिष्ठान मेळववुं-उपरि थवुं

एस् (एष) एषणा करवी-शोधवुं

परि+व्वय् (परि+व्रज्) परिव्रज्या लेवी-बंधन रहित थइ चारे कोर फरवुं

सं+प+आउण् (सम्+प्र+आप्+नु) सारी रीते पामवुं

आ+यय् (आ+दय) आदान करवुं-ग्रहण करवुं

परि+देव् (परि+दिव) खेद करवो

वि+हट्ट | वि+घट्ट (वि+घट) बगडवुं-नाश पामवो

प+क्खाल् (प्र+क्षाल) पखाळवुं-धोवुं

सम्+आ+समा+रंभ् (सम्+आ+रम्भ) समारंभ करवो-रचवुं

णि+व्विज्ज् (निर्+विण्ण) निर्वेद पामवो

तेओनो ए गधेडो रंगेलो छे

घोडो, पोठियो अने ऊंट धान्य खाशे

अमारा बनेवीनो पुत्र वरसे वरसे धन पामशे

तमारा भाईए पोताना जमाईने सघळुं आप्युं

अहीं परसे, साधा श्रमण मासे अने दोढ दिवसे अमे आवशुं

तमारो जमाई दिवसे दिवसे निर्वेद पामे छे तेथी तमारुं कुटुंब खेद पामे छे

पांचमे के आठमे दिवसे ते जशे

मुनि मरणनो पार पाम्यो

अमे पिताने कुपित नहिं करीशुं

चोथानी अंदर माकारण छे अमे शब्दो बोलीशुं

आगनी आंचमां दाखिल पडशे पखवार गामनी बहारे ते दानाने सघळुं धन आप्युं

सुरहट्टीआ कोरं न फाडिहिसि
तुमं सोयरीए चोट्टए
दक्खणाहि
सोवण्णिओ दहणंसि तयं
निक्खिविआ
मूओ केवलं पंजिअं पासिह
कुमारंसि कोडलं पडिहिह
गड्डो तुरंगमो व होसि
भायरा रत्ति
दिणे दिणे तुमं भारं च
पक्खालिस्सं
तेल्लेण दीवा दीवंहिंति
ते तुज्झ भाया तस्स जा-
माउहि सह पत्तीअ

तस्स पिउणो माउणो य
सोक्खं पिट्टीअ
मरहट्टीआ कोरं चयंति
लज्जंति धरिसंति आगमिस्सं
मम माउणो भालं विमाल-
मत्थि
तस्स जट्ठो भायरो न परि-
क्खिविहिइ
अहं पिउज्जे दिणे दीवाइं
पासिहिमि
मम दहिणीपइ पणमा घणं
संपाडणिआ
पिअ ! मम वयणं न सुणि-
हिसि ?

पाठ १५ मो
विध्यर्थ अने आज्ञार्थ
प्रत्ययो

	एकवचन		बहुवचन
			मो
१ पु०	मु		मो (स्व)
२ पु०	सु हि	(स्व) (हि)	
	इज्जसु, इज्जहि, इज्जे		
३ पु०	उ तु	(तु)	न्तु (अन्तु)

१. [illegible]
[illegible]

पालिभाषामां विध्यर्थनुं बीजुं नाम सप्तमी छे अने आज्ञार्थनुं बीजुं नाम पंचमी छे. संस्कृतमां आचार्य हेमचंद्रे पण, ए ज नाम स्वीकारेल छे. पाणिनीय व्याकरणमां विध्यर्थनुं नाम 'विधिलिङ्' छे अने आज्ञार्थनुं नाम 'लोट्' छे.

इच्छासूचन, विधि, निमंत्रण, आमंत्रण, अधीष्ट, संप्रश्न प्रार्थना, प्रैष, अनुज्ञा, अवसर अने अधीष्टि आटला अर्थोने सूचववा विध्यर्थ अने आज्ञार्थना प्रत्ययोनो प्रयोग थाय छे. ते प्रत्येक अर्थनी माहिती आ प्रमाणे छे :

१ इच्छासूचन–'हुं इच्छुं छुं ते भोजन करे' एवा अर्थनी सूचना ते इच्छासूचन : 'इच्छामि स भुंजउ'

२ विधि–कोईने प्रेरणा करवी : 'सो वत्थं सिव्वउ'–'ते कपडाने सीवे'

३ निमंत्रण–प्रेरणा कर्या पछी प्रवृत्ति न करनार दोषनो भागीदार थाय एवी प्रेरणा : 'दुवेलं संझं कुणउ'–'बे वार संध्या करो'

४ आमंत्रण–प्रेरणा कर्या पछी प्रवृत्ति करवी के न करवी ते इच्छा उपर रहे एवी प्रेरणा : 'एत्थ उवविसउ'–'अहीं बेसो'

५ अधीष्ट–सादर प्रेरणा–'वयं पालउ'–'व्रतने पाळो'

६ संप्रश्न–एक प्रकारनी धारणा–'किं अहं वागरणं पढामु उअ आगमं पढामु'–'शुं हुं व्याकरण भणुं के आगम भणुं ?'

७ प्रार्थना–मागणी–'पत्थणा मम आगमं पढामु'–'मारी मागणी छे–हुं आगम भणुं'

८ प्रैष–तिरस्कारपूर्वकनी प्रेरणा–'घडं कुणउ'–'घडाने करो'

९. अनुता–निरहुंश–' अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] '–' [illegible] [illegible] छो, [illegible] [illegible] '

१० [illegible]–[illegible]–' [illegible] [illegible] [illegible] '–' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ' अर्थात् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

११ [illegible]–[illegible] [illegible] [illegible]–' [illegible] [illegible] [illegible] '–' [illegible] [illegible] छो, [illegible] [illegible] '

धातु

गज्ज् (गर्ज्) गज्जवुं–गर्जना करवी

चोप्प् (चोप्) चोपडवुं

सेव् (सेव्) सेववुं–धारण करवु आश्रय लेवो

छिन्द् (छिन्द्) छेदवुं–छेदवु–कापवु

लभ् (लभ्) लाभवुं–मेळववुं

भण् (भण्) भणवुं–बोलवुं

गवेस् (गवेष्) गवेषवुं–शोधवुं

वि+किर / वि+इर (वि+किर्) वेरवुं

वि+प+साह (वि+प्र+शास्) [illegible] [illegible]–[illegible] [illegible]

रक्ख् (रक्ष्) रक्खवुं–[illegible]

हण् (हन्) हणवुं

कुट्ट् (कुट्) कूटवुं

पास् / पेच्छ (दृश्) [illegible]

सं+जल् (सं+ज्वल्) बळवुं–क्रोध करवो

उव+आस् (उप+आस्) उपासना करवी

गच्छ् (गच्छ्) जवुं–चालवुं

भा (भी) बीवुं

जिण (जि) जीतवुं–जय मेळववो

[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

नि+[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible] [illegible]

वस् (वस्) वसवुं–रहेवुं

प+साह् (प्र+[illegible]) [illegible] [illegible]–[illegible] [illegible]

वि+[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible]–[illegible] [illegible]–[illegible]

आ+लोड् (आ+[illegible]) [illegible]

१ उपर्युक्त बधा प्रत्ययो लागतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' विकल्पे थाय छे. जेमकेः—

हस् + उ – हस् + अ + उ = हसेउ, हसउ
हस् + मो – हस् + अ + मो = हसेमो, हसमो

['अ' विकरण माटे जुओ पाठ १ नि० १]

२ प्रथम पुरुषना प्रत्ययो लागतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'आ' तथा 'इ' विकल्पे थाय छे. जेमके—

हस् + मु – हस् + अ + मु = हसामु, हसिमु, हसमु

३ अकारांत अंगने लागता 'हि' प्रत्ययनो प्रायः[1]लोप थाय छे अने क्यांय ए अंगना अंत्य 'अ'नो 'आ' पण थाय छे.

हस् + अ + हि=हस. गच्छ् + अ + हि=गच्छाहि

४ कोइक ज प्रयोगमां त्रीजा पुरुषनो (एकवचननो) 'उ' के 'तु' प्रत्यय लागतां पूर्वना 'अ' नो 'आ' पण थाय छे.

जेमकेः—सुण् + अ + उ = सुणाउ, सुणउ, सुणेउ

रूपाख्यान

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	हसमु, हसामु हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो हसिमो, हसेमो
२ पु०	हससु, हसेसु, हसेज्जसु हसाहि, हसहि, हसेज्जहि, हसेज्जे, हस	हसह, हसेह
३ पु०	हसउ, हसेउ हसतु, हसेतु	हसंतु, हसेंतु, हसितु

सर्व पुरुष | हसेज्ज
सर्व वचन | हसेज्जा

[ज्ज, ज्जा माटे जुओ पाठ ३]

[1] हे० प्रा० व्या० ८।३।१७५।

हो

१२ मा पाठमां (जुओ पानुं १०६) बताव्या प्रमाणे प्रत्येक [illegible] धातुनां विकरणवाळां अने विकरण विनानां रूपो बनाववां [illegible] [illegible] विध्यर्थ अने आज्ञार्थनां रूपो [illegible] [illegible] रूपो [illegible] प्रस्तुत विध्यर्थ अने आज्ञार्थनां [illegible]

[illegible]. जेमके :—

हो (विकरण विना)

१ पु० होमु — होमो

होअ (विकरणवाळुं)

१ पु० होअमु — होअमो
होआमु — होआमो
होइमु — होइमो
होएमु — होएमो
— होअह
— होएह.

२ पु० होअसु,
होएसु,
होएज्जसु,
होआहि
होएहि,
होएज्जहि,
होएज्जे
होअ.

पूर्व प्रमाणे 'हो' वगेरे बधा स्वरांत धातुओनां रूपो बनावी विध्यर्थ अने आज्ञार्थनां बधां रूपो लखवानां छे.

सामान्य शब्दो (नरजाति)

आयरिय (आचार्य) आचार्य-धर्मगुरु, विद्यागुरु
पाण (प्राण) प्राण-जीव
पाणि (प्राणिन्) प्राणी
असंजम (असंयम) असंयम
अप्प (आत्मन्) आत्मा-जीव-पोते
खिल्ल (खिल्ल) एक जातिनुं वाद्य
बोरक्क (बदर) बोर

भारय (भारक) भारो
हरिण (हरिण) हरण
दाडिम (दाडिम) दाडम
तिल (तिल) तल
[illegible] ([illegible]) [illegible]
भमर (भ्रमर) [illegible]-भमरो
[illegible] ([illegible]) [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]

नान्यतरजाति

खावडअ (खादक) पापरहित [illegible]

खाणुरय ([illegible]) [illegible]

निसाण (निशान) निशान-[illegible]

विहाण (विभात) पहाटुं-प्रातः काळ-सवार

अंडय (अण्डक) इंडुं

पल्लाण (पर्याण) पलाण

सह ([illegible]) [illegible]

चउम्मुह ([illegible]) [illegible]

सेण ([illegible]) [illegible]

छिद्दय (छिद्रक) छीद्र

मोत्तिअ (मौक्तिक) मोती

अमिअ (अमृत) अमी-अमृत

घय (घृत) घी

विशेषण

लण्ह (श्लक्ष्ण) नानु

पोअ (प्रोत) परोव्युं-परोवेलुं

पत्त (प्राप्त) पहोंच्युं-पहोंच्युं

चउरंस / चउरस्स (चतुरस्र) चोरस

नेहालु (स्नेहालु) नेहाळ-स्नेहाळ -स्नेहवाळो

छायाल / छायालु (छायावत्) छायाळ-छायावाळुं

जडालु (जटाल) जटाळुं-जटावाळुं

रसाल / रसालु (रसाल) रसाळ-रसाळुं

रत्त (रक्त) रातुं-रंगेलुं

ठड्ड (स्तब्ध) ठाठो-ठंडो-स्तब्ध जड-थयो गयेलुं, काठो-कठो [illegible]

तिण्ह (तीक्ष्ण) तीखुं-अणीदार

अहिनव (अभिनव) अवनवुं-नवीन

उच्चिट्ठ (उच्छिष्ट) एंठुं-अजीठुं

नंस ([illegible]) [illegible]-विनाश

अव्यय

णवर फक्त-केवल

णाणा (नाना) अनेक प्रकारनुं

बहिद्धा (बहिर्धा) बहार

तहिं (तत्र) त्यां-तहीं

जहिं (यत्र) ज्यां-जहीं

कहिं (कुत्र) क्यां-कहीं

तुं क्रोधे न हणजे
के पापप्रवृत्तिने न करे
हे मित्र ! मा मने हणने
शोध
मुनि असंजमने वर्जे
तुं कांटामां मा अने दाव-
मने लाव

पोते पोताने शोध, बहार
न भम
तेनां बधां शल्यो बळो
ब्राह्मण ! पोकळानो होम न
कर पण तत्त्वनो होम कर
सर्व भूतोमां प्रेम करो
प्राणीना प्राण न हणो
पोता उपर पलाण राख

सावज्जं वज्जउ मुणी
ण कोवउ आयरियं
न हण पाणिणो पाणे
संनिहिं न कुव्वउ माहणो
संवुडो निद्धुणाउ पावग
रयं
सद्दं गंध फासं च दिव्व-
जलाहि भिक्खू !
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
जेणाहं णाणो दुग्गइं न
गच्छेज्जा
गच्छाहि णं तुमं मित्ता !

पिलेण नाणं न न्हाह पमत्ते
उत्तमट्ठं गवेसउ
पमायं पुरेकडे निहणं
असंजमं पयरं न सेविज्जा
भिक्खू न कमनि सिंहए
चत्तारि पालनं पमाय
पालाण वरणं सव्वं अहिंस्स
तुवं सारिहिज्जा
गोयम ! समइं मा पमायए
रत्ति पंच विगच्छउ सव्वाणं
न पणे नारेणु तुमं निगंठा !

पाठ १६ मो

विध्यर्थ (चालु)

विध्यर्थना ज खास प्रत्ययो आ नीचे प्रमाणे छे:

१ पु०	ज्जामि	ज्जामो
२ पु०	ज्जासि	ज्जाह
	ज्जसि	
३ पु०	ज्जए	ज्ज, ज्जा
	ए	
	एय	
	ज्ज	
	ज्जा	

सर्वपुरुष } ज्जाइ
सर्ववचन }

'ज' के 'ज्जा' आदिवाळा प्रत्ययो लगाडतां पहेलां धातुना अंत्य 'अ'नो 'इ' अने 'ए' थाय छे. जेमके:-

हस्

१ पु०	हसिज्जामि	हसिज्जामो
	हसेज्जामि	हसेज्जामो
२ पु०	हसिज्जासि	हसिज्जाह
	हसेज्जासि	हसेज्जाह
	हसिज्जसि	
	हसेज्जसि	

३ पु०	हसिज्जए	हसिज्ज, हसेज्ज
	हसेज्जए	हसिज्जा, हसेज्जा
	हसेइ	
	हसेए	
	हसिज्ज	
	हसेज्ज	
	हसिज्जा	
	हसेज्जा	

सर्व पुरुष } हसिज्जइ
सर्व वचन } हसेज्जइ

'हो'नुं विकरणवाळुं 'होअ' अंग थाय. तेनां रूपो 'हस' प्रमाणे जाणवां अने ए रीते विकरण लगाडेलां तमाम स्वरांत धातुनां रूपो जाणवां.

विकरण विनानां 'हो'नां रूपो आ प्रमाणेः

१ पु०	होज्जामि	होज्जामो
२ पु०	होज्जासि	होज्जाह
	होज्जसि	
३ पु०	होज्जए	होज्ज
	होइ	होज्जा
	होज्जइ	
	होज्ज	
	होज्जा	

सर्व पुरुष } होज्जा
सर्व वचन } होयज्जइ | (विकरणवाळु)
होज्जइ |

आर्ष प्राकृतमां वपराएलां बीजां केटलांक अनियमित रूपो:

(कुर्यात्) (कुर्याः)	कुज्जा
(निदध्यात्)	निहे
(अभितापयेत्)	अभितावे
(अभिभाषेत)	अभिभासे
(स्यात्)	सिया सिआ
(आच्छिन्द्यात्)	अच्छे
(आभिन्द्यात्)	अब्भे
(हन्यात्)	हणिया

क्रियापद साथे नीचे जणावेला शब्दोनो संबंध होय तो आ पाठमां जणावेला विध्यर्थ प्रत्ययोनो प्रयोग थइ शके छे.

उअ | अव्यय — 'उअ कुज्जा' — 'धारो हुं करे'
अवि | अवि भुंजिज्ज — 'खाय पण'

श्रद्धा के संभावना अर्थना धातुनो प्रयोग:

सद्दह (धातु) — 'सद्दहामि सो पाढं पढिज्ज' — 'श्रद्धा राखुं छुं ते पाठने भणे'

'संभावेमि तुमं न बुज्झिज्जसि' — 'संभावना करुं छुं तुं नहीं बूझे'

'जं' साथे कालवाचक कोइ पण शब्द (काल, वेला, समय, अवसर वगेरे)

'कालो जं भणिज्जामि' — 'समय छे हुं भणुं'
'वेला जं गाएज्जासि' — 'वेळा छे तुं गा'

वळी, ज्यारे एक क्रिया बीजी क्रियानुं कारण होय त्यारे पण आ पाठमां बतावेला विध्यर्थ प्रत्ययो पण वपराय छे:-
'जइ गुरुं उवासेज्ज सत्थन्तं गच्छेज्ज' — 'जो गुरुनी उपासना करे तो शास्त्रनो छेडो पामे'

धातुओ

उव+णी (उप+नी) पासे लई जवुं

पच्च+प्पिण् (प्रत्यर्पण-प्रति+अर्पण) पाछुं सोंपवुं

पडि+नी | **पडि+णी** | (प्रति+नी) पाछुं देवुं-पाछुं देवुं-बदले देवुं

वर् (वृ) वरवुं-स्वीकारवुं-वरदान देवुं

पाव् (पाप्) पामवुं, मेळववुं

तूर् (त्वर्) त्वरा करवी-उतावळ करवी

सं+दिस् (सम्+दिश्) संदेशो आपवो-सूचन करवुं

उव+दंस् (उप+दर्श्) देखाडवुं-पासे जईने बताववुं

अणु+जाण् | **अणु+जाणा** | (अनु+ज्ञा) अनुज्ञा आपवी-संमति आपवी

सं+पड् (सम्+पद्) संपन्न थवुं-पेदा थवुं-नीपजवुं

चिण (चि) चणवुं-एकठुं करवुं

क्रियातिपत्ति

ज्यारे परस्पर संकेतवाळां बे वाक्योनुं एक संयुक्त वाक्य बनेलुं होय अने तेमां आगली बंने क्रियाओ कोई कारणसर नहीं थयेली होवानो अभिप्राय भासतो होय त्यारे क्रियातिपत्तिनो प्रयोग थाय छे. क्रियातिपत्ति एटले क्रियानी अतिपत्ति-असंभवितता. क्रियानी असंभवितताने सूचववा आ क्रियातिपत्तिनो उपयोग थाय छे.

प्रत्ययो

सर्वपुरुष | सर्ववचन | —न्तो, माणो, ज्ज, ज्जा (हे० प्रा० व्या० ८।३।१७९, तथा १८०)

एकवचन	बहुवचन
भण्—भणंतो, भणमाणो	भणंता, भणमाणा
हो— होअंतो, होअमाणो	होअंता, होअमाणा
होंतो, होमाणो	

भण्—भणेज्ज, भणेज्जा

हो— होएज्ज, होएज्जा. होज्ज, होज्जा

[याद्दीः-नारीजातिमां न्ती, न्ता तथा माणी अने माणा प्रत्ययो लगाडवाना छे. आवां नारीजातिनां रूपो तथा क्रियातिपत्तिनो बहुवचनी प्रयोग वांचवामां के जोवामां नथी आव्यो छतां अहीं जे आ बधां रूपो बताव्यां छे ते मात्र कल्पनाथी समजवानां छे.]

मुनि पापने वर्जे
आचार्यने कोपाववा नहि
खेतरमां बी वाव
धर्मना काम माटे त्वरा कर
इच्छुं छुं धर्म माटे धन वापरे
पुत्र भणे तो पंडित थाय.
(क्रियाति०)

श्रद्धा राखुं छुं ते सत्य वचनने बोले
समय छे हुं धन भेगुं करुं
धारुं छुं तुं मारा काम माटे संमति आपे
शिष्यने गुरुनी पासे लई जा
तने दान माटे सूचन करुं

चिरेण ताणं न लभे पसत्थे
वसे गुरुकुले निच्चं
उवसग्गे सहेज्ज
गोयमा ! समयं मा पमायए

बालाणं मरणं असइं भवे
सामण्णे पज्जए मुणी
दीवो होंतो तया अंध-
यारो नस्संतो

न कोवए आयरियं
[illegible]निहिं न कुप्पिज्जा
संबुद्धो निद्धुणे पावगं
मलं

सव्वं गंथं कलहं च विप्प-
जहेज्ज भिक्खू
रावणो सीअं रक्खंतो तथा
रामो न रक्खंतो

पाठ १७ मो

आकारांत, इकारांत, ईकारांत अने ऊकारांत नामो [नारीजाति]

प्राकृतनां आकारांत नामो बे जातनां छे-केटलांक आकारांत नामोनुं मूळ रूप आकारांत होय छे अने नारीजातिने सूचवे तेओ आकारांत करेलां होय छे त्यारे बीजां केटलांक आकारांत नामोनुं मूळ रूप तेवुं आकारांत नथी होतुं पण तेओ बीजा कोई व्याकरणना नियमने लीधे आकारांत करेलां होय छे.

आ नीचे ए बन्ने आकारांत नामोनां रूपो आपेलां छे. जेओनुं मूळथी आकारांत नथी तेमनुं संबोधननुं एकवचन प्रथमा विभक्ति जेवुं ज थाय छे त्यारे जेओ मूळथी आकारांत छे तेमनुं संबोधननुं एकवचन करती वखतना अंत्य 'आ'नो विकल्पे 'ए' बदलातो आवे छे- (हे० प्रा० व्या० ८।३।४१) ए बेउ नामोनां रूपोमां बीजो कशो फेर नथी.

जेमके:—ननान्दृ — नणंदा — हे नणंदा !
अप्सरस् — अच्छरसा — हे अच्छरसा !
सरित् — सरिया — हे सरिया !
सरिआ — हे सरिआ !
वाच् — वाया — हे वाया !

मूळ अकारांत	माल — माला	— हे माले!	हे माला!
	रम — रमा	— हे रमे!	हे रमा!
	कान्त — कान्ता	— हे कांते!	हे कांता!
	देवत — देवता	— हे देवते!	हे देवता!
	मेघ — मेघा	— हे मेहे!	हे मेहा!

रूपाख्यान

माला [मूळ अकारांत]

	एकवचन	बहुवचन
१	माला=माला (माला)	[1]माला+उ=मालाउ माला+ओ=मालाओ [1]माला=माला (मालाः)
२	माला+म=[2]मालं (मालाम्)	माला+उ=मालाउ माला+ओ=मालाओ माला=माला (मालाः)
३	[3]माला+अ=मालाअ (मालया) माला+इ=मालाइ माला+ए=मालाए	माला+हि=मालाहि (मालाभिः) माला+हिं=मालाहिं माला+हिँ=मालाहिँ
४	माला+अ=मालाअ माला+इ=मालाइ माला+ए=मालाए (मालायै)	माला+ण=मालाण (मालानाम्) माला+णं=मालाणं
५	[4]माला+अ=मालाअ (मालायाः)	

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।५। तथा ८।१।२४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९। ४. पंचमी विभक्तिना अकारांत नामने लागता 'उ', 'ओ', 'हि' अने 'त्तो' प्रत्ययो पण अहीं आकारांत स्त्रीलिंग नामोने लागे छे: जेमके—मालाउ, मालाओ, मालाहि, मालत्तो.

माला+इ=मालाइ
माला+ए=मालाए
माला+हिंतो=मालाहिंतो

माला+हिंतो=मालाहिंतो (मालाभ्यः)
माला+सुंतो=मालासुंतो

६ माला+अ=मालाअ
माला+इ=मालाइ (मालायाः)
माला+ए=मालाए

माला+ण=मालाण (मालानाम्)
माला+णं=मालाणं

७ माला+अ=मालाअ (मालायाम्)
माला+इ=मालाइ
माला+ए=मालाए

माला+सु=मालासु (मालासु)
माला+सुं=मालासुं

सं० माला=माले! (हे माले!)
माला=माला!

माला+उ=मालाउ
माला+ओ=मालाओ
माला=माला (मालाः)

वाया (वाक्) [मूळ अकारांत नहि]

'વાયા'નાં બધાં રૂપો 'માલા' જેવાં જ થવાનાં છે. વિશેષમાં માત્ર સંબોધનમાં છે: 'હે વાયા!' એ એક જ રૂપ થાય, પણ 'વાએ!' 'વાયા!' એવાં બે રૂપો ન થાય.

इकारांत

बुद्धि

१ बुद्धी (बुद्धिः)

बुद्धि+उ=बुद्धीउ[1]
बुद्धि+ओ=बुद्धीओ (बुद्धयः)
बुद्धि=बुद्धी

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७

२ बुद्धिं[1] (बुद्धिम्)

²बुद्धि+उ=बुद्धीउ
बुद्धि+ओ=बुद्धीओ
बुद्धि=बुद्धी (बुद्धीः)

३ बुद्धीअ[3]
बुद्धि+आ=बुद्धीआ (बुद्ध्या)
बुद्धीइ
बुद्धीए

बुद्धीहि
बुद्धीहिं (बुद्धिभिः)
बुद्धीहिँ

४ बुद्धीअ
बुद्धीआ
बुद्धीइ (बुद्ध्यै)
बुद्धीए (बुद्धये)

बुद्धीण (बुद्धीनाम्)
बुद्धीणं

५ ⁴बुद्धीअ
बुद्धीआ (बुद्ध्याः)
बुद्धीइ
बुद्धीए (बुद्धेः)
बुद्धीहिंतो

बुद्धीहिंतो (बुद्धिभ्यः)
बुद्धीसुंतो

६ बुद्धीअ
बुद्धीआ (बुद्ध्याः)
बुद्धीइ
बुद्धीए (बुद्धेः)

बुद्धीण (बुद्धीनाम्)
बुद्धीणं

७ बुद्धीअ
बुद्धीआ (बुद्ध्याम्,
बुद्धीइ बुद्धौ)
बुद्धीए

बुद्धीसु (बुद्धिषु)
बुद्धीसुं

सं० बुद्धी, बुद्धि (बुद्धे !)

बुद्धीउ, बुद्धीओ, बुद्धी (बुद्धयः)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१९। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९। ४. जुओ पृ० २१६ टिप्पण ८—बुद्धीओ, बुद्धिन्तो.

ईकारांत

नदी

१ नदी (नदी)	नदी+आ=नदीआ[१]
	नदीउ[२]
	नदीओ (नद्यः)
	नदी
२ नदिं[१] (नदीम्)	नदीआ
	नदीउ
	नदीओ
	नदी (नदीः)
३ नदीअ[४]	नदीहि (नदीभिः)
नदीआ (नद्या)	नदीहिं
नदीइ	नदीहिँ
नदीए	
४ नदीअ	नदीण (नदीनाम्)
नदीआ	नदीणं
नदीइ	
नदीए (नद्यै)	
५ नदीअ[५]	
नदीआ (नद्याः)	
नदीइ	
नदीए	
नदीहिंतो	नदीहिंतो (नदीभ्यः)
	नदीसुंतो

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२८। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।३६। तथा ८।३।५। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९।
५. जुओ पृ० १९६ टिप्पण–४ नदीउ, नदीओ नदिम्.

६ नदीअ	नदीण (नदीनाम्)
नदीआ (नद्याः)	नदीणं
नदीइ	
नदीए	
७ नदीअ	नदीसु (नदीषु)
नदीआ (नद्याम्)	नदीसुं
नदीइ	
नदीए	
सं० [1]नदि ! (नदि !)	नदीआ
	नदीउ
	नदीओ (नद्यः)
	नदी

उकारांत

धेणु (धेनु)

१ धेणू (धेनुः)	धेणूउ[2]
	धेणूओ (धेनवः)
	धेणू
२ धेणुं[1] (धेनुम्)	धेणूउ[2]
	धेणूओ
	धेणू (धेनूः)
३ धेणूअ[4]	धेणूहि
धेणूआ (धेन्वा)	धेणूहिं (धेनुभिः)
धेणूइ	धेणूहिँ
धेणूए	

1. हे० प्रा० व्या० ८।३।१२४। 2. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७।
3. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६। 4. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९।

	एकवचन	बहुवचन
४	धेणूअ	धेणूण (धेनूनाम्)
	धेणूआ	धेणूणं
	धेणूइ	
	धेणूए (धेनवै, धेन्वै)	
५	धेणूअ	
	धेणूआ (धेन्वाः, धेनोः)	
	धेणूइ	
	धेणूए	
	[1]धेणुउ	
	धेणूओ	
	धेणुत्तो	
	धेणूहिंतो	धेणूहिंतो (धेनुभ्यः)
		धेणूसुंतो
६	धेणूअ	
	धेणूआ (धेन्वाः, धेनोः)	धेणूण (धेनूनाम्)
	धेणूइ	धेणूणं
	धेणूए	
७	धेणूअ	धेणूसु (धेनुषु)
	धेणूआ (धेन्वाम्, धेनौ)	धेणूसुं
	धेणूइ	
	धेणूए	
सं०	धेणु,[2] धेणू (धेनो !)	धेणूउ, धेणूओ (धेनवः)
		धेणू

ऊकारांत

वहू (वधू)

	एकवचन	बहुवचन
१	वहू (वधूः) (हे० प्रा० व्या० ८।१।४१)	वहूउ, वहूओ (वध्वः) (हे० प्रा० व्या० ८।३।२७)
		वहू

---

१. तुलना पृ० ११६ टि० १. २. हे० प्रा० व्या० ८।३।२८।

२	वहुं (वधूम्) (हि० प्रा० व्या० ८।३।३६। तथा ५)	वहूउ, वहूओ वहू (हि० प्रा० व्या० ८।३।५।) (वधूः)
३	वहूअ (हि० प्रा० व्या० ८।३।२९।) वहूआ (वध्वा) वहूइ वहूए	वहूहि (वधूभिः) वहूहिं वहूहिँ
४	वहूअ वहूआ वहूइ वहूए (वध्वै)	वहूण (वधूनाम्) वहूणं
५	वहूअ वहूआ (वध्वाः) वहूइ वहूए वहूउ[1] वहूओ वहूत्तो वहूहिंतो	वहूहिंतो (वधूभ्यः) वहूसुंतो
६	वहूअ वहूआ (वध्वाः) वहूइ वहूए	वहूण (वधूनाम्) वहूणं
७	वहूअ वहूआ (वध्वाम्) वहूइ वहूए	वहूसु (वधूषु) वहूसुं
सं०	वहु (वधु!) (हि० प्रा० व्या० ८।३।४२।)	वहूओ, वहूउ (वध्वः) वहू

१. जुओ पृ० २१६ टि० ४

नामनुं अंग अने प्रत्ययनो अंश ए बंने जुदा पाडीने ज बता-वेला छे अने नामे ए उपरथी व्याकरण वगर ठीक करी पण जुदां जुदां बतावेलां छे.

आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत अने ऊकारांत—नामोनां रूपो करवां सहेल पडशे ते, जे रीत छे ते नहि जेवी छे. वळी मूळ अंग अने प्रत्ययोनो विभाग—ए पद्धति पण ज रचेले जुदी ए रीते प्रामाणिक समजावेली छे.

दीर्घ ईकारांत नामोने प्रथमा अने द्वितीयाना बहुवचनमां एक 'आ' प्रत्यय लागे छे तथा आकारांत सिवाय बाकी बधां नामोने तृतीया-थी मांडी सप्तमीना एकवचनमां पण 'आ' प्रत्यय वधारे लागे छे—आटलो ज आ फेरफार बतावी आपे छे.

ए चारे प्रकारनां नामोनां रूपो करवां सहेल पडशे छे तेमां संस्कृत भाषानी सरळताभरी व्यवस्था अने विशेष स्पष्ट करवा ते दरेकनां रूपो बतावेलां छे तथा ए रूपो द्वारा भाषानी प्रचलित करेली एक-धारापणीनुं पण भान थाय एम छे.

१ 'ओ' अने 'नु' प्रत्यय सिवायना बीजा बधा प्रत्ययो लागतां पूर्वनो स्वर दीर्घ थाय छे: 'बुद्धीओ', 'धेनूओ'.

२ 'नु' प्रत्यय लागतां पूर्वनो स्वर ह्रस्व थाय छे: 'नदि', 'वहु'.

३ ज्यां मूळ अंग ज ह्रस्वांत छे त्यां तेने दीर्घ करीने वापरवानुं छे: 'बुद्धी', 'धेनू'.

४ इकारांत उकारांतनुं संबोधननुं एकवचन विकल्पे दीर्घ थाय छे. 'बुद्धि !' 'बुद्धी !', 'धेनु !' 'धेनू'.

५ ईकारांत ऊकारांतनुं संबोधननुं एकवचन ह्रस्व थाय छे: 'नदि !' 'वहु !'

शब्दो

सद्धा (श्रद्धा) श्रद्धा
मेहा (मेधा) मेधा-बुद्धि
पण्णा (प्रज्ञा) प्रज्ञा
सण्णा (संज्ञा) संज्ञा-नाम-समज
संझा (संध्या) सांज
वंझा (वन्ध्या) वांझ-वांझणी
भुक्खा (बुभुक्षा) भूख
तिण्हा (तृष्णा) तरस-आसक्ति
तण्हा (तृष्णा) तृष्णा
सुण्हा } (स्नुषा) स्नुषा-पुत्रवधू
ण्हुसा }
पुच्छा (पृच्छा) प्रश्न
चिंता (चिन्ता) चिंता
आणा (आज्ञा) आज्ञा-आण
[1]छुहा (क्षुधा) भूख
[2]कउहा (ककुभ्) दिशा
निसा (निशा) निशा-रात्री
[3]दिसा (दिशा) दिशा-दस
नावा (नौका) नाव
गउआ (गो) गाय

सलाया (शलाका) सळी
मट्टिआ (मृत्तिका) माटी
मक्खिआ } (मक्षिका) माखी-मांखी
मच्छिआ }
कलिआ (कलिका) कळी
विज्जुला (विद्युत्) वीजळी
जिब्भा | (जिह्वा) जीभ
जीहा |
[4]अच्छरसा (अप्सरस्) अप्सरा
[5]आसिसा (आशिष्) आशिष-आशीर्वाद
[6]धूआ (दुहिता) दीकरी
[7]णणंदा (ननान्दृ) नणंद
[8]पिउच्छा | (पितृष्वसा) पितानी बहेन-फई
पिउसिआ |
[8]माउसिआ | (मातृष्वसा) माशी-मातानी बहेन
माउच्छा |
[9]वाहा (बाहु) बाहु-हाथ-बांह
[10]माआ (मातृ) माता-जननी
[10]माअरा | (मातृ) देवी, माता
मायरा |

1. हे० प्रा० व्या० ८।१।१७। 2. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१। 3. हे० प्रा० व्या० ८।१।३१। 4. हे० प्रा० व्या० ८।१।२०। 5. हे० प्रा० व्या० ८।१।३५। 6. हे० प्रा० व्या० ८।२।१२६। 7. हे० प्रा० व्या० ८।३।३५। 8. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४२। 9. हे० प्रा० व्या० ८।१।३६। 10. हे० प्रा० व्या० ८।३।४६।

छमा (क्ष्मा) क्षमा-क्षेम

[1]वाया (वाच्) वाचा-वाणी

[1]सरिआ | सरिया (सरित्) सरिता-नदी

[1]पाडिवआ | पाडिवया (प्रतिपद्) पडवो तिथि

[2]गिरा (गिर्) गिरा-वाणी

[2]पुरा (पुर्) पुरी-नगर-नगरी

संपया | संपआ (संपद्) संपदा-दौलत

चंदिआ | चंदिका (चन्द्रिका) चांदनी, चांदनी-चन्द्र

चंदिमा (चन्द्रिका) चन्द्रमानी चांदनी

रच्छा (रथ्या) रथ जाय तेवी पहोळी शेरी-शेरी

[प्राकृतः 'अच्छरसा'थी मांडीने 'रच्छा' सुधीना शब्दो मूळ अकारांत नथी, पण आकारांत बनेला छे.]

कुच्छि (कुक्षि) कुक्षि-कोख

रासि (राशि) राश

माइ (मातृ) मा-माता

भूमि (भूमि) भूमि-भों

जुवइ (युवति) युवति

धूलि (धूलि) धूळ

रइ (रति) प्रेम-राग

मइ (मति) मति

दिहि | धिइ (धृति) धैर्य

सिप्पि (शुक्ति) छीप

सत्ति (शक्ति) शक्ति

रत्ति (रात्रि) रात्रि-रात

दित्ति (दीप्ति) दीप्ति-तेज

पंति (पङ्क्ति) पंक्ति-हार-ओळ

थुइ (स्तुति) स्तुति-स्तोत्र

कित्ति (कीर्ति) कीर्ति-कीरत

सिद्धि (सिद्धि) सिद्धि

रिद्धि (ऋद्धि) ऋद्धि-ऋध

संति (शान्ति) शांति

कंति (कान्ति) कांति

खंति (क्षान्ति) क्षमा

कंति (कान्ति) कांति-तेज-दीप्ति

गउ (गो) गाय-गाइ

वत्थु (वस्तु) [illegible]

विज्जु (विद्युत्) वीजळी

उज्जु (ऋजु) सरळ

साहु (साधु) साधु

पडु (पटु) चतुर-हुशियार

चंचु (चञ्चु) चांच

गाई (गो) गाय

दासी (दासी) दासी

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५. २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६.

कयली (कदली) केळ
नारी (नारी) नारी-नार
रयणी (रजनी) रजनी-रैण
राई (रात्री) रात
माई (माता, माई-मातानारी माता
कुमारी (कुमारी) कुमारी
तरुणी (तरुणी) तरुण स्त्री
समणी (श्रमणी) साध्वी
साहुवी / साहुणी | (साध्वी) ,,
नणंदा (ननान्दा) [illegible]-स्त्री
इत्थी / थी | (स्त्री)-स्त्री-तिरिया

बहिणी (भगिनी) बहेन
वाराणसी / वाणारसी | (वाराणसी) [illegible] -बनारस शहेर
पिच्छी (पृथ्वी) पृथ्वी
पुहवी (पृथ्वी) ,,
साडी (शाटी) साडी
मित्ती (मैत्री) मित्रपणुं-मैत्री [illegible]
अज्जू (आर्या) सासू-[illegible]
कणेरू (करेणू) हाथणी
ककंधू (कर्कन्धू) बोरडी
अलाऊ / लाऊ | (अलाबू) तुंबडी- [illegible]
वहू (वधू) वहु

जेनी जीभ ऊपर अमृत छे
अने नारी जीभ उपर
झेर छे

तेनो साधु मने आशिष
आपशे के तारु कल्याण
थाओ

मात अने हाथणी फूलनी
माळा वडे शोभती

कीर्ति अने कायनी निर्ति
माटे प्रयत्न करो

जेने विवेकनी समज नथी
ते पशु छे

हे बेन! तारी नणंदनी
मांगने मळी न शके
तेम तुं बोल.

आजे पडयो छे तेथी [illegible]
नहि मळे

पुत्र अने तो पंडित थाय.
[[illegible]]

आकाशमां वीजळी झबकी
[illegible]

अच्चेइ कालो तूरंति राईओ
परेहिं चरं
हे पुत्ता! अहंव देवस्स
पडिक्कामि नहिय पउणो
पडिक्कामि
सामाइअं मए अयरदं
दीवो होंतो तया अंधयारो
नस्संतो
पच्च, देहि मे संदेसं, मा
कयाइ
गच्छाह णं तुब्भे देवाणुप्पिया!
आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं
समणो निद्दाइं न कुव्विज्जा
संतिं सेविज्ज पंडिए
मिअं कालेण भक्खए
तुम्हे नच्चंतो तया अम्हे
गच्छंताणा
नरो नस्स मा जाहि
उट्ठेह, वयामो
अहासुहं देवाणुप्पिया! मा
पडिबंधं करेह
पयाणं सुहमेव उवणेहि
खमंतु णं देवाणुप्पिया!
जं अवराहं कडं

पाठ १८ मो

प्रेरकभेद

प्रेरक प्रत्ययो

अ
ए | (अत्) (हे॰ प्रा॰ व्या॰ ८।३।१४९)

आव
आवे | (आपन्)

मूळ धातुने 'अ' 'ए' 'आव' अने 'आवे' प्रत्यय लगाडवाथी तेनु प्रेरक रूप बने छे:

कर् + अ = कार | कर् + आव = करAव
कर् + ए = कारे | कर् + आवे = करावे

१ मूळ धातुना उपांत्यमां रहेला 'इ'नो प्रायः 'ए' थाय छे अने 'उ'नो प्रायः 'ओ' थाय छेः (हे० प्रा० व्या० ८।४।२३७)

विस् + वेस् – वेसइ, वेसेइ, वेसावइ, वेसावेइ,
दुह् + दोह् – दोहइ, दोहेइ, दोहावइ, दोहावेइ.

२ उपांत्यमां दीर्घस्वरवाळा धातुमात्रने 'अवि' प्रत्यय पण वधारे लागे छेः (हे० प्रा० व्या० ८।३।१५०)

चूस + अ – चूसइ, चूसेइ
चूसावइ, चूसावेइ
चूसाविइ

३ 'अ' अने 'ए' प्रत्यय लागतां धातुना उपांत्य 'अ'नो 'आ' थाय छेः (हे० प्रा० व्या० ८।३।१५३)

खम् — खाम — खामइ
खम् — खामे — खामेइ

४ एकमात्र 'भम' धातुनुं प्रेरक अंग 'भमाड'१ (भम्+आड) पण थाय छेः (हे० प्रा० व्या० ८।३।१५१)

भम् + अ – भामइ. भम् + ए – भामेइ.
भम् + आव – भमावइ. भम् + आवे – भमावेइ.
भम् + अड – भमाडइ, भमाडेइ.

५ आर्षप्राकृतमां कोई कोई प्रयोगोमां प्रेरणासूचक 'अवे' प्रत्यय पण

---

१. गुजराती भाषामां पण 'आड' प्रत्ययवाळां प्रेरक धातुओनो प्रचार कांई ओछो नथीः चाटवुं–चटाडवुं, ऊंघवुं–ऊंघाडवुं, जागवुं–जगाडवुं, जीववुं–जीवाडवुं, जमवुं–जमाडवुं, वगेरे.

लागे छे अने आ 'अवे' प्रत्यय लागतां धातुना उपांत्य 'अ'नो 'आ' थाय छे: कर् + अवे = कारवे – (कारय) –
कारवेइ – (कारयति)

उक्त रीते धातुमात्रना प्रेरक अंगो साधी शकाय छे अने ते रीते साधेलां प्रेरक अंगोने ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेमनां दरेक प्रकारनां रूपाख्यानो तैयार थाय छे. ए रूपाख्यानो साधवानी बधी प्रक्रिया आगला पाठोमां आवी गई छे तेथी उदाहरणरूपे अहीं एक एक रूप आपवामां आवे छे:

रूप

प्रेरक अंग

वर्तमानकाळ

	एकवचन	बहुवचन
खाम —	खाममि,	खाममो, खाममु
	खामामि	खामिमो,
	खामेमि	खामामो
		खामेमो
खामे —	खामेमि	
खमाव —	खमावमि, खमावामि	खमावमो, खमावामो
	खमावेमि	खमाविमो, खमावेमो
		इत्यादि

सर्वपुरुष सर्ववचन	खामेज्ज, खामेज्जा
	खमावेज्ज, खमावेज्जा

भूतकाळ

खामसी, खामही, खामहीअ, खामंसु, खामिंसु, खामित्थ
खामेसी, खामेही, खामेहीअ,
खमावसी, खमावही, खमावहीअ, खमावंसु, खमाविंसु, खमावित्थ
खमावेसी, खमावेही, खमावेहीअ

(आ बधां रूपो एकवचन अने बहुवचन बंनेमां त्रणे पुरुषमां वपराय छे.)

भविष्यकाल एकव०

खाम—	खामिस्सं, खामेस्सं खामिस्सामि, खामेस्सामि खामिहामि, खामेहामि
१. खामे—	खामेस्सं, खामेस्सामि, खामेहामि, खामेहिमि
खमाव—	खमाविस्सं, खमावेस्सं. खमाविस्सामि, खमावेस्सामि खमाविहामि, खमावेहामि खमाविहिमि, खमावेहिमि
खमावे—	खमावेस्सं, खमावेस्सामि खमावेहामि, खमावेहिमि

खाम—	खामेज्ज, खामेज्जा	सर्वपुरुष
खमाव—	खमावेज्ज, खमावेज्जा	सर्ववचन

आज्ञार्थ

खाम—	खाममु, खामामु, खामिमु, खामेमु
खामे—	खामेमु, खामेहि, खामे
खमाव—	खमावउ, खमावतु
खमावे—	खमावेउ, खमावेतु

विध्यर्थ

खाम—	खामिज्जामि, खामेज्जामि
खामे—	खामेज्जन्ति, खामिज्जन्ति
खमाव—	खमाविज्जइ, खमावेज्जइ
खमावे—	खमावेज्जइ, खमाविज्जइ

खाम—	खामिज्जइ, खामेज्जइ	सर्वपुरुष सर्ववचन

क्रियातिपत्ति

खाम— खामंतो, खामेंतो, खामितो।
खाममाणो, खामेमाणो

खामि— खामेंतो, खामितो, खामेमाणो

खमाव— खमावंतो, खमावेंतो, खमावितो
खमावमाणो, खमावेमाणो

खमावि— खमावेंतो, खमावितो, खमावेमाणो

आ प्रमाणे प्रत्येक प्रेरक अंगने बधा काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी तेमनां रूपो साधी लेवानां छे.

प्रेरक, सन्नन्त अने बीजी जातनां प्रेरक रूपोनो [illegible] ज्यारे पण प्रेरक अंगने ज ने ते सन्नन्तादि बने [illegible] प्रत्ययो जोडी रूपो बनाववानां छे [illegible] प्रयोगोनी [illegible] पाठोमां आवनारी छे.

धातु

कील (क्रीड) क्रीडा करवी-
रमत रमवी
छोल्ल-छोलवुं
ताव (तापय) तावबुं-तपावबुं
झाम-बाळवुं
किण (क्रीणा) खरीदवुं-वेचातुं
लेवुं
आ+ढा (आ+दृ) आदर करवो
प+न्नव् (प्र+ज्ञापय) जणाववुं
सं+घ (सं+ख्या) कहेवुं
पच्चर् (प्र+उत्+चर्-प्रोच्चर)
कहेवुं
वच्चर् (वि+उत्+चर-व्युच्चर) ,,
चव् (वच्) ,,
जंप् (जल्प) ,,
पिसुण (पिशुनय) कहेवु, चाडी करवी
मुण (मन्) जाणवुं
पिज्ज् (पीय पीवुं
घ् - ढंकवुं
अब्भुत्त (अभ्यञ्ज) अघोळवुं-
आभडवुं-नहावुं
उ+ट्ठ (उत्+स्था) ऊठवुं
छाय } (छाद्) छावुं-ढांकवुं,
छाअ } चांदवुं
मेल्लव् (मेलय) मेळववुं-मेळववुं
-एकमेक करवुं

दक्खव् (दृश्) दाखववुं-देखा-
डवुं-कही बताववुं
प+णाम् (प्र+णाम) आपवुं-
सेवामां रजु करवुं
ओ+ग्गाल् (उद्+गार) ओगाळवुं
आ+रोव् (आ+रोप) आरोपवुं
भर् } (स्मर्) स्मरण करवुं
भल् }
चय् (शक्) शकवुं
जीह (जिह्री) लाजवुं
अण्ह् (अश्ना) अशन करवुं-
जमवुं-मागवुं
आ+ढव् (आ+रभ्) आरभवुं
शरू करवुं
चुक्क् (च्युतक) चूकवुं-भ्रष्ट थवुं
पुलोअ } (प्र+लोक्) प्रलो-
पुलअ } कवुं-जोवुं
पुलआअ (पुलकाय) पुलकित
थवुं-उल्लसवुं
वलग्ग (वि+लग्न) वळगवुं-नडवुं
प+च्चाल् (प्र+क्षाल्) पखाळवुं
-धोवुं
स्पिह (स्पृह्) स्पृहा करवी
प+ट्ठव् (प्र+स्थाप्) पाठववुं
वि+ण्णव् (वि+ज्ञप्) वीनववुं
अल्लिव् - आपवुं

ओग्गाल्ल (उद्+गाल) [illegible] करवुं

वग्गोल्ल (वि+उद्+गार–व्युद्गार) वागोळवुं

परि+आल्ल (परि+वार) परिवृत करवुं-वींटवुं

पयल्ल (प्र+सृ) फेलवुं

णी+हर (निर्+सृ) नीकळवुं नीसरवुं

समार (सम्+आ+रच) समारवुं

मह | (पूर) पूरवुं–[illegible]
खड | [illegible]

गड (घट) घडवुं

झम्पा (झम्प) [illegible]

तुवर (त्वर) त्वरा करवी

पेल्ल (प्र+ईर) [illegible]

चोप्पड – चोपडवुं

अहि+[illegible] | (अभि+[illegible]) [illegible]-
अहि+[illegible] | [illegible]–[illegible] करवी

ल्हस (स्रंस) सरकवुं

नि+ज्झाअ | (नि+ध्याय) नीरख-
नि+ज्झाअ | वुं–जोवुं

वि+[illegible] (वि+[illegible]) [illegible]वुं–
[illegible]वुं

सामान्य शब्दो [नामानि]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–
[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]
[illegible]

[illegible] | ([illegible]) [illegible]
[illegible] |

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

[illegible] | ([illegible]) [illegible]–
[illegible] | [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]
[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

पाउस ([illegible]) [illegible]–[illegible]
[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–
[illegible]

[illegible] | ([illegible]) [illegible]–
[illegible] | [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]–[illegible]

जामाउअ (जामातृक) जमाइ
मग्गु (मद्गु) एक प्रकारनी माछली
कंद (स्कन्द) स्कन्द-गणपति
हरिअंद (हरिश्चन्द्र) हरिश्चंद्र राजा

(नान्यतरजाति)

दुद्ध (दुग्ध) दूध
सित्थ (सिक्थ) सीथ-एक कण मात्र
आमलय (आमलक) आमलुं-आंवलुं
बिंबय (बिम्बक) बिंब-प्रतिबिंब-बींबुं
कुंडलय (कुण्डलक) कुंडळ-कुंडाळुं
उप्पल (उत्पल) उत्पल-कमळ
समाण (श्मशान) मसाण
अहिन्नाण (अभिज्ञान) एंधाण
चम्म (चर्मन्) चाम-चामडुं
पुट्ठय (पृष्ठक)

[नारीजाति]

गोट्ठी (गोष्ठी) गोठ-गोठडी
विट्ठि / वेट्ठि (विष्टि) वेठ
धत्ती (धात्री) धात्री
किवा (कृपा) कृपा
घिणा (घृणा) घिण-घृणा
सामा (श्यामा) युवति-स्त्री
गोरी (गौरी) गौरी-पार्वती, गौरी स्त्री
रेखा / रेहा / लेहा (रेखा) रेखा-लीट-लीटो
किरिया (क्रिया) क्रिया-विधि-विधान
किसरा (कृसरा) खीचडी
समिद्धि (समृद्धि) समृद्धि

विशेषण

मुत्त (मुक्त) मुक्त-छूटुं
सत्त (शक्त) शक्त-शक्तिमान
भुत्त (भुक्त) भुक्त-भोगवेलुं
नग्ग (नग्न) नागुं
सत्त (सक्त) आसक्त
किलिन्न (क्लिन्न) भीनुं-भीनुं-भीनाश
निच्चल (निश्चल) निश्चल

निठुर (निष्ठुर) कठोर

छट्ट (षष्ठ) छठ्ठु

गुप्त (गुप्त) गुप्त-संतेल-गुह्य

लुप्त (लुप्त) लुपेल

मुग्ध (मुग्ध) मुग्ध

पुरुष स्त्रीने सुधारे छे
मावाप बाळकने पंपाळावुं
नोकरो छोकरांने रमाडशे
मुसाफर लाकडाने छोलावत
नो संभाळुं धान
राजाए धीने स्वर्गाद्यावुं
गोवाळो पशुने पाणी
पीवडावे

भाई बहेनने मारवाने नहि
पाडवे छे
माता पुत्रीने माटे नवेलां
मळावशे
हे मारां कार्यों वडे कीर्तिने
फेलावे छे
शेठ नोकरना पगलां वडे
हमसावशे

बेठी नगीरमि गेहे
गोपवधावर
निधां कुमारं [illegible]
महाविहार
शिष्यो गिरगूणं दाणं
[illegible]
स्त्रीओ [illegible] [illegible]
[illegible]
माता पुत्रं [illegible] [illegible]
[illegible]

नर्मदा पुनि [illegible]
नवा पुत्री न [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
गुरु शीलं [illegible]
[illegible] नोकरं [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

पाठ १९ मो

भावे प्रयोग
अने
कर्मणि प्रयोग

प्रत्ययो

ईअ
ईय } (य) (हे० प्रा० व्या० ८।३।१६०)
इज्ज

कोई पण धातुनुं भावप्रधान के कर्मप्रधान अंग बनाववुं होय त्यारे तेने 'ईअ' 'ईय' अथवा 'इज्ज'-ए त्रणमांथी गमे ते एक प्रत्यय लगाडवानो छे.

ए त्रणे प्रत्ययो फक्त वर्तमानकाळ, विध्यर्थ आज्ञार्थ के ह्यस्तन-भूतकाळमां ज वापरी शकाय छे तेथी भविष्यकाळ, क्रियातिपत्ति वगेरे अर्थमां भावेप्रयोग अने कर्मणिप्रयोग, कर्तरिप्रयोगनी जेम समजवानो छे.

भाव एटले क्रिया. जे प्रयोग मुख्यपणे क्रियाने ज बतावे ते भावेप्रयोग.

अकर्मक धातुओनो भावेप्रयोग थाय छे. गूजराती व्याकरणमां रोवुं, जागवुं, सूवुं, ऊंघवुं, लाजवुं वगेरे धातुओ ज अकर्मक तरीके प्रसिद्ध छे. त्यारे अहीं तो जे धातुओ सकर्मक होय छतां प्रयोगमां तेमनुं कर्म न कहेवातुं होय-अध्याहारमां होय तेओ पण अकर्मक गणाय छे. तेथी ज खावुं, पीवुं, जोवुं, वदवुं, करवुं वगेरे सकर्मक

धातुओ पण तेमना कर्मनी अविवक्षानी अपेक्षाए अकर्मक नथी. तेथी
छे. ए बन्ने प्रकारना अकर्मक धातुओनो भावेप्रयोग थाय छे.

कर्ता, क्रिया द्वारा जेने विशेषपणे इच्छे ते कर्म—तेनी मोटी
करी क्रियाओनुं फळ. जे प्रयोग कर्मने ज सूचित करे ते कर्मणिप्रयोग.

भावे अने कर्मणिप्रयोगनां अंगो

भावसूचक अंगो

पीड-पीडीअ
पीडिज्ज
कंप-कंपीअ
कंपिज्ज
फाड-फाडीअ
फाडिज्ज

ण्हा-ण्हाईअ
ण्हाइज्ज
लज्ज-लज्जीअ
लज्जिज्ज
घुट्ट-घुट्टीअ
घुट्टिज्ज

दोल-दोलीअ
दोलिज्ज
हो-होईअ
होइज्ज

कर्मसूचक अंगो

पा-पाईअ
पाइज्ज
दा-दाईअ
दाइज्ज
झा-झाईअ
झाइज्ज
ला-लाईअ
लाइज्ज

पढ-पढीअ
पढिज्ज
कड्ढ-कड्ढीअ
कड्ढिज्ज
गढ-गढीअ
गढिज्ज
गा-गाईअ
गाइज्ज

फाड-फाडीअ
फाडिज्ज
दोल्ल-दोल्लीअ
दोल्लिज्ज

ए रीते धातुओना भावरूपो अने कर्मरूपो करी शकाय [illegible]

छे अने तैयार थएलां अंगने ते ते काळना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी तेमनां रूपो साधी देखाडवानां छे:

वर्तमानकाळ

भावप्रधान

वीहीअइ, वीहिज्जइ (भीयते)
वीह्+ईअ+इ-वीही—अइ,-एइ-अए,-एए,
वीह्+इज्ज+इ-वीहि-ज्जइ,-ज्जेइ,-ज्जए,-ज्जेए

सर्वपुरुष } वीहीएज्ज, वीहीएज्जा
सर्ववचन } वीहिज्जेज्ज, वीहिज्जेज्जा

भावप्रधान प्रयोगोमां भाव-क्रिया-ज मुख्य होय छे. प्रथम के द्वितीय पुरुष एमां संभवतो नथी तेम बे त्रण वा तेथी अधिक संख्या पण संभवी शकती नथी माटे ते द्वारा ते ते पुरुषोनुं वा एकथी अधिक संख्यानुं सूचन थइ शकतुं नथी. साधारण रीते भावेप्रयोग, त्रीजा पुरुषना एकवचनद्वारा व्यवहारमां आवे छे.

कर्मप्रधान

भणीयइ, भणिज्जइ गंथो (भण्यते ग्रन्थः)
भण्+ईअ+इ—भणी-अइ,-एइ-अए, एए
भण्+इज्ज+इ-भणि-ज्जइ, ज्जए, ज्जेए
भणीयंति गंथा (भण्यन्ते ग्रन्थाः)
भणिज्जंति
भण्-ईय+न्ति—भणी-यंति,-यंन्ति,-यंते,-यंते,-यइरे,-येइरे
भण्+इज्ज+न्ति—भणि-ज्जंति, ज्जंन्ति,-ज्जंते,-ज्जेते,ज्जइरे,ज्जेरे

सर्वपुरुष | भणीएज्ज,
सर्ववचन | भणिज्जेज्ज,

पुच्छीयन्ति तुम्हे (पृच्छयन्ते यूयम्)

पुच्छिज्जन्ति

पुच्छ्+ईय+न्ति+पुच्छी-यन्ति,-येन्ति,-यन्ते,-येन्ते

पुच्छ्+इज्ज+न्ति-पुच्छि-ज्जन्ति, ज्जेन्ति,-ज्जेन्ते

पुच्छीयामि

पुच्छिज्जामि अहं (पृच्छये अहम्)

पुच्छ्+ईय+मि— पुच्छी-यमि,-यामि,-येमि

पुच्छ्+इज्ज=मि—पुच्छि-ज्जमि-ज्जामि,-ज्जेमि

सर्वपुरुष	पुच्छीयेज्ज,	पुच्छीयेज्जा
सर्ववचन	पुच्छिज्जेज्ज,	पुच्छिज्जेज्जा

आज्ञार्थ

पुच्छी-यउ,-येउ, पुच्छिज्जउ, ज्जेउ

पुच्छी-यंतु-येतु, पुच्छि-ज्जंतु,-ज्जेतु

विध्यर्थ

पुच्छ्+ईय=पुच्छीयिज्जामि, पुच्छीयिज्जामि

(अहं पृच्छयेय)

पुच्छीयिज्जामो, पुच्छीयिज्जामो

(वयं पृच्छयेमहि)

इतर सूत्रादि

भण्—भणीअसी, भणीअदी, भणीअदि,

भणीअइत्था, भणीअइत्थ.

भणीइंसु, भणीअंसु.
भणिज्जसी, भणिज्जही, भणिज्जहीअ
भणिज्जइत्था, भणिज्जइत्थ, भणिज्जिंसु.
भणिज्जंसु

अद्यतन भूतकाळ

भणीअ, भणित्था, भणित्थ, भणिंसु, भणंसु.

भविष्यकाळ

भणिस्सं, भणेस्सं, भणिस्सामि, भणेस्सामि,
भणिहामि, भणेहामि
भणिहिमि, भणेहिमि

वगेरे बधां रूपो कर्तरि प्रमाणे (जुओ पाठ १२)

क्रियातिपत्ति

भणंतो, भणमाणो, भणेज्ज, भणेज्जा.
भणंती, भणमाणी (नारीजाति)
भणंता, भणमाणा („)

प्रेरक भावेप्रयोग

अने

कर्मणिप्रयोग

१ धातुनुं प्रेरक भावेप्रयोगी के कर्मणिप्रयोगी रूप करवुं होय त्यारे मूळ धातुने प्रेरणासूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय लगाडवो अने 'आवि' प्रत्यय लाग्या पछी तैयार थयेल अंगने भावे अने कर्मणि प्रयोगना सूचक उक्त 'ईअ', 'ईय' अथवा 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त साधनिकाने अनुसारे लगाडवा.

अथवा

* प्रेरणासूचक कोई पण प्रत्यय न लगाडी मात्र मूळ धातुना उपान्त्य 'अ'नो 'आ' करवो अने ए 'आ' वाळा अंगने कृत. ईअ, ईय ने. इज्ज प्रत्यय पूर्व प्रमाणे लगाडवा. ए रीते पण प्रेरक भावेप्रयोगनां अने प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां रूपो बनावी शकाय छे.

[याद: आ सिवाय बीजी कोई रीते प्रेरक भावेप्रयोग के प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां रूपो बनी शकतां नथी.]

अंगना रूपाख्यान—

करावीअइ (कार्यते)

अंग—

कर्+आवि-करावि+ईअ-करावीअ—करावी-अइ,-अए,अंति,
अंते इत्यादि

कर्—कार+ईअ-कारीअ—कारी-अइ,-अए (कार्यते)
कारी-अंति, कारी-अंते (कार्यन्ते)

कर्+आवि-करावि-इज्ज-कराविज्ज—करावि-ज्जइ,-ज्जए
(कार्यते)

कर्-कार-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जइ-ज्जए (कार्यते)
कारि-ज्जंति,-ज्जंते (कार्यन्ते)

ए रीते धातुमात्रनां प्रेरकभावे अने प्रेरककर्मणि अंगो बनावी बधां संख्याओनां रूपो वर्त. काळनिया प्रमाणे जाणी लेवां जोईए.

भविष्यकाळ

कराविहिइ, कराविहिए कराविस्सइ (कारयिष्यते)
(जुओ पाठ १० मो)

कराविहिंति, कराविहिंते (कारयिष्यन्ते)

कराविस्सामि, कराविहामि, कराविस्सं (कारयिष्ये)

कारिस्सते, कारिहिए (कारयिष्यते) इत्यादि

केटलांक अनियमित अंगो अने तेना उदाहरणो

रूपाख्यान

मूळ धातु— भा०क०नुं अंग रूपाख्यान—

दृश्— [1]दीस्- दीसइ (दृश्यते) दीसउ, दीससी
दीसिज्जइ, दीसिज्जउ

वच्—वुच्च-वुच्चइ (उच्यते) वुच्चउ, वुच्चसी. वुच्चिज्जइ,
वुच्चिज्जउ

चिण्— } [2]चिव्व-चिव्वइ(चीयते) प्रे० चिव्वाविइ, चिव्वाविहिइ
} चिम्म-चिम्मइ प्रे०चिम्माविइ, चिम्माविहिइ

[3]हण्—हम्म-हम्मइ (हन्यते) हम्माविइ, हम्माविहिइ

खण्—खम्म-खम्मए (खन्यते) खम्माविइ, खम्माविहिइ

[4]दुह्—दुब्भ-दुब्भते (दुह्यते) दुब्भाविइ, दुब्भाविहिइ

[4]लिह्—लिब्भ-लिब्भए (लिह्यते) लिब्भाविइ, लिब्भाविहिइ

[4]वह्—वुब्भ—वुब्भए (उह्यते) वुब्भाविइ, वुब्भाविहिइ

[4]रुंध्—रुब्भ-रुब्भए (रुध्यते) रुब्भाविइ, रुब्भाविहिइ

[5]दह्—डज्झ-डज्झए (दह्यते) डज्झाविइ, डज्झाविहिइ

[6]बंध्—बज्झ-बज्झए (बध्यते) बज्झाविइ, बज्झाविहिइ

[7]सं+रुध्—संरुज्झ-संरुज्झए (संरुध्यते) संरुज्झाविइ,
संरुज्झाविहिइ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६१। दीस अने वुच्च-आ बे अंगो भाव प्रयोगमां, [illegible], आज्ञार्थ अने [illegible] ज वपराय छे. २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४२-२४३। 'चिण्'नी माफक 'हुण' [illegible] नियम प्रमाणे [illegible]. ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४४। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४५। ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४६। ६. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४७। ७. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४८।

अणु+कम्-अणुक्कम-अणुक्कमण (अनुक्रमणे) अणुक्कमाविद, अणुक्कमाविदि

उव+कम्-उवक्कम-उवक्कमण (उपक्रमणे) उवक्कमाविद, उवक्कमाविदि

१गम्—गमय-गमयण (गमयने) गमयाविद, गमयाविदि

दम्—दमय-दमयने (दमयने) दमयाविद, दमयाविदि

भण्—भण्ण-भण्णने (भणने) भण्णाविद, भण्णाविदि

छुप् | —छुप्प-छुप्पने (छुप्यते-स्पृश्यते) छुप्पाविद, छुप्पाविदि
छुव् |

लप्—लप्प-लप्पण (लप्यते) लप्पाविद लप्पाविदि

लभ्—लब्भ-लब्भण (लभ्यते) लब्भाविद, लब्भाविदि

कथ्—कत्थ-कत्थने (कथ्यते) कत्थाविद, कत्थाविदि

भुंज्—भुज्ज-भुज्जने (भुज्यते) भुज्जाविद, भुज्जाविदि

२हर्—हीर-हीरने (ह्रियते) हीराविद, हीराविदि

तर्—तीर-तीरने (तीर्यते) तीराविद, तीराविदि

कर्—कीर-कीरने (क्रियते) कीराविद, कीराविदि

जर्—जीर-जीरने (जीर्यते) जीराविद, जीराविदि

३सज्ज—विढप्प-विढप्पने (अर्ज्यते) विढप्पाविद, विढप्पाविदि

४जाण्— { णज्ज-णज्जने (ज्ञायते) णज्जाविद, णज्जाविदि
{ णव्व-णव्वने णव्वाविद, णव्वाविदि

५अहि+आ+रुह्-आरुह-आरुहने (अध्यारुह्यते) आरुह्याविद, आरुह्याविदि

६आर—[illegible] चिप्पाविद, चिप्पाविदि

[1]छिव्—छिप्प-छिप्पते (स्पृश्यते) छिप्पाविइ, छिप्पाविहिइ

[2]सिच्—|सिप्प-सिप्पते (सिच्यते) सिप्पाविइ, सिप्पाविहिइ
निह |(स्निह्यते)

[3]आ+रभ्—आढप्प-आढप्पते (आरभ्यते) आढप्पाविइ, आढप्पाविहिइ

[4]जिण्—जिव्व-जिव्वते (जीयते) जिव्वाविइ, जिव्वाविहिइ
सुण्—सुव्व-सुव्वते (श्रूयते) सुव्वाविइ, सुव्वाविहिइ
हुण्—हुव्व-हुव्वते (हूयते) हुव्वाविइ, हुव्वाविहिइ
थुण्—थुव्व-थुव्वते (स्तूयते) थुव्वाविइ, थुव्वाविहिइ
लुण्—लुव्व-लुव्वते (लूयते) लुव्वाविइ, लुव्वाविहिइ
धुण्—धुव्व-धुव्वते (धूयते) धुव्वाविहिइ, धुव्वाविहिइ
पुण्—पुव्व-पुव्वते (पूयते) पुव्वाविइ, पुव्वाविहिइ

स्त्रीलिंगी सर्वादि

'सव्वी' 'सव्वा' 'ती' 'ता' 'जी' 'जा' 'की' 'का' 'इमी' 'इमा' 'एई' 'एआ' अने 'अमु' वगेरे स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोनां रूपो 'माला' 'नदी अने 'धेणु' नी जेवां योजी लेवानां छे.

विशेषता आ प्रमाणे छे :

ती, ता | (तत् नुं स्त्री० ता)
णी, णा |

१	सा (सा)	तीआ, तीउ, तीओ, ती ताउ, ताओ, ता (ताः)
२	तं (ताम्)	तीआ, तीउ, तीओ, ती ताउ, ताओ, ता (ताः)
	णं	
३	तीअ, तीआ,[5] तीइ, तीए ताअ, ताइ, ताए (तया)	तीहि, तीहिं, तीहिँ ताहि, ताहिं, ताहिँ

---

१. है० प्रा० व्या० ८।४।२५७ २. है० प्रा० व्या० ८।४।२५५
३. है० प्रा० व्या० ८।४।२५४ ४. है० प्रा० व्या० ८।४।२४२
५. है० प्रा० व्या० ८।३।२९

४ अने ६ — से[1] | सिं[2]
ताअ, तिस्सा, तीसे (तस्यै, तस्याः)

तीअ, तीआ, तीइ, तीए — तेसिं (तासाम्)
ताअ, ताइ, ताए — ताण, ताणं (तानाम् ?)

७ — [3]ताहिं (तस्याम्) — तासु, तासुं (तासु)
तीअ, तीआ, तीइ, तीए
ताअ ताइ, ताए

'णी' अने 'णा'नां रूपो पण 'नी' अने 'ना' प्रमाणे समजवानां छे.

जी, जा (यद् नुं स्त्री० पा)

१ — जा (या) — जीआ, जीउ, जीओ, जी
जाउ, जाओ, जा (याः)

२ — जं (याम्) — " " " "
" " " "

४ अने ६ — जिस्सा, जीसे (यस्यै, यस्याः) — जाण, जाणं (याभ्यः) (यानाम् !)
जीअ, जीआ, जीइ, जीए
जाअ, जाइ, जाए

७ — [1]जाहिं (यस्याम्) — जासु (यासु)
जीअ, जीआ, जीइ, जीए — जासुं
जाअ, जाइ, जाए

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।६४। २. हे० प्रा० व्या० [illegible]
३. हे० प्रा० व्या० [illegible]

की, का (किम् पुं स्त्री० का)

	एकवचन	बहुवचन
१	का (का)	कीआ, कीउ, कीओ, की काउ, काओ, का (काः)
३	कं (काम्)	,, ,, ,, ,,
		,, ,, ,, ,,
४ अने ६	किस्सा, कीसे, कास (कस्यै, कस्याः) कीअ, कीआ, कीइ, कीए काअ, काइ, काए	(कासाम्) काण, काणं (कानाम् ?)
७	काहि (कस्याम्) कीअ, कीआ, कीइ, कीए काअ, काइ, काए (कायाम् !)	कीसु, कीसुं (कासु) कासु, कासुं

इमा, इमी (इदम् पुं स्त्री० इमा)

	एकवचन	बहुवचन
१	इमिआ, इमा, इमी (इयम्)	इमीका, इमीउ, इमीओ इमाउ इमाओ, इमा (इमाः)
३	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए (इमया ? अनया)	इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ इमाहि, इमाहिं इमाहिँ आहि, आहिं, आहिँ (आभिः)
४ अने ६	से[1], इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए (अस्यै, इमायै ?)	सिं[2] (आसाम्) इमीण, इमीणं इमाण, इमाणं (इमानाम् ?)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।६१।६४। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।८१

एआ, एई (एतद् नुं स्त्री० एता)

१ एसा, एस, इणं, इणमो — एईआ, एईउ, एईओ, एई
(एषा) — एआउ, एआओ, एआ (एताः)

४ अने ६ | सेसे — सिं (एतासाम्)
एईअ, एईआ, एईइ, एईए — एईण, एईणं
एआअ, एआइ, एआए — एआण, एआणं
(एतस्यै एतस्याः एतायै !) (एतानाम् !)

[खास: [illegible]]

अमु (अदस्)

१ अह, अमू — अमूउ, अमूओ, अमू
(अमूः)

बाकीनां 'धेनु' वत्.

सामान्य शब्दो

[illegible]

सव्वन्न (सर्वज्ञ) सर्वज्ञ-सर्व जाणनार

देवज्ज (दैवज्ञ) दैवने जाणनार

किलेस (क्लेश) क्लेश-कलेश

पिलोस (प्लोष) शोष-दाह

केवटवडे दरियो तराय छे
पितावडे प्रह्लाद वंधाय छे
काश्यपवडे चंडाल स्प-
र्शाय छे
राजावडे कीर्ति मेळवी
कराय छे

निवेण सत्तुणो जिव्वंति
गोवालेण गउओ दुब्भंते
भारवहेहिं भारो वुब्भए
दायारेण दाणेण पुण्णाइं
लभंते
मुणिणा संजमो वेप्पते

सिलोअ } (श्लोक) श्लोक,
सिलोग } कीर्ति

सिलिम्ह (श्लेष्मन्) श्लेष्म

कासव (काश्यप) कश्यप गोत्र-
नो ऋषि-ऋषभदेव अथवा
महावीर स्वामी

कविल (कपिल) कपिल ऋषि

कपिलवडे तत्त्व कहेवाय छे
ऋषभदेववडे धर्म कहेवायो
सर्वज्ञवडे क्लेशो जिताय छे
तेणीवडे शास्त्रो संभळाय छे
जेणीवडे चकरो दोराय छे
एणीवडे धर्म जणातो नथी

मालाआरेण जलेण उज्जा-
णाणि सिंचंते
कलिवलेण तणाइं लुणंति
सोयारेहिं सत्थाइं सुणंते
वद्धमाणेण मम घरं पुसंते
वालेण गामो गम्मइ
वालेहिं हसिज्जइ

पाठ २० मो

व्यंजनांत शब्दो

प्राकृतमां व्याकरणने प्रसंगे थोड़ा शब्द व्यंजनांत मळी आवतो नथी एटली पूर्वे कह्यां छे के पूर्वोक्त व्यंजन शब्दनी पेठे समजवाना छे.

'अत्' अने 'अन्' छेडावाळा नामोना रूपोमां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे:

नामने छेडे आवेला वर्तमान कृदन्तना सूचक 'अत्' प्रत्ययने (हे० प्रा० व्या० ८।३।१८१) स्थाने अन्त तथा मत्वर्थीय 'मत्' प्रत्ययने स्थाने 'मंत' के 'वंत' नो व्यवहार थाय छे: (हे० प्रा० व्या० ८।२।१५९)

अत्—भवत्	-	भवंत
गच्छत्	-	गच्छंत
नयत्	-	नयंत, नेंत
गमिष्यत्	-	गमिस्संत
भविष्यत्	-	भविस्संत
मत्—भगवत्	—	भगवंत
गुणवत्	-	गुणवंत
धनवत्	-	धणवंत
ज्ञानवत्	-	नाणवंत, णाणवंत
नीतिमत्	-	नीइमंत, नीईमंत
श्रीमत्	-	सिरिमंत

'अंत' छेडावाळा ए बधा नामोनां रूपो अकारांत नामनी पेठे समजवानां छे:-

भगवंतो, भगवंते, भगवंतेण इत्यादि 'वीर' प्रमाणे. भवंतो, भवंते, भवंतेण इत्यादि 'वच्छ' प्रमाणे.

'मत्' छेडावाळा नामोनां अनियमित रूपो:

भगवत्

प्र० ए० भगवं (हे० प्रा० व्या० ८।४।२६५।) (भगवान्)
प्र० ब० भगवंतो (भगवन्तः)
तृ० ए० भगवया (भगवता)
ष० ए० भगवओ (भगवतः)
सं० ए० भगवं! भयवं! भयव! (हे भगवन्!)
(हे० प्रा० व्या० ८।४।२६४।)

भवत्

प्र० ए० भव (भवान्)
(हे० प्रा० व्या० ८।४।२६५।)
प्र० ब० भवंतो (भवन्तः)
द्वि० ए० भवंतं (भवन्तम्)
द्वि० ब० भवतो (भवतः)
भवओ
तृ० ए० भवता (भवता)
भवया
ष० ए० भवतो (भवतः)
भवओ (,,)
ष० ब० भवयाण (भवताम्)

'अन्' छेडावाळा नकारांत नामोना 'अन्'नो विकल्पे 'आण' (हे० प्रा० व्या० ८।३।५६) थाय छे:-

अध्वन्-[अध्व+अन्=अद्ध+आण-अद्धाण] अद्धाण, अद्ध.
आत्मन्-अप्पाण, अप्प.
ब्रह्मन्-बम्हाण, बम्ह
उक्षन् | उच्छाण, उच्छ
| उक्खाण, उक्ख
मघवन्-मघवाण, मघव
ग्रावन्-गावाण, गाव
मूर्धन्-मुद्धाण, मुद्ध
युवन्-जुवाण, जुव
राजन्-रायाण, राय

तक्षन्- | तच्छाण, तच्छ | श्वन्-साण, स
| तक्खाण, तक्ख |
पूषन्— पूसाण, पूस | सुकर्मन्-सुकम्माण, सुकम्म

ए बधां नामोनां रूपो अकारांत नामनी जेम करवां. जेमके :

| अद्धाणो, अद्धाणं, अद्धाणेण
| अद्धो, अद्धं, अद्धेण

| साणो, साणं, साणेण
| सो, सं, सेण

| रायाणो, रायाणं, रायाणेण
| रायो, रायं, रायेण वगेरे

जेमना 'अन्'नो 'आण' न थाय त्यारे ए जातनां नामोनां रूपा-ख्यानो केटलांक रूपो जुदी रीते थाय छे:

राय (राजन्)

	एकवचन	बहुवचन
१	[१]राया (राजा)	[२]राइणो, रायाणो[३] (राजानः)
२	[४]राइणं (राजानम्)	,, ,, [५]रण्णो (राज्ञः)
३	[६]राइणा, रण्णा (राज्ञा)	[७]राईहि' राईहिं, राईहि (राजभिः)
४	[८]राइणो, रण्णो (राज्ञः)	[९]राईण, राईणं (राज्ञाम्) [९]राइणं
५	[८]राइणो, रण्णो (राज्ञः)	[१०]राइत्तो, राईओ, राईउ [?], राईउ (राजतः) राईहि, राईहिंतो (राजभ्यः)
६	[८]राइणो, रण्णो (राज्ञः)	[९]राईण, राईणं (राज्ञाम्) [९]राइणं

७	[1]राइंसि, राइम्मि, (राज्ञि)	[2]राईसु, राईसुं (राजसु)
सं०	हे राया ! (राजन्)	राइणो, रायाणो (राजानः)

अप्प (आत्मन्)

१	[3]अप्पा (आत्मा)	अप्पाणो (आत्मानः)
२	[4]अप्पिणं (आत्मानम्)	,, ,,
३	[5]अप्पणिआ, अप्पणइआ अप्पणा (आत्मना)	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ (आत्मभिः)
४-६	अप्पाणो (आत्मनः)	अप्पिणं (आत्मनाम्)
५	अप्पाणो (आत्मनः)	अप्पत्तो, अप्पतो (आत्मतः) वगेरे

पूस (पूषन्)–इंद्र, सूर्य

१	पूसा (पूषा)	पूसाणो (पूषणः)
२	पूसिणं (पूषणम्)	,, (पूषणः)
३	पूसणा (पूष्णा)	पूसहि, पूसहिं पूसहिँ (पूषभिः)
४-६	पूसाणो (पूष्णः)	पूसिणं (पूष्णाम्)
५	,, ,,	पूसत्तो, पूसतो (पूषतः) वगेरे

मघव | मघवन्
मघच |

१ [6]मघवं, मघवा (मघवा) मघवाणो (मघवानः) वगेरे 'पूस'नी पेठे.

साधनिकानी समज

प्रत्ययो

	एकवचन	बहुवचन
१	+	णो
२	इणं	

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।५२। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।५४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।४९। ४ हे० प्रा० व्या० ८।३।५३। ५. हे० प्रा० व्या० ८।३।५७। ६. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६५।

३	णा	
४-६	णो	इणं
५	णो	
सं०	+	णो

+ आ निशान छे त्यां अर्थात् प्रथमा अने संबोधनना एकवचनमां राय, पूस, मघव वगेरे नामोनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे:

राय=राया.   मघव=मघवा.   पूस=पूसा.

'णा' प्रत्यय सिवायना 'ण' कारादि प्रत्ययो लागतां पूस वगेरे शब्दोनो अंत्य स्वर दीर्घ थाय छे:

पूस + णो = पूसाणो   राय + णो = रायाणो

अपवाद

प्रथमा अने संबोधन सिवायना 'ण'कारादि प्रत्ययो लागतां 'राय'ने बदले 'राइ' अने 'रण्'नो उपयोग थाय छे:-

राय + णा = राइणा, रण्णा
राय + णो = राइणो, रण्णो

प्रथमा अने संबोधनना बहुवचननो 'णो' लागतां तो 'राय'ने स्थाने एक मात्र 'राइ' वपराय छे.

'इणं' प्रत्यय लागतां 'राय'नो 'य' लोप पामे छे:

राय + इणं = राइणं (राजानम्)
राय + इणं = राइणं (राज्ञाम्)

'अन्' छेडावाळा कोई कोई शब्दने तृतीयाना एकवचनमां 'उणा' अने पंचमी तथा षष्ठीना एकवचनमां 'उणो' प्रत्यय लागे छे. जेमके:

कम्म (कर्मन्)

कम्म + उणा = कम्मुणा (कर्मणा)

कम्म + उणो = कम्मुणो (कर्मणः)

केटलांक अनियमित रूपो

मणसा (मनसा)

मणसो (मनसः)

मणसि (मनसि)

वयसा (वचसा)

सिरसा (शिरसा)

कायसा (कायेन)

कालधम्मुणा (कालधर्मेण)

केटलाक तद्धित प्रत्ययोनी समज

१ 'तेनुं आ' ए अर्थमां 'केर' प्रत्यय लागे छे:

अम्ह+केरं=अम्हकेरं (अस्माकम् इदम्-अस्मदीयम्) अमारुं

तुम्ह+केरं=तुम्हकेरं (युष्माकम् इदम्-युष्मदीयम्) तमारुं

पर+केरं=परकेरं (परस्य इदम्-परकीयम्) पारकुं

राय+केरं=रायकेरं (राज्ञः इदम्-राजकीयम्) राजानुं

२ [illegible]

गाम+इल्ल-गामिल्ल[illegible] (ग्रामे भवम्) गाममां [illegible]

पुर+इल्ल-पुरिल्ल (पुरे भवम्) [illegible]

१. हेम प्रा० व्या० [illegible]

अप्प+उल्ल=अप्पुल्लं (आत्मनि भवम्) आपणुं-आत्मामां थयेलुं
नयर+उल्ल=नयरुल्लं (नगरे भवम्) नगरमां थयेलुं

३ 'तेनी जेवुं' एवो भाव सूचववा 'व्व' प्रत्ययनो प्रयोग करवो:
महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया (मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः)

४ १'इमा' 'त्त' अने 'त्तण' प्रत्यय 'पणुं'ना अर्थमां वपराय छे:
पीण+इमा=पीणिमा (पीनिमा-पीनत्वम्) पीनपणुं-पुष्टता
देव+त्त=देवत्तं (देवत्वम्) देवपणुं
बाल+त्तण=बालत्तणं (बालत्वम्) बालपणुं

५. 'वार' अर्थने बताववा १'हुत्तं' अने 'खुत्तो' प्रत्ययनो उपयोग करवो:
एग+हुत्तं=एगहुत्तं (एककृत्वः-एकवारम्) एक वार
ति+हुत्तं=तिहुत्तं (त्रिकृत्वः-त्रिवारम्) त्रण वार
ति+खुत्तो=तिक्खुत्तो | तिखुत्तो | (त्रिकृत्वः- ,,) ,,

६ आल, ४ आलु, इल्ल, इर, उल्ल, वन्त, मन्त, इत्त अने [illegible] इत्त प्रत्ययो 'वाळुं' अर्थने सूचवे छे:
आल- रस+आल=रसालो (रसवान्) रसाळ-रसवाळुं
जडा+आल=जडालो (जटावान्) जटावाळुं
आलु- दया+आलु=दयालू (दयालुः) दयाळु-दयावाळुं
लज्जा+आलु=लज्जालू (लज्जालुः) लाजाळ-लाजवाळुं
इल्ल- माण+इल्ल=माणइल्लो (मानवान्) मानवाळ
इर- रेहा+इर=रेहिरो (रेखावान्) रेखावाळ
गव्व+इर=गव्विरो (गर्ववान्) गर्ववाळ
उल्ल- सोहा+उल्ल=सोहिल्लो (शोभावान्) [illegible]
वन्त- [illegible]

मण- धण+मण=धणमणो (धनवान्) धनवान
सोहा+मण=सोहामणो (शोभावान्) सोहामणो
बीहा+मण=बीहामणो (भयवान्) बीहामणो
मंत- धी+मंत=धीमंतो (धीमान्) धीमंत
वंत- भत्ति+वंत=भत्तिवंतो (भक्तिमान्) भक्तिवंत

७ १'त्तो' प्रत्यय पंचमी विभक्तिना अर्थने सूचवे छे:

सव्व+त्तो=सव्वत्तो (सर्वतः) सर्वेथी, सर्व प्रकारे
क+त्तो=कत्तो (कुतः) क्यांथी, शाथी
ज+त्तो=जत्तो (यतः) ज्यांथी, जेथी
त+त्तो=तत्तो (ततः) त्यांथी, तेथी
इ+त्तो=इत्तो (इतः) अहींथी, आथी

८ २'हि' 'ह' अने 'त्थ' प्रत्यय सप्तमीना अर्थने सूचवे छे:

ज+हि=जहि (यत्र) जहिं-ज्यां
ज+ह=जह " " "
ज+त्थ=जत्थ (यत्र) " "
त+हि+तहि (तत्र) तहिं-त्यां
त+ह=तह " " "
क+हि=कहि (कुत्र) कहिं-क्यां
क+ह=कह " " "
क+त्थ=कत्थ (कुत्र) " "

९ ३'तेनुं तेल' एवा अर्थने सूचववा 'एल्ल' (तैल४) प्रत्यय वपराय छे:

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६०। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६१। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५५। ४. दीपस्य तैलम्-दीपतैलम् ए शब्दमांनो 'तैल' शब्द ज कोई काळे पोतानुं व्यक्तित्व खोई प्रत्ययरूपे भळ्यो छे. माटे ज भाषामां 'धूपेल' मां 'तैल' शब्द समाई गयो छे तो पण 'धूपेल तेल' शब्दनो व्यवहार प्रचलित छे.

कडुअ+एल्ल=कडुएल्लं (कटुकस्य तैलम्-कटुकतैलम्) कडवुं तेल

दीव+एल्ल=दीवेल्लं (दीपस्य तैलम्-दीपतैलम्) दीवेल, दीवानुं तेल

एरंड+एल्ल=एरंडेल्लं (एरण्डस्य तैलम्-एरण्डतैलम्) एरंडेल, एरंडानुं तेल

पूय+एल्ल=पूयेल्लं (पूयस्य तैलम्-पूयतैलम्) पूयेल- पूयनुं तेल

१० क प्रत्ययने बदले 'अ' 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्ययो स्वार्थमां विकल्पे थाय छे:

चंद्र+अ=चंदओ, चंदो (चन्द्रकः) चांदो

पल्लव+इल्ल=पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवकः) पांदडो- पांदड, टेडो

हत्थ+उल्ल=हत्थुल्लो, हत्थो (हस्तकः) हाथो, हाथडो

११ केटलाक अनियमित तद्धितो

१ एक+सि=एकसि / एक+सिअं=एकसिअं / एक+इआ=एकइआ } (एकदा) एक वखत

२ भ्रू+मया=भुमया / भ्रू+मया=भमया } (भ्रूः) भवां

३ शनैस्+इअं=सणिअं (शनैः) धीमे धीमे

४ उपरि+ल्ल=अवरिल्लो (उपरितनः) उपरनुं-उपलुं

५ [illegible] } (मनाक्) थोडुं

त+एत्तिअ=तेत्तिअं त+एत्तिल=तेत्तिलं त+एद्दह=तेद्दहं	(तावत्) तेटलुं
क+एत्तिअ=केत्तिअं क+एत्तिल=केत्तिलं क+एद्दह=केद्दहं	(कियत्) केटलुं
एत+एत्तिअ=एत्तिअं एत+एत्तिल=एत्तिलं एत+एद्दह=एद्दहं	(एतावत्) एटलुं (इयत्)

पर+क्क= | परक्कं
पारक्कं (परकीयम्) पारकुं

राय+क्क=रायक्क (राजकीयम्) रायकुं-राजानुं

[1]अम्ह+एच्चय=अम्हेच्चयं (अस्मदीयम्) अमारुं-आमचा

तुम्ह+एच्चय=तुम्हेच्चयं (युष्मदीयम्) तमारुं तुमचा

[3]सव्वंग+इअ=सव्वंगिअं (सर्वाङ्गीणम्) सर्व अंगमां व्यापेलुं

[4]पह+इअ=पहिओ (पथिकः) पथिक-पंथी

[5]अप्प+णय=अप्पणयं (आत्मीयम्) आपणुं

केटलांक वैकल्पिक रूपो

[6]नव+ल्ल=नवल्लो, नवो (नवकः) नवलुं, नवुं

एक+ल्ल=एकल्लो एको (एककः) एकलुं

[7]मनाक्+अय=मणयं | (मनाक्) मणा-खामी, थोडुं
,, +इयं=मणियं |

[8]मिस्स+आलिअ=मीसालिअं, मीसं (मिश्रम्) मिश्र-भेळेलुं-मसालावाळुं-मसाली दाळ वगेरे

[9]दीह+र=दीहरं, दीघं, दिग्घं (दीर्घम्) दीर्घ-लांबुं

[10]विज्जु+ल=विज्जुला (विद्युत्) विजळी

पत्त+ल=पत्तलं, पत्तं (पत्रम्) पानडुं

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४८। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४९। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५१। ४ हे० प्रा० व्या० ८।२।१५२। ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५३। ६. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६५। ७. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६९। ८. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७०। ९. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७१। १०. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७३।

पीत+ल=पीअलं, पीवलं, पीयलं, पीअं (पीतम्) पीळुं
अन्ध+ल=अंधला (अन्धः) आंधळो

तद्धितांत-शब्दो

धणि (धनिन्) धनी-धनवाळो
अत्थिअ (आर्थिक) अर्थ संबंधी-अर्थने लगतुं
आविन्न (आप[illegible]) [illegible]
मईय (मदीय) मारुं
कोसेय (कौशेय) कौशेय-कोशेटा-मांथी बनेलुं-रेशमी वस्त्र
एत्तिल (एतावत्) एटलुं
जया (यदा) ज्यारे
अण्णया (अन्यदा) अन्य वखते
तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी
मणंसि (मनस्विन्) बुद्धिमान्
काणीण (कानीन) कन्यानो पुत्र-व्यास ऋषि
वम्मय (वाङ्मय) वाङ्मय-शास्त्र

पिआमह (पितामह) बापनो बाप
उवरिल्ल (उपरितन) उपरनुं-उपरलुं
कया (कदा) क्यारे
सव्वया (सर्वदा) सर्व काळे
रायण्ण (राजन्य) राजपुत्र
अभिज्ञ ([illegible]) [illegible]
[illegible] (भैम) भीम
नत्थिअ | नाहिअ | नास्तिक, नास्तिक-[illegible]; पुण्यने न माननार
पीणया (पीनता) पुष्टता
मायामह (मातामह) मानो बाप
सव्वहा (सर्वथा) सर्व प्रकारे
तया (तदा) त्यारे

प्रजाना दुःखथी दुःखी राजा-
ओ एकवार जनाय छे
त्यां पारका बालको बडे
रोवाय छे
परंतु वस्तु खोवो बडे
[illegible] छे
[illegible] मग [illegible] नथी
[illegible]
[illegible] नथी

कर्मवडे जीव [illegible]
[illegible] छे
[illegible] छे
[illegible] छे
[illegible] छे
[illegible] छे
[illegible] छे
[illegible] छे
[illegible] छे

अप्पगा अप्पा लब्भइ
रण्णा रज्जं भुज्जइ
राइहि पयाण दुक्खाणि
कुव्वंति
सीया पइणा सह मिलिज्जते
मच्चाणो बंभणेहि थुव्वंति
धम्मत्थएण अत्थो चिम्मइ

आरिसाणि वयणाणि कवि-
लेण वुच्चंति
राइणा सह्राए कोसेयं
परिहिज्जइ
छत्तीए मत्थयम्मि धूमेण दीसइ
सक्कं खु दीसइ तवविसेसो
न दीसइ जाइविसेसो को वि

पाठ २१ मो

केटलांक नामधातुओ

संस्कृतमां प्रेरक प्रक्रिया उपरांत बीजी पण अनेक प्रक्रियाओ छे, जेवी के सन्नंत, यङंत, यङ्लुगंत अने नामधातुप्रकरण. परंतु प्राकृतमां ए माटे खास कांई विशेष विधान नथी. आपणा प्राकृतमां ए प्रक्रियाओनां रूपाख्यानो वपराएलां मळे छे. ते बधांने वर्णविकार या उच्चारणभेदना नियमोद्वारा साधित करवानां छे.

सन्नंत— सुस्सूसइ (शुश्रूषति) सांभळवाने इच्छे छे, शुश्रूषा-सेवा-करे छे.

वीमंसा (मीमांसा) विचार करवो

यङन्त— लालप्पइ (लालप्यते) लवलव करे छे-बोल बोल करे छे.

यङ्लुगंत-चंकमइ (चङ्क्रमीति) चंक्रमण करे छे-फर्या करे छे.

चंकमणं (चङ्क्रमणम्) चंक्रमण-फर फर करवुं

नामधातु-गरुआइ (गुरुकायते) गुरुनी जेम करे छे. गुरुनी
गरुआअइ — जेवो डोळ करे छे.
अमराइ (अमरायते) अमरवत् आचरे छे, पोताने
अमराअइ — आतने अमर समजे छे.
तमाइ (तमायते) तम-अंधारा-जेवुं छे.
तमाअइ
धूमाइ (धूमायते) धूमने उडाडे छे-धूमने काढे छे.
धूमाअइ
सुहाइ (सुखायते) सुखाय छे-गमे छे.
सुहाअइ
सद्दाइ (शब्दायते) सादे छे-साद करे छे.
सद्दाअइ

नामधातुनां उक्त संस्कृत रूपोमां जे 'य' देखाय छे, तेनो प्राकृत-रूपोमां विकल्पे लोप थाय छे. (ए एक नियम मात्र नामधातु पूरतो छे.[1])

कृदंत

हेत्वर्थ कृदंत

मूळ धातुने 'तुं' तथा 'त्तए'[2] प्रत्यय लगाडवाथी हेत्वर्थ कृदंत बने छे.

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१३८। २. हेत्वर्थ कृदंत बनावनारु वैदिक संस्कृतमां 'तवै' प्रत्ययनो उपयोग थएलो छे. प्राकृतनो 'त्तए' अने वैदिक 'तवै' ए बन्ने एकज समान जणाय छे. 'त्तए' प्रत्ययवाळां रूपो आर्षप्राकृतमां विशेष मळे छे.

'तुं' अने 'त्तए' प्रत्यय लागतां पूर्वना 'अ'नो 'इ' के 'ए' थाय छे.१

तुं-

भण् + तुं—{ २भणिउं, भणेतुं / भणिउं, भणेउ }(भणितुम्) भणवा माटे

हो + तुं—{ होतु, होइउं / होउं, होएउ } (भवितुम्) थवा माटे

प्रेरक हेत्वर्थ कृदन्त

[मूळ धातुनुं प्रेरक अंग करवा माटे जुओ पाठ १८ मो]

भण्-भणावि+तु- | भणाविउं / भणाविउ | (भणापयितुम्) भणाववा माटे

त्तए—

कर्+त्तए—करित्तए, करेत्तए (कर्तवे-कर्तुम्) करवा माटे

गम्+त्तए—गमित्तए, गमेत्तए (गन्तवे गन्तुम्) गमन करवा माटे-जवा माटे

आहर्+त्तए—आहरित्तए, आहरेत्तए (आहर्तवे-आहर्तुम्) आहार करवा माटे

दल्+त्तए—दलइत्तए, दलएत्तए (दानवे—दातुम्) देवा माटे

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७। २. व्यंजनांत धातुने छेडे 'अ' लागे छे अने स्वरांत धातुने छेडे 'अ' विकल्पे लागे छे ए साधारण नियम छे:

भण् + तुं – भण + तु – भणितुं भणेतु
हो + तुं – होअ + तु – होइतुं, होएतु
हो + तु – होतु

['आहरित्तए' ने बदले 'आहारित्तए' पण वपराय छे अने 'हृ+त्तए'मां 'अह' उमेरायो छे.]

होत+तए-होइत्तए, होयत्तए (भवितवे-भवितुम्) थवा माटे
हो+त्तए-होत्तए (भवितवे-भवितुम्) थवा माटे
सुस्सूस+त्तए-सुस्सूसित्तए, सुस्सूसेत्तए (शुश्रूषितवे-शुश्रूषितुम्) शुश्रूषा करवा माटे
चंकम+त्तए-चंकमित्तए, चंकमेत्तए (चङ्क्रमितवे-चङ्क्रमितुम्) चंक्रमण करवा माटे
भण्-भणावि+त्तए-भणावित्तए-(भणापयितवे-भणापयितुम्) भणाववा माटे

अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त

कर + तुं- { कातुं, (कर्तुम्) करवा माटे
कातुं
कट्टु, कट्टु }

गेण्ह + तुं-घेत्तुं (ग्रहीतुम्) ग्रहण करवा माटे
दरिस + तुं-दट्ठुं (द्रष्टुम्) देखवा माटे-जोवा माटे
भुज् + तुं-भोत्तुं (भोक्तुम्) खावा माटे, भोगववा माटे
मुच् + तुं-मोत्तुं (मोक्तुं) छूटवा माटे-छूटा थवा माटे
रुद् + तुं-रोत्तुं (रोदितुम्) रोवा माटे
वच् + तुं-वोत्तुं (वक्तुम्) बोलवा माटे
लह + तुं-लद्धुं (लब्धुम्) लेवा माटे
रुध् + तुं-रोद्धुं (रोद्धुम्) रोध करवा माटे-रोकवा माटे

जुध् + तुं-	जोद्धं जोद्धुं	(योद्धुम्) जूझवा माटे युद्ध करवा माटे

संबंधक भूतकृदन्त

मूळ धातुने [1]तु, तूण, तुआण, अ, इत्ता इत्ताण, आय [illegible] आए (एम आठ प्रत्ययोमांथी गमे ते एक) प्रत्यय लगाडवाथी [illegible] संबंधक भूतकृदन्त बने छे.

'तु' वगेरे शरुआतना चार प्रत्ययो लगाडतां पूर्वना 'अ'नो '[illegible] अने 'ए' विकल्पे थाय छे.

तूण, तुआण अने इत्ताण प्रत्ययनो 'ण' अनुस्वारवाळो थई [illegible] पण बराबर छेः तूण, तूणं, तुआण, तुआणं, इत्ताण, इत्ता[illegible]

तुं—

हस् + तुं -	हसितुं, हसेतुं हसिउं, हसेउं	(हसित्वा) हसीने
हो+अ+तुं-	होइतुं, होएतुं होइउं, होएउं	(भूत्वा) थईने

हो + तुं - होतुं, होउं (भूत्वा) थईने

तूण—

हस् + तूण -	हसितूण, हसेतूण हसिऊण, हसेऊण	(हसित्वा) हसीने
हो+अ+तूण -	होइतूण, होएतूण होइऊण, होएऊण	(भूत्वा) थईने
हो + तूण	होतूण, होतूणं होऊण होऊणं	(भूत्वा) थईने

1. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४६। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७

तुआण—

हस्+तुआण—	हसितुआण, हसेतुआण हसिउआण, हसेउआण	(हसित्वा) हसीने
हो+अ+तुआण—	होइतुआण, होएतुआण होइउआण, होएउआण	(भूत्वा) थईने
हो+तुआण—	होतुआण, होउआण	(भूत्वा) थईने

अ—

हस्+अ— हसिअ, हसेअ (हसित्वा) हसीने

हो+अ+अ— होइअ, होएअ (भूत्वा) थईने

हो+अ— होअ (भूत्वा) थईने

इत्ता—

हस्+इत्ता— हसित्ता, हसेत्ता (हसित्वा) हसीने

इत्ताण—

हस्+इत्ताण—हसित्ताण, हसेत्ताण (हसित्वा) ,,

आय—

गह+आय— गहाय (गृहीत्वा) ग्रहण करीने

आए—

आय+आए—आयाए (आदाय) ,,

संपेह्+आए—संपेहाए (संप्रेक्ष्य) खूब विचारीने

['आय' अने 'आए' प्रत्ययनो उपयोग [illegible] घणो आवे छे]

ए ज प्रमाणे हुदुमितु, हुदुमितूण, हुदुमितुआण, हुदुमिअ, हुदुमित्ता, हुदुमित्ताण [हुदूमत्वा-हुदूमा करीने] वगेरे रूपो समजवानां छे.

चंकमि-तुं,-मितूण,-मितुआण,-मिअ, मित्ता, मित्ताण.
(चङ्क्रमित्वा) चक्रमण करीने

प्रेरकसंबंधक भूतकृदन्त

भणावि-तुं,-वितूण,-वितुआण, विअ,-वित्ता -वित्ताण
(भणापयित्वा) भणावीने

हासि-तुं -सितूण,-सितुआण,-सिअ,-सित्ता,-सित्ताण
(हासयित्वा) हसावीने

अनियमित संबंधकभूतकृदन्त

कर्+तुं-[1]कातुं काउं, कट्टु
कर्+तूण-कातूण काऊण
कर्+तुआण-काउआण, कातुआण
} (कृत्वा) करीने

गह्=तु—घेत्तुं[2]
,, तूण—घेत्तूण घेत्तूणं
,, तुआण—घेत्तुआण, घेत्तुआणं
} (गृहीत्वा) ग्रहण करीने

दरिस=तु— [3]दट्ठुं दट्ठु
,, तूण—दट्ठूण, दट्ठूणं
,, तुआण-दट्ठुआण, दट्ठुआणं
} (दृष्ट्वा) देखीने

भुंज+तुं- भोत्तुं[4]
,, तूण- भोत्तूण, भोत्तूणं
,, तुआण भोत्तुआण, भोत्तुआणं
} (भुक्त्वा) भोजन करीने, भोगवीने

मुच्=तुं मोत्तुं
मोत्तूण, मोत्तूण
मोत्तुआण, मोत्तुआण
} (मुक्त्वा) मूकीने-तजीने

एज प्रमाणे

रुद् उपरथी रोत्-रोत्तुं, रोत्तूण, रोत्तुआण (रुदित्वा) रोईने, वच् उपरथी वोत्-वोत्तुं वोत्तूण वोत्तुआण (उक्त्वा) बोलीने

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२. ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१०।
२. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१२।

९६ इत्थी वंदिउं, वंदित्तु[1] (वन्दित्वा) वांदीने

९६ ,, कट्टुं, कट्टु (कृत्वा) करीने

['वंदिउं' अने कट्टुंमां तुंनो अनुस्वार लोपाय पण छे.]

आयाय (आदाय) ग्रहण करीने

गच्चा, गंता (गत्वा) जईने

किच्चा, किच्चाण (कृत्वा) करीने

नच्चा
नच्चाण | (ज्ञात्वा) जाणीने

नत्ता (नत्वा) नमीने

बुज्झा (बुद्ध्वा) बुझीने, जाणीने

भोच्चा (भुक्त्वा) भोगवीने, खाईने

मत्ता, मच्चा (मत्वा) मानीने

वंदित्ता (वन्दित्वा) वांदीने

विप्पजहाय | विप्रजहाय ?
विप्रहाय | त्याग करीने

सोच्चा (श्रुत्वा) सांभळीने

सुत्ता (सुप्त्वा) सूईने

आहच्च (आहत्य) आघात करीने-पछाडीने

साहट्टु (संहृत्य संहार करीने, लई जईने, बलात्कार करीने

हंता (हत्वा) हणीने

आहट्टु (आहृत्य) आहार करीने

परिन्नाय (परिज्ञाय) बराबर समजीने

चिच्चा, चेच्चा, चइत्ता (त्यक्त्वा) त्याग करीने

निहाय (निधाय) स्थापीने, मदलीदीने

पिहाय (पिधाय) ढांकीने

परिच्चज्ज (परित्यज्य) परित्याग करीने

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४६।

अभिभूय (अभिभूय) अभिभव करीने
पडिबुज्झ (प्रतिबुध्य) समजीने

उच्चारणना भेदथी नीकळेलां आ बधां अनियमित रूपोनी माहिती साथे जणावेलां संस्कृत रूपो द्वारा ज समजी शकाय एम छे. आ सिवाय बीजां घणां य अनियमित रूपो छे तेमनी पण साधनिका, आ रूपोनी पेठे ज छे माटे ए बधां रूपो नथी जणाव्यां.

पाठ २२ मो

विध्यर्थ कृदन्त

मूळ धातुने तव्व, अणीअ के अणिज्ज प्रत्यय लगाडवाथी विध्यर्थ कृदंत बने छे.

'तव्व'नी पूर्वना 'अ'नो 'इ' के 'ए'[1] थाय छे.

तव्व—

हस्+तव्व— हसितव्वं, हसेतव्वं, हसिअव्वं, हसेअव्वं (हसितव्यम्) हसवा जेवुं, हसवुं जोईए

हो+तव्व— होइतव्वं, होएतव्वं, होइअव्वं, होएअव्वं, होतव्वं, होयव्वं, होअव्वं (भवितव्यम्) थवा योग्य, थवुं जोईए

ना+तव्व - नातव्वं नायव्वं (ज्ञातव्यम्) जाणवा योग्य, जाणवुं जोईए

चिव्व + तव्व चिव्वितव्वं, चिव्वेतव्वं, चिव्विअव्वं, चिव्वेअव्वं (चेतव्यम्) एकठुं करवा योग्य, एकठुं करवुं जोईए

1. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७।

अणीअ, अणिज—

हस+अणीअ— | हसणीअं, हसणीयं (हसनीयम्) हसवा
हस+अणिज— | हसणिज्जं जेवुं, हसवु जोईए

प्रेरक विध्यर्थ कृदंत

हसावि+तव्व— { हसावितव्व हसाविअव्व हसाविअव्व } (हसायितव्यम्) हसाववा जेवुं, हसाववु जोईए

हसावि+अणीअ— | हसावणीअं, हसावणीयं | (हसावनीयम्)
हसावि+अणिज— | हसावणिज्जं |

ए ज प्रमाणे पयणीयं पयणिज्जं, [illegible] [illegible], [illegible] मिलव्वं, संरक्खितव्वं, सुस्सूसणिज्जं, सुस्सूसणीअ वगेरे [illegible] [illegible] जेवाना छे.

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

कज्जं (कार्यम्) करवा योग्य
किच्चं (कृत्यम्) कृत्य
गेज्झं (ग्राह्यम्) ग्रहण करवा योग्य
गुज्झं (गुह्यम्) छुपाववा योग्य, गुंझु
वज्जं ([illegible]) वर्जवा योग्य
वज्झं ([illegible]) बोलवा योग्य
सद्दहेअं (श्रद्धेयम्) श्रद्धा [illegible] योग्य-[illegible]
पच्चं ([illegible]) [illegible] योग्य
दघर. (साध्यम्) [illegible] —साधन

जम्म ([illegible]) [illegible] योग्य
भिच्चो ([illegible]) [illegible] योग्य—[illegible]
भज्जा (भार्या) [illegible] [illegible]
अज्जो ([illegible]) [illegible], [illegible]
अज्जो ([illegible]) [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible], [illegible] जेवु

कातव्वं } (कर्तव्यम्) कर्तव्य-
कायव्वं } करवा जेवुं
काअव्वं }

भोत्तव्वं (भोक्तव्यम्) भोग करवा जेवुं, भोगववा जेवुं
मोत्तव्वं (मोक्तव्यम्) मूकवा जेवुं, छोडवा जेवुं
दट्ठव्वं (द्रष्टव्यम्) देखवा जेवुं

पाठ २३ मो

वर्तमान कृदन्त

मूळ धातुने [1]'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं वर्तमान कृदन्त बने छे.

'ई' प्रत्यय तो फक्त स्त्रीलिंगमां ज वपराय छे.

[2]'न्त' 'माण' अने 'ई' प्रत्यय लागतां पूर्वना 'अ'नो विकल्पे 'ए' थाय छे.

न्त–

भण् + न्त—भणंतो, भणेंतो, भणितो (भणन्) भणतो
भणंतं, भणेंतं भणितं (भणत्) भणतुं
भणंती[3] भणेंती, भणिती, (भणन्ती) भणती
भणंता, भणेंता, भणिता[3] (भणन्ती) „

हो+अ+न्त—होअंतो, होएंतो, होइंतो, (भवन्) थतो
होंतो हुंतो

---

1. हे० प्रा० व्या० ८।३।१८०। तथा १८१। 2. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५८। 3. हे० प्रा० व्या० ८।३।३१। तथा ३२। कोई पण विशेषणदर्शक नामना अंत्य 'अ' नो वाराफरती 'ई' अने 'आ' करवाथी ते नाम स्त्रीलिंगी थाय छेः—

महन्त्– महंत– महंता, महंती
नील– नील– नीला, नीली
गौर– गोर– गोरा, गोरी
सुलक्षण– सुलक्खण–सुलक्खणा, सुलक्खणी
साधन– साहण– साहणा, साहणी

होअंतं, होएंतं, होइंतं (भवन्) थतुं
होंतं हुंतं
होअंती, होएंती, होइंती (भवन्ती) थती
होअंता, होएंता, होइंता (भवन्ती) ,,
होंती, होंता
हुंती, हुंता

माण-

भण्=माण—भणमाणो, भणेमाणो (भणमानः) भणतो
भणमाणं, भणेमाणं (भणमानम्) भणतुं
भणमाणी भणेमाणी (भणमाना) भणती
भणमाणा, भणेमाणा

हो=अ=माण—होअमाणो, होएमाणो (भवमानः) थतो
होमाणो
होअमाणं होएमाणं (भवमानम्) थतुं
होमाणं
होअमाणी होएमाणी (भवमाना) थती
होअमाणा, होएमाणा
होमाणी, होमाणा

ई-

भण्+ई—भणई, भणेई (भणन्ती) भणती
हो+अ+ई होअई, होएई (भवन्ती) थती
होई

कर्तरि प्रेरक वर्तमान कृदन्त—

करावि+अ+न्त—करावंतो, करावेंतो (कारापयन्) करावतो
कार +न्त— कारंतो, कारेंतो (कारयन्) „
करावि+अ+माण-करावमाणो,करावेमाणो(कारापयमाणः) „
कार + माण — कारमाणो, कारेमाणो (कारयमाणः) „

सादुं भावे वर्तमान कृदन्त—

भण्-इज्ज+न्त—भणिज्जंतं
„ + „ +माण-भणिज्जमाणं
भण् ईअ+न्त—भणीअंतं
„ + „+माण-भणीअमाणं
} भण्यमानम्) भणातुं-भणवामां आवतुं

सादुं कर्मणि वर्तमान कृदन्त-

भणीअंतो भणिज्जंतो गंथो (भण्यमानः ग्रन्थः) भणातो ग्रंथ
भणीअमाणो भणिज्जमाणो सिलोगो भण्यमानः श्लोक) „ श्लोक
भणिज्जंती, भणीअंती गाहा (भण्यमाना गाथा भणाती गाथा
भणिज्जमाणी, भणीअमाणी पंती (भण्यमाना पङ्क्तिः) „ पंक्ति
भणिज्जई, भणीअई

प्रेरक भावे

भणाविज्जंतं (भणाप्यमानम्) भणावातुं—भणाववामां आवतुं

भणावीअंतं वगेरे

प्रेरक कर्मणि—

भणाविज्जंतो मुणी (भणाप्यमानः मुनिः) भणावातो मुनि

भणाविज्जमाणो
भणावीअंतो

भणावीअमाणो
भणाविज्जती साहुणी (भणाव्यमाना साध्वी)
भणाविज्जमाणा   भणाशती साध्वी
भणावीअंती
भणावीअमाणा
भणाविज्जइ
भणावीअइ   इत्यादि

ए ज प्रमाणे—

सुस्सूसंतो (शुश्रूषन्)   चंकमंतो (चङ्क्रमन्)
सुस्सूसमाणो (शुश्रूषमाणः) चंकममाणो (चङ्क्रममाणः)

सुस्सूसिज्जंतो सुस्सूसिज्जमाणो सुस्सूसीअंतो सुस्सूसीअमाणो	(शुश्रूष्यमाणः)	चंकमिज्जंतो चंकमिज्जमाणो चंकमीअंतो चंकमीअमाणो	(चङ्क्रम्य-माणः)

आ बधां रूपो साधी लेवां.

पाठ २४ मो

संख्यावाचक शब्दो

विशेषता

जे शब्दो द्वारा संख्यानो बोध थाय ते शब्दो संख्यावाचक कहेवाय. एवा शब्दो अकारांत पण होय छे अने आकारांत, इकारांत, अने उकारांत पण होय छे. आवा शब्दो विशेषणरूप होवाथी एमनुं निश्चित लिंग नथी होतुं. पण एवा शब्दो विशेष्यना लिंग अने वचनने अनुसरे छे. जे शब्दो अकारांत, इकारांत अने उकारांत छे तेमनां रूपो अनुक्रमे आगळ बतावेली रीत प्रमाणे समजवानां छे, तेमां जे खास विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे:

'एक'थी मांडीने अट्ठारस (अष्टादश) सुधीना संख्यावाचक शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां ण्ह अने ण्हं एम बे प्रत्यय वाराफरती लागे छे:[1]

एग + ण्ह-एगण्ह, एग + ण्हं-एगण्हं।
उभय+ण्ह-उभयण्ह, उभय+ण्हं-उभयण्हं।
ति + ण्ह-तिण्ह, ति + ण्हं-तिण्हं।
दु + ण्ह-दुण्ह, दु + ण्हं-दुण्हं।
कति+ण्ह-कतिण्ह, कति+ण्हं-कतिण्हं।

इक्क, एक्क, एग, एअ (एक)

आ शब्दनां पुंलिंगी रूपो 'सव्व'नी जेवां समजवानां छे स्त्रीलिंगी रूपो 'सव्वा'नी जेवां अने नपुंसकलिंगी रूपो नपुंसकलिंगी 'सव्व'नी जेम समजवानां छे.

'सव्व'नी षष्ठीना बहुवचननी पेठे आ शब्दने 'एसिं' प्रत्यय पण लागे छे:

एग+एसिं-एगेसिं। वगेरे. (जुओ पानुं १२४ नियम २ जो)

उभ, उह, (उभ)

आ शब्दनां रूपो बहुवचनमां थाय छे अने ते बधां 'सव्व'नी पेठे समजवानां छे:

प०— उभे
बी०— उभे, उभा
त०— उभेहि, उभेहिं, उभेहिँ।
च०— तथा छ०— उभण्ह, उभण्हं।
पं०— उभत्तो, उभाओ, उभाउ,

1. हे० प्रा० व्या० ८।३।१२३।

उभाहि, उभेहि,
उभाहिंतो, उभेहिंतो,
उभासुंतो, उभेसुंतो,

स०— उभेसुं, उभेसुं ।

दु (द्वि) त्रणे लिंगनां रूपो

आ शब्दनां रूपो बहुवचनमां थाय छे:

प्र० — / द्वि० — } दुवे, दोण्णि, दुण्णि ।
वेण्णि, विण्णि ।
दो, वे अथवा बे ।

तृ० — दोहि, दोहिं, दोहिँ ।
वेहि, वेहिं वेहिँ अथवा
बेहि, बेहिं बेहिँ

च० — तथा ष० — } दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं
[1]वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं

पं० — } दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिंतो, दोसुंतो
[1]वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिंतो, वेसुंतो

स० — दोसु, दोसुं, वेसु वेसुं

ति (त्रि) त्रणे लिंगनां रूपो

प्र० — / द्वि० — } तिण्णि

च० — तथा ष० — } तिण्ह, तिण्हं,

---

१. आ रूपोमां 'व' ने बदले 'ब' पण कोई ठेकाणे छे.

बाकीनां रूपो आगळ जणावेला 'रिसि' शब्दनां बहुवचननां रूपोनी जेम जाणवां, (जुओ पानुं १६६)

चउ (चतुर्) त्रणे लिंगनां रूपो

प०—
बी०— } चत्तारो, (चत्वारः) चउरो (चतुरः), चत्तारि (चत्वारि)

त०— १चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ
चउहि, चउहिं, चउहिँ

च०—
तथा } चउण्ह, चउण्हं।
छ०—

बाकीनां बधां 'भाणु'नी जेम समजवां (जुओ पानुं १६७)

पंच (पञ्च) त्रणे लिंगनां रूपो

प०—
बी०— } पंच

त०— पंचेहि, पंचेहिं, पंचेहिँ
पंचहि, पंचहिं पंचहिँ

च०—
तथा } पंचण्ह, पंचण्हं
छ०—

बाकीनां बधां 'वीर'नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे (जुओ पानुं १२०)

आ रीते 'पंच'नी पेठे नीचे आपेला तमाम शब्दोनां रूपो समजी लेवानां छे.

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७।

छ (षट्) छ
सत्त (सप्तन्) सात
अट्ठ (अष्टन्) आठ
नव (नवन्) नव
दह / दस } (दशन्) दश
एआरह / एगारह / एआरस } (एकादश) अगीयार
दुवालस / बारस / बारह } (द्वादश) बार
तेरस / तेरह } (त्रयोदश) तेर
चोद्दस / चोद्दह / चउद्दस / चउद्दह } (चतुर्दश) चौद
पण्णारस / पण्णरह } (पञ्चदश) पंदर अथवा पनर
सोलस / सोलह } (षोडश) सोळ
सत्तरस / सत्तरह } (सप्तदश) सत्तर
अट्ठारस / अट्ठारह } (अष्टादश) अढार

पइ (पति) केटलां

प० — / बी० — } पई, पइणो वगेरे.

प्र० — / तथा / प्र० — } पइणं, पईणं

बाकीनां रूपो 'रिसि'नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे.

नीचे जणावेला जे शब्दो अकारांत छे तेनां रूपो 'माला'नी जेवां थाय छे अने जे शब्दो इकारांत छे तेनां रूपो 'बुद्धि'नी जेवां थाय छे (जुओ पानुं २१८ तथा २१७)

एगूणवीसा (एकोनविंशति) ओगणीश
वीसा (विंशति) वीश

एगवीसा / इगवी / एकवी } (एकविंशति)

बावीसा (द्वाविंशति) બાવીશ
तेवीसा (त्रयोविंशति) ત્રેવીશ
चउवीसा[1] | चोवीसा (चतुर्विंशति) ચોવીશ
पणवीसा (पञ्चविंशति) પચીશ
छव्वीसा (षड्विंशति) છવીશ
सत्तावीसा (सप्तविंशति) સત્તાવીશ
अट्ठावीसा | अट्ठवीसा | अडवीसा (अष्टाविंशति) અઠ્ઠાવીશ
एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्) ઓગણત્રીશ
तीसा (त्रिंशत्) ત્રીશ
एगतीसा | एक्कतीसा | इक्कतीसा (एकत्रिंशत्) એકત્રીશ
बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) બત્રીશ
तेत्तीसा | तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्) તેત્રીશ
चउत्तीसा | चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्) ચોત્રીશ
पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) પાંત્રીશ
छत्तीसा (षट्त्रिंशत्) છત્રીશ
सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) સાડત્રીશ
अट्ठतीसा | अडतीसा (अष्टत्रिंशत्) આડત્રીશ
एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्) ઓગણચાલીશ
चत्तालिसा | चत्ताला (चत्वारिंशत्) ચાલીશ
एगचत्तालिसा | इक्कचत्तालिसा | एक्कचत्तालिसा | इगयाला (एकचत्वारिंशत्) એકતાલીશ
बेआलिसा | बेआला | दुचत्तालिसा (द्विचत्वारिंशत्) બેતાલીશ
तिचत्तालिसा | तेआलिसा | तेआला (त्रिचत्वारिंशत्) તેતાલીશ
चउचत्तालिसा | चोआलिसा | चोआला | चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्) ચુમાલીશ
पणचत्तालिसा | पणयाला (पञ्चचत्वारिंशत्) પિસ્તાલીશ
छचत्तालिसा | छायाला (षट्चत्वारिंशत्) છેતાલીશ
सत्तचत्तालिसा | सगयाला (सप्तचत्वारिंशत्) સુડતાલીશ
अट्ठचत्तालिसा | अडयाला (अष्टचत्वारिंशत्) અડતાલીશ

---

૧. આ શબ્દનું પ્રથમા વિભક્તિમાં चउवीसं પણ થાય છે:
"चउवीसं पि जिणवरा"

[illegible]

अट्ठसत्तरि | (अष्टसप्तति)
अडहत्तरि | अठ्यातेर

एगूणासीइ (एकोनाशीति) ओगण्याएंसी अथवा अगण्याएंशी

असीइ (अशीति) एंशी

एगासीइ (एकाशीति) एकाशी

बासीइ (द्व्यशीति) बाशी

तेसीइ | (त्र्यशीति) त्राशी
तेरासीइ |

चउरासीइ | (चतुरशीति)
चोरासीइ | चोराशी

पणसीइ | (पञ्चाशीति)
पञ्चासीइ | पचाशी

छासीइ (षडशीति) छाशी

सत्तासीइ (सप्ताशीति) सत्याशी

अट्ठासीइ (अष्टाशीति) अठ्याशी

नवासीइ (नवाशीति) नेवाशी

एगूणनवइ (एकोननवति) नेवाशो-नेवुंमां एक कम

नवइ | (नवति) नेवुं
णवइ |

एगणवइ | (एकनवति) एकाणुं
इगणवइ |

बाणवइ (द्विनवति) बाणुं

तेणवइ (त्रिनवति) ताणुं अथवा त्राणुं

चउणवइ | (चतुर्नवति)
चोणवइ | चोराणुं

पचणवइ | (पञ्चनवति)
पण्णणवइ | पचाणुं

छण्णवइ (षण्णवति) छन्नु

सत्त (त्ता) णवइ (सप्तनवति) सत्ताणुं

अट्ठणवइ | (अष्टनवति)
अडणवइ | अट्ठाणुं

ण(न) वणवइ (नवनवति) नव्वाणुं

एगूणसय (एकोनशत) सोमां एक कम

सय (शत) सो

दुसय (द्विशत) बसो

तिसय (त्रिशत) त्रणसो

बे सयाइं (द्वे शते) बसें

तिण्णि सयाइं (त्रीणि शतानि) त्रणसें

चत्तारि सयाइं (चत्वारि शतानि) चारसे इत्यादि

सहस्स (सहस्र) हजार

बे सहस्साइं (द्वे सहस्रे) बे हजार

तिण्णि सहस्साइं (त्रीणि सहस्राणि) त्रण हजार

चत्तारि सहस्साइं (चत्वारि सहस्राणि) चार हजार इत्यादि.

दहसहस्स (दशसहस्र) दस हजार	पउअ / पउत / पयुअ (प्रयुत) दस लाख
अउअ / अउत (अयुत) दस हजार	कोडि (कोटि) करोड, क्रोड
लक्ख (लक्ष) लाख	कोडाकोडि (कोटीकोटि) करोड ने करोडे गुणी तेटला
दस लक्ख / दह लक्ख (दश लक्ष) दस लाख	

उपर जणावेला बधा शब्दो साधारण रीते एकवचनमां वपराय छे. तेने वापरवानी बे रीत आ प्रमाणे छे:

'वीस माणसो', एम कहेवुं होय त्यारे 'वीसं मणुस्सा' अथवा 'वीसा मणुस्साणं' अर्थात् 'वीस माणसो' अथवा 'माणसोनी वीश संख्या' ए रीते एनो बे जातनो प्रयोग थाय छे.

वळी, ज्यारे उपर जणावेला संख्यावाचक शब्दो एक वीश अथवा एक पचास एम पोतपोतानी एक संख्या सूचवता होय त्यारे ते एकवचनमां आवे छे अने घणा वीस, घणा पचास, घणा सेंकडा एम पोतपोतानी अनेकता बतावता होय त्यारे बहुवचनमां पण आवे छे.

ते आचार्यने छप्पन शिष्यो
छे पण तेमां एक के
बे ज सारा छे
चंद्र सोळ कळाओवडे
शोभे छे
पुरुषो बोंतेर कळा
शीखता हता अने स्त्रीओ
चोसठ कळा शीखती हती

हमणां श्रावक अने साधु
चार संघोने मळे छे
पाठशाळाए चौद विद्याओ
शीखाय छे
नदीओमां चौद हिरण
होय छे
पांच माणसोमां परमेश्वर
वसे छे

तेणे गुरुने पचर प्रश्नो पूछ्या	घन आप्युं
तमे अट्योतेर ब्राह्मणोने	में नव्वाणु मुनिओने वंदन कर्युं

पंचण्हं वयाणं पढमं वयं (व्रतम्) पसंसिज्जइ	धणस्स कोडीए वि न संतोसो होइ
चत्तारो कसाया दुक्खाइं देंति	तस्स घरे पोत्थयाण सत्तरी दीसइ
दस बाला निसाए पढंति	सयेण दुमयं विढविज्जइ
बारह इत्थीओ वत्थाइं निक्खारंति	एगो हं नत्थि मे कोवि
अट्ठारस जणा छत्तीसाहिंतो चोरेहिंतो न बीहेंति	सव्वे संतु निरामया
	सव्वे सुहिणो होंतु
	सव्वे भद्दाइं पासंतु
	न होत्था को वि दुहिओ

पाठ २५ मो

भूतकृदन्त

मूळ धातुने 'त' के 'अ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं भूतकृदंत बने छे.

ए बने प्रत्ययो लागतां पूर्वना 'अ'नो १'इ' थाय छे.

गम् + अ + त—गमितो गम् + अ + अ—गमिओ	(गतः) गयेलो

भावे—

गमितं, गमिअं (गतम्) जवुं-गति

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५६।

कर्मणि—

गमितो गामो | (गतो ग्रामः) जवाएलुं गाम
गमिओ गामो |

प्रेरक—

करावितो (कारापितः) | करावाएलो-करावेलो
कारिओ (कारितः) |

अनियमित भूतकृदन्त[1]

गयं (गतम्) गयेलुं, जवुं,
मयं (मतम्) मानेलुं, मानवुं, मत
कडं (कृतम्) करेलुं, करवुं
हडं (हृतम्) हरेलुं, हरवुं
मडं (मृतम्) मरेलुं, मरवुं
जिअं (जितम्) जितेलुं, जितवुं
तत्तं (तप्तम्) तपेलुं, तपवुं
कयं (कृतम) करेलुं, करवुं

दट्ठं (दृष्टम्) दीठुं-देखेलुं, देखवुं
मिलाणं | (म्लानम्) म्लान
मिलानं | थएलुं-करमाएलुं, म्लान थवुं
अक्खायं (आख्यातम्) कहेलुं, कहेवुं
निहियं (निहितम्) निहित-स्थापेलुं, स्थापवुं

१. आ कृदंतो अने बीजां कृदंतो पण जे विभक्तिवाळां आपेलां छे. ते उपरथी तेमना मूळ शब्दो विद्यार्थीओए जाते शोधी लेवा. जेमके:—

विभक्तिवाळुं—	मूळ शब्द—
गयं	गय
मडं	मड
दट्ठं	दट्ठ
पायगो	पायग
लेहओ	लेहअ
हसिरो	हसिर
कज्ज	कज्ज
भिच्चो	भिच्च
हसेतव्व	हसेतव्व वगेरे

आणत्तं (आज्ञप्तम्) आज्ञा करेलुं, आज्ञा
संखयं (संस्कृतम्) संस्कार, संस्कारेलुं,
आकुट्ठं (आकुष्टम) आक्रोश करेलुं, आक्रोश
विणट्ठं (विनष्टम) विनष्ट, विनाश
पणट्ठं (प्रणष्टम) प्रनष्ट, नाश
मट्ठं (मृष्टम्) शुद्ध, शोधन
हयं (हतम्) हणेलुं-हणाएलुं, हणवुं
जायं (जातम्) जायेलुं-थएलुं जणवुं
गिलाणं | गिलानं | (ग्लानम) ग्लान थएलुं ग्लान थवु
परूविअं (प्ररूपितम्) प्ररूपेलुं, जणावेलुं, प्ररूपवुं
ठियं (स्थितम्) स्थित, स्थान
पिहियं (पिहितम्) ढांकेलुं, ढांकवुं
पन्नत्तं | पण्णत्तं | (प्रज्ञपितम्) प्रज्ञापेलुं, प्रज्ञापवुं
पन्नविय (प्रज्ञपितम्) ,,
सक्कयं (संस्कृतम्) संस्कृत
किलिट्ठं (क्लिष्टम्) क्लेशवाळुं, क्लिष्ट
सुयं (स्मृतत) स्मरेलुं, याद करेलुं
सुयं (श्रुतम्) सांभळेलुं, सांभळवुं
संसट्ठं (संसृष्टम्) संसर्गवाळुं, संसर्ग
घट्ठं (घृष्टम्) घसेलुं, घसवुं वगेरे

उच्चारणना भेदथी नीपजेलां आवां अनेक रूपोनी साधनिका, वर्णविकारना नियमो द्वारा समजी लेवानी छे.

भविष्यत्कृदन्त

मूळ धातुने इस्संत, इस्समाण अने इस्सई प्रत्यय लगाडवाथी हेतु भविष्यत्कृदन्त थते छेः

करिस्संतो (करिष्यन्) करतो होईश
करिस्समाणो (करिष्यमाणः) ,,
करिस्सन्ती (करिष्यन्ती) करती होईश
करिस्सई ,, ,,
करावित्समाणो (कारापयिष्यमाणः)
करावित्संतो (कारापयिष्यन्) करावतो होईश
इत्यादि

कर्तृदर्शक कृदंत

मूळ धातुने 'इर१' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं कर्तृदर्शक कृदंत बने छे.

हस+इर-हसिरो (हसनशील) हसनारो
नव+इर-नविरो (नम्रः-नमनशीलः) नमनारो
हसिरा, हसिरी (हसनशीला) हसनारी
नविरा, नविरी वगेरे, (नम्रा-नमनशीला) नमनारी

अनियमित कर्तृदर्शक कृदन्तो

पायगो | पायओ | (पाचकः) पाक करनार-रांधनार
नायगो | नायओ | (नायकः) नायक-नेता-दोरनार
नेआ | नेता | नेता " " "

विज्जं (विद्वान्) विद्वान्
कत्ता (कर्ता) कर्ता-करनार
विकत्ता (विकर्ता) विकार करनार
वत्ता (वक्ता) वक्ता-बोलनार
हंता (हन्ता) हणनार
छेत्ता (छेत्ता) छेदनार
भेत्ता (भेत्ता) भेदनार
कुंभआरो (कुम्भकारः) कुंभ करनार-कुंभार
कम्मगरो (कर्मकरः) कर्म-काम-करनार-कामगरो
भारहरो (भारहरः) भार लई जनार
थणंधयो (स्तनंधयः) धावनार बाळक

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४५।

परंतवो (परंतपः) शत्रुने तपावनार-प्रतापी
लेहओ (लेखकः) लखनार वगेरे

केटलांक अव्ययो

अग्गे (अग्रे) आगे-आगळ
अकट्टु (अकृत्वा) नहि करीने
अईव | अतीव | (अतीव) अतीव-विशेष
अग्गओ (अग्रतः) आगळथी
अओ | अतो | (अतः) आथी-एथी
अण्णमण्णं (अन्योऽन्यम्) अन्योअन्य एक बीजाने
अत्थं (अस्तम्) आथमवुं
अत्थु (अस्तु) थाओ
अद्धा (अद्धा) समय
अण (नञ्-अन) निषेध-विपरीत
अण्णहा (अन्यथा) तेम नहि तो
अणंतरं (अनन्तरम्) अंतर विना, तुरत
अदुवा | अदुव | (अथवा) अथवा
अहुणा (अधुना) हमणां
दाणंव (अथेव) संशय
अभिओ (अभितः) चारे बाजु
अम्मो आश्चर्य
अलं (अलम्) सर्युं-निषेध, पूरतुं
अवस्सं (अवश्यम्) अवश्य

असइं (असकृत्) अनेकवार
उप्पि | अवरिं | उवरिं | (उपरि) उपर
अहत्ता (अधस्तात्) नीचे
आहच्च (आहत्य) बलात्कार
इओ | इतो | (इतः) आ तरफ, वाक्यारंभ
इहरा(इतरथा)एम नहीं तो-अन्यथा
ईसिं (ईषत्) थोडुं
उत्तरसुवे (उत्तरश्वः) आवती काल पछी
एगया (एकदा) एकवार-एक दिवसे
एगंततो (एकान्ततः) एक तरफी
एत्थ (अत्र) अहीं
कल्लं (कल्यम्) काले
कहं | कहं | (कथम्) केम, केवी रीते
कालओ (कालतः) काळे करीने, वखते,
केवच्चिरं (कियच्चिरम्) केटला लांबा समय सुधी
केवच्चिरेण (कियच्चिरेण) केटला लांबा समये

मूरख माणस लालप करे छे
राजा हसीने लोकोने नम्यो
हुं पापोने रोकवा माटे
उतावळो थयो
महावीरने जोवा माटे लोको-
वडे दोडाय छे
भोगो भोगवो भोगवीने
तेओवडे खेद पमाय छे
तत्वने जाणीने, विद्वान-
वडे मुक्त थवाय छे

प्रह्लाद कुमार प्रजानां दुःखोने
समजीने तेनो सेवक थयो
जगतमां बधुं हसवा जेवुं
देखाय छे अने रोवा जेवुं
पण देखाय छे
पुण्य एकठुं करवा योग्य छे
अने पाप टाळवा योग्य छे
ते भणतो भणतो ऊंघे छे
भणातो पाठ तेनावडे संभ-
ळाय छे

सज्जणो सत्थवयणं सोच्चा
सद्दहइ
मणूसा पुण्णं किच्च देवा
होंति
पावं परिच्चज्ज साहूहिं सव्वं
कीरइ
इंदो महावीरं वंदित्ता थुणइ
अवस्सं पावफलं वयंति
महाणुभावा

दट्ठव्वं पासंति देक्खिरा
नरा
नविणो बालो पियरं पणमइ
पायवेण ईसि अन्न परिज्जइ
पणया एवं मए सुयं जं
महावीरेण एवं कहिअं
पयाणं पालणेण पाव विणट्ठं
पुण्णं च जायं

नाम [नरजाति]

अकम्म (अकर्मन्) कर्म रहित निर्मळ-पवित्र

अक्क (अर्क) सूर्य, आकडानुं झाड-आकडो

अग्गि (अग्नि) अग्नि, आग

अच्चि (अर्चिस्) आंच, जाळ

अच्छ (अक्ष) आंस-हांस

अणागम / **अनागम** (अन्+आगम) न आववुं ते, अनागमन

अण्णयर / **अन्नयर** (अन्यतर) अनेरुं-बीजो कोई

अप्प (आत्मन्) आत्मा-आप पोते

अण्ण (अन्य) अन्य, बीजुं

अप्पाण (आत्मन्) आत्मा-आप पोते

अभोगि / **अभोइ** (अभोगिन्) अभोगी-भोगोने नहि भोगवनार

अमु (अदस्) ए

अमुणि (अमुनि) मुनि नहि ते-बडबड करनार

अम्ह (अस्मद्) हुं

अय (अयस्) अयस-लोढुं

अरय (अरक) आरो-पैडानो

अरिहंत (अरिह्+अन्त) वीतराग देव

अलाह / **अलाभ** (अलाभ) अलाभ-अप्राप्ति

अवर (अपर) अपर-बीजुं

असमण (अश्रमण) श्रमण नहि ते

असंजम (असंयम) असंयम

अहर (अधर) नीचुं, बीजुं

अंक (अङ्क) अंक-खोळो

अंतर (अन्तर) अंतरनुं

अंध / **अंधल** (अन्ध) आंधळो

अंब (आम्र) आंबो

अंबकाल / **अंबगाल** (आम्रकाळ) आंबागाळो

अंबमउड (आम्रमुकुट) अंबोटो

आइच्च (आदित्य) आदित्य-सूर्य

आयरिय (आचार्य) आचार्य-धर्मगुरु, विद्यागुरु

आरिय (आर्य) आर्य-सज्जन

आस (अश्व) अश्व-घोडो

आसाढ (आषाढ) अषाढ मास

आसंक (आशङ्क) आंचको

आल्हाअ (आह्लाद) आह्लाद-आनंद

आहार (आधार) आधार

आहार (आहार) आहार-खावानुं

इम (इदम्) आ
इयर (इतर) इतर, बीजुं
इसि (ऋषि) ऋषि
इंद (इन्द्र) इन्द्र
उच्छाह (उत्साह) उत्साह
उच्छु (इक्षु) इख-शेरडी
उट्ट (उष्ट्र) ऊंट
उण्हाल (उष्णकाल) उनाळो
उत्तर (उत्तर) उत्तरदिशा, उत्तरनुं
उदहि (उदधि) उद-पाणी-ने
धारण करनार-समुद्र
उद्धव, ओद्धव (उद्धव)
ओधव-कृष्ण
उप्पाअ (उत्पाद) उत्पाद-उत्पत्ति
ऊरु (ऊरु) ऊरु-साथळ
उवज्झाय (उपाध्याय) उपाध्याय-
अध्यापक-गुरु-ओझा
उवासग (उपासक) उपासक-
उपासना करनार
उवाहि (उपाधि) उपाधि-प्रपंच
ऊसव (उत्सव) उत्सव
एअ, एय (एतद्) ए
एग, इक्क, एक्क } (एक) एक
एरावण, अइरावण } (ऐरावण) ऐरावण-
मोटो हाथी

ओट्ठ (ओष्ठ) ओठ-होठ
क (किम्) कोण
कइम, कतम (कतम) कयो
केटलाम[illegible]
कच्छव (कच्छप) काचबो
कण्णिआर (कर्णिकार) कणेर
कण्ण (कर्ण) कान, कानो
कण्ह (कृष्ण) कृष्ण-कान
कप्पडय (कर्पटक) कपडुं-[illegible]
कमंडलु (कमण्डलु) कमंडळ
कयर (कतर) कयो
कयविक्कय (क्रयविक्रय) खरीदवुं
वेचवुं-क्रयविक्रय करवो
करेणु (करेणु) करी-हाथी
कलंब (कदम्ब) कदंबनुं झाड
कलह (कलह) कलह-कजीयो
कलाव (कलाप) कलापो-समूह
कवड्ड (कपर्द) कोडो
कवि (कपि) कपि-वानर
कवि (कवि) कवि
कविट्ठ (कपित्थ) कोठुं
कविल (कपिल) कपिल ऋषि
कस (कश) चाबुक
कसिचल ([illegible]) [illegible]-
[illegible]
कंटग (कण्टक) कांटो
कंद (स्कन्द) स्कन्द-[illegible]

कंसआर } (कांस्यकार)
कंसार } कंसारो

काग } (काक) कागडो
काक }

काम (काम) काम–तृष्णा–इच्छा

काय (काय) काया–काय–शरीर

काल (काल) काल–समय

कावड्डिअ (कापर्दिक) कावडियुं कोडो–कोडी

कासव (काश्यप) काश्यप गोत्रनो ऋषि–ऋषभदेव

कांवलिअ (काम्बलिक) कामळीयो, कांवळीओने वेचनार वा ओढनार

किण्हसार (कृष्णसार) काळी-यार मृग

किलेस (क्लेश) कलेश

किसाणु (कृशानु) अग्नि

कुक्खि, कुच्छि (कुक्षि) कूख

कुडुम्बि (कुटुम्बिन्) कणबी

कुढार (कुठार) कुठार–कुहाडो

कुढारय (कुठारक) कुहाडो

कुद्दालय (कुद्दालक) कोदाळो

कुमारवर (कुमारवर) उत्तम कुमार

कुलवइ (कुलपति) कुलनो पति–आचार्य

कुंथु (कुन्थु) कंथवो–एक नानो जीवडो

कुंभार (कुम्भकार) कुंभार

केवट्ट (कैवर्त) कैवर्त–केवट–होडी हांकनार

केसरि (केसरिन्) केसरावाळो–याळवाळो–सिंह–केसरी सिंह

कोइल } (कोकिल) कोकिल–
कोकिल } कोयल

कोड (क्रोड) गोद–खोळो

कोणय (कोणक) खूणो

कोल } (क्रोड) खोळो
कोड }

कोलिक } (कौलिक) कोळी–
कोलिअ } एक जात

कोवपर (कोपपर) कोपमां तत्पर कोपी–क्रोधी

कोस (कोश) कोष–पाणी काढवानो, कोश–खजानो

कोसिअ (कौशिक) कौशिक गोत्रवाळो इन्द्र अथवा चंडकौशिक सर्प

कोह (क्रोध) क्रोध

कोहदंसि (क्रोधदर्शिन्) क्रोधने जोनार–क्रोधी

खग्ग (खड्ग) खड्ग–गेंडो–तलवार

खत्तिय (क्षत्रिय) क्षत्रिय

खय (क्षय) खे-क्षय

खार } (क्षार) खारो
छार }

खंध (स्कन्ध) कांध-खांध भाग, मोटी डाळ

गग्ग (गार्ग्य) गर्गनो पुत्र-ते नामनो एक ऋषि

गड्डह } (गर्दभ) गधेडो
गद्दह }

गणधर } (गणधर) गणने धारण
गणहर } करनार-समूहनी व्यवस्था करनार-आचार्य

गणवइ } (गणपति) गणोनो पति -गणपति

गणि (गणिन्) गण-समूहने साचवनार आचार्य

गब्भ (गर्भ) गर्भ, गाभो

गब्भदंसि (गर्भदर्शिन्) गर्भने जोनार, जन्म धारण करनार

गय (गज) हाथी

गरुल (गरुड) गरुड

गवक्ख (गवाक्ष) गोखलो-गोख

गंध (गन्ध) गंध

गंधिअ (गान्धिक) गांधी-गंध-वाळी वस्तुने वेचनार

गाम (ग्राम) गाम

गाहय (ग्राहक) ग्राहक

गिहि (गृहिन्) गृहस्थ

गुज्झ (गुह्य) गुह्यक-यक्ष, गुप्त-गूढ

गुरु (गुरु) गुरु-गोर, वडिल माता पिता वगेरे

गुहिलउत्त (गुहिलपुत्र) गुहिलोत

गोतम } (गौतम) गौतम
गोयम } गोत्रनो मुनि

गोधूम (गोधूम) गोधम-घउं

घड (घट) घडो

घरवइ } (गृहपति) घरनो पति-
गहवइ } गृहस्थ

घूअ-(घूक) घूअड-घुवड

घोडअ (घोटक) घोडो

चउव्वेइ (चतुर्वेदिन्) चतुर्वेदी चोबे, चोबा

चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) चक्र फेरवनार-चक्रवर्ती राजा

चक्खु (चक्षुस्) चक्षु-आंख

चम्मार (चर्मकार) चमार

चंद (चन्द्र) चंद्र

चाइ (त्यागिन्) त्यागी

चास (चाष) खेतरमां चास करवा ते

चित्त (चित्र) एक तारानुं नाम

चित्तकूड } (चित्रकूट)
चित्तऊड } चितोड

चित्तयार (चित्रकार) चितारो

छगलय (छाग) छाळुं–बकरुं

छत्त (छात्र)–विद्यार्थी

छप्पय } (षट्पद) छपगो
छप्पय } –भमरो

छाइल्ल } (छायालु) छायाळ–
छायालु } छायावाळुं

छावय (शावक) छैयो–छोकरो

छुहागुड (सुधागुड) छागोळ–
चुनो अने गोळनुं मिश्रण

छेअ (छेद) छेडो

ज (यद्) जे

जट्ट (जर्त) जाट जातनो माणस

जडालु (जटाल) जटाळुं–
जटावाळुं

जणय (जनक) जनक–पिता

जण्हु (जह्नु) ते नामनो सगरपुत्र

जम्म (जन्मन्) जन्म

जर (ज्वर) ज्वर–ताव

जरढय (जरठक) घरडो–जरडो

जंतु (जन्तु) जंतु–प्राणी–जीववंत

जंबु (जम्बु) जांबु, जांबुनुं झाड

जामाउय (जामातृक) जमाई

जायतेय (जाततेजस्) जेमां तेज
छे ते अग्नि

जिण (जिन) जय पामनार,
वीतराग

जीव (जीव) जीव

जीवाउ (जीवातु) जीवननुं औषध

जेट्ठ (ज्येष्ठ) मोटो–जेठ

जोइसिअ (ज्योतिषिक) जोशी

जोगि (योगिन्) योगी–जोगी

झुणि (ध्वनि) झणझणाट–अवाज
ध्वनि

डंड (दण्ड) दंड, डंडो, दांडियो

डंस (दंश) डंख

णक्क नाक

णातसुत } (ज्ञातसुत) ज्ञातवंशनो
णायसुय } पुत्र–महावीर

णिलाडवट्ट (ललाटपट्ट) निलवट

ण्हाविअ } (स्नापित) नवरावनारो–
नाविअ } नावी–हजाम

त } (तद्) ते
ण }

तलाय (तडाग) तलाव

तरच्छ (तरक्ष) तरस नामनुं जनावर

तरु (तरु) तरु–द्रु–झाड

तव (तपस्) तप–तपश्चर्या

तव (स्तव) स्तव–स्तुति

तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी

तस (त्रस) त्रस प्राणी–गति
करी शके तेवां प्राणी

तंतु (तन्तु) तांतणो

तंबोलिअ (ताम्बूलिक) तंबोळी

ताव (ताप) ताव-ताप-तडको

तिल (तिल) तल

तुम्ह (युष्मद्) तुं

तुरंगम (तुरंगम) तुरत जनार, तुरंग-घोडो

तेअ (तेजस्) तेज

तेलिअ (तैलिक) तेली-तेल वेचनार

थावर (स्थावर) स्थिर रहेनार-गति न करी शके ते प्राणी-वनस्पति वगेरे

थेर (स्थविर) स्थिर बुद्धिवाळो-पाकट-वयोवृद्ध मत

दयालु (दयालु) दयालु

दंड (दण्ड) दंड-दांडो-लाकडी

दंत (दन्त) दांत

दाडिम (दाडिम) दाडम

दास (दास) दास

दाहिण } दक्षिण-दक्षिणनुं
दक्खिण }

दिणयर (दिनकर) दिननो करनार-सूरज, दीकरो

दुक्काल (दुष्काल) दुकाळ

दुक्खदंसि (दुःखदर्शिन्) दुःखने जोनार, दुःख पामनार

दुम (द्रुम) द्रुम-झाड

दुवेइ (द्विवेदिन्) दवे, दुबे

दुस्सीस } (दुःशिष्य) दुष्ट शिष्य-विद्यार्थी
दुस्सिस्स }

देवण्णु (दैवज्ञ) दैवने-भाग्यने-जाणनार-जोशी

देवर (देवर) देर-दियर

देविंद (देवेन्द्र) देवोनो इन्द्र-देवोनो स्वामी

देस (देश) देश

देसवइ (देशपति) देसाई

दोस (दोष) दोष, ऐब

दोसिअ (दौष्यिक) दोशी-दूष्य-वस्त्र-वेचनार

धअ (ध्वज) धजा-ध्वज

धणि (धनिन्) धनवाळो-धनी

धन्न (धान्य) धान्य

धुत्त (धूर्त) धूर्त-धुतारो

नग्ग (नग्न) नागो-नग्न

नड (नट) नट

नत्तुअ } (नप्तृक) नाती-पौत्र
नत्तिअ }

नमि (नमि) ए नामनो एक राजर्षि-नमिराज

नमिराय (नमिराज) नमिराज-ए नामनो मिथिलानो एक राजर्षि

नयण (नयन) नेत्र-आंख

नरवइ (नरपति) नरोनो पति-नरपति-नरपत-राजा

नह (नख) नख

नह (नभस्) नभ-आकाश

नहर (नखर) नहोर

नातपुत्त
णातपुत्त
नायपुत्त } (ज्ञातपुत्र.) ज्ञात-वंशनो पुत्र-महावीर

नास (न्यास) न्यास-थापण

नास (नाश) नाश

निव (नृप) नृप-राजा

निंबु (निम्बु) लींबु

नेह (स्नेह) स्नेह-नेह

नेहालु (स्नेहालु) नेहाल-स्नेहाळ-स्नेहवाळो

पइ (पति) पति-स्वामी-धणी-मालिक

पक्ख (पक्ष) पक्ष-पखवाडीयुं, पंख-पांख, तरफदारी

पक्खि (पक्षिन्) पंखी-पांखवाळुं

पच्छाताव (पश्चात्ताप) पस्तावो

पञ्ञ (प्राज्ञ) प्राज्ञ-डाह्यो

पज्जुण्ण
पज्जुन्न } (प्रद्युम्न) प्रद्युम्न नामनो कृष्णनो पुत्र

पडह (पटह) पडो-ढोल

पण्हअ (प्रस्नव) पानो-पोतानुं बालक जोईने माताने दूध आवे ते

पण्ह (प्रश्न) प्रश्न

पण्हुअ (प्रस्नुत) पानो

पमाद (प्रमाद) प्रमाद-असावधानता-आळस

पल्हाअ (प्रह्लाद) प्रह्लाद कुमार

पवासि (प्रवासिन्) प्रवास करनार

पवंच (प्रपञ्च) प्रपंच

पव्वय (पर्वत) पर्वत

पसु (पशु) पशु

पहु (प्रभु) प्रभावशाळी-समर्थ

पंथ (पन्थ) पंथ-मार्ग

पाउस (प्रावृष्) पाउस-पावस वरसादनी ऋतु

पाघूणय
पाहूणय } (प्राघूर्णक) प्राहुणो-अतिथि

पाण (प्राण) प्राण-जीव

पाणि (प्राणिन्) प्राणी

पाणि (पाणि) पाणी-हाथ

पाय (पाद) पा-चोथो भाग

पाय (पाद) पाद-पग-पायो

पायय (पादक) पायो

पावासु (प्रवासिन्) प्रवासी

पास (पाश) पाश-फांसो, पासलो-फांसलो

पासाय (प्रासाद) प्रासाद-महेल

पिल्लोस (प्लोष) दाह

पीलु (पीलु) पीलुनुं झाड

पुरिम [पुरा+इम] पहेलांनुं, पूर्व
पुरिस [पुरुष] पुरुष
पुव्व [पूर्व] पूर्व-पूर्वनुं
पुव्वण्ह [पूर्वाह्न] दिवसनो पूर्व भाग
पूयर [पूतर] पूरो-पोरो
पोक्खर [पुष्कर] पोखर-तळाव
पोट्ठिय [पृष्टिक] पीठ ऊपर भार वहेनार पोठीयो-महादेवनो पोठीयो
फलाहार [फलाहार] फराळ
फास [स्पर्श] स्पर्श
फेण [फेन] फीण
बक } **बग** } [बक] बगलो
बप्फ [बाष्प] बाफ
बहिणीवइ [भगिनीपति] बनेवी
बंधव [बान्धव] बांधव-भाई
बंधु [बन्धु] बंधु-भांडु-भाई
बंभण } **बम्हण** } **माहण** } [ब्राह्मण] ब्रह्म-विद्याने जाणनार-समजनार पुरुष
बंभयारी [ब्रह्मचारिन्] ब्रह्मचारी
बाव } **बाह** } [बाघ] बाघो-बाघ
बाल [बाल] बाळ-बाळक
बाहु [बाहु] बाहु-बांय-हाथ

बिडाल [बिडाल] बिलाडो
बिंदु [बिन्दु] बिंदु, मींडु, [illegible]
बुद्ध [बुद्ध] बुद्धदेव
बुह [बुध] बुद्धिमान-डाह्यो पु[illegible]
भड [भट] भड-शूर
भमर [भ्रमर] भमरो
भाइणेज्ज [भागिनेय] भाणेज
भाणु [भानु] भाण-सूरज
भार [भार] भार
भारय [भारक] भारो
भारवह [भारवह] भार वहन करनार-मजूर
भारहर [भारहर] भार लइ जनार मजूर
भिंग [भृङ्ग] भृंग-भमरो
भिक्खु [भिक्षु] भिक्षु
भूअ [भूत] भूत-प्राण, जीव
भूमिवइ [भूमिपति] भूमिनो पति, राजा
भूवई [भूपति] भू-पृथ्वी-नो पति भूपति-भूपत-राजा
भोगि } **भोइ** } [भोगिन्] भोगी-भोगोने भोगवनार
मअ [मृग] मृग-वनपशु-हरण
मउड [मुकुट] मोड-मुगट
मउल [मुकुल] मोर-कळी
मक्कडय [मर्कटक] मांकडो

मग्ग (मार्ग) माग-मारग
मग्गु (मद्गु) एक प्रकारनी माछली
मच्चु } (मृत्यु) मोत-मरण-मीच
मिच्चु }
मढ (मठ) मढी-मठ-संन्यासियो-नुं रहेठाण
मणि (मणि) मणि
मयगल (मदकळ) मेंगल-मद झरतो हाथी
मयंक (मृगाङ्क) मृगना निशान-वाळो चन्द्र
मरहट्ठ (महाराष्ट्र) मोटो देश-महाराष्ट्र देश
मरहट्ठअ (महाराष्ट्रीय) महा-राष्ट्रनो वतनी-मराठी लोक
मसय (मशक) मच्छर
महण्णव (महार्णव) महेरामण-समुद्र
महाप्पसाय (महाप्रसाद) मोटा प्रसादवाळो-सुप्रसन्न-कृपाळु
महातवस्सि (महातपस्विन्) मोटो तपस्वी
महादोस (महादोष) महादोष मोटो दोष
महावीर (महावीर) महावीर देव

महासड्ढि (महाश्रद्धिन्) मोटी अचल श्रद्धावाळो
महासव (महास्रव) मोटो आश्रव-पापोनो मोटो मार्ग
महेसि { महा+ऋषि } व्यास वगेरे
{ महर्षि } महर्षि
मंजार (मार्जार) मणजर-बिलाडो
मंति (मन्त्रिन्) मन्त्री-कारभारी
मंतु (मन्तु) अपराध-शोक
माधव (मा+धव) लक्ष्मीपति-माधव-कृष्ण
मार (मार) मारनारो-तृष्णा
मारामिसंकि (माराभिशङ्किन्) मार-तृष्णा-थी शंकित रहेनार दूर रहेनार-तृष्णाथी डरनारो
मालिअ (मालिक) माळी-माळा वेचनार
मास (मास) महीनो-मास
मिलिच्छ (म्लेच्छ) म्लेच्छ
मुइंग } (मृदङ्ग) मृदंग
मिइंग }
मुग्गरय (मुद्गरक) मगदळ-मोगरी
मुणि (मुनि) मुनि-मनन करनार-मौन राखनार-संत

मुहुत्त (मुहूर्त) मूरत-वखत-थोडो समय

मूअ
मूक } (मूक) मूंगो
मूग

मूसअ
मूसय } (मूषक) मूषक-उंदर

मेरा (मेरा) मर्यादा

मेरामण (मेरा+मतु-मेरा+मण) महेरामण-समुद्र

मेह (मेघ) मे-मेघ-वरसाद

मेहावि (मेधाविन्) मेधावाळो-बुद्धिमान्

मोक्ख (मोक्ष) मोक्ष-छूटकारो

मोचिअ (मौचिक) मोची-मोजां सीवनार

मोर
मयूर } (मयूर) मोर-मयूर

मोह (मोह) मोह-मूढता

मोहणदास (मोहनदास) ते नामनो वीरपुरुष-मोहनदास गांधी

रट्ठऊड
रट्ठउड } (राष्ट्रकूट) राठोड

रट्ठधम्म (राष्ट्रधर्म) राष्ट्रनो धर्म-समग्र देशनुं हित करनारी प्रवृत्ति

रण्णवास (अरण्यवास) अरण्यमां वसवुं-वनमां रहेवुं

रस (रस) रस

रसाल
रसाळु } (रसाल) रसाळ-रसवाळुं

रस्सि (रश्मि) रास-बळदनी के घोडानी रास

राग (राग) राग-आसक्ति

रायरिसि (राजर्षि) राजर्षि

रिच्छ (ऋक्ष) रींछ

रिसि
इसि } (ऋषि) ऋषि

रुक्ख (वृक्ष) रूख-झाड

लाह
लाभ } (लाभ) लाभ-लाभो

लेहसालिअ (लेखशालिक) निशाळीओ-निशाळे भणवा जनार

लोअ
लोग } (लोक) लोक-जगत-लोको

लोह (लोभ) लोभ

लोहयार (लोहकार) लुहार

लोहार (,,) लुहार-लवार

वग्घ (व्याघ्र) वाघ

वच्छ (वत्स) वत्स-संतान-वाछडो

वच्छयर (वत्सतर) वछेरो

वणप्फइ } (वनस्पति) वनस्पति
वणस्सइ }

वद्धमाण (वर्धमान) वर्धमान–महावीर

वम्मह (मन्मथ) मनने मथनार कामदेव

वरदंसि (वरदर्शिन्) उत्तम रीते जोनार

ववहार (व्यवहार) वेव्हार--वेपार

ववहारि (व्यवहारिक) वहे–वारी-वेपारी

वसभ (वृषभ) वरख राशी

वसह (,,) वृषभ–बळद

वसु (वसु) पवित्र मनुष्य, वसु–धन

वंसअ (वंशक) वांसो–पीठ

वाउ } (वायु) वायु–वा
वायु }

वाणिअ (वाणिज) वाणीओ

वाणिज्जार (वाणिज्यकार) वण-जारो–वणज करनारो–वेपारी

वाहि (व्याधि) व्याधि रोग

विज्जत्थि (विद्यार्थिन्) विद्यानो अर्थी–विद्यार्थी

विडवि (विटपिन्) वीड–झाड

विण्हु (विष्णु) विष्णु

विप्परियास (विपर्यास) विप-र्यास–विपरीतता–भ्रान्ति

विराग (विराग) रागथी विरुद्ध भाव–वैराग्य

विवाहकाल (विवाहकाल) विवाहो–लगनसरा

विहु (विधु विधु–चन्द्र

विंचुअ (वृश्चिक) वींछी

विंछिअ (,,) ,,

वीस (विश्व) विश्व–बधुं

वुड्ढ (वृद्ध) वूढो–घरडो

वुत्तंत (वृत्तान्त) वृत्तान्त–समाचार

वेय (वेद) ऋग्वेद वगेरे वेद

वेवाहिअ (वैवाहिक) वेवाई

वेस (वेष) वेष–वेश

वेसाह (वैशाख) वैशाख मास

वोज्झ (वह्य) बोजो

वोज्झय बोजो

स, सुव (स्व) पोतानुं

स (श्वन्) श्वान–कूतरो

सउणि (शकुनि) शकुनि–पक्षी

सज्ज (षड्ज) षड्ज–एक प्रकारनो स्वर

सढ (शठ) शठ–लुच्चो

सद्द (शब्द)–साद–अवाज

सप्प (सर्प) सप

सम (सम) समुं

समण (श्रमण) शुद्धि माटे श्रम करनार संतपुरुष

समत्तदंसि (सम्यक्त्वदर्शिन्) सत्यने जोनार

समुद्द / **समुद्र** (समुद्र) समुद्र-समुदर

सयंभु (स्वयंभू) स्वयं थनार-ब्रह्मा, ते नामनो समुद्र

सय्ह (सह्य) सह्य नामनो पहाड, सही शकाय ते

सर (स्मर) स्मर-कामदेव

सवह (शपथ) शपथ-सोगन-सम

सव्व (सर्व) सर्व-सघ-बधुं

सव्वज्ञ (सर्वज्ञ) सर्वज्ञ-बधुं जाणनार

सव्वण्णु (सर्वज्ञ) सर्व जाणनार

सव्वसंग (सर्वसङ्ग) सर्व प्रकारनो राग-संबंध-आसक्ति

संकु (शङ्कु) शंकु-खीली

संख (शङ्ख) शंख

संग (संग) संग-सोबत

संतोस (संतोष) संतोष

संभु (शम्भु) शंभु-सुखनुं स्थान-महादेव

संवत्तअ (संवर्तक) संवर्तक-वायु

संसार (संसार) संसार-जगत्

संसारहेउ (संसारहेतु) संसारनो हेतु-संसार वधवानुं कारण

साणु (सानु) शिखर

साड (शाट) साडलो-साडी

साडय (शाटक) साडलो-साडी

साडवी / **सालवी** (शाटविन्) साळवी-साडी वणनार

सारहि (सारथि) सारथि-रथ हांकनारो

साव (शाप) श्राप

सावय (श्वापद) सावज

साहु (साधु) साधक, साधन, करनार-साधु पुरुष, सज्जन, साहुकार

सिआल (शृगाल) शिआळ

सिद्ध (सिद्ध) अदेही-वीतराग

सिम (सिम) बधुं

सिलिम्ह (श्लेष्मन्) श्लेष्मा

सिलेसम (श्लेष्मन्) सळेखम

सिलोअ / **सिलोग** (श्लोक) श्लोक, कीर्ति

सिसु (शिशु) शिशु-बाळक

सिंगार (शृंगार) शृंगार-शणगार

सीआल (शीतकाल) शियाळो

सीस } (शिष्य) शिष्य—
सिस्स } विद्यार्थी

सीह } (सिंह) सिंह
सिंघ }

सुत्तहार (सूत्रधार) सुतार

सुमिण }
सिमिण } (स्वप्न) सपनुं—
सुविण } सोणुं
सिविण }

सुरट्ठ (सुराष्ट्र) सोरठ देश

सुरट्ठअ { सुराष्ट्रीय }
सोरट्ठीअ { सौराष्ट्रीय }

सोरठनो—वतनी—सोरठी लोक

सूअर (शूकर) शूकर—भूंड

सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) श्रेष्ठी-शेठ—चेट्टी

सोवाग (श्वपाक) चांडाळ

सोमित्ति (सौमित्रि) सुमित्रानो पुत्र—लक्ष्मण

सोरहिअ (सौरभिक) सरंयो— सुरभि—सुगंधी—तेल वगेरेने वेचनार

सोवण्णिय (सौवर्णिक) सोनी— सोनुं घडनार

हत्थ (हस्त) हाथ

हत्थि (हस्तिन्) हाथी

हर (हर) हर—महादेव

हरिअंद (हरिश्चन्द्र) हरिचंद राजा

हरिएसबल (हरिकेशबल) मूळ चंडाळ कुळमां जन्मेलो एक जैन मुनि

हरिण (हरिण) हरण

हरिताल (हरिताल) हरताल

हरिस (हर्ष) हरख-हर्ष

हव्ववाह (हव्यवाह) हव्यवाह— अग्नि

हेमंत (हेमन्त) हेमन्त ऋतु— शियाळो

नाम [नारीजाति]

अच्छरसा (अप्सरस्) अप्सरा

अज्जू (आर्या) सासू—आजी

अलसी (अतसी) अळशी

अलाऊ } (अलाबू) तुंबडी—
लाऊ } उलआ

अंगुलि (अङ्गुलि) आंगळी

आणा (आज्ञा) आज्ञा—आण

आपत्ति (आपत्ति) आपदा

आसिसा (आशिष्) आशिष

इत्थी } (स्त्री) स्त्री—[illegible]
थी }

उज्जु (ऋजु) सरळ

कउहा (ककुभ्) दिशा
कक्कंधू (कर्कन्धू) बोरडी
कक्खा (कक्षा) काख
कच्छडिया (कच्छटिका) काछडी
कच्छू (कच्छु) खाज-खरज
कडी (कटी) केड
कयली (कदली) केळ
कलसी (कलशी) कलशी-कळशी
कलिआ (कलिका) कळी
कंकतिआ (कङ्कतिका) कांचकी
कंति (कान्ति) कांति, खांत
कित्ति (कीर्ति) कीरत
किया (क्रिया) किया, विधि-विधान
किवा (कृपा) कृपा
किसरा (कृसरा) खीचडी
कुक्खी (कुक्षी) कूख
कुडारिया (कुठारिका) कुहाडी
कुद्दालिया (कुद्दालिका) कोदाळी
कुमारी (कुमारी) कुंवरी, कुंवारी
खड्डा (गर्ता) खाड-खाडो
खली खोळ
खंति (क्षान्ति) क्षमा
गउ (गो) गाय-गाई
गउआ (गौका) गाय
गब्भिणी (गर्भिणी) गाभणी
गिरा (गिर्) गिरा-वाणी

गोट्ठी (गोष्ठी) गोठ-गोठडी
गोणी (गोणी) गुणी-अनाज भरवानो कोथळो
गोरी (गौरी) गौरी-पार्वती, गौरी स्त्री
घिणा (घृणा) घिण-घृणा
चंचु (चञ्चु) चांच
चंदिआ, चंद्रिआ (चन्द्रिका) चांदनी, चांदी-रूं
चंदिमा (चन्द्रिका) चन्द्रमानी चांदनी
चिंता (चिन्ता) चिंता
छवि, छवी (छवि) छबी
छाया (छाया) कान्ति
छाया, छाही (छाया) छाया
छुहा (क्षुधा) भूख
छुहा (सुधा) छो-चुनो
जणी (जनी) जान
जंघा (जङ्घा) जांघ
जिब्भा, जीहा (जिह्वा) जीभ
जुत्ति (युक्ति) युक्ति-योजना
जुवइ (युवति) युवति
तणुवी (तन्वी) पातळी
तण्हा (तृष्णा) तृष्णा
तरुणी (तरुणी) तरुण स्त्री
तिसा (तृषा) तरस-आतुरता
थुइ (स्तुति) स्तुति-स्तव

दद्दु (दद्रु) धाधर–दादर
दित्ति (दीप्ति) दीप्ति–तेज
दाढा (दंष्ट्रा) दाढ
दिसा (दिशा) दिशा–दश
दिहि } (धृति) धैर्य
धिइ }
देवराणी (देवराणी) देराणी
धत्ती (धात्री) धात्री
धाई (धात्री) धाइ–धवरावनारी माता
धुआ (दुहिता) दीकरी
धूलि (धूलि) धूळ
नणंदा (ननान्द) नणंद
नारी (नारी) नारी–नार
नावा (नौका) नाव
निसा (निशा) निशा–रात्री
पण्णा (प्रज्ञा) प्रज्ञा
पतीति (प्रतीति) पतीज–विश्वास
परिहावणिया (परिघापनिका) पहेरामणी
पंति (पंक्ति) पंक्ति–पंगत–पांत
पाडिवआ } (प्रतिपदा)
पाडिवया } पडवो तिथि
पिउच्छा } (पितृष्वसा)
पिउसिआ } पितानी बहेन––फई
पिच्छी (पृथ्वी) पृथ्वी

पुच्छा (पृच्छा) प्रश्न–पूछ
पुरा (पुर्) पुरी–नगर–नगरी
पुहवी (पृथ्वी) पृथ्वी
पेडिआ (पेटिका) पेटी
बब्बरी (बर्बरी) बाबरी–माथानी बाबरी
बहिणी (भगिनी) बहेन
बारिआ (द्वारिका) बारी
बाहा (बाहु) बाहु–हाथ–बांय
भइणी } (भगिनी) बहेन
भगिणी }
भाउज्जा (भ्रातृजाया) भोजाय
भीइआ } (भीतिका) बीक
भीइका }
भूमि (भूमि) भूमि–भों
मइ (मति) मति
मक्खिआ } (मक्षिका) माखी
मच्छिआ } –माछी
मज्जाया (मर्यादा) माजा–मलाजो
मट्टिआ (मृत्तिका) माटी
महिसी (महिषी) भेंस
मंजुसा (मञ्जुषा) मञ्जूष–पेटी
माअरा } (मातृ) देवी–माता
मायरा }
माआ (मातृ) माता–जननी
माइ (मातृ) मा–माई
माउ (मातृ) माता

माउसिआ }
माउच्छा } (मातृष्वसा) माशी-मातानी वहेन

माला (माला) माळा, माळ

मित्ती (मैत्री) मित्रता-मैत्री वृत्ति

मेहा (मेधा) मेधा-बुद्धि

रइ (रति) प्रेम-राग

रक्खा (रक्षा) राख

रच्छा (रथ्या) रथ चाले तेवी पहोळी शेरी-शेरी

रत्ति (रात्रि) रात

रयणी (रजनी) रजनी-रेण

राई (रात्री) रात

रिद्धि (ऋद्धि) रध-ऋद्धि

रेहा }
रेखा } (रेखा) रेखा-लीट-लीटो
लेहा }

लक्खा (लाक्षा) लाख

लज्जा (लज्जा) लज्जा-लाज

लालसा (लालसा) लालच

लोमवट्टी (लोमपट्टी) लोवटी-[illegible] पहेरवानी साडी

वट्टा ([illegible]) वाट-रस्तो

वत्ता (वार्ता) वात

वत्ति (वर्ति) वट-वाट

वरगोट्ठी }
वरोट्ठी } (वरगोष्ठी) वरोंठी

वरजत्ता }
वरअत्ता } (वरयात्रा) वरात-जान

वहू (वधू) वहू

वंझा (वन्ध्या) वांझ-वांझणी

वाडिआ (वाटिका) वाडी

वाया (वाच्) वाचा-वाणी

वारक्खरी (द्वादशाक्षरिका) बाराखडी

वाराणसी }
वाणारसी } (वाराणसी) वाराणशी-बनारस नगर

वावी (वापी) वाव

विज्जु (विद्युत्) विजळी

विट्ठी }
वेट्ठी } (विष्टि) वेठ

विभूति }
विभूइ } (विभूति) वभूति-राख

विहत्थि (वितस्ति) वेंत

सण्णा (संज्ञा) संज्ञा-सान-समज

सति (स्मृति) स्मृति-याद

सत्ति (शक्ति) शक्ति

सद्धा (श्रद्धा) श्रद्धा

समणी (श्रमणी) साध्वी

समिद्धि }
सामिद्धि } (समृद्धि) समृद्धि

सरिआ }
सरिया } (सरित्) सरिता-नदी

सलाया (शलाका) सळी

सवत्तिका (सपत्नीका) शोक्य
ससा (स्वसृ) स्वसा-बेन
संझा (संध्या) सांज
संति (शान्ति) शांति
संदंसिआ (संदंशिका) सांडशी
संपया } (संपदा) संपदा-संपत्ति
संपआ
संपदा
साडी (शाटी) साडी

सामा (श्यामा) युवति स्त्री
साहुवी } (साध्वी) साध्वी
साहुणी
सिद्धि (सिद्धि) सिद्धि
सिप्पी (शुक्ति) छीप
सूइ (सूचि) सोय
सुण्हा } (स्नुषा) स्नुषा-पुत्रवधू
ण्हुसा
दलद्दा, दलिद्दा (दरिद्रा) दळदर

नाम [नान्यतरजाति]

अक्खि } (अक्षि) आंख
अच्छि
अच्चब्भुय (अत्यद्भुत) अचंबो
अच्छेर (आश्चर्य) आश्चर्य-अचरज
अजिण (अजिन) अजिन-चामडुं
अट्ठगुणय (अष्टगुणक) आठगणुं
अट्ठि (अस्थि) हड्डी-हाडकुं-हाड
अत्थ (अस्त्र) अस्त्र-फेंकवानुं हथीयार
अद्ध (अर्ध) अडधु [माण वगेरे
अभयप्पयाण (अभयप्रदान)
अभयदान-प्राणीओ निर्भय रहे-बने-तेवुं प्रवर्तन
अमिय (अमृत) अमी-अमृत
अरविंद (अरविन्द) अरविन्द-उत्तम कमळ

असाय } (असात) शाता
असात } नहि-सुख नहि ते
अहिन्नाण (अभिज्ञान) एंधाण
अंगण (अङ्गन) आंगणु
अंडय (अण्डक) इंडुं
अंसु (अश्रु) आंसु
आउय (आयुष्क) आयुष्य-जींदगी
आभरण (आभरण) आभरण-घरेणुं
आमलय (आमलक) आमळुं-आंबळुं
उक्खलय (उदूखलक) उखांडणो
उच्छूखलय (उच्छ्रङ्खलक)

उत्थिय (उत्थित) उठ्युं

उदग }
उदय } (उदक) उदक-पाणी

उप्पल (उत्पल) उत्पल-कमल

कट्ठ (काष्ठ) काष्ट-काट-काठ-काठी-लाकडुं

कम्म (कर्म) काम-कार्य-सारी नरसी प्रवृत्ति

कम्मबीअ (कर्मबीज) कर्मबीज सत्-असत्-संस्कारनुं बीज

कयल (कदल) केळुं

कंबल (कम्बल) कंबल-कामळ

कंकोड कंटोलुं-कंकोडुं-कंकोडानुं शाक

कंजिय (कांजिक) कांजी

कंटयरक्खा (कण्टकरक्षा) कांटा-रखुं-कांटाथी रक्षण करनार-जोडा

कारण (कारण) कारण

कुप्पल }
कुंपल } (कुड्मल) कुंपळ-फणगो

कुल (कुल) कुल-कुळ

कुसुमपुर (कुसुमपुर) [illegible] नगरीनुं नाम

कुंडलय (कुण्डलक) कुंडळ, कुंडाळुं

कोटर (कोटर) कोतर

कोमलय (कोमलक) कूणुं

कोहल (कूष्माण्ड) कोळुं

खाणु (स्थाणु) स्थाणु-खीलो-खूंटो

खीर }
छीर } (क्षीर) क्षीर-खीर-दूध

खेत्त }
खित्त } (क्षेत्र) क्षेत्र-खेतर

खेम (क्षेम) क्षेम-कुशळ

गमण (गमन) गमन-जवुं

गल (गल) गळुं

गहण (ग्रहण) ग्रहण करवानुं साधन

गीअ }
गीत } (गीत) गीत-गाएलुं

गुत्त (गोत्र) गोत्र-वंश

गुरुकुल (गुरुकुल) [illegible] वाळा गुरुओ ज्यां रहे छे ते स्थान

घय (घृत) घी

घर (गृह) घर

घरचोल (गृहचोल) घरचोळुं

घाण (घ्राण) घ्राण-नाक-सूंघवानुं साधन

चउक्क (चतुष्क) चोक

चउगुणय }
चउग्गुणय } (चतुर्गुणक) चोगणुं

चउव्वट्टय (चतुर्वर्त्मक) चौटुं
चार रस्ता

चक्क (चक्र) चक्र-चरखो

चम्म (चर्मन्) चाम-चामडुं

चंडालिअ (चाण्डालिक) चंडा-
लनो स्वभाव-क्रोध

चंदण (चन्दन) चन्दननुं झाड
के लाकडुं

चारित्त (चारित्र) सच्चारित्र-
सद्वर्त्तन

चुच्छ (तुच्छ) तुच्छ-तूज

चेइअ (चैत्य) चिता उपर चणेलुं
स्मारक-चिह्न-ओटाओ, छत्री
पगलां, वृक्ष, कुंड, मूर्ति वगेरे

चेण्ह (चिह्न) चेन-चाळा

चेल (चेल) चेल-वस्त्र

छग्गुणय (षड्गुणक) छगणुं

छट्ठय (षष्ठक) छट्ठुं

छणपय } (क्षणपद) हिंसा-
छणपअ } हिंसानुं स्थान

छत्त (छत्र) छत्र-छत्री

छिड्डय (छिद्रक) छोडुं

छीअ (क्षुत) छींक

जउ (जतु) जतु-लाख

जल (जल) जळ-पाणी

जाण (यान) यान-वाहन

जाणु (जानु) जानु-गोठण

जिमिय (जेमित) जमेलुं

जीवण (जीवन) जीवन-जींदगी

जुग (युग) धोंसरुं

जुज्झ } (युद्ध) युद्ध-लडाई
जुद्ध }

जुग्म } (युग्म) युग्म-जोडुं
जुग्ग } -जोडी

जोव्वणय (यौवनक) जोबन-यौवन

निलाट (ललाट) निलाट-
ललाट

णयर }
णगर } (नगर) नगर-शहेर
नगर }
नयर }

णिव्व } (नीव्र) नेडुं-
निव्व } छापरानुं नेवुं

तग्ग तन्तुक-तागडो-धागडो

तण (तृण) तरणु-घास

तंब (ताम्र) तांबुं

तंबोल (ताम्बूल) तंबोळ-
नागरवेलनुं पान

ताण (त्राण) रक्षण-शरण-
[illegible]

तालु (तालु) ताळवुं

तिगुणय } (त्रिगुणक) [illegible]
तिउणय }

तिमिर (तिमिर) [illegible]

तिलय (तिलक) टीलुं

तेल (तैल) तेल

तुंद (तुन्द) दूंद--पेट

दहण (दहन) देन-दहन-आगे बळवुं

दहि (दधि) दहीं

दंतपवण (दन्तपवन) दंतवण-दातण

दाण (दान) दान

दारु (दारु) दारु-लाकडुं

दालिद्द (दारिद्र्य) दळदर-दारिद्र्य

दिण (दिन) दिन-दन-दनियुं, दिवस

दाहिणय (दक्षिणक) डाह्युं

दीवेल्ल
दीवतेल्ल } (दीपतैल) दीवेल-दीवो बाळवानुं तेल

दुक्ख (दुःख) दुख

दुद्ध (दुग्ध) दूध

धण (धन) धन

धणु
धणुह } (धनुष्) धनुष

धम्मजाण (धर्मयान) धर्मरूप वाहन, धर्मस्थान उपर लइ जवानु वाहन

धीरत्त (धीरत्व) धीरत्व-धीरपणुं-धैर्य

नमिर (नम्र) नम्र-नरम

नयण (नयन) नेण

नाण (ज्ञान) ज्ञान

निच्छिअय (निश्चितक) नक्की

निवाण (निपान) नवाण-जळाशय

नीलय (नीलक) नीलो-नीलुं

नेड्ड
णेड्ड } (नीड) निलय-नीड-माळो

पगरक्ख (पदरक्षक) पगरखां-पगनु रक्षण करनार

पगरण (प्रकरण) पगरण-प्रारंभ

पट्टोल (पट्टकूल) पटोळुं

पद
पय
पडग } (पद) पद-पगलुं

पद्धर (प्राध्वर) पाधरुं

पद
पद्द } (पद्र) पादर

पम्ह (पक्ष्मन्) पांपण

पम्हपट (पक्ष्मपट) पक्ष्म-पांपण जेवुं झीणुं कापड-पांभडी

परिसोसिय
परिसोसिअ } (परिशोषित) परशोषित तद्दन सुकाएलुं

पलाल (पलाल) पराळ-चोखानुं घास

पल्लाण (पर्याण) पलाण
पवहण (प्रवहण) वाहन-वहाण
पंजर (पञ्जर) पांजरुं
पाणीअ } (पानीय) पाणी-
पाणीअ } पीवानुं
पाडलिउत्त (पाटलीपुत्र) पाटलिपुत्र-पटणा शहेर
पायत्ताण (पादत्राण) पाद-त्राण-जोडा
पाव (पाप) पाप
पावग (पावक) पाप
पावरणय (प्रावरणक) उपरणुं
पास (पार्श्व) पासुं-पडखुं
पासग (दर्शक-पश्यक) द्रष्टा, समजनारो-विचारक
पिन्छ (पिन्छ) पींछुं
पित्त (पित्त) पित्त
पुच्छ (पुच्छ) पूंछडुं-पूंछ
पुट्ठय (पृष्ठक) पूंठुं
पुप्फ (पुष्प) पुष्प-फूल
फल (फल) फळ
फंदण (स्पन्दन) फांदवुं-फर-कवुं-धोळुं धोळुं हलवुं
बम्भचेर (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य-सदाचारवाळी वृत्ति-ब्रह्ममां परायण रहेवुं ते
बयर (बदर) बोर-बेर

बार } (द्वार) बार-बारणुं
दुवार }
बिइज्ज (द्वितीय) बीजुं
बिगुणय, बिउणय (द्विगुणक) बमणुं
बिंदु (बिन्दु) बींदु
बिंबय (बिम्बक) बिंब-प्रति-बिंब-बींबुं
बीअ (बीज) बी-बीज
भय (भय) भय-भो
भयवआउलय (भगवदाकुलक) पेनापळो
भायण } (भाजन) भाजन-
भाण } भाणुं-पात्र
भारहवास (भारतवर्ष) भारत-देश-हिन्दुस्तान
भाल (भाल) भाल-कपाल-ललाट
भोयण (भोजन) भोजन-जमण
मच्चुमुह (मृत्युमुख) मृत्युनुं मुख-मोतनुं मोढुं
मत्थय (मस्तक) माथुं
मयणफल } (मदनफल)
मयणहल } मींढोळ
मरण (मरण) मरण-मोत

मलीर (मलयचीर) मलयदेशनुं कोमळ, झीणुं अने आछुं कापड

मसाण (श्मशान) मसाण

महब्भय (महाभय) मोटो भय–मोटी बीक

महाविज्जालय (महाविद्यालय) मोटुं विद्यालय–कोलेज

महु (मधु) मधु

मंगल (मङ्गल) मंगल

मंस (मांस) मांस

माइहर (मातृगृह) मायरुं–मइयर

मित्त (मित्र) मित्र

मित्तत्तण (मित्रत्वन) मित्रत्व–मित्रता–भाईबंधी

मिहिलानयर (मिथिलानगर) मिथिला

मुह (मुख) मुख

मोत्तिअ (मौक्तिक) मोती

रज्ज (राज्य) राज्य–राज

रय (रजस्) रज–पाप–धूळ–मेल

रयय (रजत) रजत–रूपुं

रसायल (रसातल) रसातल–पाताळ

रायगिह (राजगृह) विहारमां आवेलुं हालनुं राजगिर–मगधदेशनी राजधानी

रुक्खय (रूक्षक) लूखुं

रुप्प (रुक्म) रूपुं

रुप्प (रौप्य) रूपुं

रूव (रूप) रूप–वस्तु–पदार्थ

रोमय (रोमक) रुंवुं–रोम

लक्खण }
लच्छण } (लक्षण) लक्षण–लांछन–लखण–चिह्न

लाङ्गल (लाङ्गल) लंगर

लावण्ण }
लायण्ण } (लावण्य) लावण्य–कांति

लोमपड { लोमपट, रोमपट } रुंवाटानुं वस्त्र–लोबडी

लोहखंड (लोहखण्ड) लोखंड

लोह (लोह) लोढुं

लोहिअ (लोहित) लोही

वण (वन) वन

वत्थ (वस्त्र) वस्त्र–वस्तर

वत्थु (वस्तु) वस्तु

वयण (वदन) वदन–मुख

वयण (वचन) वचन–वेण

वरिस (वर्ष) वरस

वाणिअ (वाणिज्य) वणज–वेपार

वादित्त, वाइत्त (वादित्र) वाजींत्र

वारि (वारि) वारि–पाणी

वित्त } (वेत्र) नेतर-नेतरनी
वेत्त } सोटी-वेत

विन्नाण } (विज्ञान) विज्ञान
विण्णाण }

विप्प (विप्र) विख, वख

वीरिय (वीर्य) वीर्य-बळ-शक्ति

वेर (वैर) वेर-वैर

सगडय (शकटक) छकडो-शकट

सच्च (सत्य) सत्य-साचुं

सत्तगुणय (सप्तगुणक) सातगणुं

सत्थ (शस्त्र) शस्त्र-हणवानुं हथीयार-तरवार वगेरे

सत्थ (शास्त्र) शास्त्र

सत्थिल्ल } (सक्थि) साथळ
सत्थि }

सयढ (शकट) छकडो-गाडुं-शकट

सरण (शरण) शरण-आशरो

सल्ल (शल्य) साल-शल्य

साय } (सात) शाता- सुख
सात }

सावज्ज (सावद्य) पापप्रवृत्ति

सावत्तक } (सापत्न्यक) सावकुं
सावत्तय }

सासुरय (श्वशुरक) सासरुं, सासरानुं घर

सित्थ (सिक्थ) सीथ-अनाजनो कण

सिंग (शृङ्ग) शिंगडुं-शिंगुं

सीअ (शीत) शीत-टाढ

सील (शील) शील-सदाचार

सीस (शीर्ष) शीश-माथुं

सुक्ख (सौख्य) सुख

सुत्त (सूत्र) सूत्र-सूतर, सूत्ररूप टुंकुं वाक्य

सुवण्ण (सुवर्ण) सोनुं

सोअ } (श्रोत्र) श्रोत्र-कान-
सोत्त } सांभळवानुं साधन

सोरभ (सौरभ) सोडम

हियय (हृदय) हैयुं

हुअ (हुत) होम

विशेषण

अक्खाय (आख्यात) कहेलुं-कहेवुं

अचेलय } (अचेलक) एलक-
अपलय } कपडा विनानुं

अज्जतण } (अद्यतन) आजनुं-
अज्जतण } तनुं

अज्ज (अर्य) अर्य-वैश्य-स्वामी

अज्ज (आर्य) आर्य

अट्ठम (अष्टम) आठमु

अड्ढीअ / **अड्ढाइअ** / **अड्ढाइज्ज** (अर्धतृतीय) जेमां बे अ खां अने त्रीजुं अडधुं छे ते-अढी-—अढी

अणवज्ज / **अनवज्ज** (अवनद्य) पाप-रहित-निर्दोष

अणाइअ (अनादिक) आदि विनानुं

अणारिय (अनार्य) अनार्य-आर्य नहि ते-अनाडी

अत्थिअ (आर्थिक) अर्थ संबंधी-अर्थने लगतुं

अत्थिअ (आस्तिक) आस्तिक

अधीर (अधीर) अधीर-धीरज विनानुं-नवळुं

अद्धुट्ठ (अर्धचतुर्थ) जेमां त्रण आखां अने चोथुं अडधुं छे ते उंठ-साडात्रण

अप्प (अल्प) अल्प-थोडुं

अप्पणिय (आत्मीय) आपणुं

अम्हारिस (अस्मादृश) अमारीशु अमारा जेवुं

अवज्ज (अवद्य) अवद्य-न वदी-कही-शकाय तेवुं काम-पाप-दोष

अहम (अधम) अधम-हलकुं नीच

अहिनव (अभिनव) भवनवुं-नवीन

अंतिअ (अन्तिक) पासे-

आकुट्ठ (आकृष्ट) आक्रोश करेलुं-आक्रोश

आगअ / **आगत** / **आअ** (आगत) आवेलुं

आणत्त (आज्ञाप्त) आज्ञा करेलुं, आज्ञा

आरिस (आर्ष) ऋषिए कहेलुं

आसत्त (आसक्त) आसक्त-—मोही

उच्छिट्ठ (उच्छिष्ट) एठुं-अजीठुं

उत्तम / **उत्तिम** (उत्तम) उत्तम

उवरिल्ल / **उवरिअल्ल** (उपरितन) उपलुं-उपरनुं

कज्ज (कार्य) करवा योग्य

कड / **कय** (कृत) करेलुं

कयण्णु कृतज्ञ) कृतज्ञ-कदरदान

काणीण (कानीन) व्यास ऋषि

कातव्व / **कायव्व** / **काअव्व** (कर्तव्य) कर्तव्य-करवा जेवुं

किच्च (कृत्य) कृत्य
किलिट्ठ (क्लिष्ट) क्लेशवाळुं. क्लिष्ट
किलिन्न (क्लिन्न) भीनु-भीनुं भींजाएलुं
किलिन्त (क्लान्त) क्लान्त
कुसल (कुशल) कुशळ-चतुर
केरिस (कीदृश) केवु
कोसेय (कौशेय) कौशेय- रेशमी-वस्त्र
खलपु (खलपु) खळु साफ करनार
गढिय (गृद्ध) अतिशय लालचु
गय (गत) गएलु. जवुं
गामणि (ग्रामणी) गामनो नेता
गिलाण } (ग्लान) ग्लान थएलुं,
गिलान } ग्लान थवुं
गुत्त (गुप्त) गोपवेलुं-सुरक्षित- गुप्त
गुरु (गुरु) गुरु भारे मोटुं
गुज्झ (गुह्य) छुपाववा योग्य, गूढुं
घट्ठ (घृष्ट) घसेलुं, घसाएलुं [illegible] [illegible]
घेत्तव्व (ग्रहीतव्य) ग्रहण करवा जेवुं
चउत्थ } (चतुर्थ) चोथुं
चतुत्थ }

चउरंस } (चतुरस्र) चोरस
चउरस्स }
चंड (चण्ड) प्रचंड-क्रोधी
चारु (चारु) चारु-सुन्दर
छट्ठ (षष्ठ) छट्ठुं
जण्ण (जन्य) जणवा योग्य
जाय (जात) जाएलु, थएलु, जनमुं
जिअ (जित) जीतेलुं-जीतेलु
जिइंदिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियो उपर जय मेळवनार
जुगुच्छ (जुगुप्स) जुगुप्सा करनार, घृणा करनार
जुन्न (जीर्ण) जीर्ण, जूनुं, [illegible] -जरी-गएलुं
जोइअ } (योजित) जोडेलुं
जोइय }
टट्टु ([illegible]) टट्टो, टट्टो, [illegible]
ठिय (स्थित) स्थित-[illegible]
डज्झमाण (दह्यमान) बळातुं- बळतुं
तइय } (तृतीय) त्रीजुं
तइज्ज }
तत्त (तप्त) तपेलुं
तदन्निन ([illegible]) [illegible]
तंत ([illegible]) [illegible]
तिण्ण (तीर्ण) तरी गएलुं

तिण्ह (तीक्ष्ण) तीणुं-अणीदार

तिम्म } (तिग्म) तीक्ष्ण-तेज-
तिग्ग } दार-तेग

तुच्छ (तुच्छ) तुच्छ, रांक, अधुरो

दट्ठव्व (द्रष्टव्य) देखवा जेवुं

दट्ठ (दृष्ट) दीठुं-देखेलुं-देखवुं

दसम (दशम) दशमुं

दंत (दान्त) जेणे तृष्णाने दमी छे ते-शान्त

दिग्घाउ (दीर्घायुष्) दीर्घ आयुष्यवाळो

दियड्ढ } (द्वितीयार्द्ध) जेमां
दिवड्ढ } एक आखुं अने बीजुं अडधुं छे ते-दोढ

दुग्गंधि (दुर्गन्धिन्) दुर्गन्धी चीज

दुप्पूरिय (दुष्पूर्य) मुश्केलीथी पुराय-भराय तेवुं

दुरणुचर (दुरनुचर) जेनुं आचरण कठण लागे ते

दुरतिक्कम (दुरतिक्रम) न मटे तेवुं

दुलह (दुर्लभ) दुर्लभ-दुल्लभ -मुश्केल

दुहि (दुःखिन्) दुखी

धणि (धनिन्) धनी-धनवाळो

धीर (धीर) धीर-धीरजवाळुं

नग्ग (नग्न) नग्न-नागो

नवम (नवम) नवमुं

नवीण } (नवीन) नवीन-
णवीण } नवुं

नाय (ज्ञात) जाणीतुं-प्रसिद्ध

णिच्चल (निश्चल) निश्चल

निट्ठुर (निष्ठुर) नठोर

निण्ण } (निम्न) निम्न-नीचुं,
नेण्ण } नानुं, नेवुं

निरट्ठग (निरर्थक) निरर्थक-नकामुं

निहिय (निहित) निहित-स्थापेलुं, स्थापवुं

पच्च (पाच्य) पचवा-रांधवा-योग्य

पच्छ (पथ्य) पथ्य-रस्तामां, हितकर

पडुप्पन्न (प्रत्युत्पन्न) वर्तमान -तानुं

पढम (प्रथम) प्रथम-परथम

पणट्ठ (प्रणष्ट) प्रनष्ट, नाश

पत्त (प्राप्त) पहोंच्यु-पहोंच्युं

पन्नत्त (प्रज्ञप्त) प्रज्ञापेलुं-जणावेलुं

पन्नविय (प्रज्ञपित) प्रज्ञापेलुं, प्रज्ञापवुं

पमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त–प्रमादी
परूवित (प्ररूपित) प्ररूपेलुं, जणावेलुं, प्ररूपवुं
पंचम (पञ्चम) पांचमुं
पंडिअ } (पण्डित) पंडित-भणेलो, पढेलो, पोपटपंडित
पंडिअ
पंत (प्रान्त) अन्तनुं, छेवटनुं, वापरतां वधेलुं
पिआउय (प्रियायुष्क) आयुष्यने प्रिय समजनार
पियामह (पितामह) बापनो बाप
पिय (प्रिय) प्रिय–वहालुं
पिहिय (पिहित) ढांकेलुं
पीण (पीन) पुष्ट
पुट्ठ (पुष्ट) पुष्ट
पुट्ठ (पृष्ट) पूछाएलुं
पुण्ण (पूर्ण) पूर्ण–भरेलो–संपत्तिवाळो
पुण्ण (पुण्य) पवित्र काम
पुराण } (पुराण } पुराणुं,
पुराअण } पुरातन } जूनु
पोत (प्रोत) परोवुं-परोवेलुं
बज्झ (बाह्य) बहारनु, बहारनो देखाव
बद्ध (बद्ध) बद्ध-बांधेलो–बंधाएल
बहु (बहु) बहु–घणुं

बिइय }
बिइज्ज } (द्वितीय) बीजुं
दुइय } –दूजुं
दुइज्ज }
बुद्ध (बुद्ध) बोधवाळो–ज्ञानी
भव्व (भव्य) थवा योग्य- ठीक
भिच्च (भृत्य) पाळवा योग्य–भृत्य–नोकर
भुत्त (भुक्त) भुक्त–भोगवेलुं
भोत्तव्व (भोक्तव्य) भोजन करवा जेवुं, भोगववा जेवुं
मईय (मदीय) मारुं
मट्ठ (मृष्ट) मांजेलुं, शुद्ध
मड-मय (मृत) मृत–मरेलुं
मणंसि (मनस्विन्) बुद्धिमान्
मय (मत) मानेलुं, मानवुं–मत
महग्घ (महार्घ) मोंघु
महड्डिय } (महर्धिक) मोटी
महिड्डिय } ऋद्धिवाळु-धनाढ्य
मायामह (मातामह) मानो बाप
मिउ (मृदु) मृदु–कोमळ नरम मउ
मिलाण } (म्लान) म्लान
मिलाग } थोडुं थाकेलुं, म्लान थयुं
मुक्क (मुक्त) मुक्त–छूटो
मुद्ध (मुग्ध) मुग्ध
मूढ (मूढ) मूढ भोळो– अज्ञान–अबुध

मोत्तव्व (मोक्तव्य) मूकवा जेवुं
रत्त (रक्त) रातुं-रंगेलुं
रायण्ण (राजन्य) राजपुत्र
रोत्तव्व (रुदितव्य) रोवुं-रुदन
लण्ह (श्लक्ष्ण) नानुं
लहु (लघु) लघु-हळवुं-नानुं
लहुअ } (लघुक) लघु-हळवुं
हलुअ } -हलु-नानुं
लंब (लम्ब) लांबुं
लुक्ख } (रूक्ष) लूखुं-आसक्ति
लूह } विनानुं
वम्मय (वाङ्मय) वाङ्मय-शास्त्र
वद्धमाण (वर्धमान) वधतुं
वक्क (वाक्य) कहेवा योग्य, वाक्य
वज्ज (वर्ज्य) वर्जवा योग्य
वज्ज (वद्य) बोलवा योग्य
वच्च (वाच्य) ,, ,,
वाघायकर (व्याघातकर) व्याघात करनार-विघ्न करनार
विणट्ठ (विनष्ट) विनष्ट, विनाश
भिब्भल } (विह्वल) विह्वल,
विहल } भांभळो-गभराएल
विलिअ (व्यलीक) विशेष अलीक-खोटुं
विविह (विविध) विविध-जात जातनुं
विहल (विफल) विफळ

वीयराग } (वीतराग) जेनो
वीयराय } राग नथी ते
वीलिअ (व्रीडित) वीलो-भोंठो
वोत्तव्व (वक्तव्य) कहेवा जेवुं
सक्कय (संस्कृत) संस्कृत
सग्घ (स्वर्घ) सोंघुं
सचेलय (सचेलक) चेल-वस्त्र-वाळुं, कपडावाळुं
सत्त (शक्त) शक्तिमान
सत्त (सक्त) आसक्त
सत्तम (सप्तम) सातमुं
सम (सम) समान वृत्तिवाळुं-सरखुं
सयल (सकल) सकळ-सघळुं
सरस (सरस) सरस
सवाय (सपाद) सवायुं-सवा
सहल (सफल) सफळ
संखय (संस्कृत) संस्कारेलुं, संस्कार
संजय (संयत) संयमवाळो
संभूअ (संभूत) संभवेलो-थयेलो
संसट्ठ (संसृष्ट) संसर्गवाळुं, संसर्ग
साउ (स्वादु) स्वादु-स्वादवाळुं
सीअ (शीत) शीत-ठंडुं
सीलभूअ (शीलभूत) शील-भूत-सदाचारी
सुइ (शुचि) शुचि-पवित्र

सुगंधि (सुगन्धिन्) सुगंधी वस्तु
सुजह (सु+हान) सहेलाईथी तजी शकाय ते
सुत्त (सुप्त) सूतेलुं
सुत्त (सूक्त) सूक्त-सारी उक्ति सुभाषित
सुय (श्रुत) सांभळेलुं, सांभळवुं
सुहि (सुखिन्) सुखी
सुहुम, सुखुम (सूक्ष्म) सूक्ष्म-नानुं
सेट्ठ (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ-उत्तम
हअ (हत) हणायेलुं-हणेलुं
हय (हृत) हरेलुं, हरवुं
हंतव्व (हन्तव्य) हणवा योग्य
हुत (हुत) होमेलुं हवन करायेलुं
हेट्ठिल्ल (अधस्तन) हेटलुं

संख्यावाचक शब्दो

अट्ठ (अष्टन्) આઠ
अट्ठचत्तालिसा, अडयाला (अष्टचत्वारिंशत्) અડતાળીશ
अट्ठणवइ, अडणवइ, अट्ठाणवइ (अष्टनवति) અઠાણું
अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्) આડત્રીશ
अट्ठसट्ठि, अडसट्ठि (अष्टषष्टि) અડસઠ
अट्ठसत्तरि, अट्ठहत्तरि (अष्टसप्तति) અઠ્યોતેર
अट्ठारस, अट्ठारह (अष्टादश) અઢાર
अट्ठावन्ना, अडवन्ना, अट्ठपण्णासा (अष्टपञ्चाशत्) અઠ્ઠાવન
अट्ठवीसा, अट्ठावीसा, अडवीसा (अष्टाविंशति) અઠ્ઠાવીશ
अट्ठासीइ (अष्टाशीति) અઠ્ઠયાશી
अयुत, अउअ (अयुत) દશ હજાર
असीइ (अशीति) એંશી
इक्कवीसा, एगवीसा, एकवीसा (एकविंशति) એકવીશ
एगारह, एआरह, एआरस (एकादश) અગિયાર

एग, एक, एअ, इक (एक) एक

एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्) एकताळीश

एगणवइ, इगणवइ, एगाणवइ (एकनवति) एकाणुं

एकतीसा, एक्कतीसा, इक्कतीसा (एकत्रिंशत्) एकत्रीश

एगपण्णासा, इक्कपण्णासा, एक्कपण्णासा, एगावण्णा (एकपञ्चाशत्) एकावन

एगसट्ठि, इगसट्ठि (एकषष्टि) एकसठ

एगसत्तरि, एगहत्तरि, इक्कसत्तरि, इक्कहत्तरि (एकसप्तति) एकोतेर

एगासीइ (एकाशीति) एकाशी

एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्) ओगणचालीस

एगूणनवइ (एकोननवति) नेवाशी

एगूणसय (एकोनशत) नव्वाणुं

एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्) ओगणत्रीश

एगूणपण्णासा (एकोनपञ्चाशत्) ओगणपचास

एगूणवीसा (एकोनविंशति) ओगणीश

एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि) ओगणसाठ

एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति) ओगणोशीतेर

एगूणासीइ (एकोनाशीति) ओगण्याऍंशी, अगण्याऍंशी

कोडाकोडी (कोटाकोटि) कोटाकोट

कोडि (कोटि) कोड

चउ (चतुर्) चार

चउणवइ, चोणवइ (चतुर्नवति) चोराणु

चउत्तीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्) चोत्रीश

चउद्दस, चउद्दह, चोद्दस, चोद्दह (चतुर्दश) चौद

चउरासीइ, चोरासीइ (चतुरशीति) चोर्यासी

चउवीसा, चोवीसा (चतुर्विंशति) चोवीश

चउसट्ठि, चोसट्ठि (चतुष्षष्टि) चोसठ

चउचत्तालिसा, चोआलिसा, चोआला, चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्) चुमालीश-चुमाळीश

चत्तारि सयाइं (चत्वारि शतानि) चारसें

चत्तालीसा (चत्वारिंशत्) चाळीश

चोवण्णा, चउपण्णासा (चतुष्पञ्चाशत्) चोपन

चोसत्तरि, चोहत्तरि, चउसत्तरि, चउहत्तरि (चतुस्सप्तति) चुमोतेर

छ (षट्) छ

छचत्तालिसा, छायाला (षट्चत्वारिंशत्) छेंताळीश

छण्णवइ (षण्णवति) छन्नुं

छत्तीसा (षट्त्रिंशत्) छत्रीश

छप्पण्णा, छप्पन्नासा (षट्पञ्चाशत्) छप्पन

छव्वीसा (षड्विंशति) छव्वीश

छसत्तरि, छहत्तरि (षट्सप्तति) छोतेर

छासट्ठि (षट्षष्टि) छासठ

छासीइ (षडशीति) छाशी

णवणवइ, नवणवइ (नवनवति) नव्वाणुं

ति (त्रि) त्रण

तिचत्तालिसा, तेआलिसा, तेआला (त्रिचत्वारिंशत्) तेंताळीश

तिण्णि सयाइं (त्रीणि शतानि) त्रणसें

तिसत्तरि, तिहत्तरि (त्रिसप्तति) तोंतेर

तिसय (त्रिशत) त्रणसो

तीसा (त्रिंशत्) त्रीश

तेणवइ (त्रिनवति) त्राणु

तेतीसा, तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्) तेत्रीश

तेरस, तेरह (त्रयोदश) तेर

तेवण्णा, तिपण्णासा (त्रिपञ्चाशत्) त्रेपन

तेवीसा (त्रयोविंशति) तेवीश

तेसट्ठि (त्रिषष्टि) त्रेसठ

तेसिइ (त्र्यशीति) त्राशी-त्र्याशी

दस / दह } (दशन्) दश

दसलक्ख / दहलक्ख } (दशलक्ष) दश लाख

दससहस्स / दहसहस्स } (दशसहस्र) दश हजार

दु (द्वि) वे

दुवण्णासा / बावण्णा } (द्विपञ्चशत्) बावन

दुवालस / बारस / बारह } (द्वादश) बार

दुसय / विसय } (द्विशत) बसो

नव (नवन्) नव

नवइ (नवति) नेवुं

नवासीइ (नवाशीति) नेवाशी

पणचत्तालिसा / पणयाला } (पञ्चचत्वारिंशत्) पिस्तालीश

पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) पांत्रीश

पणपण्णा / पंचावण्णा } (पञ्चपञ्चाशत्) पचावन

पणवीसा (पञ्चविंशति) पचीश-पंचवीश

पणसट्ठि (पञ्चषष्टि) पांसठ

पणसीइ / पञ्चासीइ } (पञ्चाशीति) पंचाशी

पण्णवइ / पञ्चणवइ / पञ्चाणवइ } (पञ्चनवति) पंचाणुं

पण्णरस / पण्णरह } (पञ्चदश) पन्नर

पणसत्तरि / पणहत्तरि } (पञ्चसप्तति) पचोतेर

पण्णासा / पण्णास / पञ्चासा } (पञ्चाशत्) पचास

पयुअ / पयुत } (प्रयुत) दश लाख

पंच (पञ्च) पांच

बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) बत्रीश

बाणवइ (द्विनवति) बाणुं

बावीसा (द्वाविंशति) बावीश

बासट्ठि (द्विषष्टि) बासठ

बासीइ (द्व्यशीति) बाशी

बिसत्तरि / बावत्तरि / बिहत्तरि / बावत्तरि } (द्विसप्तति) बोतेर

बेचत्तालिसा }
बेआला } (द्विचत्वारिंशत्) बेंताळीश
दुचत्तालिसा }

बे सयाइं (द्वे शते) बसो

लक्ख (लक्ष) लाख

वीसा (विंशति) वीश

सट्ठि (षष्टि) साठ

सत्त (सप्तन्) सात

सत्तचत्तालिसा } (सप्तचत्वा-
सगयाला } रिंशत्) सुडताळीश

सत्तणवइ } (सप्तनवति)
सत्ताणवइ } सत्ताणु

सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) साडत्रीश

सत्तरस } (सप्तदश)
सत्तरह } सत्तर

सत्तरि } (सप्तति) सीत्तेर
हत्तरि }

सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि) सडसठ

सत्तसत्तरि } (सप्तसप्तति)
सत्तहत्तरि } सत्योतेर

सत्तावन्ना } (सप्तपञ्चाशत्)
सत्तपण्णासा } सत्तावन

सत्तावीसा (सप्तविंशति) सत्यावीश

सत्तासीइ (सप्ताशीति) सत्याशी

सय (शत) सो

सहस्स (सहस्र) हजार

सोलस } (षट्+दश-षोडश)
सोलह } सोळ

अव्यय

अओ } (अतः) आथी–एथी
अतो }

अईव } (अतीव) अतीव–
अतीव } विशेष

अकट्टु (अकृत्वा) नहीं करीने

अग्गओ (अग्रतः) आगळथी

अज्जो (अद्य) आजे-आजना

अज्झत्थं } (अध्यात्म) आत्माने
अज्झप्पं } लगतुं–अंदरनुं

अत्थु (अस्तु) थाओ

अण (नञ्) निषेध, [illegible]

अणंतरं (अनन्तरम्) अंतर विना, तुरत

अण्णमण्णं (अन्योऽन्यम्) अन्योन्य-एकबीजाने

अण्णहा (अन्यथा) अन्य प्रकारे

अण्णया (अन्यदा) [illegible]

अत्थं (अस्तम्) [illegible]

अदुवा } (अथवा) अथवा
अदुव }

अद्धा (अद्धा) समय

अप्पेव (अप्येव) संशय

अभिक्खणं (अभिक्षणम्) क्षणेक्षणे-वारंवार

अभितो (अभितः) चारे वाजु

अम्मो आश्चर्य

अलं (अलम्) सर्युं, निषेध, पूरतुं

अवरिं } (उपरि) उपर
उवरिं }

अवस्सं (अवश्यम्) अवश्य-अचूक

असइं (असकृत्) अनेकवार

अह (अथ) अथ-हवे-प्रारंभ सूचक

अहत्ता (अधस्तात्) नीचे

अहव } (अथवा) अथवा
अहवा }

अहुणा (अधुना) हमणां

अंतो (अन्तर्) अंतर

आम (आम) हा-स्वीकार

आहच्च (आहत्य) बलात्कार

इइ }
इअ }
त्ति } (इति) ए प्रमाणे समाप्तिसूचक शब्द
ति }
इति }

इओ (इतः) आथी, एथी, वाक्यनो आरंभ, आ बाजुथी

इत्थं (इत्थम्) ए प्रकारे

इह (इह) आमां-अहीं

इहरा (इतरथा) एम नथी-अन्यथा

ईसिं } (ईषत्) ईषत्-थोडुं-इशारा मात्र
ईसि }

उत्तरसुवे (उत्तरश्वः) आवती काल, पछी

उप्पिं }
अवरिं } (उपरि) उपर
उवरिं }
उवरि }

एअं (एतत्) ए

एगया (एकदा) एकवार-एक वखत

एगंततो (एकान्ततः) एक तरफी

एत्थ (अत्र) अहीं

एव, एवं (एवम्) एम, ए प्रमाणे

कया (कदा) क्यारे

कल्लं (कल्यम्) काले

कह } (कथम्) केम, केवी रीते
कहं }

कहि } (कुत्र) क्यां, कहीं
कहिं }

कालओ (कालतः) काळे करीने-वखते

किं (किम्) शुं, शा माटे

कुत्तो } (कुतः) क्यांथी,
कुओ } शाथी, कई बाजुथी

केवच्चिरं (कियच्चिरम्) केटला लांबा समय सुधी

केवच्चिरेण (कियच्चिरेण) केटला लांबा समय सुधी

केवलं (केवलम्) केवळ, फक्त, मात्र

खलु (खलु) निश्चय

खिप्पं (क्षिप्रम्) क्षेप-जल्दी

खु }
खो } (खलु) निश्चय
हु }

च } (च) अने
य }

चिरं (चिरम्) चिरं-लांबा काळ सुधी

जया (यदा) ज्यारे

जहा } (यथा) जेम
जह }

जहासुत्तं (यथासूत्रम्) सूत्रनां-शास्त्रनां पाठ प्रमाणे

जहिं (यत्र) ज्यां, जहीं

जं (यत्) जे-के

जाव } (यावत्) जो, ज्यां सुधी
जा }

जेण (येन) जे तरफ

तओ, तत्तो (ततः) तेथी, त्यार पछी

तहा } (तथा) तेम
तह }

तहि } (तत्र) त्यां, तहीं
तहिं }

ताव } (तावत्) तो त्यांसुधी
ता }

तु (तु) तो

तेण (तेन) ते तरफ

दाणि }
दाणिं } (इदानीम्) हमणां आजकाल
इयाणि }
इयाणिं }

दुट्ठु (दुष्टु) दुष्ट रीते

धुवं (ध्रुवम्) ध्रुव-चोक्कस

न (न) न

नमो } (नमः) नमस्कार
णमो }

णवर नवुं-केवळ

णाणा (नाना) अनेक प्रकारनुं

निच्चं } (नित्यम्) नित्य
णिच्चं }

नो (नो) नहीं

पगे (प्रगे) प्रागडवाश्ये–प्रातः– काळे

पुण }
पुणा } (पुनः) पुनः पुनः, फरीवार
उण }

बज्झओ (बाह्यतः) बहारथी बहार तरफ

बहिआ }
बहिया } (बहिर्) बहार

बहिद्धा (बहिर्धा) बहार

मज्झे (मध्ये) मध्ये–वच्चे–महीं–मां

मणा }
मणयं } (मनाक्) मणा–थोडुं–खामी दर्शक

मा (मा) मा–नहीं

मुसं }
मुसा }
मूसा } (मृषा) मिथ्या–खोटुं
मोसा }

व }
वा } (वा) वा, अथवा, के

विणा }
विना } (विना) विना

ब० दि० (बहुल दिवस) अंधारियुं

सइ (सदा) सदा

सक्खं (साक्षात्) साक्षात्–प्रत्यक्ष

सततं }
सययं } (सततम्) सतत–निरंतर

सया (सदा) सदा–हमेशां

सव्वत्तो }
सव्वतो } (सर्वतः) सर्व प्रकारे, चारे बाजुथी
सव्वओ }

सव्वत्थ (सर्वत्र) सर्वत्र बधे ठेकाणे

सव्वया (सर्वदा) सर्व वखते

सव्वहा (सर्वथा) सर्व प्रकारे

सह (सह) }
सद्धिं (सार्धम्) } सह–साथे

सुट्ठु (सुष्ठु) सारी रीते

सु० दि० (शुक्ल दिवस) अजवाळीयुं

धातु

अइ+वाय (अति+पात) अतिपात करवो–हणवुं

आ+क्खोड (आ+क्षोद्) खोदवुं–कापवुं

अग्घ (अर्घ) मूल्यवुं–मूल्य करावतुं

अच्च् (अर्च्) अर्चवुं–पूजवुं

अ+च्चे (अति+इ) अतीत थवुं–पार पामवुं

अणु+जाण् (अनु+ज्ञा) अनुज्ञा आपवी–संमति आपवी

अणु + तप्प् (अनु+तप्य) अनुताप करवो-पश्चात्ताप करवो

अणु + भव् (अनु+भव) अनुभववुं-भोगववुं

अणु+सास् (अनु+शास्) शिक्षण आपवुं-समजाववुं

अण्ह (अश्ना) अशन करवुं-जमवुं-खावुं

अप्प् } (अर्प) आपवुं
ओप्प्

अब्भुत्त् (अवभृथ) अबोटवुं-आभडवुं-नहावुं

अभि+जाण् (अभि+जाना) अभिजाणवुं-अेंधाणवुं-ओळखवुं

अभि+नि+क्खम् (अभि-निष्+क्रम्) दीक्षाने माटे घेरथी नीकळवुं-संन्यास लेवो

अभि+प्पत्थ } (अभि+प्र+अर्थ) प्रार्थना करवी
अभि+पत्थ

अमराव् } (अमराय) अमरनी पेठे रहेवुं-पोतानी जातने अमर मानवी
अमरा

अरिह् (अर्ह) पूजवुं, योग्य थवुं

अल्लिव् आपवुं

अव+मन्न् (अप+मन्य) अपमानवुं-अपमान करवुं

अव+सीअ (अव+सीद) अवसाद पामवो-खेंचवुं

अहि+ट्ठ (अधि+स्था-तिष्ठ) अधिष्ठान मेळववुं-उपरी थवुं

अहि+लंख् } (अभि+लष) अभिलषवुं-इच्छा करवी
अहि+लंघ्

आ+गम् (आ+गम्) आववुं

आढव् (आ+रभ्) आरंभवुं-शरू करवुं

आ+ढा (आ+दृ) आदर करवो

आ+ने (आ+नी) आणवुं-लाववुं

आ+घा (आ+ख्या) आख्यान करवुं-कहेवुं

आ+भोअ (आ+भोग) ध्यान-पूर्वक जोवुं

आ+यन् (आ+[illegible]) [illegible] करवुं-प्रयत्न करवुं

आ+रोव् (आ+रोप) आरोपवुं

आ+लोट्ट (आ+लुठ) आळोटवुं

आ+साढ् ([illegible]) [illegible]

इच्छ (इच्छ) इच्छवुं

उ+क्कुद्द (उत्+कूर्द्) ऊंचे कूदवुं
उ+ट्ठ (उत्+स्था) ऊठवुं
उ+ड्डी (उत्+डी) ऊडवुं
उ+ल्लव् (उत्+लप्) बोलवुं
उव+च्चिट्ठ (उप+तिष्ठ) उपस्थित रहेवुं–सेवामां हाजर रहेवुं
उव+णी (उप+नी) पासे लई जवुं
उव+दंस् (उप+दर्शय) देखाडवुं–पासे जइने बतावबुं
उव+दिस् (उप+दिश) उपदेशवुं, उपदेश करवो
उवे (उप+इ) पासे जवुं–पामवुं
उंघ् — ऊंघवुं
एस् (एष) एषणा करवी, शोधवुं
ओ+ग्गाल् (उद्+गार) ओगाळवुं
ओप्प् (अर्प) पाणी–आपवुं–चडाववुं–ओपवुं
ओ+व्वाल् (उत्+प्लाव) प्लावित करवुं
कत्थ् (कत्थ) कथवुं–कहेवुं–वखाणवुं
कप्प् (कल्प) खपवुं–उचित होवुं
कर् (कर) करवुं
करिस् (कर्ष्) खेंचवुं–काढवुं–खेडवुं

कह् (कथ) कथवुं-कहेवुं
किण् (क्रीणा) खरीदवुं-वेचातुं लेवुं
कील (क्रीड) क्रीडा करवी–रमत रमवी
कुज्झ् (क्रुध्य) क्रोध करवो
कुण् (कृणु) करवुं
कुद्द (कूर्द) कूदवुं
कुप्प् (कुप्य) कोपवुं–कोप करवो
कुव्व् (कुरु) करवुं
कुह् (कुथ) कोहवुं–सडवुं
कूअ (कूज) कूहू कूहू करवुं
कोव् (कोप) कोप करवो–कुपित करवुं
खण् (खन्) खणवुं–खोदवुं
खल् (स्खल्) स्खलित थवुं–दूर थवुं
खा (खाद्) खावुं
खाद् } (खाद्) खावुं
खाय्
खिज्ज् (खिद्य) खीजवुं–खेद करवो
खिप्प् (क्षिप्य) खेरवुं–खेरवुं फेंकवुं
खिव् (क्षिप्) खेपवुं–खेरवुं–फेंकवुं

खुब्भ् (क्षुभ्य) खोभवुं-क्षो-भवुं-खळभळवुं-क्षोभ थवो-गभरावुं
गच्छ् (गच्छ) जवुं, पामवुं
गज्ज् (गर्ज) गाजवुं
गढ् (घट) घडवुं
गरिह् (गर्ह) गरहवुं-निंदवुं
गवेस् (गवेष) गवेषवुं-शोधवुं
गंठ् (ग्रन्थ) गंठवुं-गूंथवुं
गा (गा) गावुं
गिज्झ् (गृध्य) गृद्ध थवुं-ललचावुं
मिला (म्ला) म्लान थवुं-क्षीण थवुं
गेण्ह (गृह्ण) ग्रहण करवुं
घड् (घट) घडवुं, बनाववुं
घरिस् (घर्ष) घसवुं
चड् (चट्) चडवुं
चय् (त्यज) तजवुं
चय् (शक्) शकवुं
चर् (चर) चरवुं-चालवुं
चल् (चल) चालवुं
चव् (वद्) बोलवुं
चिइच्छ (चिकित्स) चिकित्सा करवी-उपचार करवो
चिण् (चिनु) चणवुं-एकठुं करवुं
चिणा (चिनु) चणवुं-एकठुं करवुं
चिंत् (चिन्त) चिंतववुं
चुक्क (च्युतक) चूकवुं-भ्रष्ट थवुं
चोप्पड् चोपडवुं
छज्ज् (राज) छाजवुं, शोभवुं
छाय / छाअ (छाद) छावुं-ढांकवुं
छिंद् (छिनद्) छेदवुं-छणवुं, नारवुं
छेच्छ (छेत्स्य) छेदवुं
छोल्ल् छोलवुं
जग्ग् (जागृ) जागवुं
जम्भा (जृम्भा) बगासुं खावुं
जम्म् (जन्मन्) जन्मवुं
जव् (जप्) जपवुं-जाप करवो
जढा (जहा) छोडवुं-त्याग करवो
जंप् (जल्प) बोलवुं
जा (या) जवुं [illegible]
जागर् (जागृ) जागवुं
जाण् (ज्ञा) जाणवुं
जाय् (जाय) [illegible]-जन्म थवो-उत्पन्न थवुं
जाय् ([illegible]) [illegible]-याचना करवी-मांगवुं
जाव् ([illegible]) [illegible]-[illegible] करवुं

जिण् (जि) जितवुं-जय मेळववो

जीह (जिह) लाजवुं

जुज्झ् (युध्य) जूझवुं-युद्ध करवुं

जुंज् (युञ) योजवुं-जोडवुं-अडाडवुं संबंध करवो

जूर् (जूर्) जूरवुं

जेम् (जेम्) जमवुं

जोत } (द्योत) ज्योत थवी-
जोअ } प्रकाशवुं-जोवुं

झा (ध्या) ध्यावुं-ध्यान करवुं

झाम् बाळवुं

ठा (स्था) स्थिर रहेवुं-ऊभा रहेवुं-बेसी रहेवुं

डस् (दंश्) डसवुं-करडवुं

डह् (दह) दहवुं-दाझवुं

डज्झ् (दह्य) बळवुं-बाळवुं

णि+व्विज्ज् (निर् + विद्य) निर्वेद पामवो

तच्छ् (तक्ष) तासवुं-छोलवुं, पातळुं करवुं

तर (तर) तरवुं

तव् (तप) तपवुं-संताप थवो-तप करवुं

ताड् } (ताड) ताडन करवुं
ताड् } -मारवुं

ताव् (ताप) तपाववुं-ताववुं

तिप्प् (तिप्) टपकवुं-गळवुं

तुरिय् (तूर्य) त्वरा करवी-उतावळा थवुं-तुरत करवुं

तुवर् (त्वर) त्वरा करवी

तूर (त्वर) त्वरा करवी-झपाटाबंध जवुं

तोल् (तोल) तोळवुं

थुण् (स्तुनु) थुणवुं-स्तुति करवी

दक्खव् (दृश) दाखववुं-देखाडवुं-कही-बताववुं

दच्छ (द्रक्ष्य) जोवुं-देखवुं

दा (दा) देवुं

दिप्प् (दीप्य) दीपवुं

दिव्व् (दीव्य) द्युत रमवुं, रमवुं

दीव् (दीप्) दीपवुं

देक्ख (दृश) देखवुं

घरिस् (घर्ष्) घसवुं-सामा थवुं

धा (धाव्) धावुं-दोडवुं

धाव् } (धाव) धोवुं-
धाय् } दोडवुं

नच्च् (नृत्य) नाचवुं

नज्झ (नह्य) नाझवुं-बांधवुं

नम } (नम्) नमवुं
नव् }

नस्स } (नश्य) नाश थवो
नास }

नि+क्खाल् } (नि+क्षाल) निखारवुं-धोवुं
नि+क्खार् }

नि+द्धुण (निर् + धुना) खंखेरवुं-दूर करवुं

नि+प्पज्ज् (निर+पद्य) नीपजवुं

नि+मंत् (नि+मन्त्र) निमंत्रण करवुं, नोतरवुं

निंद } (निन्द) निंदवुं-निन्दा करवी
निन्द् }

नी+हर् (निर्+सर्) नीहरवुं-नीसरवुं

ने } (नी) लइ जवुं-दोरवुं
णे }

प+क्खाल् (प्र+क्षाल) पखाळवुं-धोवुं

प+गब्भ् (प्र+गल्भ) प्रगल्भ थवुं-बडाई मारवी

पच्च+प्पिण् (प्रत्यर्पण – प्रति + अर्पण) पाछुं सोंपवुं

पज्जर् (प्र + उत् + चर् – प्रोच्चर) पढेवुं

प+ट्ठव् (प्र+स्थाप) पाठववुं

पड् (पत्) पडवुं

पडि+कूल (प्रति+कूल) प्रतिकूल थवुं-विपरीत थवुं

पडि+नी (प्रति + नी) पाछुं देवुं-सामुं देवुं-बदले देवुं

पडि+वज्ज् (प्रति+पद्य) पामवुं-स्वीकारवुं

पढ् (पठ) पाठ करवो-पढवुं

प+णाम् (प्र + णाम) आपवुं-सेवामां रजु करवुं

प+न्नव् (प्रज्ञापय) जणाववुं

प+माय् (प्र + माद्य) प्रमाद करवो

प+मुच्च् (प्र+मुच्य) प्रमुक्त थवुं-तद्दन छूटी जवुं

प+यल्ल् (प्र+सर्) फेलावुं

परि+आल् (परि+वार) परिवृत करवुं-वींटवुं

परि+क्कम् (परि + क्रम्) परिक्रमण करवुं-परकमवुं-प्रदक्षिणा करवी

परि+च्चय् (परि + त्यज) परित्याग करवो

परि+तप्प् (परि+ताप) परिताप पामवो-दुःखी थवुं

परि+देव् (परि+देव) खेद करवो

परि+निव्वा (परि + निर् + वा) शान्त करवुं-ओलववुं
परि+व्वय् (परि + व्रज्) परिव्रज्या लेवी-बंधनरहित थइने चारे कोर फरवुं
परि+हर् (परि + हर) परहरवुं -तजवुं
परि+हा (परि+धा) पहेरवुं
प+वय् (प्र+वद) वदवुं-कहेवुं
प+वस् (प्र+वस्) प्रवास करवो
प+हार (प्र + धार) धारवुं-संकल्प करवो
पा (पा) पीवुं
पा+ऽऽव् (प्र + आप) पामवुं-प्राप्त करवुं
पास् } पस्स् } (पश्य) जोवुं
पिज्ज् (पीय) पीवुं
पिट्ट (पिट्ट) पीटवुं-मारवुं-पीडवुं
पिसुण् (पिशुनय) चाडी करवी
पील् } पीड् } (पीड) पीडवुं-पीलवुं
पुच्छ् (पुच्छ) पूछवुं
पुज्ज् (पूर्य) पूरवुं-पूरवुं
पुण् (पुना) पुणवुं-पवित्र-करवुं
पुरिय् (पूर्य) पूरवुं-पुरवुं भरवुं-पुरुं-करवुं
पुलआअ (पुलकाय) पुलकित थवुं-उल्लसवुं
पुलोअ } पुलअ } (प्र + लोक) प्रलोकवुं-जोवुं
पूज् } पूअ } (पूज) पूजवुं
पेच्छ् (प्र+ईक्ष) जोवुं
फल् (फल) फळवुं-फल आववां
फुट्ट् (स्फुट) स्फट थवुं-खोलवुं-फुटी नीकळवुं
बाह (बाध) बांधवुं-बाधा करवी-अडचण करवी
बीह (भी) बीवुं
बू (ब्रू) बोलवुं
बोल्ल (ब्रू) बोलवुं
बोह (बोध) बोध थवो-जाणवुं
भक्ख् (भक्ष) भक्षवुं-खावुं-भरखवुं
भज्ज् } भंज् } (भंज) भांजवुं-भांगवुं
भण् (भण) भणवुं-बोलवुं-कहेवुं
भम् (भ्रम) भमवुं
भम्म् (भ्राम्य) भमवुं
भर } भल् } (स्मर) स्मरण करवुं
भव् (भव) थवुं-होवुं
भा (भी) बीवुं

भास् (भाष) भाखवुं–भाषण करवुं
भिंद् (भिनद्) भेदवुं–कटका करवा
भेच्छ (भेत्स्य) भेदवुं–टूकडा करवा
भोच्छ (भोक्ष्य) भोजन करवुं
–भोगववुं
मज्ज् (मद्य) मद करवो,
माचवुं, खुश थवुं
मन्न् (मन्य) मानवुं
मरिस् (मर्श्) विमासवुं–
विचारवुं
मरिस् (मर्ष्) सहवुं, क्षमा
राखवी
मिला (म्ला) म्लान थवुं–
करमावुं
मुज्झ (मुह्य) मुंझावुं, मूढ
थवुं–मोह पामवो
मुण् (मन्) जाणवुं
मुंच् (मुञ्च) मूकवुं
मेलव् (मेलय) मेळववुं, मेळ-
पवुं, एकमेक करवुं
मोच्छ (मोक्ष्य) मुकावुं–छूटुं
थवुं
रक्ख् (रक्ष) रक्षवुं, राखवुं,
साचववुं, रक्षण करवुं
रीय् (रीय) नीवटवुं
रुव् (रुद्) रोवुं
रूस् } (रुष्य) रूसवुं, रोष
रुस्स् } करवो

रोच्छ (रोत्स्य) रोवुं
लभ् (लभ्) लाभवुं, मेळववुं
लव् (लप) लव, बोलवुं
लह (लभ) लेवुं, मेळववुं
लिप्प् (लिप्य) लेपावुं, खरडावुं
लिह (लिख) लखवुं
लुट्ट (लुठ्य) लोटवुं–आळोटवुं
लुण् (लुना) लणवुं–कापवुं
वक्खाण् (वि+आ+ख्यान)
विस्तारथी कहेवुं,
वखाण करवां
वग्गोल् (वि+उद्+गार–उद्गार)
वागोळवुं
वच्च् (व्रज) पगलां भरवां
वज्ज् (वर्ज) वर्जवुं छोडवुं
वज्जर् (वि+उद्+चार–उच्चार) कहेवुं
वट्ट (वर्त) वर्तवुं
वण् (वन) वणवुं, भाग पाडीने
देवुं
वर् (वृ) वरवुं, स्वीकारवुं,
पसंद करवुं
वरिस् (वर्ष) वरसवुं
वलग्ग् (वि+लग्) वळगवुं–लागवुं
वस् (वस्) वसवुं–रहेवुं
वह (वह्) वहेवुं–ताणवुं
वंद् (वन्द) वांदवुं–नमवुं
वा (वा) वावुं

वाव् (वाप्) वाववुं-ववरावबुं

वि+किर्
वि+इर } (वि+किर्) वेरवुं

वि-के (वि+क्री) वेचवुं-वेकवुं

वि+चर् (वि+चर) विचरवुं-फरवुं

वि+चिंत (वि+चिन्त) चिंतववुं -विशेष चिंतववुं

विच्छल् (वि+क्षल) वींछळवुं-धोवुं

विज्ज् (विद्य) विद्यमान होवुं

विज्झ् (विध्य) वींधवुं

वि+णस्स् (वि+नश्य) वणसी जवुं-नष्ट थवुं वगाडवुं

वि-ण्णव् (वि+ज्ञप्) वीनववुं

वि+प्प+जह् (वि+प्र+जहा) त्याग करवो दूर करवुं

वि+राअ
वि+राज् } (वि+राज) विराजवुं -शोभवुं

वि+सीअ (वि+षीद) विषाद पामवो-खेद करवो

विहड्
विघड् } (वि+घट) वगडवुं -नाश पामवो

विहर् (वि+हर्) विरहवुं-फरवुं

विध् (विध्य) वींधवुं

वीसर् (वि+स्मर्) वीसरवुं

वेच्छ (वेत्स्य) वेदवुं-अनुभववुं -जाणवुं

वेढ् (वेष्ट) वींटवुं

वेव् (वेप्) वेपववुं-कंपवुं-धूजवुं

वोच्छ (वक्ष्य) कहेवुं-बोलवुं

समा+यर् (सम्+आ+चर) आचरण करवुं

समा+रच् (सम्+आ+रच्) समारवुं-सारुं करवुं

समा+रंभ् (सम्+आ+रभ्) समारंभ करवो, हणवुं

सर् (स्मर) स्मरण करवुं

सव् (शप) शापवुं, शाप देवो

सं+घ् (सं+ख्या) कहेवुं

सं+जम् (सं+यम) संजमवुं, संयम करवो

सं+जल् (सं+ज्वल्) बळवुं, कोप करवो

सं+दिस् (सम्+दिश्) सन्देशो आपवो-सूचन करवुं

सं+पज्ज् (सं+पद्य) संपजवुं-सांपडवुं

संपा+ऽऽउण् (सम्+प्र+आप्नु) सारी रीते पामवुं

सं+बुज्झ् (सं+बुध्य) समजवुं

सं+म्हर् (सं+स्मर) संभारवुं, याद करवुं

सं+वड्ढ (सम+वर्ध) संवर्धन करवुं, पोषवुं, मानववुं

सिज्ज (स्विद)सीजवुं,चीकणुं थवुं,
स्वेद–परसेवावाळा थवुं

सिज्झ (सिध्य) सीझवुं–सिद्ध थवुं

सिलाह (श्लाघ) सराहवुं–वखाणवुं

सिव्व् (सिव्य) सीववुं

सिह् (स्पृह) स्पृहा करवी

सिंच् (सिंच) सींचवुं

सुण् } हण् } (शृणु) सुणवुं–सांभळवुं

सुमर (स्मर) स्मरण करवुं

सूड } सूर् } (सूद्) सूडवुं, नाश करवो

सूस् } सुस्स् } (शुष्य) सोषवुं–सुकावुं

सेव् (सेव) सेववुं–आश्रय लेवो

सोच्छ (श्रोष्य) सांभळवुं

सोह (शोध) सोधवुं–सोधवुं, शुद्ध करवुं

सोह (शुभ) सोहवुं–शोभवुं

हण (हन्) हणवुं–मारवुं

हरिस् (हर्ष) हरखवुं

हस् (हस) हसवुं

हिंस् (हिंस) हिंसा करवी–हणवुं

हा (हा) हीन थवुं–तजवुं

हो (भू) होवुं थवुं

देश्य शब्दो

[नरजाति]

अग्गिअ–आगीओ

अग्घाड–अघेडानुं झाड

अहिल्ल } अहेल } —ईश्वर–नास्तिक–[illegible]

आमोड–वाळनो जूडो–अंबोडो

उड्डिस–[illegible]

उड्ड–ओड–ओड जातनो मनुष्य

ओहरिस } ओघरिस } —ओरसियो

कण्णिट–[illegible]

कन्दर–[illegible]

कण्णूस–[illegible]

कल्हार–[illegible]

कायार–[illegible]

कुक्कुस–[illegible]

काहल–[illegible]

कोप्पल–[illegible]

कोलिअ–करोळियो
कोल्हुअ–कोल्हु-चिचोडो-सिंचोडो
खट्टिक–खाटकी
खोखलअ–खोखलदंतो
खोड–खोडो–लंगडो
खोल–खोल–खोलकुं–गधेडानुं वच्चुं
गढ गड
घास–खेतरमां चास करवा ते
चिच्च } — चीबो
चिव्व }
छइल्ल–छेल–चतुर
छंट–छांटो
जवरय–जुवारा
झंखर–झांखरुं–सूकुं झाड
टप्परअ–टापरो–खराब कानवाळो
टार–टारडुं–हलको घोडो
टुंट–ठुंठो
डव्व } —डाबो हाथ
डाव }
डुंगर–डुंगरो
डुंब–डोम–चांडाळ
डुंघ–डुंघो–डोको
डोअ–डोयो–पाणी काढवानो डोयो

डोल–डोळो–आंजनो डोळो
णक्क–नाक
दवर–दोरो
पण्हअ–प्रस्नव–पानो
परियट्ट–परीट–धोबी
पंडरंग–महादेव
पिणाअ–पराणे
पेडइअ–फडियो–दाणानो वेपारी
बइल्ल–बेल–बळद
बप्प–बाप
बोक्कड } बोकडो
चुक्कुड }
मक्कड–मकडी–करोळियो
मणिआर–मणिआर–मणिआरुं [वेचनार
मुब्भ } –मोभ
मोब्भ }
रप्फ–राफडो
रवय–रवैयो
रोल–रोको–कळह
वड्ड–वडो
वप्पीअ } –बपैयो
वप्पीह }
वहोल–वहेळो–पाणीनो वहेळो
वोज्झअ–वोजो

[नारीजाति]

अआलि–एलि–अकाळे वादळां थयां

अम्मा–मा–अम्मा

अवालुया–अवाळु–दांतना पेढा

उत्थल्ला–उथलो

उंबी–पाकेला घउंनी डुंडी

उत्तरिविडि–उत्तरेड–वासणनी मांड

उत्थल्लपत्थल्ला–उथलपाथल

ओज्झरी–होजरी

ओप्पा–ओप

ओसरिया–ओसरी

ओसा–ओस–झाकळ

कट्टारी–कटार

कत्ता–पासा–जुगार रमवानी आंपली कोडी

कडोणी
कुडिणी } –श्रोणी

खडपी–खडकी

खड्डा–खाडो

खणुसा–खणस–इच्छा

खली–खोळ

गडयडी–गडगडाटी (मेघनी)

गड्डी–गाडी

गंडेरी–गंडेरी–शेरडीनी कातळी

गाई–गाय

गागरी–गागर

गोली–गोळी

चवेली–चवळी [illegible]

चिरिडिड्डी
चिणोट्टी } –चणोठी

चुच्छुंदरिया–छछुंदर

चोट्टी–चोटली

छल्ली–छाल

छपली–चामडी

छासी–छास

छेली–नानी बकरी–छेळी–[illegible]

झाडी–झाडी

जोवारी–जुवार–ज्वार

झडी–वरसादनी झडी

झंटी–झंटीयां–माथाना विखरायेला वाळ

झोलिका–झोळी

डाली–डाळ–झाडनी डाळ

ढंकणी–ढांकणी

ढेका–ढिक्को

णत्था
नत्था } –नाथ–बळदनी नाथ, नाकनी नथडी

णारी
नारी } –[illegible]

णिदणी–नींदवुं, नकामुं घास कापवुं
णीसणिआ–नीसरणी
तजा–त्वचा–छाल–तज
दअरी–दारु
पक्खरा–पाखर--घोडा हाथीने सजाववानां साधन
पट्टी–पाडी
पट्टुआ–पाटु
परडा–परडकुं
पारिहट्टी–पारेठ–वहु वखतथी विआएली गाय के भेंश
पूणी–पूणी
फग्गु–फाग
फुंफा } –फुंफाडो
फोंफा }
बव्वरी–बावरी
विग्गाइ–वगां–वगाय
बोहारी–बुहारी–सावरणी
भुक्खा–भूख
भाउज्जा–भोजाई
मम्मी } –मामी
मामी }
रल्ला–राळ–प्रियंगु
राडी–राड–कजियो
वट्टा–वाट–रस्तो
वियाउया–विपादिका–वीया–शियाळामां–हाथपग फाटवा
सिंदु–छिदरी
सुहेल्ली–सहेल करवी
हत्थोडी–हथोडो
हुड्डा–होड

[नान्यतरजाति]

आरोग्गिअ–आरोगेल–खाधेलुं
उज्जड–ऊजड
उल्लट्ट–ऊलटुं
उंड–ऊंडु
ऊसअ–ओशीकुं
ओक्किअ–ओकेलुं
ओच्चुल्ल–ओलोचूलो
कंकोड–कंकोडुं
कंटोल–कंटोलुं
कुल्लड–कूलडुं
कोडिय–कोडियुं
खट्ट–खाटुं
खड–खड–घास
खुट्ट–खुटेलुं
खुत्त–खुतेलुं
गवच्च–गवत–घास

घग्घर-घाघरो
चंग-चंगुं-सारुं
छिक्क-छींक
छिल्लर-पाणीनुं खाबोचियुं
जेमणय-जमणुं
झुट्ठ-जूठुं
टिक्क-टिकी-टीलुं
तग्ग-तागडो
तुंद-पेट-दुंद
पद्र-पादर
पत्थर-पाथरुं
परिहण-पहेरण
पंगुरण-पागरण-पाथरवा-ओढवानां साधन
पिंजिय-पींजेलुं
पोच्च-पोचुं
पोट्ट-पेट
वरुअ-वरु-कन्यानुं वरु
रंदुअ-रांदडुं
रूअ-रू-कपास
लक्कुड-लाकडुं
लाहण-ल्हाणुं
वद्दल-वादळ
वंग-वेंगण-वांगी
विहाण-वहाणुं-सवारनो समय
संखलय-शंखलुं
संपडिय-सांपडेल
सिंदुरय-सिंदरुं-दोरडी
सुंघिय-सुंघेलुं
सोल्ल-मांसना सोळा
हट्ट-हाटडुं
हल्लिअ-हालेल-चालेल

अर्धमागधी प्राकृतनुं साहित्य

अर्धमागधी प्राकृतनुं साहित्य अतिशय विपुल छे, तेमां तत्त्वज्ञान, आचार, विधिविधान—कर्मकांड, ज्योतिष, गणित, वास्तु वगेरेने लगता अनेक ग्रंथो छे. संक्षेपमां कहुं तो ए साहित्य करोडो श्लोकोमां रचाएलुं छे. तेमांथी अहीं थोडाक ग्रंथोनो नामनिर्देश करेल छे:

आगम ग्रंथो

अंग सूत्रो

आचारअंग
सूत्रकृतअंग
स्थानअंग
समवायअंग
भगवती अथवा व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग
ज्ञातधर्मकथाअंग
उपासकदशाअंग
अंतकृद्दशाअंग
अनुत्तरौपपातिक अंग
प्रश्नव्याकरणअंग
विपाकअंग

उपांग सूत्रो

औपपातिक उपांग
राजप्रश्नीय ,,
जीवाजीवाभिगम ,,
प्रज्ञापना ,,
जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति ,,
चंद्रप्रज्ञप्ति ,,
सूर्यप्रज्ञप्ति ,,
निरयावलि वगेरे पांच ,,

छेद सूत्रो

निशीथ
बृहत्कल्प
व्यवहार
दशाश्रुत
महानिशीथ
पंचकल्प (अप्राप्य)

मूळ सूत्रो

आवश्यक
दशवैकालिक
उत्तराध्ययन
नंदि
अनुयोगद्वार

छूटक सूत्रो

कल्पसूत्र
जीतकल्प
यतिजीतकल्प
श्राद्धजीतकल्प
पाक्षिकसूत्र
ऋषिभाषित वगेरे

पयन्ना ग्रंथ

चतुःशरण
आतुरप्रत्याख्यान
भक्तपरिज्ञा
संस्तारक
तंदुलवैचारिक
चंद्रवेध्यक
देवेंद्रस्तव
गणिविद्या
महाप्रत्याख्यान
वीरस्तव

आ उपरांत आगमग्रंथो उपरनी व्याख्याओ, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि अने अवचूर्णि वगेरे साहित्य अर्धमागधी प्राकृतमां रचायेलुं छे.

बीजा ग्रंथो

तत्त्वज्ञान

सम्मइपयरण
धम्मसंगहणि
विशेषावश्यक
भाषारहस्य
नवतत्त्व
जीवविचार
प्रवचनसार

कर्मशास्त्र

समयसार
पंचास्तिकाय
धवला
महाधवला
महाबंध वगेरे
कम्मपयडि
पंचसंग्रह
पंचवस्तु
प्राचीन कर्मग्रंथ
नव्य ,,
सत्तरि
गोम्मटसार वगेरे

आचार

पंचाशक
षोडशक
पंचसूत्र
प्रवचनसारोद्धार
आचारविधि
गुरुतत्त्व-निर्णय वगेरे

२९०+५२=३४२

कथा-चरित्र-उपदेश

उपदेशमाला
परमात्मप्रकाश
कुमारपालचरित्र
कुवलयमाला
ज़ंबूस्वामिचरित्र
पृथ्वीचंद्रचरित्र
प्रत्येकबुद्धचरित्र
महापुरुषचरित्र
विजयानंदकेवलिचरित्र
वसुदेवहिंडि
सनत्कुमारचरित्र
सीताचरित्र
पउमचरिय
कथारत्नकोश
कथावलि
तरंगलोला
समराइच्चकहा
चोवीश तीर्थंकरोनां एक एकनां जुदां जुदां चरित्रो वगेरे

कल्प-काम-वास्तु-ज्योतिष-निमित्त-स्वप्न अने विज्ञानना ग्रंथो

सूर्यप्रज्ञप्ति
चंद्रप्रज्ञप्ति
ज्योतिषचक्रविचार
पिपीलिकाज्ञान
अंगविज्जा
महग्घपयरण
तीर्थकल्प
अकालदंतकल्प
मयणवाल
वास्तुविचार
स्वप्नविचार वगेरे